

भारत में पुस्तकालयों
का
उद्भव और विकास



भारत मे पुस्तकालका

पुस्तक का उद्भव और विकास

[सिन्धु सभ्यता-काल से पञ्चवर्षीय योजनाकाल तक]

बालकाप्रसाद शास्त्री
पुस्तकालयाध्यक्ष
हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग

मुद्रिका
श्रीमगनामस्य स्म य स्मि यस् यस्ती पी ई यस्
कच्छ
राजकीय केंद्रीय पुस्तकालय : उत्तरप्रदेश, प्रयाग



हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय
वाराणसी-१

द्वितीय संस्करण ११००
अक्टूबर १९६१



मूल्य पाँच रुपये

मुद्रक
शिव प्रेस
ग्रहद घाट काठमांडू

प्रकाशक
हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय
पी वनस नं ७० ज्ञानवासी
वाचनालया-१

सूमिका

ज्ञान और विज्ञान के प्रत्येक क्षेत्र का विकास अपने ही अर्थों में रहा है और पुस्तकालय-जीव भी इसका अपवाद नहीं है। अतः अन्य क्षेत्रों की भाँति पुस्तकालय-जीव के उद्भव और विकास का अनुसंधान भी आवश्यक है। श्री इन्द्राप्रसादजी घासगी की यह पुस्तक-विषयी सूचिका लिखने के लिए उन्होंने मुझे आमन्त्रित किया है—इस विधा की ओर एक नया और सज्जतीय प्रयास है।

अभी तक पाश्चात्य देशों की यह धारणा रही है कि भारतीय पुस्तकालयों के विकास का कोई सुस्पष्टचित्रण रूप नहीं रहा। जगदीश महाराज इस मान्यता पर आधारीत हैं कि भारतीयों ने इसी अनु को छात्रों आठवीं शताब्दी में विदेशियों से शिक्षण-ज्ञान प्राप्त किया। किन्तु लेखक ने प्रस्तुत पुस्तक के प्रथम अध्याय में ही भारतीय भाषाओं और लिपियों का विवेचन करते हुए भारतीय वाद्यों के अन्तर्गत और कैम्पेन बहिर्देशियों से यह शिक्षण करने का उल्लेख प्रकाश किया है कि भारत में अति प्राचीनकाल से ही लिखने की परम्परा रही है और उच्च भारतीय पुस्तकालयों का विकास भी सुस्पष्टचित्रण योग्यता का एक अङ्ग रहा है।

इस मान्यता के आधार पर लेखक ने शिष्ट उल्लेखक से ले कर आधुनिक काल तक के अनेक युग को क्रमिक अध्यायों में वैज्ञानिक रीति से विभक्त करके उत्कृष्टतम पुस्तकालयों की परम्पराओं का सप्रमाण विवेचन किया है। अद्यपि राजनीतिक उल्लेख-द्वारा तथा अन्य कारणों से प्राचीन काल के पुस्तकालयों के अन्वय में आज पर्यन्त सामग्री उपलब्ध नहीं है, फिर भी सम्युक्त पुस्तक में प्रायः सामग्री का व्यवस्थापन विषय का सरल वर्णन अङ्कनों और चर्चों का निविष्ट संग्रह और विभिन्न विचारधाराओं का तुलनात्मक रूप इस बात को प्रकट करता है कि लेखक ने बहुत समय के साथ इस काम को किया है और मनु-उप विज्ञान ही निविष्ट सामग्री को सुचारु रूप से संगृहीत करते उन्हें असाधारण व्यक्तित्व दिया है। वैदिककाल, बौद्धकाल, मुस्लिम एवं ब्रिटिशकाल तथा स्वाधीनतापूर्वक पुस्तकालयों का एक प्रत्यक्ष वर्णन पुस्तकालयधर्मों एवं सामान्य पाठकों के लिए भी महत्वपूर्ण सुचना सामग्री एवं ज्ञानवृद्धि का साधन प्रदान करता है।

प्रस्तुत विषय के विवेचन की यत्नीयता और पूरता तो विसेपत्रों के लिए भी पर्याप्त घोष की जगह रखती है। फिर भी छात्री जी ने व्यक्तिगत सीमित साधनों के अन्तर्गत इस ओर जो प्रयास किया है वह अपने श्रम का सब प्रथम होने के कारण इस क्षेत्र के अन्य अनुसंधानकर्ताओं के लिए अवसर ही पथ-प्रदर्शक होया। अनीतक कुछ पुष्टकर लेखों को छोड़ कर भारतीय पुस्तकालयों के सुव्यवस्थित इतिहास का पुस्तक रूप में पूरत जमान रहा है। अतमान युग में पुस्तकालयों के मानव जीवन का अविना अङ्ग हो जाने के कारण भी छात्रीजी की यह पुस्तक अपना महत्वपूर्ण स्थान रखती है। अत "यदि" इस पुस्तक का भारतीय तथा विदेशी भाषाओं में अनुबाव हो सके तो पुस्तकालय-जगत के लिए बहुत ही हितकर होगा। साथ ही इससे भारत के सामाजिक और आर्थिक जीवन के अनुसन्ध पुस्तकालय-विकास की योजना बनाने में भी सहायता मिल सकेगी।

राष्ट्रमाया हिन्दी में लिखित इस पुस्तक द्वारा भारतीय पुस्तकालय-साहित्य के एक रिक्त स्थान की पूर्ति हुई है। अतः इस कृति के लिए भी छात्री जी को समस्त पुस्तकालय-जगत् की बधाई के पात्र है। मुझे आशा है कि भविष्य में भी इसी प्रकार उनकी अनुठी कृतियाँ प्राप्त होती रहेंगी।

—मगनानन्द

राजकीय केन्द्रीय पुस्तकालय
इलाहाबाद
२६-१०-५०

जगत में ये जग सभस्त मिश्रीं लीर संस्वाज्जों के प्रति अपना आचार प्रकट करता हूँ बिम्बूनि इस पुस्तक के लिए सामग्री जुटाने में अपना सहयोग प्रदान किया है। मेरे भारतीय मित्र श्री मदनमन्दवी अम्बच्च सेंट्रल स्टेट लाइब्रेरी, उत्तर प्रदेश में इस पुस्तक की मूद्रिका लिपिने का कष्ट किया है। एतदर्थ मैं जगका विरौप रूप से आभारी हूँ। यदि इस पुस्तक द्वारा भारतीय पुस्तकालय-जगत् को कुछ भी काम हुआ तो मैं अपने परिपम को सफल समझूंगा और बेटा कहूंगा कि इसका अपना संस्करण अपेक्षाकृत अधिक परिष्कृत रूप में उपलब्ध किया जा सक।

दीपावली
२०१४

}

—द्वारकाप्रसाद शास्त्री

विषय-सूची

अध्याय

विषय

पृष्ठ

- १ भारतीय पुस्तकालयों की प्रथमभूमि ११—२३
 पुस्तकालय की मायका प्रथमभूमि के आचार—भारतीय भाषाएँ—भारतीय भाषाओं का विकास—भारतीय लिपियाँ—भारत में लिखने के प्रकार की प्राचीनता—पञ्च शैली और लिखित पुस्तक—भारतीय इतिहास की रूपरेखा (४००० वर्ष ई० पू० से २००० वर्ष ई० पू० तक २००० ई० पू० से १००० ई० पू० तक १००० ई० पू० से १०० ई० पू० तक १०० ई० पू० से इस्लामी विजय तक इस्लामी राज्य अंग्रेजी राज्य स्वाधीन भारत ।)
- २ भारतीय पुस्तकालयों का काल-विभाजन २४—२६
 काल-विभाग (१—प्रागैतिक काल ३००० ई० पू० से २५०० ई० पू० तक २—वैदिक काल २५०० ई० पू० से ५०० ई० पू० तक ३—बौद्धकाल ५०० ई० पू० से १९०० ई० तक ४—मुस्लिमकाल १२०० ई० से १७०० तक ५—सर्विकाल १७०० ई० से १८१६ ई० तक ६—ब्रिटिशकाल १८१६ ई० से १९४७ ई० तक और ७—स्वाधीनता काल १९४७ से अब तक)—आचार
- ३ प्रागैदिककालीन पुस्तकालय २६—२८
 सिंधु सभ्यता—सहित्य रूपरेखा—सिंधु सभ्यता की लिपि—पुस्तकालय ।
- ४ वैदिककालीन पुस्तकालय २९—३१
 शिक्षा—पुस्तकालय—ज्ञान पर एकत्रिकार ।
- ५ बौद्धकालीन पुस्तकालय ३२—४२
 धार्मिक शक्ति—सर्वों की परस्पर—बौद्ध पुस्तकालय—बौद्ध कालीन शिक्षा—उपशिक्षा का पुस्तकालय—भारत का पुस्तकालय (स्थापना—पुस्तकालय की रूपरेखा—पुस्तकालय का अर्थ)—विश्व, शिक्षा का पुस्तकालय—बौद्धों का पुस्तकालय—भारतीय ग्रंथ बाह्य—कैसे पहुँचे ?—बौद्धकालीन पुस्तकालयों का अर्थ ।

अध्याय विषय पृष्ठ
 ६ मुसलमानी शासनकालीन पुस्तकालय ४३-४७

मुसलमानी शिष्टा—मकतबी पुस्तकालय—मदरसे के पुस्तकालय—विधेय विषय के पुस्तकालय—मथरकोट का पुस्तकालय—महमूद नवा का पुस्तकालय—मुसलमानी पुस्तकालय—अफ्गार का पुस्तकालय ।

७ संश्लेषकालीन पुस्तकालय ४८-५१

पुर पुरों के पुस्तकालय—संस्कृत विद्यालयों के पुस्तकालय—मकतबों के पुस्तकालय—मदरसों के पुस्तकालय—श्रामीन पाठशालाओं के पुस्तकालय—विदेशियों के विद्यालयों के पुस्तकालय—अंग्रेजों का प्रारम्भिक प्रयास ।

८ ब्रिटिशकालीन पुस्तकालय ५२-१०७

ब्रिटिशकालीन शिष्टा—शिष्टा का काक विभाजन [(१) १८११ ई० से १८५४ ई० तक (२) १८५४ ई० से १९२० ई० तक (३) १९२० ई० से १९४७ ई० ३४ अक्षर तक] भारत में प्रेष का आविष्कार और इस्तम्बित संघों की खोज—समाचार-पत्र और पत्रिकाओं का प्रकाशन (साप्ताहिक-दैनिक)—पुस्तकालयों का विकास—ब्रिटिशकालीन पुस्तकालयों का वर्गीकरण [१—ब्रिटिश सरकार के पुस्तकालय (क) इम्पीरियल लाइब्रेरी (ख) निर्मितकों से संलग्न पुस्तकालय (ग) स्वतंत्र कार्यस्थलों से संबद्ध पुस्तकालय, (घ) मातृशाला और संलग्न कार्यस्थलों से सम्बद्ध पुस्तकालय २—प्रान्तीय सरकारों और शैली राज्यों के पुस्तकालय (क) विभागीय पुस्तकालय (ख) म्यूजियम पुस्तकालय] ३—शिष्टा संस्थाओं के पुस्तकालय [(क) मुनिबिरीटी पुस्तकालय (ख) कासेज पुस्तकालय (ग) हाई स्कूल तथा मिडिल स्कूलों के पुस्तकालय] ४—अनुसंधान संस्थाओं प्रयोगशालाओं और स्वतंत्र शोध संस्थाओं के विधेय पुस्तकालय—५—सांख्यिक पुस्तकालय]—इम्पीरियल लाइब्रेरी (स्थापना-व्यवस्था के नियम—मुक्तिपत्र लाइब्रेरी के रूप में—इम्पीरियल लाइब्रेरी—सब से कीमती पुस्तक—रिपे प्रमिति—पी के० एम० अमागुस्ता)—हिन्दी संग्रहालय—इंडिया प्राइमरी लाइब्रेरी (एम्पिक रिपीटिटी—नया नामकरण—स्वरेता

उपहार के निबन्ध) - पुस्तकालय-संघों की स्थापना (बह्विध भारतीय सांख्यिक पुस्तकालय संघ - तथा मौड़-बह्विध भारतीय पुस्तकालय-संघ की स्थापना-प्रवृत्ति) भारत में पुस्तकालय आन्दोलन - बड़ीया पुस्तकालय आन्दोलन (अनुवाद कार्यालय-सहायक संस्थाएं-राज्य पुस्तकालय संघ-बहु पुस्तकालय-केन्द्रीय पुस्तकालय - बड़ीया राज्य में पुस्तकालयों का विकास - ट्रेनिङ्ग का प्रबंध) - भारत प्रसीडेन्सी में पुस्तकालय-आन्दोलन (क्रिया-कलाप, काइबेरी ऐक्ट पुस्तकों का प्रकाशन पुस्तकालय-संघों की ट्रेनिङ्ग अन्य कार्य) - बम्बई प्रेसीडेन्सी (कर्नाटक पुस्तकालय-संघ पुस्तकालय-विकास समिति बम्बई - पुस्तकालय-विज्ञान की शिक्षा) बिहार प्रान्त (पुस्तकालय संघ) संयुक्त प्रान्त (शिक्षा-मन्त्र विभाग-संघ और काइबेरी - पुस्तकालय-विज्ञान की शिक्षा) - यंवाव प्रान्त - बंपाळ प्रान्त - द्वावनकोर-कोचीन - अन्य प्रान्तों में पुस्तकालय-आन्दोलन - भारत में प्रौढ़ शिक्षा सम्बन्धी पुस्तकालय - (उत्तर-प्रदेश - बिहार जादि) - काइबेरी इन्विपमेंट-पुस्तकालय-विज्ञान सम्बन्धी साहित्य - बृटिशकाशीन पुस्तकालयों पर एक दृष्टि ।

६. स्वाधीनकाशीन पुस्तकालय

१०८ १७६

नव निर्माण की ओर - प्राथमिक शिक्षा - माध्यमिक शिक्षा - विश्वविद्यालय और उच्च शिक्षा की संस्थाएं - टेकनिकल और व्यावसायिक शिक्षा - सामाजिक शिक्षा - शिक्षा में बहसुरी का समीकरण - सांस्कृतिक और अन्तर्राष्ट्रीय कार्य-समीन पुस्तकालयों का विकास (१ - (क) नेशनल काइबेरी (ख) मंत्रालयों से सम्बन्धित पुस्तकालय (ग) स्वयंसेवकियों से संलग्न पुस्तकालय (घ) भारत और सम्बन्धित कार्यालयों से संलग्न पुस्तकालय) २ - (क) प्रांतीय सरकारों के पुस्तकालय ३ - यूनिवर्सिटी काइबेरी ४ - रिजर्व काइबेरी ५ - पब्लिक काइबेरी) केन्द्रीय सरकार के कार्य-नेशनल काइबेरी (विकास संघ-सूची का प्रकाशन) - इन्विपमेंट नेशनल मिनिस्ट्री - साहित्य एकेडेमी मिनिस्ट्री - मन्त्र पंचवर्षीय योजना में पुस्तकालयों की प्रगति - द्वितीय पंचवर्षीय योजना - नैसर्गिक संदुक्त काइबेरी - काइबेरी ऐडवाइजरी कमेटी - (घ) बाबु-

निक भारतीय पुस्तकालयों का वर्गीकरण (घ) दिल्ली पब्लिक लाइब्रेरी (ङ) यूनेस्को का अन्तर्राष्ट्रीय सेमिनार-एशियन लाइब्रेरी एसोसिएशन—पुस्तक-बाकेट-प्रवर्धनी (च) विद्यमान बुक ट्रस्ट—पुस्तकालयाध्यक्षों की ट्रेनिङ्ग (छ) इण्डिया आफिस लाइब्रेरी के सिंग प्रयत्न (ज) हस्तलिखित ग्रंथों की खोज (झ) प्रदेशों में पुस्तकालयों और संघों की प्रवृत्ति (अखिल भारतीय पुस्तकालय संघ की प्रवृत्ति—इण्डियन लाइब्रेरी आइरेक्यू—उत्तर प्रदेश—(प्रांतीय केन्द्रीय पुस्तकालय—सिद्धा-प्रसार विभाग—पुस्तकालय-विज्ञान की शिक्षा—पुस्तकालय—संघ) बिहार—बिहार राज्य पुस्तकालय-संघ—पुस्तकालयाध्यक्षों का प्रशिक्षण—संघ के विभा-कक्षाप—बिहार में प्रथम पंचवर्षीय योजना—विज्ञानुसार पुस्तकालयों की श्राव्य का विवरण—पुस्तकालय संरचना—अखिल भारतीय पुस्तकालय—विज्ञान परिषद्—नाल्डवा का पुस्तकालय)—पंजाब—(पुस्तकालय-संघ—इण्डियन लाइब्रेरियन—पैपू—पैपू पुस्तकालय-संघ)—दिल्ली—(मए पुस्तकालयों की स्थापना—गुजने पुस्तकालयों का विस्तार—पुस्तकालय सम्बन्धी विषय आयोजन—पुस्तकालय—संघ—पुस्तकालय—विज्ञान की शिक्षा)—बम्बई (क्लॉटिक लाइब्रेरी एसोसिएशन—यूनिवर्सिटी लाइब्रेरी—महाराजा बाबा रेड्क्लिफ प्रेजिडेंसल कमेंटी—पुस्तकालय-संघ—बम्बई लाइब्रेरियन स्टॉक यूनियन—पुस्तकालय-विज्ञान की शिक्षा)—मद्रास (मद्रास लाइब्रेरी एसोसिएशन)—बर्मा—इण्डियन एसोसिएशन आफ् स्पोरल लाइब्रेरीयन ऐण्ड इन्फार्मेशन सर्विस—ईरान—मिसूर—ट्रावन्कोर—कोचीम—मध्यप्रदेश—छोटाछ्—राजस्थान—बोधि—पुस्तकालयाध्यक्षों का सहयोग—लाइब्रेरियन कोंग्रेस—(म) पुस्तकालयाध्यक्षों की विदेश यात्राएँ—सीट सीन एन्डुमेन्टस इन्सर्जेंस प्रोग्राम तथा अन्य-पुस्तकालयाध्यक्षों का सम्बन्ध—डा० रत्ननाथ का महान त्याग—आधीन भारत में पुस्तकालय-विज्ञान सम्बन्धी साहित्य ।

भारत में पुस्तकालयों का भविष्य

१७६-१७८

श्रुतमणिका

१७९-१८३

सहायक सामग्री

१८४-१८६

भारतीय पुस्तकालयों की पृष्ठभूमि

पुस्तकालय की मान्यता

जब यह बात सामग्री रूप से स्वीकार कर ली गई है कि पुस्तकालय केवल शिक्षण-संस्थाओं के लिए ही आवश्यक सहायक नहीं है बल्कि सभी प्रकार के बौद्धिक सामाजिक और धार्मिक क्रियाकलाप के लिए भी बरकत है। पुस्तकालयों और उनमें व्यवस्थित पुस्तकों की संख्या से किसी भी देश की प्रगति का अनुमान सरलतापूर्वक लगाया जा सकता है। पुस्तकालय की सबसे बड़ी कमी- उसके उपयोग करनेवालों की संख्या है जिसके लिए यह स्थापित किया गया हो। वतः जब राष्ट्रीय स्तर पर पुस्तकालय-भावोत्थन को धीरे-धीरे एक प्रभावकारी स्वरूप में मान्यता मिल रही है। साथ ही यह अनुभव किया जाने लगा है कि पुस्तकालय की व्यवस्था एक धार्मिक व्यवस्था है, उसके अभाव में प्रारम्भिक शिक्षा पर व्यय की जाने वाली अनपेक्षित व्यय हो जायगी क्योंकि वह शिक्षा फिर निरक्षरता में बदल जायगी।

पृष्ठभूमि के आधार

भारत का क्षेत्रफल लगभग १२ ६६,९०० वर्गमील है। जनसंख्या के दृष्टिकोण से संसार में इसका दूसरा स्थान है। १९५१ की जनगणना के अनुसार यहाँ की जनसंख्या ३६, ६८, ७९, १९४ थी। यह संख्या बढ़ कर १९५९ में ३८.६९ करोड़ तक पहुँच चुकी है। यह विशाल जनसंख्या १४ प्रदेशों तथा ६ क्षेत्र द्वारा शासित क्षेत्रों के १०१८ जिलों और ५,५८,०८९ गाँवों में बँटी हुई है। इनमें से १९५१ की जनगणना के अनुसार केवल १३.६१ प्रतिशत लोग ही साक्षर हैं और साक्षरता के सुझम साधन पुस्तकालयों की संख्या तो कुल ३२० ही है। फिर भी लिपि के आविष्कार से लेकर अब तक के इन पुस्तकालयों का भारत में, अथवा विकास की ओर क्या एक अनवरत एवं अखण्ड प्रवाह है। स्वतन्त्र भारत में पंचवर्षीय योजनाओं के अन्तर्गत पुस्तकालयों के विकास का जो प्रयास किया जा रहा

निक मारठीय पुस्तकालयों का वर्गीकरण (ब) बिस्की पब्लिक लाइब्रेरी (क) यूनेस्को का अन्तर्राष्ट्रीय सेमिनार-एशियन लाइब्रेरी एसोसिएशन—पुस्तक-बाकेट-प्रदर्शनी (ख) नेशनल बुक ट्रस्ट—पुस्तकालयाध्यक्षों की ट्रेनिङ्ग (घ) इण्डिया आफिस लाइब्रेरी के लिए प्रयत्न (च) हस्तलिखित ग्रंथों की खोज (झ) प्रदेशों में पुस्तकालयों और संघों की प्रगति (अधिक भारतीय पुस्तकालय संघ की प्रगति—इण्डियन लाइब्रेरी आइरेक्टरी—उत्तर प्रदेश (प्रांतीय केन्द्रीय पुस्तकालय—पिछा-प्रसार विभाग—पुस्तकालय-विज्ञान की पिछा—पुस्तकालय—संघ) बिहार—बिहार राज्य पुस्तकालय-संघ—पुस्तकालयाध्यक्षों का प्रशिक्षण—संघ के क्रिया-कलाप—बिहार में प्रथम पंचवर्षीय योजना—बिहारपुस्तकालयों की ग्राह्यता का विवरण—पुस्तकालय संघ—अधिक भारतीय पुस्तकालय—विज्ञान परिषद्—नालन्दा का पुस्तकालय)—पंजाब—(पुस्तकालय-संघ—इण्डियन लाइब्रेरियन—पैप्सु—पैप्सु पुस्तकालय-संघ)—बिस्की—(नए पुस्तकालयों की स्थापना—गुणने पुस्तकालयों का विस्तार—पुस्तकालय सम्बन्धी विरोध कायोजन—पुस्तकालय—संघ—पुस्तकालय—विज्ञान की दिशा)—बम्बई (कर्नाटक लाइब्रेरी एसोसिएशन—यूनिवर्सिटी लाइब्रेरी—महाराजा गांधी रिसर्च प्रजेक्टन कमेटी—पुस्तकालय-संघ—बम्बई लाइब्रेरियन स्टाफ यूनिट—पुस्तकालय-विज्ञान की पिछा)—मद्रास (मद्रास लाइब्रेरी एसोसिएशन)—बंगाल—इण्डियन एसोसिएशन ऑफ स्पेशल लाइब्रेरीज एंड इन्फर्मेसन सेविस—ईरान—मैसूर—द्राबन्गोर—कोचीन—मध्यप्रदेश—छीराट्टु—राजस्थान—बोम्बे—पुस्तकालयाध्यक्षों का अध्ययन—लाइब्रेरियन काउंसिल—(म) पुस्तकालयाध्यक्षों की विदेश यात्राएँ—ड्वीट कोल एनुकेशनल इन्फर्मेसन प्रोसेस तथा अन्य पुस्तकालयाध्यक्षों का सम्मेलन—डा० रङ्गनाथन का महात्मन स्थाप—स्वाधीन भारत में पुस्तकालय-विज्ञान सम्बन्धी ग्राह्यता ।

१० भारत में पुस्तकालयों का भविष्य
 अनुक्रमणिका
 सहायक सामग्री

१७६ १७८
 १७९-१८३
 १८४ १८६

भारतीय पुस्तकालयों की पृष्ठभूमि

पुस्तकालय की मान्यता

अब यह बात सामग्रीय रूप से स्वीकार कर ली गई है कि पुस्तकालय केवल शिक्षण-संस्थाओं के लिए ही आवश्यक सहायक नहीं है बल्कि सभी प्रकार के बौद्धिक सामाजिक और धार्मिक क्रियाकलाप के लिए भी जरूरी है। पुस्तकालयों और उनमें व्यवस्थित पुस्तकों की संख्या से किसी भी देश की प्रगति का अनुमान सरलतापूर्वक समझा जा सकता है। पुस्तकालय की सबसे बड़ी कमीटी उसके उपयोज्य करनेवालों की संख्या है जिनके लिए यह स्वामित्व किया गया हो। अतः अब राष्ट्रीय उत्थान में पुस्तकालय-आन्दोलन को बीरे-बीरे एक प्रभावकारी साधन के रूप में मान्यता मिल रही है। साथ ही यह अनुभव किया जाने लगा है कि पुस्तकालय की व्यवस्था एक आर्थिक व्यवस्था है उसके जमाब में आर्थिक शिक्षा पर व्यय की जाने वाली जनराशि व्यर्थ हो जायगी क्योंकि वह शिक्षा फिर निरक्षरता में बदल जायगी।

पृष्ठभूमि के आधार

भारत का क्षेत्रफल लगभग २२ ९६ ९०० वर्गमील है। जन-संख्या के दृष्टिकोण से संसार में इसका दूसरा स्थान है। १९५१ की जन-गणना के अनुसार यहाँ की जन-संख्या ३५, ९८, ७९, ३९४ थी। यह संख्या बड़े का १९५६ में ३८ ६५ करोड़ तक पहुँच चुकी है। यह विशाल जन-संख्या १५ प्रदेशों तथा ६ केन्द्र द्वारा शासित क्षेत्रों के ३०१८ जिलों और ५,५८,०८९ गाँवों में बड़ी हुई है। इनमें से १९५१ की जन-गणना के अनुसार केवल १६९१ प्रतिशत लोग ही साक्षर हैं और साक्षरता के मुख्य साधन पुस्तकालयों की संख्या तो कुल १२ ०० ही है। फिर भी शिक्षा के आधिपत्य से लेकर अब तक के इन पुस्तकालयों का भारत में क्या विकास होते हुआ? यह एक मनोरंजक एवं खोजपूर्ण कहानी है। स्वतन्त्र भारत में पंचवर्षीय योजनाओं के अन्तर्गत पुस्तकालयों के विकास का जो प्रयास किया जा रहा

है, वह भी पुस्तकालय के इतिहास का एक महत्वपूर्ण अंग है। लेकिन इन विषय को मसीमाति समझने के लिए भारत की भाषाओं भारतीय लिपियों भारत में लिखने के प्रकार की प्राचीनता और भारतीय इतिहास की राजनीतिक उन्नति-पुनर्जागरण को संक्षेप में जान लेना आवश्यक है, क्योंकि इन बातों का भारतीय पुस्तकालयों के ऊपर विशेष प्रभाव पड़ता रहा है। ये ही भारतीय पुस्तकालयों की पृष्ठभूमि है। भारतीय धरा का तो पुस्तकालयों से घनिष्ठ सम्बन्ध रहा ही है अतः उसका अल्पतः पुस्तकालयों की बदलती हुई स्थिति के साथ-साथ ही करना उचित होया। अब उपर्युक्त चार विषयों में से प्रत्येक की संक्षिप्त चर्चा की जायगी।

भारतीय भाषाएँ

भारतीय मूलद्रव्य में अनेक जातियों और भाषा भाषाओं के जोन बसे हुए हैं। भारत के इन भाषा-समूह का विवेचन स्वर्गीय सर जार्ज ग्रियसन ने 'सिम्बलिस्टिक सर्वे आफ इण्डिया' नामक ग्रन्थ के भीत अध्यायों में किया है। इसमें उन्होंने भारत की भाषाओं की संख्या १७९ और उपभाषाओं की संख्या ५४४ की है। इन १७९ भाषाओं में से १०९ भोट-चीन भाषा बोली के अन्तर्गत आती हैं जिनमें से कितनी ही तो छोटे-छोटे कबीलों या उपजातियों की भाषाएँ हैं। इनमें से कुछ भाषाएँ तो बहुत बड़े बड़े लोगों में प्रचलित हैं।

इनके अतिरिक्त २४ और भाषाएँ अन्य भाषा-बोलीयों के अन्तर्गत हैं जो लप्य हैं। ये जो भाषाएँ बचती हैं उनमें से निम्नलिखित १५ भाषाएँ ऐसी हैं जो भारत की प्रधान मुख्य या साहित्यिक भाषाएँ बनी जा सक्यो हैं —

हिन्दी, उर्दू, बंगला उड़िया मराठी गुजराती सिन्धी, कन्नड़ी, पंजाबी नेपाली आसामी तेलगु, कन्नड़ तामिल और यमनासत्र।

इनमें से एक से म्यात्र तक की भाषाएँ आज बोली की और ये चार साहित्यिक बोली की हैं।

भारत में प्राचीन तथा मध्य युग में भाषाओं का इतना विवेक नहीं था। हजार बरहूँ ही या दो हजार वर्ष पहिले देस के एक बड़े हिस्से में एक ही भाषा बलती थी। उस समय इन चार भाषाओं और उपभाषाओं के आदि रूप में चार, पाँच या छ प्रकार की प्राकृत बलती थीं। वे एक दूसरे के इतना निकट थीं कि लोग परस्पर व्यवहार के ही उनको समझ लिया करते थे। धीरे-धीरे जहाँ प्राकृतों से इन भाषाओं का उत्पन्न और विकास हुआ। इनको इन प्रकार समझा जा सकता है —

जब देव में प्राकृतों का प्रवसन था उस समय जनता अपनी प्राचीन या स्थानीय बोलचाल की भाषा को लेकर अपना वैदिक क्रम बचाती थी। लेकिन उच्च स्तर के तथा विविध लोग जिनके हाथों में वेद के संशोधन का भार था, हिन्दू धर्म में संस्कृत भाषा की सहायता से कार्य करते थे। इसी परम्परा के अनुसार मुसलमानी शासनकाल में फारसी की सहायता से तथा ब्रिटिश शासन काल में अंग्रेजी भाषा की सहायता से कार्य होता रहा। जब स्वतन्त्र भारत में हिन्दी भाषा को इसके लिए चुना गया है।

ऊपर बिना संस्कृत भाषा का बिना किया गया है, यह भाषों की भाषा थी। उसी भाषा में भाषों के मुख्य और आदि धर्म 'वेद' आज भी पाये जाते हैं। इस संस्कृत भाषा के प्राचीन रूप को वैदिक संस्कृत और बाद के रूप को कौटिलिक संस्कृत कहते हैं। बाद का साहित्य बिना पुष्प, रामायण आदि सम्मिलित है, यह औद्योगिक संस्कृत में लिखा गया।

इस प्रकार प्राचीन भारत के पुस्तकालयों में अनेक ठेका प्राकृत भाषा की पोथियों की प्रचुरता रही। समय के परिवर्तन के साथ-साथ उनमें अन्य भाषाओं के ग्रन्थों को स्थान मिला और आज के भारतीय पुस्तकालयों में भारतीय भाषाओं के अतिरिक्त अनेक विदेशी भाषाओं की पुस्तकें बहुत बड़ी संख्या में पाई जाती हैं।

भारतीय लिपियाँ

कौटिलिक पुस्तकालयों में विविध शासक-शासकी का संग्रह होता है। इसमें भारतीय पुस्तकालयों की परम्परा के सम्बन्ध में यहाँ की लिपियों का भी ज्ञान आवश्यक है। प्राचीन काल में भारत में ब्राह्मी (पाली बनी) और परोक्षी भाषा की लिपियाँ प्रचलित थीं। इनमें से ब्राह्मी एक प्रकार से राष्ट्रीय लिपि थी। इसका प्रसार विश्वोत्तर प्रदेश की छोड़ कर समस्त भारतभर में था। यह बाईं ओर से दाहिनी ओर की लिपी जाती थी। विश्वोत्तर प्रदेश में परोक्षी लिपि का प्रचार था और यह दाहिनी ओर से बाईं-ओर की लिपी जाती थी। परोक्षी लिपि का सम्बन्ध विदेशी ऐतिहासिक ग्रन्थों की लिपि से है। लेकिन ब्राह्मी लिपि भाषों का मौखिक आदिभार था। यद्यपि आज सम्पन्न बहुत पुष्पनी है फिर भी ई. पू. ३० के पहिले ही आज भाषा में लिखा हुआ कोई भी लेख न तो अभी तक मिला है और न पता ही गया है। इसलिए मौखिक ही ब्राह्मी लिपि को ही आधुनिक भारतीय लिपियों में आदि लिपि मानना पड़ता है। मध्य तथा आधुनिक कालों की समस्त भारतीय लिपियाँ इन ब्राह्मी लिपि से निवृत्त हैं। इनसे इन प्रकार नगमा का उदय है —

भारतीय प्राचीन पुस्तकात्म्यों में भी ब्राह्मी लिपि में लिखे ग्रन्थ नहीं मिलते किन्तु सिक्किम तथा कुछ फुटकर मन्ने प्राप्त हैं। पुस्तकात्म्यों में ब्राह्मी लिपि से उत्पन्न अन्य प्रसिद्ध लिपियों में लिखे एवं छपे ग्रन्थ पाये जाते हैं।

भारत में लिखने के प्रकार की प्राचीनता

भारत में लिखने की प्रथा अति प्राचीन काल से बनी जा रही है। यहाँ प्रकृति की कृपा से मौज-यत्र और ताड़-यत्र प्राप्त थे। अतः इन पर लिखाई का काम होता था। लेकिन यहाँ की बह्व्यापु ऐसी है कि मौज-यत्र ताड़-यत्र और कावज पर लिखे ग्रन्थ हजारों बय तक नहीं टूट्टर सकते। फिर भी मौज-यत्र पर लिखा हुआ सबसे पुराना संस्कृत ग्रन्थ 'संयुक्तानाम' नामक बौद्ध सूत्र है। यह डा० स्ट्राहन को बेटाना प्रदेश के बड़सिक स्थान में मिला था। उसकी लिपि ई० सन् की चौथी शताब्दी की मानी जाती है। ताड़-यत्र पर सबसे पुराना ग्रन्थ तुरखन मध्य एशिया में अरबधोप के तीन माटकों पर ब्राह्मी लिपि में लिखित ब्रुट्टि बंध के रूप में मिला है। यह ई० सन् की छठवीं शताब्दी के आस-पास का लिखा माना जाता है। कावज पर लिखे चार उत्कल के ग्रन्थ मध्य एशिया में मारकण्ड नगर से ई० मील दक्षिण में 'कुमिजर' स्थान से भी बेबर महीरम की प्राप्त हुए जिनका समय डा० हामली ने ई०-सन् की पाँचवीं शताब्दी का अनुमान किया है। प्राचीन सिक्किम मौर्मबंधी राजा अछोक के समय ई० सन् की तीसरी शताब्दी के हैं जो पत्थर के सिंहाल स्तम्भों पर और बट्टाओं पर प्रायः सारे भारत-भय में पाये जाते हैं। अछोक से पूर्व के भी दो छोटे सिक्किम राजमेर जिसे के बड़सी बाँव से तथा नेपाल की तराई के निपावा नामक स्थान के एक स्तूप के भीतर से पाए गए हैं। इनकी लिपि अछोकप्राचीन लिपि से पुरानी है और सम्भवतः ई० पू० ४४३ की है। इन सिक्किमों से ऐसा मामूम होता है कि ई० सन् के पूर्व पाँचवीं शताब्दी में लिखने का प्रकार इस देश में सामान्य बात थी।

इनके अनिश्चित ई० पू० ३२९ में भारत पर आक्रमण करने वाले सिन्धु-नर महानु के एक सेनापति जिजाका ने भी लिखा है कि 'यहाँ के लोग कई (कई के बियड़ों) को कूट कर जिनके के लिए बागज बनाते हैं। मेरा स्वामी ने भी लिखा है कि 'यहाँ पर हम-रन स्टेडिआ (एक स्टेडिआ = १०६ फीट ९ इंच) के अन्तर पर पत्थर लगी है, जिसे पयशात्म्यों का तथा बूट्टे का पना बल्ला है। अये बय के दिन जारी कज (बंघाण) तुनाया जाता है। जय-यत्र बनाने के लिए बय समय लिया जाता है और न्याय सिद्ध के

बहुधा होता है। इन दोनों युक्तियों के बलवत्त्व से स्पष्ट है कि ई० सन् की चौथी शताब्दी में यहाँ के लोग काव्य बनाना जानते थे। पञ्चाङ्ग और ज्योतिष-ग्रन्थ बतते थे और मीमांसा के सूक्त परंपरा भी लगते थे। ये बातें सिद्ध-कला की प्राचीनता को प्रकट करती हैं। बौद्ध ग्रंथों में सिद्धने की कला को प्रशंसा की गई है। बालक के ग्रंथों में सागरी तथा सरकारी वर्षों कव्यकार की ठहरीयों पीत्यकों (पुस्तकों) कुटुम्बसम्बन्धी आवश्यक विषयों उच्च-कीय भाषणों तथा बर्म के नियमों को सुवचन-ग्रंथों पर सुवधाए जाने का बलन मिळता है। महाबल (विनयपिटक का एक ग्रन्थ) में केला (सिद्धना) गणना (पहाड़ा) और रूप (द्विसाव) की पढ़ाई का बातकों में पाठ-शाळाओं तथा विद्यालयों के सिद्धने के पढ़क (टक्की) का और 'सिद्ध विस्तर' ग्रंथ में सुवचन का सिद्धिशाळा में जा कर अध्यापक सिद्धामित्र से बचन की पाठी पर सोने के बचक (कर्म) से सिद्धना सीखने का बचन मिळता है।

इन उद्धरणों से ई० पू० की छठी शताब्दी के ज्ञान-प्राप्त की सिद्धना रचा का पता चलता है और सिद्ध होता है कि उस समय सिद्धने का रिवाज एक छात्राण बात हो गई थी। सिद्धना और बालक भी सिद्धना जानते थे और प्रारम्भिक पाठशाळाओं की पढ़ाई ठीक ऐसी ही थी जैसी कि आज सिद्धनी जाननी पाठशाळाओं की है।

महामारुत स्मृति कौटिल्य के अर्थशास्त्र और वात्स्यायन के कामसूत्र-ग्रन्थों में भी सिद्धना और क्लिप्त पुस्तकों का उल्लेख पाया जाता है। पाणिनि (ई० पू० ५००) ने अष्टाध्यायी में 'सिद्धि' (सिद्धना) क्लिप्त-कारण स्वस्ति के सिद्ध और 'ग्रन्थ' का भी उल्लेख किया है। उन्होंने कई ग्रंथों और अपने पूर्ववर्ती जगमम १२ व्याकरणों के नाम भी किये हैं। पाणिनि से भी पूर्व यास्क ने अपने निष्कल में अपने से पूर्ववर्ती निष्कलकारों के नाम किये हैं किन्तु पता चलता है कि यास्क और पाणिनि से बहुत पहले व्याकरण और निष्कल के ग्रंथ किये गए थे जो ज्ञान-प्राप्त नहीं हैं। जंबोव्य उपनिषद् और ऐतरेय ब्राह्मण में 'कर्मणः स्वरो' और उनके प्रकरणों का विवेचन मिळता है। घटपच ब्राह्मण में क्लिप्तों के भेद एक बचन बहुबचन-बचन पाये जाते हैं।

उपनिषद् प्रमात्यों से, उपनिषद् ब्राह्मण और ब्राह्मण ग्रंथों से पूर्व व्याकरण-ग्रंथों के होने का पता लगता है। यदि उस समय तक सिद्धने का प्रचार न होता तो उसके व्याकरण और पारिभाषिक ग्रंथों की बर्चा कौ-

(१) ४००० ई० पूर्व से २००० ई० पूर्व तक

इस काल का क्रमबद्ध इतिहास बहुत ही विचारग्रस्त है। भारत के आदि निवासी कौन थे ? आर्य यदि बाहर से आये तो उनके पहले यहाँ किस जाति के लोग रहा करते थे ? क्या वे भी बाहर से आए थे जन्मा यहीं के मूल निवासी थे ? आदि बातों पर अभी तक विद्वानों में एक मत नहीं हो पाया है। फिर भी हड़प्पा और मोहनजोदड़ो की खुराई से जो सामग्री प्राप्त हुई है, उससे यह सिद्ध होता है कि आज से चार हजार वर्ष पहले सिन्धु नदी में एक सभ्यकोटि की सम्पत्ता का विकास हो चुका था। इस काल की खुराई महत्त्वपूर्ण घटना जार्यों का भारत में बाहर से आबमन है। एसा इतिहासकारों का मत है कि आज लोग ३००० ई० पू० से २५०० ई० पू० भारत में आए। उनकी अपनी सभ्यकोटि की सम्पत्ता एवं संस्कृति थी।

(२) २००० ई० पू० से ६०० ई० पू० तक

इस काल में आर्यों ने २००० ई० पू० से १५०० ई० पू० तक पूर और दक्षिण में अपने उपनिवेश बनाए। सामिक संघों की रचना की। अपने अनेक छोटे-छोटे राज्य स्थापित किए। इस प्रकार इस काल में आर्य सम्पत्ता का उत्तरोत्तर विकास होता रहा।

(३) ६०० ई० पू० से ३०० ई० तक

इस काल में भारत का अधिवास भाग आज सम्पत्ता से प्रभावित हो चुका था। सम्पूर्ण भारत अनेक जनपदों में बँट गया था। पश्चिमी पठारकी पूर से कोषों में आधिपत्य की भावना और पकड़ने लगी थी और संघर्ष शुरू हो चुके थे। इसके फल-स्वरूप नगण व सिन्धुनाथ संघ की स्थापना हुई। साम्राज्यकारी नीति को अपना कर पहले अंब और सिन्धुद्वि जैसे न्यातंत्रों पर विजय प्राप्त की। बीरे-बीरे ई० पू० बीबी सताम्मी तक पंजाब और सिन्धु को छोड़कर पूरा भारतवर्ष नगण राज्य के क्षेत्र में आ गया था। इसी काल में ३२७ ई० पू० में ३२५ ई० पू० के बीच सिन्धु नदी महान् ने भारत पर चढ़ाई की। इसी बीच बैरिफ बम क विरोध में पार्षिक क्रियाएँ भी हुईं जिसके फलस्वरूप भारतीय गणराज बैरिफ बम एवं बौद्ध इन तीन बमों में बँट गया। ३२१ ई० पू० नगण का निहामन मोषी क ह्राप आ गया। अश्वमेध योजन नगण साम्राज्य को हिन्दुनाथ तथा हिरान् ठक ईला दिला। २०० ई० पू० से २३० ई० पू० तक नगण नगण के निहामन पर रहा। उनका राज्यपाल में नगण साम्राज्य भारतवर्ष नगण साम्राज्य के

बपीन का गया। कलिङ्ग के युद्ध में बार बार-संहार से क्षिप्त हो कर जयने बौद्ध धर्म स्वीकार कर लिया। फिर तो बौद्ध धर्म के नाम पर क्रम पड़े। भारत के कोने-कोने में तथा पड़ोसी राष्ट्रों में भी बौद्धधर्म का प्रचार एवं प्रसार हो गया। बौद्धधर्म की बहिष्ता और शान्तिप्रियता की नीति का देश की राजनीति पर बुरा प्रभाव पड़ा। सम्राट् अशोक की ऐनिक शक्ति का ह्रास होने पर देश के ऊपर विदेशी हमलों का ताँपा सा बँब गया। यूनानी शक कुषाण और हूण आदि विदेशी आतियों ने परिशमोत्तर की ओर से भारत पर भीषण आक्रमण किए। इस प्रकार २०० ई. पू० से ईसा की तीसरी सताब्दी तक राजनीतिक स्थिति बहुत ही बुरी-बुरी रही। बीरे-बीरे १२० ई० में मगध में गुप्त साम्राज्य का उदय हुआ जिसने फिर एक बार देश में एक सुदृढ़ राज्य स्थापित कर लिया। इतिहासकार इस 'गुप्तकाल' को भारत का 'स्वर्ण युग' कहते हैं।

(४) ३०० ई० पू० से इस्लामी विजय तक

गुप्तवंश का साम्राज्य दो सताब्दियों तक भारत में बना रहा। इस काल में वैदिक सभ्यता और संस्कृति का एक बार फिर उत्थान हुआ। लेकिन हूणों के आक्रमण ने गुप्त साम्राज्य को जबर कर दिया और सम्पूर्ण देश छोटे छोटे राज्यों में बँट गया। पञ्चोत्थान, सशक तथा हयवर्धन आदि राजाओं ने भारत में पुनः एक साम्राज्य स्थापित करने की चेष्टाएँ की किन्तु सफलता न मिल सकी। बखिब में बाहुम्यों और उनके पश्चात् राष्ट्रकूटों का बौर रहा। बंभाळ में पासर्बुस और राजस्थान तथा कन्नौज में कुजर प्रतिहार बंध के लोगों का बौर बना रहा। आपसी संघर्ष में इन लोगों की भी शक्ति नष्ट हो गई। इस प्रकार देश छोटे-छोटे राज्यों में बँट गया। फिर तो संघटित हो कर शत्रु से मोर्चा लेने की शक्ति देश में न रह गई।

सातवीं सताब्दी से बारहवीं सताब्दी तक का समय भारतीय इतिहास में 'राजपूत काल' कहलाता है। महामुघ यकनबी के हमले से १५० वर्षों बाद तक भारत पर विदेशी हमले नहीं हुए किन्तु इस बीच भी राजपूत क्षीय संघटित होने के बजाय आपस में लड़ते रहे और इस प्रकार उनकी शक्ति का ह्रास हो गया। दारुशुही सताब्दी के अन्त में उत्तरी भारत में दो प्रसिद्ध राज्य थे—कन्नौज में गहरवार बंध का और दिल्ली अजमेर में चौहान बंध का। ११९२ में मुहम्मदगोरी ने हमला करके इनको भी नष्ट कर दिया। इस प्रकार भारत में इस्लामी राज्य स्थापित हुआ।

दक्षिण भारत के राज्यपुटों की वर्धा उत्तर की भांति हुई । सन् १९०० से १९११ ई० तक ही उनका जोर रहा । इसके बाद उनका साम्राज्य बेवर्धित के पादकों और द्वारसमुद्र के हीदमकों से बढ़ गया । सुदूर दक्षिण में कस्तूर-घण्टि का जोर नहीं घटावही तक बना रहा । इसके बाद उनका स्वतन्त्र बौद्ध घण्टि ने नै सिद्धा विस्तार प्रमुख देखवही घटावही तक बना रहा ।

(३) इस्लामी राज्य

मुहम्मद मोदि ने ११९२ ई० में उत्तरी भारत पर विजय प्राप्त की थी । उसके एक मुख्यतः कुतुबुद्दीन ऐबक ने दिल्ली में 'गुलाम बंध' की नींव डाली । सन् ११९२ से १५२५ ई० तक दिल्ली पर गुलाम बंध विस्तारी बंध तुलक बंध तैबर बंध तथा लोदी बंध का राज्य ब्रह्मण्ड बन्धा रहा । सन् १५२५ में बाबर ने भारत पर हुमय्य करके विजय प्राप्त की और मुगल राज्य की स्थापना की । २०० वर्षों तक भारत पर मुगलों का शासन बना रहा । औरंगजेब के बाद मुगल साम्राज्य विघटित होने लगा और छोटे-छोटे राज्य स्थापित होने लगे ।

इस इस्लामी शासन काल में भी कुछ हिन्दू राज्य अपना अस्तित्व बनाए रहे । दक्षिण में विजयनगर का साम्राज्य १३५० से १५६५ तक चलता रहा । बम्बय के शासन काल में पेवाड़ का राज्य अपना स्वतंत्र अस्तित्व बनाए रहा और महाराष्ट्र का प्रताप न खपीलता स्वीकार नहीं की । मुगल साम्राज्य के अस्तित्व विधों में दक्षिण में मराठों का स्थापन में राजपूतों और पञ्जाब में सिक्कों ने अपने-अपने स्वतंत्र राज्य स्थापित कर लिए । मराठों ने ही बदायूँही सत्तावही के अंत प्रायः सम्पूर्ण भारतवर्ष में अपना प्रमुख स्थापित कर लिया था ।

(६) अंग्रेजी काल

यद्यपि लोकवही सत्तावही ने ही भारत में वीरोधीय कारिणों का आना प्रारंभ हुआ फिर भी नै व्यापार ही करती रहे । उनमें एक पुर्तगाली एन्टिग वासीगी तथा ब्रह्मण्ड नै । पीरे-वीरे इस कारिणों ने भारत की विरती हुई राजनीतिक स्थिति से अनुचित लाभ उठाना चाहा और नै अपने राज्य स्थापित करने के लिए इधर उधर हाथ-पैर भी डालने लगीं । उनके इस आणवी संघर्ष में अंग्रेजों की जीत हुई । उनकी शक्ति दिनों दिन बढ़ने लगी । उन्होंने १८१८ ई० में मराठ्य घण्टि को पछड़िन कर लिया और १८४९ ई० में सिक्कों का राज्य भी छीन लिया । इस प्रकार अंग्रेजों ने जब कर भारत पर ११ अक्षय सन् १९४० तक राज्य दिया ।

(७) स्वाधीन भारत

भारत में अंग्रेजी शासन के विरुद्ध बीरे-पीरे जनता में विद्रोह की भावना प्रबल होती गई। सन् १८५७ ई० में स्वतंत्र-शाहीरों की पहली विद्रोही कूट हुई। अंग्रेजों ने उसे 'सिपाही विद्रोह' कह कर बड़ी निर्ममतापूर्वक दबा दिया। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना बम्बई में सन् १८८५ में हुई। इसका उद्योत्तर विकास होता गया। बंग में महात्मा गांधी के नेतृत्व में १५ अगस्त १९४७ ई० को भारत को अंग्रेजों के पौरुषापी बंधे से मुक्ति मिली किन्तु इस विद्रुस्ताह और पाकिस्तान की भागों में बंट गया। भारत में प्रजासत्तािक प्रजाधी के कोरल एक की सरकार स्थापित हुई। उसने अपनी प्रथम पंचवर्षीय योजना में देश के अनेक क्षेत्रों में काफी विकास किया है। अब द्वितीय पंचवर्षीय योजना चल रही है। इन योजनाओं में मुद्रास्फुरण के विकास की ओर भी पर्याप्त ध्यान दिया गया है।



भारतीय पुस्तकालयों का काल-विभाजन

काल-विभाग

वैसा कि पिछले अध्याय में कहा जा चुका है कि भारत में भाषों का मापमान १००० ई० पू० और २५०० ई० पू० के बीच हुआ। उसके पूर्व यहाँ पर 'सिन्धु सभ्यता' का अस्तित्व पाया जाता है। हड़प्पा और मोहन-जोदड़ो की खुदाई से इस बात का स्पष्ट पता चलता है कि यहाँ पर भाषों के जाने से पहले भी एक सभ्य और सुसंस्कृत सभ्यता मौजूद थी। यह बात सुमरी है कि उसका अधिक फैलाव न रहा हो। इस प्रकार भाषों के जाने से दो हजार वर्ष पूर्व की सिन्धु सभ्यता से ले कर अब तक क लगभग १९५० वर्षों को पुस्तकालय के उद्भव और विकास की दृष्टि में सात भागों में बाँटा जा सकता है —

- १ प्रागैतिहिक काल ५००० ई० पू० से २५०० ई० पू० तक
- २ वैदिक काल २५०० ई० पू० से ५०० ई० पू० तक
- ३ पौराणिक काल ५०० ई० पू० से १२०० ई० तक
- ४ मुस्लिम काल १२०० ई० से १७०० ई० तक
- ५ संघिक काल १७०० ई० से १८१३ ई० तक
- ६ ब्रिटिश काल १८१३ ई० से १९४७ ई० तक
- ७ स्वाधीनता काल १९४७ से अब तक

आधार

सिन्धु सभ्यता से ले कर वर्तमान काल तक को उपर्युक्त सात भागों में विभाजित किया गया है। उसका आधार अनेक ऐतिहासिक घटनाएँ हैं। सिन्धु-सभ्यता से वैदिक काल के बीच इतना अन्तर है कि उसे एक अलग काल मानना उचित है। वैदिक काल काव्य के निर्माण काल से ले कर पञ्चगानु ब्रह्म के प्रथम काल के लगभग तक माना गया है। उसके बाद से लगभग पुस्तकालय के उद्भव तक बीस बान और उसके पश्चात् बुद्ध-दास्य की महापिठ तक लगभग मोट घोर पर मुस्लिम काल मान लिया गया है।

मुद्रण-शासन की समाप्ति से सन् १८११ ई० तक के काळ को सन्धि-काल इसलिए कहा गया है कि इस बीच पुराने ढर्रे से बने आ रहे पुस्तकालयों को कुछ मजबूत सहाय नहीं मिल सका। इससे वे बीसे बने रहे और कुछ तो सवा के लिए गह हो गए। सन् १८११ ई० से बृटिश काल का प्रारम्भ इसलिए माना गया है कि इसी सन् में पार्लियामेंट के आज्ञा-पत्र के अनुसार ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने भरतीयों की शिक्षा की जिम्मेवारी आधिकारिक रूप में अपने ऊपर ली और तदनुसार शिक्षा के साथ-साथ पुस्तकालयों का भी उत्तरोत्तर विकास होता गया। १९४७ ई० में अंग्रेजी राज्य के समाप्त होने पर पुस्तकालय-विकास के लिए एक नये युग का प्रारम्भ हुआ। यह काळ स्वाधीनता काल है जो १५ अगस्त १९४७ ई० से प्रारम्भ होता है। इस काळ में पुस्तकालयों की स्थापना और उनके विकास के लिए अनेक महत्वपूर्ण कदम उठाए गए हैं।

प्रत्येक काल में पुस्तकालयों का विकास एक अजीब ढंग से होता रहा है। काल-निर्माण से यह बात न समझनी चाहिए कि एक काल में ही कई बर्षों के बाद एक दम गए दंग के पुस्तकालय होंगे। हर एक परवर्ती काल में पूर्ववर्ती काल के या कालों के ढंग के पुस्तकालय किसी न किसी रूप में रहे हैं। जराहरणार्थ बौद्धकालीन पुस्तकालयों के युग में भी वैदिक कालीन पुस्तकालयों की परम्परा बनी रही। जो लोग बौद्ध केन्द्रों के पुस्तकालयों से घाम उठाना नहीं चाहते थे वे वैदिककालीन ढंग से शिक्षा प्राप्त करते रहे और उस ढंग से व्यवस्थित पुस्तकालयों से काम उठाते रहे। इसी प्रकार मुस्लिम काल में बहमि पुस्तकालयों के रूप में कुछ परिवर्तन हुआ। फिर भी पुराने वैदिक और बौद्धकालीन पुस्तकालय पन-तप बने ही रहे। आज भी कम कि पुस्तकालयों का सार्वजनिक रूप से प्रचार होता आ रहा है फिर भी विभिन्न-भाषा-ग्रन्थियों के विभिन्न मठारक्षकियों के तथा विभिन्न धर्म के लोगों के अनेक स्वतंत्र पुस्तकालय विद्यमान हैं, यद्यपि समय की माँग के अनुसार उनमें भी बड़ा बहुत परिवर्तन आ ही गया है। इसलिये पुस्तकालय के सद्युग और विकास की परम्परा जानने के इच्छुक प्रत्येक व्यक्ति को यह बात स्मरण रखनी चाहिए कि प्रत्येक काल का एक-दूसरे से बलिष्ठ सम्बन्ध है और प्रत्येक काल के पुस्तकालयों पर उस काल की सम्प्रदाय और संस्कृति का तथा राजनीतिक उदय-पतन का बड़ा प्रभाव पड़ा है।



प्राग्वैदिककालीन पुस्तकालय

सिन्धु सभ्यता

पारबाल्य विद्याओं तथा कनिषप देशी विद्याओं का यह मत था कि वैदिक सभ्यता भारत की प्राचीन सभ्यता थी और इसका काल बी २००० ई० पू० से पहिले न मानते थे। परन्तु अंग्रेजों शासनकाल में तत्कालीन सरकार द्वारा सर जॉन मार्शल के नेतृत्व में सिन्धु प्रांत के मोहनजोदड़ो और हड़प्पा नामक दो स्थानों की खुदाई द्वारा जिस सुविकसित सभ्यता का पता लगा है, उससे यह स्पष्ट हो जाता है कि भारत की सभ्यता बहुत प्राचीन है। मात्र से स्थापन ६००० वर्ष पू० भी भारत एक उन्नत सभ्यता का क्षेत्र था। गार्डन चार्ल्स और हॉल जैसे विद्वान् तो इस सभ्यता को सुमेरीय सभ्यता की परमशक्ति मानते हैं। सिन्धु घाटी की इस सभ्यता को 'सिन्धु सभ्यता' कहा जाता है।

सिन्धु सभ्यता

सिन्धु सभ्यता भारतीय इतिहास की व्यापार-विज्ञान की। यह वैदिक काल की मूर्ति प्राम्य सभ्यता न थी बल्कि यह नगर-सभ्यता के रूप में थी। मोहनजोदड़ो के खननावशेष इस बात को सिद्ध करते हैं कि यह नगर सुविकसित रूप से बना हुआ था। इसकी समीचीनी खुदाई गुप्तर हुषादार मकान खानागार, मजबूत नासिया खुदायान कारि की व्यवस्था अपने समय की अनोखी छान छोड़ गई है। सिन्धु घाटी के निवासी हरि काय मानते थे। वहाँ कला-कौशल तथा व्यापार की व्यवस्था उन्नत थी। उनका व्यापारिक सम्बन्ध दूर-दूर देशों से था। वहाँ की वास्तुशिल्प में शौन्दव की अनेक उपयोगिता ही भावना अभिव्यक्त थी। वहाँ के निवासीयों की जीवन-शुद्धि नभी आश्चर्यचकित नामकी उपलब्ध थी। वहाँ के निवासीयों की शौन्दव के बाद वैश्वविद्यालयी बुनियादी शैली अद्वैत की नु' का

सभी सामग्री के होने का प्रमाण निश्चय है। उनके पास शस्त्रास्त्र भी थे। वे क्वाचित् तस्मिन् का भी उपयोग करते थे। वे सौम्य सामिक प्रकृति के थे। वे अपने शत्रुओं को बलासे तथा यादों भी थे।

सर खान भाशीर ने अपनी रिपोर्ट में कहा है कि— मोहनजोदड़ो के विद्यालय स्नानागार और एक से एक सुन्दर भवन उनके भीतर यहाँ कुएँ तथा बस-निर्गम की बहुसंख्य-प्रणालियाँ—इस बात के ठोस प्रमाण हैं कि उस युग के साधारण नागरिक भी ऐसी सुख शान्ति ऐसा विकासमय जीवन बिताते थे जिसकी उपमा उत्कालीन सम्य संसार के अन्ध किसी भी देश में नहीं थी। “इन दोनों स्थानों में जो सम्पत्ता हमारे सामने आई है, वह कोई प्रारम्भिक सम्पत्ता नहीं है बल्कि ऐसी है कि जो उस समय तक दुर्गों से प्राचीन हो चुकी थी भारत भूमि पर सुबूढ़ हो चुकी थी और उसके पीछे मनुष्य के हजारों वर्ष पूर्व का करणामा है। इस प्रकार अब से यह मानना पड़ेगा कि भारतवर्ष उस समय के प्रमुख देशों में से एक है जहाँ सम्पत्ता का जन्म और विकास हो चुका था। श्री गार्डन-चाइल्ड महोदय ने भी इसे बतमान भारतीय संस्कृति का आधार माना है।

सिन्धु सभ्यता की लिपि

। मोहनजोदड़ो और हड़प्पा के निवासियों के बीच कौन-सी लिपि और भाषा प्रचलित थी, यह प्रश्न अभी विचारग्रस्त है। जो भुवार्थ मिली है, उन पर की लिपि अद्वितीय है। मध्य पश्चिमी देशों की किसी लिपि से इस लिपि का कोई सम्बन्ध नहीं है। संसार के अन्य देशों की भाँति इस लिपि को भी चित्र लिपि के अन्तर्गत माना गया है। इंटर महोदय के मतानुसार सिन्धु लिपि संकेतात्मक है और इसकी उत्पत्ति पदार्थ चित्रों तथा साधारण चित्र लिपि से हुई है। इस लिपि में लगभग चार सौ वर्ण हैं जिनके ठीक रूप का पता नहीं चलता। यह लिपि बाएँ से बाएँ को पढ़ी जाती थी।

श्रीरामाकुन्द मुकर्जी ने ‘हिन्दू सम्पत्ता’ के पृष्ठ २१ पर इस प्रसंग में लिखा है —

सिन्धु उपत्यका के लोगों ने लिखने का भी आविष्कार किया था। वे एक प्रकार की लिपि काम में लाते थे जो उस काल की अन्य लिपियों (सबसे प्रारम्भिक एजम प्राचीन कुमेरु खिट और मिस्र) के समान कुछ विचारमय इज्जत की है। इस लिपि में ३९९ चिह्न हैं। इसके केवल मुदा नाशिकार्यों में मुहूर्तों पर, बर्तन के ठीकियों पर, तबिये के छोटे टुकड़ों

पर और मिट्टी के कण्डूओं पर पाये जाते हैं। कई जिल्लों से मिला कर धान बनाए गए हैं और कहरों में माधारों की लकी हुई पाल पायी है। कई लकीरों से मिला कर जिनकी संख्या १९ तक पहुँचती है, बिड़ल बनाए जाते हैं जो बकुकी कुरेला बरत माल पाये हैं। यह मिखाबट बाएँ से बाईं ओर बहती है। सम्मन है वहीं समाप्त होती हुई पंक्ति को बाएँ रखने के लिए बाईं ओर से भी पंक्ति को आरम्भ किया गया है। किन्कि-बिड़ल की यह संख्या बताती है कि सिन्धु की निधि बरत पर आधित न हो कर व्यापारिक बर्षों पर आधित है।

पुस्तकालय

इस प्रकार सिन्धु सभ्यता के निवासियों की उनकी अपनी सिधि और धारा थी। वे अपने विचारों को मूष की छत्रों लकड़ी की तल्लियों, नीय पत्तों तथा ताड़-पत्तों पर ब्रकट लिखा करते रहे हुंने। इस प्रकार की लिखित सामग्री को वे एकत्र करके रखते रहे हुंने जो कि आधुनिक पुस्तकालयों के आदि रूप न। सिन्धु सभ्यता की पुस्तकालय बनता की शुरुआत पम्बाब के लेकर सिन्धु और बलुचिस्तान तक फैली हुई थी और उसके साम ही ऐसे पुस्तकालय भी विद्यमान रहे हुंने। ऐसा अनुमान किया जा सकता है कि सिन्धु सभ्यता के इस नेत्र का विनाश सिन्धु की मयदुर बाढ़ तथा बाहरी आक्रमणों द्वारा हुआ और उसके साथ ही भारत की आदि सभ्यता के वे पुस्तकालय भी सदा के लिए नष्ट ही गए।



वैदिककालीन पुस्तकालय

सिन्धु सभ्यता के मरु होने के बाद भारत को पुनः अपने उस पौरव एक पहुँचने में अनेक असाध्यियाँ बीत गईं। इतिहासकों का मत है कि इस सभ्यता के अन्त के बाद लगभग ३००० ई० पू० आर्य लोग भारत में आए। वे बहुत ही सम्य और सुसंस्कृत थे। उनके पूर्वज आर्यों ने एक मीथिक बाहरी सिपि का आविष्कार किया था। उसका विकास होते-होते उसकी वह बगमाका बन गई थी जो आज की बेबनागरी बगमाका का पूर्वज थी। आर्यों की भाषा संस्कृत थी और वह उनके धार्मिक शब्द थे।

शिक्षा

इस वैदिक काल को सिदा और साहित्य की दृष्टि से छः भागों में बाँटा जा सकता है—

१ ऋग्वेद काल

२ सत्तर वैदिक काल

३ ब्राह्मण काल

४ उपनिषद् काल

५ सूत्र काल

६ स्मृति काल

केवल पुस्तकालयों के उद्भव और विकास की दृष्टि से इस काल के अनेक उप-विभागों की आवश्यकता नहीं है।

वैदिक काल में नगरों के कोलाहलपूर्ण वातावरण से दूर मुमुक्षु स्थापित किए जाते थे। वहाँ बालकों के पढ़ने-लिखने और चरित्र-निर्माण के लिए सभी सुविधाएँ होती थीं। विद्यार्थी विलासिता से दूर रह कर पिछा ग्रहण करते थे। बालक गुरु के परिवार का अङ्ग बन जाता था। वहाँ बालकों के शरीर, मन एवं आत्मा तीनों का प्रशिक्षण एवं विकास होता था। उस

काल में जैसी से जैसी शिक्षा निःशुल्क ही जाती थी। इस काल की सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि गुरु स्वयं चलते-फिरते पुस्तकालय हुआ करते थे। भोजपत्रों एवं ताड़पत्रों पर ग्रन्थ लिखे जाते थे किन्तु शिष्यों को लिखे हुए ग्रन्थों को पढ़ने की सख्त मनाही (निषेध) थी। गुरु के मुख से शिष्य शैशो की श्रवणों तथा अन्य ज्ञान को सु। लेते थे और उसको कण्ठस्थ कर लिया करते थे। इसका परिणाम यह होता था कि ग्रंथ बहुत ही कम संख्या में होते थे। वे ग्रंथ गुरुओं के पास ही उनके निजी पुस्तकालय के रूप में रहते थे। निजी पुस्तकालयों की यह परम्परा आज भी वैदिक शास्त्रों के पत्रों में पाई जाती है। उस काल में एक-एक गुरु के बहुत से शिष्य हुआ करते थे। विद्या-दीक्षा के ठाक ही साधन से गुरुओं की बन्धों की प्रतिरिति करने में भी सहायता क्रिया करते थे। इनसे गुरुओं के ये पुस्तकालय मह हीने में बने रहते थे।

वैदिक काल में अश्वीर काल से स्मृति काल तक राजतन्त्र चला रहा। पुराहितों समाजों और समितियों के सहयोग से राजतन्त्र को प्रणाली बलती रही किन्तु स्मृति काल में राजतन्त्र बीला पड़ गया। इसका प्रभाव वैदिक-कालीन पुस्तकालयों पर भी पड़ा। अनेक ऐसे ग्रंथ राजकीय पुस्तकालयों में रखने की आवश्यकता हुई जिनसे राजतन्त्र के कार्य में सहायता मिल सकती थी। इस प्रकार के ग्रन्थों में स्मृति ग्रंथ प्रमाण समझे गए। इस प्रकार स्मृति ग्रंथों से मुक्त इस काल के राजकीय पुस्तकालय ही आजकल के केन्द्रीय प्रांतीय सरकारों के इलाखन एवं न्याय-विभाग के पुस्तकालयों के आदि रूप थे। चूंकि वैदिक काल में विद्या की ही शक्ति न थी बल्कि उस समय के पाठप-क्रम में परा (आध्यात्मिक) और अपरा (लौकिक) दोनों प्रकारकी विद्यार्थे सम्मिलित थीं इसलिए इनसे सम्बन्धित ग्रन्थ भी कुश्यों के गुरुकुलों के पुस्तकालय में होतीं थीं।

अग्निपद काल में जाने पर अनेक नए विषय ही गए और इनके ग्रंथ भी लिखे गए। अग्नीय अग्निपद में पाठप-क्रम की एक निम्नलिखित शक्ति बिलती है —

अग्निवेद, यजुर्वेद, अथर्ववेद, इतिहास और पुराण, न्याकरण, राशि (अष्ट शास्त्र), वैद, शशुन विद्या, निधि (भूर्गम विद्या), यापोयाक्य (तर्क शास्त्र) उकावन (आचार-शास्त्र), इय विद्या (भौतिकी), मद्य विद्या, भूत विद्या, प्राणिशास्त्र अत्र विद्या (सैन्य विद्या), नक्षत्र विद्या, उपनिष, सप विद्या, द्यजन विद्या, शिल्प विद्या, सङ्गीत शास्त्र एवं आयुर्वेद।

अतः स्पष्ट है कि उपनिषद्वासीन पुस्तकालयों में इन विषयों के ग्रन्थों का समावेश हो गया था।

स्मृति-काण्ड में ऊपर लिखे गए विषयों के अतिरिक्त वेदों की विविध शाखाओं, ब्राह्मण ग्रंथों, आरण्यकों, उपनिषदों, शिखा, कल्प, निरुक्त, व्याकरण ग्रंथ, धर्मान, धर्म शास्त्र, वैश्वानस सूत्र, नास्तिक धर्मान, बार्ता (अर्थ शास्त्र), आम्बीचिकी (तर्कशास्त्र) तथा इत्यदनीति (राजनीति विज्ञान) का भी उल्लेख पाया जाता है। इसके प्रकट हीठा है कि इस काल में पाठ्य-क्रम में ये विषय पढ़ये जाते थे और उनसे सम्बन्धित ग्रन्थ इस काल के पुस्तकालयों में आ गए थे।

ज्ञान पर एकाधिकार

प्रारम्भ में इस काल में ब्राह्मण क्षत्रिय और वैश्य की शिक्षा एक समान थी परन्तु क्यों-क्यों जाति-भेदस्था बृद्ध होती गई क्यों-क्यों तीनों वर्ग अनेक उपवर्गों में बँट गए और उनको शिक्षा में भी अन्तर हीठा गया। सामिक वर्गों का पठन-पाठन ब्राह्मण वर्ग की विशेष सम्पत्ति-सी हो गई। अन्य वर्गों की शिक्षा-दीक्षा का मार भी उन्हीं पर था। इस प्रकार धीरे-धीरे ज्ञान पर उनका एकाधिकार हो गया। कमकाष्ठ और यज्ञ की विधियों का जोर बढ़ता गया और ज्ञान में वैदिक ऋषि में धर्मों में शिक्षा की प्रवृत्तता और ऋषि काण्ड के अग्रजाल के कारण जगता की जगतास्वा-भी हीनै कयी। फिर भी वैदिकवासीन पठन-पाठन प्रांगाली बनती रही और उसके साथ ही साथ वैदिक वर्गों के पुस्तकालय भी बने रहे।

बौद्धकालीन पुस्तकालय

धार्मिक क्रान्ति

वैदिक धर्म की जाति-पाति व्यवस्था मान पर एकाधिकार और कर्म-बन्धन विधि में हिंसा के प्रोत्साहन के कारण छठी सताब्दी ई० पू० भारत में धार्मिक क्रान्ति हुई। उनके फलस्वरूप वैदिक धर्म के विरोधी दो बड़े सुधारकारी धर्मों का उदय हुआ। उनके नाम थे—जैनधर्म और बौद्ध धर्म। इस धार्मिक क्रान्ति का बहुत व्यापक प्रभाव उस समय की विद्या-वीथा और पुस्तकालय पर पड़ा।

इन धर्मों ने भोगयुक्त स्वयं के स्वार्थ पर मोक्ष एवं निर्वाण की जीवन का लक्ष्य उद्घोषित किया। धर्मों के स्वार्थ पर तपस्या और तपसा की प्रतिष्ठा थी। पशुहिंसा का पुस्तकमनुष्ठा विरोध किया। ब्राह्मणों की जातिगत प्रधानता की निन्दा करते हुए क्षत्रिय और वीर्यता का समर्थन किया। एक यह हुआ कि जलना में तथा तन्त्राधीन राजाओं ने भी इस नवीन धर्म को अपनाया। इस प्रकार राजाधर्म का धर्म इन दोनों धर्मों का प्रचार हुआ और तदनुसार पुस्तकालयों के रूप में भी परिवर्तन हुआ।

संघों की परम्परा

धर्म-संघों के उदय युग में सभी अपने-अपने मत का प्रचार करने तथा अन्य मतों का विनाश करने पर बल देते हुए थे। जब लोग नए धर्म में दीक्षित होने लगे तो धर्मों को विविध करने का काम भी तेजी से चल पड़ा। इन नवीन धर्मों के आभाव में संघों की संस्था होकर धर्मों का बचन-भाषण और प्रचार करने लगी। इन प्रचारकों में एक-दूसरे का मत मानने के लिए उस मत के धर्मों का पालन-रक्षण संघों करने लगी और अपने मत के धर्मों में भी बृद्धि करने लगे। यही कारण है कि बौद्ध और जैन धर्मों में धर्म-संघों करने की महत्त्वपूर्ण कार्य प्रारम्भ हुआ गया और धर्मों की प्रतिष्ठित

कराना तथा ग्रंथों का राज वेला भी एक महान् कार्य समझा जाने लगा । उसका परिणाम यह हुआ कि आज भी बीहड़ों के मठों और जैन मन्दिरों और उपासकों में बहुमूल्य हस्तलिखित ग्रन्थों का संग्रह पाया जाता है ।

जैन पुस्तकालय

जैन धर्म के मन्दिरों और उपासकों में जैन साहित्य के पठन-पाठन की व्यवस्था हुई तो वहाँ ग्रन्थों का संग्रह होना प्रारम्भ हुआ । बम्बई प्रदेश में बहमदाबाद पाटन नाम्ने सूरत पूना और नासिक जगहों में हस्तलिखित ग्रन्थों के भण्डार आज भी हैं । गुजरात की राजधानी पाटन में जैनियों के ११ और बहमदाबाद में ६ उपास्य आज भी हैं जिनमें हस्तलिखित ग्रन्थों का संग्रह पाया जाता है । पाटन के पोषकिया गोपाड़ो के उपास्य में तीन हजार से अधिक ग्रंथ हैं और हेमचन्द्र भंडार में प्रायः चार हजार हस्तलिखित ग्रंथ हैं । इन ही उपासकों से १६ बी सतासी में लिखित ताड़-पत्र की पोषिया मिली है । इनके अतिरिक्त निम्नलिखित जैन संस्थाओं में जैन सम्प्रदाय के ग्रंथ का संग्रह पाया जाता है —

असक पञ्जाबाळ विगम्बर जैन संस्था ।

सरस्वती, मबन झाळरापाटन ।

असूतळाळ मगनळाळ राहू जैन विद्याराळा, बहमदाबाद ।

कारुकीर्ति पण्डिताचार्य, जैन मठदार मुवनवेळ गोळा, मैसूर ।

सेंट्रल जैन लाइब्रेरी, आरा ।

विगम्बर जैन मण्डार, बिन्नी ।

विगम्बर जैन लाइब्रेरी, रोहतक ।

जैन मंदिर पिछाबली, पिरोर, मैतपुरी ।

वीरवाणी विद्यास जैन सिद्धान्त मबन, मूडबित्री ।

शान्तिनाथ जैन मंदिर, अछीगंज, पटा ।

स्यादूबाद जैन महाविद्यालय, मवैनी बनारस ।

रायाराम कालेस कोल्हापुर ।

इनमें से केवल एक जैन केन्द्र के हस्तलिखित ग्रंथों की खोज का विवरण दिया जाता है जिससे प्राचीन जैन पुस्तकालयों की समृद्धि का परिचय मिल सकता है । भारतीय ज्ञानपीठ काशी की एक शाखा इतिहास में मूडबित्री में सन् १९४४ ई में खोली गई । 'पं० के० भुवबली शास्त्री महोदय की अध्यक्षता में उस केन्द्र से पाँच ग्रंथ-जम्हाराओं की खोज की गई तो उसमें के १३५ अप्रकाशित और ३५३८ ताड़-पत्रीय हस्तलिखित ग्रंथ प्राप्त हुए । भारतीय विद्यापीठ

ने इन ग्रंथों की सूची 'कन्नड़ प्राचीन साहित्य-ग्रंथ-सूची', के नाम से प्रकाशित की। इस ग्रंथ में जैनमत का काल के साहित्य और काल की शोधों में मूकबिंदी जैन मत के साहित्य-ग्रंथ मूकबिंदी के अन्य ग्रंथ मध्य, अस्मिन्त आदिनाथ देवात्म्यस्य साहित्य-ग्रंथों की सूचीयों शामिल हैं। कुछ मिलाकर ११५ अक्षर-सहित ग्रंथों की प्रतिलिपियों और १५१८ साहित्य-ग्रंथों और हस्तलिखित ग्रंथों की विवरण-सूची यह है और इनमें निम्नलिखित विषय के ग्रंथ हैं —

सिद्धान्त, अभ्युत्थ, धर्म, प्रतिष्ठा, आराधना, पूजापाठ, न्याय दर्शन, व्याकरण, कोरा, कान्य, अलंकार नीति, सुभाषित, पुराण, चरित कथा, इतिहास, आयुर्वेद श्योतिष, गणित, मंत्रशास्त्र, लोकविज्ञान, शिल्प शास्त्र, लक्षण तथा समीक्षा, क्रियाकाल, स्तोत्र और भजन गीत आदि।

उपरोक्त विवरण में स्पष्ट है कि जैन-ग्रंथों के संग्रह की यह परम्परा जैन-मत के उदय के साथ ही साक्ष्य हुई और उसका विकास होता रहा। आन्तरिक और बाह्य संघर्षों से बचते-बचते आज भी अनेक जैन पुस्तकालय इस परम्परा के प्रतीक बन हुए हैं। इन पुस्तकालयों के हस्तलिखित ग्रंथों के ज़रार की ओर अब ध्यान दिया जाने लगा है जो कि एक धुम लगाए हैं।

बौद्धशास्त्रीय शिक्षा

बौद्धशास्त्रीय शिक्षा कोई सावजनिक शिक्षा-व्यवस्था नहीं थी। यह मुख्य रूप से विहारों एवं मठों तक सीमित रही। बौद्ध विद्यार्थी इन विहारों में रहते हुए कम प्रचार किया करते थे। वे नवीन मिथुनों को टूट भी दिया करते थे। जाति पंथि का विचार किए बिना इस शिक्षा के द्वार सब के लिए खुले हुए थे। गृहस्थ उपासक और उपासिकाएँ, भिक्षु तथा भिक्षुणियों से शिक्षा ग्रहण करते थे। बुद्ध शारदा गच्छामि, धम्म शारदा गच्छामि, संघ शारदा गच्छामि की प्रतिष्ठा लेने पर कोई भी व्यक्ति संघ में प्रविष्ट हो सकता था। इस प्रकार इस काल की शिक्षा मुक्त कैलिफ न रह कर संवत्स ही गई क्योंकि इस काल में भी गुरु-विषय सम्बन्ध वैदिक काल की भाँति ही चलता रहा। बौद्ध शास्त्रीय शिक्षा व्यवस्था में वा प्रचार के पाठ्य-क्रम थे—धार्मिक और लौकिक। धार्मिक शिक्षा में बौद्ध धर्म की पुस्तकें जितनी जाँची जाती थी। लौकिक पाठ्य-क्रम में कमेक कर्म-कौशल प्राप्त करने एवं श्रमिता अनुबोध, नैतिक शिक्षा संकीर्ण और विद्वाना प्यार आदि होते थे। शिक्षा का माध्यम लौकिक प्रथा भी बरतते विवरण-सूचीयों में शिक्षा का माध्यम

संस्कृत भी थी। बौद्ध साहित्य और बौद्धिक पाठ्य-क्रम को विशेष रूप से लोक-भाषा के माध्यम से पढ़ाए जाते थे। इस प्रकार बौद्धकाशीन शिक्षा के केन्द्र बीरे-बीरे सुसंपन्न हो गए। इन केन्द्रों में ही तक्षशिला नाण्डवा और बननी आदि तो शिक्षा के अन्तर्राष्ट्रीय केन्द्र हो गए। इन शिक्षा-केन्द्रों के साथ महत्त्वपूर्ण पुस्तकालय भी होते थे। इनका विवरण इस प्रकार है —

तक्षशिला का पुस्तकालय

तक्षशिला भारत के उत्तर-पश्चिम सीमा-प्रान्त पर एक बहुत ही प्रसिद्ध नगर था। आज भी यह 'तक्षिल' के नाम से मशहूर है। यह नगर राजार राज्य की राजधानी थी। यहाँ पर एक बहुत ही प्रसिद्ध विश्वविद्यालय था। पहले तो उसमें वैदिक विषयों की शिक्षा ही जाती थी किन्तु समय के परिवर्तन के साथ ही यहाँ के पाठ्य-क्रमों में भी परिवर्तन हो गया। इस विश्वविद्यालय के साथ ही एक अच्छा पुस्तकालय था। तक्षशिला के जाणार्थों की शोम्शदा और उसके पुस्तकालय से संगृहीत बहुमूल्य ग्रन्थों की वृत्त बहुत दूर-दूर तक फैल चुकी थी।

जब भारत के कोने-कोने से तथा विदेशों से भी ज्ञान पढ़ने के लिए आना करते थे। महान् वैवाकरण पाणिनि राजनीतिज्ञ चाणक्य मगवान् बुद्ध के व्यक्तिगत चिकित्सक श्रीरक्ष सम्राट् अश्वगुप्त तथा पुष्पमित्र इसी तक्षशिला विश्वविद्यालय के छात्र थे और उन्होंने इस पुस्तकालय की पोषियों से प्रचुर ज्ञान प्राप्त किया था। इस पुस्तकालय में वेद आयुर्वेद अनुबेद ज्योतिष तर्क तंत्र व्याकरण चित्रकला वास्तुकला कृषि व्यापार और पशुपालन आदि विषयों के ग्रंथों का अच्छा संग्रह था क्योंकि तक्षशिला केन्द्र में ये विषय उस समय पाठ्य-क्रम में सम्मिलित थे। उत्तर-पश्चिम से होने वाले विदेशी आक्रमकों से यह पुस्तकालय अपने विश्वविद्यालय सहित छात्रों के लिए लूट हो गया।

नाण्डव का पुस्तकालय

ज्ञान के विकास की दृष्टि से बौद्ध धर्म को तीन भागों बाँटा जा सकता है। प्रथम भाग गौतम बुद्ध से इसवी सन् के प्रारम्भ से पूर्व तक दूसरा भाग इसवी सन् के प्रारम्भ से छठी शताब्दी तक और तीसरा भाग छठी शताब्दी से बौद्ध धर्म के पतन तक। इन तीनों कालों की अपनी-अपनी महत्व-महत्त्व विशेषताएँ थीं। प्रथम काल में बौद्ध धर्म त्पामी और सम्बन्धित हुआ करते थे। दूसरे काल में बौद्धों ने स्वर्ग पावन के साथ-साथ धर्मकर्म में भी उत्कृष्टि की थी। तृतीय काल में बौद्ध धर्म महत्त्वों का आर्थिक पतन प्रारम्भ हो गया था।

फिर भी उन्होंने जायुर्बंद और रछायन शासन में पर्याप्त उन्नति की। इस काल को हम ऐतिहासिक युग कह सकते हैं। इन तीनों कालों के अपने अलग-अलग विरच-विद्यात्मक तथा उनसे सम्बद्ध पुस्तकालय थे। प्रथम काल का विरचविद्यात्मक तथा द्वितीय काल का गाल्म्य और तृतीय काल का विक्रमशिला का। इन विरचविद्यात्मकों के पुस्तकालयों में संक्षिप्त ज्ञान-प्राप्ति बड़ी आसानी थी। सुदूर देश से छत्र अनेक कठों को झेलते हुए यहाँ ज्ञानोपासनों के लिए आया करते थे।

मालम्ब से भारत के ही सर्वप्रथम महावीर एवं गौतम बुद्ध पूज कप से सम्बद्ध थे। ईसा से कम से कम ५०० वर्ष पूर्व से मालम्ब का बंधन धर्मों में मिलता है। जैनों के 'सूत्र कृतान्त' तथा बौद्धों के 'निकाय' में एवं राम-मनों तथा हिन्दुधर्मियों में भी इनके विवरण मिलते हैं। ह्येनसांग के मतानुसार तथागत अपनी बुढ़ावस्था में इस स्थान पर आस करते हुए अन्तर्गत बान करते रहे जिसके कारण इस स्थान का नाम नासन्द (जिसका अर्थ बान का अन्त नहीं) पड़ा। इतिहास के कल्पानुसार मालम्ब का पहला नाम मालात्म्य था जो किसी व्यक्ति के नाम पर रखा गया था। या श्रुति यहाँ तक आर्य समाज के कर्मों की अविद्यता थी इसलिये इनका नाम मालम्ब पड़ा। बाद में पाण्ड के बड़पाँव के नाम से यह स्थान भी पुकारा जाने लगा। डॉ० हीरानन्द शास्त्री (एपिग्राफिस्ट टु द गवर्नमेंट ऑफ इण्डिया) के मत्प्रमाणों के अनुसार इस स्थान का पुनः नामकरण मालम्ब हुआ। पण्डित ईशधाम के 'पूर्वविरा चैत्यपरिपाटी' (वि० १५६५) और बिजय नगर के 'समेत शिखर तीर्थमाळा' (वि० १७००) नामक ग्रंथों में इसका उल्लेख इस प्रकार आया है —

‘नासन्द पाडे चौद बीमाम सुणी जे ।
 हीडो छोक प्रसिद्ध से बड़गाम यही जे ।
 मोछ प्रसाद तिहा अण्छे जिन चिन्व नमीजे ।’
 ‘बयहरी नासन्दा पाडो
 मुरारयो तस पुष्यपवाडो
 यीर चौद रूडा चौपाड
 हीडा बड़गाम निबाम ।
 यिंद बेहर एकमो प्रतिमा
 नयीन् हिन्दी चौपमी गणिमा ।’

है जो राजगृह के विस्तार का सूचक है नहीं तो सप्त मील की दूरी पर स्थित यह स्थान उद्यम एक नाम वा मुहम्मद कहे हो सकता है ? उपर्युक्त विचार से यह स्पष्ट हो जाता है कि ईसा की कई सताव्वियों पूर्व से मालम्ब एक विख्यात नगर वा और बाद में भी इसका औरत कई सताव्वियों तक बना रहा। बौद्ध और बौद्ध ब्रह्म के महात्मा मुत्त्यों की चरम-रच से पवित्र यह स्थान अपने प्राकृतिक सौन्दर्य से कुत्त वा और बौद्ध एवं बौद्ध बर्मों के इन्द्रमूर्ति एवं सारिपुत्त नामक दो प्रमुख शिष्यों के चिर निवास ने इसके गौरव को और भी बढ़ा दिया। बीरे-बीरे यह शिष्या का एक अन्तराष्ट्रीय केन्द्र बना।

स्वापना

इस पुस्तकालय की नींव सकारित्त ने ४२५ ई० में डाली। उसके बाद उसके पुत्र बुद्धगुप्त ने पहले संग्रह के इतिहास में एक नया संग्रह बनवाया। तथाकथित गुप्त नामक राजा ने पूर की ओर और बन्ध नामक राजा ने पश्चिम की ओर एक-एक संग्रह बनवाया। इसके बाद बाकावित्त ने १० फुट ऊँचा एक संग्रह बनवाया और मन्दिर को पूरा कराया। तत्कालीन मध्य-प्रदेश के राजा ने चारों ओर बहारबीबाटी बनवाई। गुमावा और बाबा के तत्कालीन राजा बालपुत्र देव ने भी एक मठ बनवाया और आर्थिक सहायता के लिए स्थायी रूप से ५ गाँव दिये। समय-समय पर मिठने भी बगी-मानी राजा महाराजा ठेठ साहूकार मालम्ब बाते से इस विद्या-केन्द्र और पुस्तकालय के लिए आर्थिक सहायता दिया करते थे। इस प्रकार इसकी आर्थिक स्थिति बहुत सुदृढ़ हो गई। बुद्धकालीन राजाओं ने तो बहुत सम्पत्ति इस विरचविद्यालय को दान की और अपने सासन काल में वे ही इस शिष्याकेन्द्र के तथा पुस्तकालय के संरक्षक रहे।

पुस्तकालय की रूपरेखा

मालम्ब के इन विद्यालय पुस्तकालय का नाम 'धर्मराज' था। बसन और बम के प्रश्नों का विचार संग्रह होने के कारण व्यवस्था की सुविधा के लिए इसे तीन भागों में बाँट दिया गया। पहिले भाग को 'रत्नोधि', दूसरे भाग को 'रत्न सागर' और तीसरे भाग को 'रत्नरंजक' कहते थे। इन विद्यालयों में संपूरीत प्रश्न विषय-क्रम से पाठ्य के फलनों पर आत्मकारियों में व्यवस्थित किए जाते थे। इसके प्रश्नों के बर्तीकरण की किसी विषयानुसारिणी विधिष्ट नहीं करण पद्धति का अनुमान किया जा सकता है। इन प्रश्नों की सुरक्षा की

अवस्था सुन्दर थी। प्रबन्ध के आकार के बराबर पाठ्य के फलक रखते थे। उपयोग के पश्चात् प्रबन्ध को पाठ्य के उसी फलक पर रख कर उसके ऊपर दूसरे पाठ्य के फलक से ढका देते थे। ऐसा करने से प्रबन्ध सुरक्षित रहते थे। ये सभी प्रबन्ध बहुमूल्य वस्तुओं में बँधे रहते थे। यदि कोई प्रबन्ध अधिक उपयोग कर ले या अन्य किसी कारण से जीन-धीन होने का भय हो तो पुस्तक उसकी प्रतिरूपिणी बना ली जाती थी। प्रत्येक आचार्य पर पुस्तकालय के एक विभाग का दायित्व था। वही उन प्रबन्धों के रखाफ़ थे। उनके अधीनस्थ शिष्य उन की देख-रेख में प्रबन्धों का उपयोग करते तथा प्रतिरूपिणी आदि करती थीं। पाठ्य के शिष्य शीतलमठ उस पुस्तकालय के मुख्य प्रबन्धपालक थे। इस पुस्तकालय की साम्यन्तरिक छटा भी मनोहर थी। आजकल पुस्तकालय को भीतर बाहर से आकष्यक बनाने पर बल दिया जाता है। आश्चर्य है कि नाम्द के उन पुस्तकालय में इन बातों को ध्यान में रखा गया था। इमारत के तल्ले और मुख्य परतार मग की आरुति में मजबूत थे। इन पर जो घड़ बस्त्रियों पर भी गन्नाधी की बँधी थी। मिठाई के किण्टक स्वच्छतापूर्वक रखे हुए थे जो कि बड़े ही स्वच्छतापूर्ण थे। छत के लफड़े पीले की मालि बनवते थे और उनमें लाल-धन में रङ्ग बरसा करते थे। वैदिक धर्म के लाल धन बौद्ध धर्म की हीनयान और महायान शाखाओं से सम्बद्ध सभी विषय व्याकरण भाषाशास्त्र काल बलाकौशल ज्योतिष और वास्तु कला आदि के प्रबन्धों की अनेक प्रतिरूपिणी का सुकम संग्रह यहाँ था।

इस विद्यालय पुस्तकालय का उपयोग भारतभर के विद्वान् तो करते ही थे साथ ही विदेशों से भी विद्वान् इस पुस्तकालय का उपयोग करने के लिए आया करते थे। बीना वाली फाइलियान इनसांग इतिहास आदि में लाल में ही नाम्द पुस्तकालय की प्रशंसा सुनी थी और लगभग जाहू हो कर ये यहाँ आये। फाइलियान ने लिखा है कि नाम्द 'एक विशाल शिवालय' था और यहाँ के पुस्तकालय में हजारों शिष्याधी प्रतिरूपिणी करने का काम किया करते थे। फाइलियान जब स्वदेष्ट लीटा तो ५२० बरतक इतिहास प्रबन्ध जिनमें १५० विविध विषयों की प्रतिरूपिणी थी अनेक नाम के गये थे। इतिहास ने लिखा है कि 'प्रज्ञापरमिता प्रबन्ध' की प्रतिरूपिणी करना पुस्तकालय का कार्य समझा जाता था। जहाँ लाल इतिहास भी अनेक नाम के गये थे। लाल की प्रतिरूपिणी बत के हो गया था। इन बीनी पाठ्यो के अतिरिक्त अन्य नामों में आसन मुवाब् पिब् टाओरी और आध्यात्म नामक (शैतन

प्रियुष के बिन्दुने बर्षों मास्य में रहकर उसके इस पुस्तकालय में बनेक महर्षीपूज प्रेषों को प्रतिनिधि को भी ।

पुस्तकालय का विध्वंस

बौद्ध धर्म के बोधोपम होने पर बीरे-बीरे जनता की यज्ञा घट गई । इस प्रकार बौद्ध राजाओं के निवृत्त होने पर हर्षों के सरकार मिहिरकुल ने सबसे पहिले मास्य के इस पुस्तकालय को क्षति पहुँचाई किन्तु राजा बाभादित्य ने उसे ४०० ई में परावृत्त किया और पुस्तकालय की भी हालि हुई थी उसकी भी उसने पुति कर दी । लेकिन इसके बाद जो द्वितीय प्रहार हुआ उससे इसकी अपूरणीय क्षति हुई । वह आक्रमण वा बलिमार खिलजी का जो उसने बर्मान्ध होकर १२०५ ई० में किया था । बलिमार खिलजी के आक्रमण की खबर सुनते ही मास्य से सिमक सान और मिसु कुछ प्रंधों की छाव लेकर पहुँचों की ओर भाग चड़े हुए । जब बलिमार खिलजी पुस्तकालय के द्वार पर पहुँचा तो सबसे पहले उसने वहाँ बर्षे-बुधे लोगो को तखवार के घाट छतार दिया । इसके बाद जब वह पुस्तकालय के भीतर गया तो उसकी व्यर्थता देख कर विमोह हो उठा । उसने उन बर्षों के नाम और विवरण बीनना चाहा किन्तु वहाँ उनके सम्बन्ध में बताने वाला कोई न मिला । अतः उसने नाराज होकर पुस्तकालय में जाग लगाया थी । बीटते समय उसने अपना एक प्रतिनिधि छोड़ दिया था । ऐसा कहा जाता है कि वह बर्षे बुधे प्रंधों के पर्वे बला कर नहाने का पानी मरम करता और मौजल बनाता रहा । इस प्रकार छठासियों से संघित वह माल राधि सदा के लिए गाय बन गई ।

इस घटना के कुछ वर्षों के बाद एक बार पुनः मास्य के बीर्षोधार का प्रयत्न सुदितमत्र नामक एक महर्षी ने किया । उसके बाद मयघ के मन्त्री श्री कुकुसिद्ध ने मन्दिर बनवाया और मास्य को पूर्ववत् पीरवपूज बन ने की चेष्टा की किन्तु उसके भास्य में रँधा कहीं गया था । बौद्ध मिसुओं और बौद्ध साधुओं में कुछ कार्यों से शाङ्का हो गया । कहा जाता है कि कुछ बौद्ध बिक्षुओं ने बौद्ध साधुओं के ऊपर अशुभ बल फूट दिया था । अतः यह होकर बौद्ध साधुओं ने कुछ रहस्ये कोयसे इस पुस्तकालय पर छेक दिये । फलतः 'रस्तोधि' में रँधुहोत इत्य जेक करे राखे हो गए । इस प्रकार मास्य के इस पुस्तकालय का अस्तित्व सदा के लिए जाता रहा ।

बिंक्रमेशिखा का पुस्तकालय

मयघ के प्रसिद्ध राजा धर्मपाल (देवपाल) ने एक पहाड़ी के ऊपर

विहमपिला के मठ को बनवाया था। इस स्थान पर छोटे-बड़े १०८ मठ थे। महापंडित राहुल साँहस्यपायन का कथन है कि यहाँ के सबसे बड़े विद्वान् 'बीरपंकर श्री ज्ञान' भी थे। वे साधारण रूप से 'अतिथ के नाम से प्रसिद्ध थे। विद्युत के राजा के निर्मलन पर वे बहाँ गए थे। राजा ने २०० हस्तलिखित ग्रन्थों की प्रतिलिपि और अनुबाद की हुई पुस्तकें उन्हें बँट की थीं। 'अतिथ' महोरप का विद्युत में ही देहावसान हुआ। बाणेशी सरी में लगभग १००० बौद्ध भिक्षु विद्यार्थी यहाँ रहा करते थे। इस महान् पुस्तकालय की प्रपंचा आक्रमणकारियों ने स्वयं की थी। इस पुस्तकालय का भी कथ विनयका से सुगजित था। इसका भी विध्वंस बलिपार दिल्ली के हाथ ही हुआ।

पल्लवी का पुस्तकालय

पल्लवी (पुत्राल) में एक बड़ा पुस्तकालय या विद्यकी स्थापना राजकुमारी दक्षिा ने की थी। यह राजा धारा सेन प्रथम की मीठी की लक्ष्मी की। राजा गुहसेन (५५९) इस पुस्तकालय का शेष बकाएँ थे। बलिप भारत के चित्तलेय संख्या १०४ ११७ १७१ और १९५ जिनकी तारीख १२१६ ई० बगई जाती है, उनमें लिखा है कि यहाँ के विद्यकों के वेतन और छात्रों के ख्य के लिए समुचित प्रबंध होता था। अंतिम चित्तलेय में यह पाया गया है कि छिन्नासलो जिले के सरस्वती भवन के लिए भी एक बड़ा खंडा दिया गया था। पल्लवी परिवर्षन रिया में होने के कारण भारत से व्यापारिक सम्बन्ध रगने वाले सभी देशों तक प्रसिद्ध था। इस कारण इस पुस्तकालय की प्रतिरूप बहुत बड़ी बड़ी थी। इस पुस्तकालय ने पाठ्य-ग्रन्थों के अतिरिक्त अनेक अन्य विषयों की भी पुस्तकें थीं।

ऊपर बौद्धकालीन कुछ प्रमुख पुस्तकालयों की संक्षिप्त वर्णन की गई। इन काल में कोई भी मठ एवं विहार ऐसा न था जहाँ पुस्तकालय न रहा हो। इनका कारण यह था कि बौद्ध धर्म को राजाधय प्राप्त था। महाराज बलिष्क के गजय न बौद्ध ग्रन्थों को विशेष रूप से संग्रह करने की परम्परा जाती थी। स्वयं बलिष्क ने बौद्धों के धार्मिक तथा साधनिक मनो के अनेक भेदों को देण कर 'पारख' की महामना से मंगूल बौद्ध ग्रन्थों का एक प्रासादिक संग्रह कराया और उसे ताभरनों पर लिखा कर एक अल्प ब्रू बनवा कर उनमें उन ग्रन्थों की सुरक्षित रखा दिया था तथा जगदी रखा के लिए पहरेदार नियुक्त करा दिया था। बलिष्क का राज्यपाल ईना के बार ७८ थीं राजापी या जिनी जिनी के मन से ई १२५ ई।

भारतीय ग्रंथ बाहर कैसे पहुँचे

बौद्धकाशीन पुस्तकालयों का यह अभ्यास समाप्त करने से पहले यह बात भी इसी सिलसिले में जाननी बरूते है कि भारतीय ग्रंथ बाहर कैसे पहुँचे ? यह इससिद्ध और भी आवश्यक है कि इसका विशेष सम्बन्ध बौद्ध धर्म से है । ऐतिहासिक खोज से पता झमता है कि चीन में बौद्धधर्म का प्रचार काम ईसा पूर्व कुछ घटान्वितों से ही हो चुका था । हान् बंध के सम्राट् मिन और मिनो ने सन् १४ ई० में अपने कुछ पंडितों को बौद्ध धरान सम्बन्धी साहित्य की खोज के लिए भारत भेजा । लेकिन रजोतान में ही उन लोगों की भेंट कुछ भारतीय बौद्ध भिक्षुओं से हो गई । वे उन्हें लेकर सीट गए इन भारतीय भिक्षुओं के नाम कारमप मार्तव और धर्मरत्न या बोवटन थे । जब वे चीन पहुँचे तो राजा ने उनका उत्कार किया और उनके लिए खोयांग में श्वेतारव (पाइ-गा-स्य) नामक विहार बनवा दिया । कुछ दिनों बाद वह विहार बौद्ध संस्कृति का केन्द्र हो गया । वे मिलुत्तम अनेक बौद्ध ग्रंथ साथ ले गए थे । वहाँ जा कर उन्होंने उनका अनुबाद किया । कारमप मार्तव ने चीनी भाषा में सबसे पहले बिष पोषी का अनुबाद किया वह आज भी धरति निनेशन के पुस्तकालय में सुरक्षित है ।

सप्तरी तातार के बई बंध की महारानी ने ५१८ ई में सुप-मुत् और हुई-सेव नामक पंडितों को ग्रंथों का संग्रह करने लिए उज्जयिनी और वांशार भेजा । वे वहाँ से सीटते समय १० पोषिमा स्वरेण ले गए । सम्राट् टाई-चि ने सौ १५० भिक्षुओं को भारत भेजा और वे अनेक महत्त्वपूर्ण ग्रंथ साथ ले गए ।

बौद्ध धर्म के प्रचार के साथ ही जापान में भी भारतीय ग्रंथ के जाए गए । आसगफोड विश्वविद्यालय में जब प्रो० मैक्समूखर संस्कृत के अध्यापक थे तं उन्होंने अपने जापानी शिष्यों (नाजिओ और टाकाकुसू) के द्वारा 'सुखा वतीस्सूह' नामक संस्कृत की पोषी जापान से भेगाई । वह पोषी चीनी भाषा में अनुरित थी और उसका उच्चारण जापानी लिपि में लिखा था । उसके बाद प्रो० मैक्समूखर ने जापान से अनेक महत्त्वपूर्ण पोषियों को भवा कर उनकी प्रतिकृति करवाई जो आज भी आसगफोड विश्वविद्यालय के बोकरियम लाइब्रेरी में सुरक्षित है ।

कारमप, धर्मरत्न, धर्मपाळ, घोधिरुषि और कुमारजीव भावि बौद्ध पयटक बौद्धधर्म के प्रचार के लिए दुर्बय नदी-नखों गुच्छुओं और पकतों को पार करते हुए अनेक देशों में गए और अपने साथ ग्रंथों को ले गए वहाँ

विश्वमहिमा के मठ को बनवाया था। इस स्थान पर छोटे-बड़े १०८ मठ थे। महापंडित राजकुल सांख्यशास्त्र का रचयिता है कि यहाँ के सबसे बड़े विद्वान् 'दीर्घकर श्री ज्ञान' भी थे। वे साधारण रूप से 'अधिष्ठ' के नाम से प्रसिद्ध थे। लिखत के राजा के निर्माण पर वे बहाँ गए थे। राजा ने २०० हस्तलिखित ग्रन्थों की प्रतिकृति और अनुवाद की हुई पुस्तकें उन्हें भेंट की थीं। 'अधिरा' महोदय का लिखत में ही देहावसान हुआ। बाख्शी सदी में लगभग ३००० बौद्ध ग्रन्थों का विद्यार्थी यहाँ रखा करते थे। इस महान् पुस्तकालय की प्रबंधा आक्रमणकारियों ने स्वयं की थी। इस पुस्तकालय का भी कस बिनाकस से सुव्यभिक्त था। इसका भी विध्वंस बलिपार सिलहरी के द्वारा ही हुआ।

बल्मी का पुस्तकालय

बल्मी (गुजरात) में एक बड़ा पुस्तकालय या जिनकी स्थापना राजकुमारी बुद्धा ने की थी। यह राजा धारा सेन प्रथम की मीठी की लक्ष्मी की। राजा गुहसेन (५५९) इस पुस्तकालय का जन्म बनात थे। अधिष्ठ भारत के दिल्लीके संख्या १०४ ११७ १३१ और १०५ जिनकी तारीख १२१६ ई० बताई जाती है, उनमें लिखा है कि यहाँ के विद्यार्थियों के वेतन और छात्रों के व्यय के लिए समुचित प्रबंध होता था। अखिल विश्वमेव में यह पाया गया है कि दिल्लीके जिले के सरस्वती मठ के लिए भी एक बड़ा खर्च किया गया था। बल्मी विश्वविद्यालय में होने के कारण भारत से व्यापारिक सम्बन्ध रखने वाले सभी देशों तक प्रसिद्ध था। इस कारण इस पुस्तकालय की प्रतिष्ठा बहुत बड़ी बढ़ी थी। इस पुस्तकालय ने पाठ्य-ग्रन्थों के अतिरिक्त अनेक अन्य विषयों की भी पुस्तकें थीं।

ऊपर बौद्धकालीन कुछ प्रमुख पुस्तकालयों की संक्षिप्त बर्णना की गई। इस काल में कोई भी मठ एवं विहार ऐसा न था जहाँ पुस्तकालय न रखा हो। इसका कारण यह था कि बौद्ध धर्म की राजाधन प्राप्त था। महाराज कनिष्क के समय से बौद्ध धर्मों को विदेश रूप से संबद्ध करने की परम्परा बनी थी। स्वयं कनिष्क ने बौद्धों के धार्मिक तथा सामाजिक मनों के अनेक भेदों को देख कर 'पारस' की महापता से सम्पूर्ण बौद्ध धर्मों का एक प्रामाणिक संग्रह करवाया और उसे ताशकण्ड पर लिखा कर एक अलग स्तूप बना कर उसमें उन धर्मों को सुरक्षित रखा दिया था तथा उसकी रक्षा के लिए पहरेदार नियुक्त करा दिया था। कनिष्क का राज्यकाल ईसा के बाद ७८ वीं शताब्दी या किसी किसी के मत से ई० १२५ ई०।

भारतीय ग्रंथ बाहर कैसे पहुँचे

बौद्धकाशीन पुस्तकालयों का यह अय्याज समाप्त करने से पहले यह बात भी इसी सिद्धिसे में जागनी बरूते हैं कि भारतीय ग्रंथ बाहर कैसे पहुँचे ? यह इसमिष्ट और भी आवश्यक है कि इसका विशेष सम्बन्ध बौद्ध धर्म से है । ऐतिहासिक शोध से पता चलता है कि चीन में बौद्धधर्म का प्रचार काय रूपा पूर्व कुछ शताब्दियों से ही हो चुका था । हान् बंध के सम्राट् मिग और मियी ने सन् १४ ई में अपने कुछ पंडितों को बौद्ध धरान सम्बन्धी साहित्य की खोज के लिए भारत भेजा । लेकिन खोजतान में ही उन लोगों की मृत्यु कुछ भारतीय बौद्ध भिक्षुओं से हो गई । वे उन्हें लेकर लौट गए इन भारतीय भिक्षुओं के नाम कश्यप मार्तण और धर्मरत्न वा गोबन्धन थे । जब वे चीन पहुँचे तो राजा ने उनका उत्कार किया और उनके लिए भोगों में श्वेतारव (पाइ-मा-स्म) नामक विहार बनवा दिया । कुछ दिनों बाद वह विहार बौद्ध संस्कृति का केन्द्र हो गया । वे भिक्षुओं को बौद्ध ग्रंथ साव ले गए थे । वहाँ जा कर उन्होंने उनका अनुबाध किया । कश्यप मार्तण ने चीनी भाषा में सबसे पहले जिस पोथी का अनुबाध किया वह आज भी शांति निकेतन के पुस्तकालय में सुरक्षित है ।

उत्तरी पठार के बौद्ध धर्म की महाराणी ने ५१८ ई० में मुन-मुन् और हुई-संग नामक पंडितों को ग्रंथों का संग्रह करने लिए उन्नयिनी और गांधार भेजा । वे वहाँ से लौटते समय १७ पोथियाँ स्वदेश ले गए । सम्राट् शाई-नि ने सन् १५० भिक्षुओं को भारत भेजा और वे अनेक महत्त्वपूर्ण ग्रंथ साव ले गए ।

बौद्ध धर्म के प्रचार के साथ ही जापान में भी भारतीय ग्रंथ ले जाए गए । आसफोड विश्वविद्यालय में जब प्रो० मैक्समूखर संस्कृत के अध्यापक थे तब उन्होंने अपने जापानी शिष्यों (नाजिओ और साकाकुत्सु) के द्वारा 'सुसा धर्तीन्सू' नामक ग्रन्थ की पोथी जापान से मँगवाई । वह पोथी चीनी भाषा में अनुबाध की और उसका उन्नयःरथ जापानी लिपि में लिखा था । उसके बाद प्रो मैक्समूखर ने जापान से अनेक महत्त्वपूर्ण पोथियों को मंगा कर उनकी प्रतिष्ठिति कर ई जो आज भी आसफोड विश्वविद्यालय के बौद्धविभाग लाइब्रेरी में सुरक्षित है ।

कश्यप, धर्मरत्न, धर्मपाल, बोधिरुचि और कुमारजीव आदि बौद्ध पण्डित बौद्धधर्म के प्रचार के लिए दुर्भम नदी-मनों गुफ्तारों और पर्वतों को पार करते हुए अनेक देशों में गए और अपने साथ ग्रंथों को ले गए वहाँ

उनका उन भाषाओं में अनुवाद भी हुआ। तिस्रों में तो आज भी धीरे-धीरे एवं टाड़-पड़ पर सिद्धित पोषियाँ पाँचवीं से दसवीं शताब्दी तक की पाई जाती हैं। महापरिचित राहुल जी को अपनी तिस्रों भाषा में प्रथम बर्तन व्याकरण आदि की अनेक भारतीय पोषियाँ वहाँ मिलीं। राहुल जी ने कुन्-डे-लिया महाविहार में रखी हुई टाड़-पड़िय पोषियों का भी पता लगाया। वहाँ उन्हें बमकीर्ति के 'बावान्य' ग्रंथ पर गालम्ब के भाषाय साहित्यसिद्ध द्वारा लिखी हुई एक महत्त्वपूर्ण टीका प्राप्त हुई। भाषाय बमकीर्ति का यह संस्कृत ग्रंथ आज केवल मुठिया भाषा में ही लिखा हुआ मिलता है।

बौद्ध धर्म के प्रचार के साथ-साथ ही भारतीय ग्रंथ बाहर पहुँचे ही देश के व्यापारिक सम्बन्ध से भी व्यापारियों द्वारा यहाँ के ग्रंथ बाहर पहुँच गए। मुख्यतः आदि आक्रमणकारियों द्वारा यहाँ के ग्रंथ बाहर पहुँचे। मारिकसाह तो सिन्धी का पूरा पुस्तकालय उठवा के गया। सुकपल ने सिन्धु के मयबदीता की पोषी भारत से अपने साथ लाने का आग्रह किया था। इसके अतिरिक्त अंग्रेज सासनों की सम्पत्ति और कूटनीति से अनेक दुर्लभ ग्रंथ बाहर चले गए। इंडिया आफिस लाइब्रेरी ब्रिटिश म्यूजियम आदि में भारतीय हस्तलिखित ग्रंथ काफ़ी संख्या में पाए जाते हैं और उनमें से अनेक तो बहुत महत्त्वपूर्ण हैं और उनकी प्रतियाँ भारत में पाई ही नहीं जायें। सिन्धु सासन् जैसे अजाधारण विषय पर लिखी 'रघु चित्र स्यन्ध' नामक ग्रंथ की प्रति बर्मनी में पहुँची तो इलाकर नामक विद्वान् ने उसका अनुवाद किया और उसे देख कर लोगों को आश्चर्य हुआ कि भारत में हजारों वर्ष पूर्व सिन्धुसासन् जैसे विषय पर भी ग्रंथ लिखे जाते थे।

बौद्धकाशीन पुस्तकालयों का अन्त

इस प्रकार कुछ साम्प्रदायिक विद्वेष सासनों की कूटनीति से तथा कर्म और जेम्हा से भी प्राचीन भारतीय पोषियाँ नष्ट हो गईं। इनके उद्धार की ओर हमारा ध्यान तब गया जब कि बहुत कुछ नष्ट हो चुका था। इत और जो प्रयास हुए हैं, उनकी चर्चा यथास्थान की जायगी। बौद्धकाशीन पुस्तकालयों के युग में बौद्धिक प्रथम शालों की भी अपने पुराने ढंग से पठन-नाउर्ण और ग्रन्थ-संग्रह की परम्परा बनी रही किन्तु उनके कोई विशेष पुस्तकालय इस काळ में नहीं थे।

मुसलमानी शामनकालीन पुस्तकालय

मुसलमानी शिक्षा

मस्जिदों में सब से पहले गुलाम बंध से मुसलमानी राज्य स्थापित हुआ और मुगल बंध के अंतिम दिनों तक क्विटी तरह बरका रहा। इस पूरे मुस्लिम काल में शिक्षा की कोई धार्मिक प्रथा नहीं थी। इस काल में मस्जिदों और मस्जिदों में शिक्षा ही जाती रही। मस्जिद प्रायः मस्जिदों के साथ जुड़े रहते थे। इनमें मुस्लिम या मोहम्मदी कुरान की भाषों तथा कुछ धार्मिक ग्रंथ पढ़ाते थे। साथ ही बौद्ध-सिद्धांत और पवित्र भी सिखाया जाता था। क्विटी काल उन्नावरण तथा व्याकरण पर विशेष ध्यान दिया जाता था। कुछ मस्जिदों में हदीस कविता एवं नीतिशास्त्र भी पढ़ाया जाता था। शासकों तथा बनी मानी व्यक्तियों के बच्चों की पढ़ाई उनके घर पर हुआ करती थी। छात्राचार्य के लिए जो पाठ्य-क्रम निश्चय किया जाता था उसमें अरबी फारसी धार्मिक शिक्षा कानून न्याय शास्त्र कर्म तथा धर्म-ग्रन्थों का विशेष स्थान रहता था।

मस्जिदों की पुस्तकालय

ये मस्जिद प्रायः राज्य तथा माली मुसलमानों की धार्मिक सहायता से चलते थे। इन मस्जिदों में कुछ हनी किनी ह्रास की किन्हीं पीछियां होती थीं बास कर धार्मिक ग्रंथ। इन्हें हम 'मस्जिदों की पुस्तकालय' कह सकते हैं। ये विशेष महत्त्वपूर्ण नहीं थे।

मस्जिदों के पुस्तकालय

मुसलमानी काल में अरबी शिक्षा मस्जिदों में ही जाता थी। इनकी प्रबंध समितियों और प्रतिष्ठित नागरिकों के हाथ में रहता था। राज्य की और से मस्जिदों को धार्मिक सहायता ही जाती थी। मस्जिदों में ही ठाण्ड के पाठ्य-क्रम होते थे। एक धार्मिक और दूसरा धार्मिक। धार्मिक पाठ्य-क्रम में

कुछान घरीक तथा उससे सम्बन्धित विषय इस्लामी इतिहास तथा कानून शामिल थे। लौकिक पाठ्य-क्रम में अरबी फारसी व्याकरण मूल्य इतिहास भूगोल मूलमी चिकित्सा कृषि बर्तान कानून नौतिघास, पर्व तर्क शास्त्र ज्योतिष बहीखाता और जवघासन आदि विषय शामिल होते थे। शिक्षा का माध्यम अरबी भाषा थी। अक्टूबर के समय में नगरों के पाठ्य-क्रम में विज्ञान गृह विज्ञान घासन पद्धति सहीत तथा विस्पशासन आदि विषयों को भी शामिल कर दिया गया था। इन मबरतों के साथ पुस्तकालय खुले रहते थे। जिनमें उपर्युक्त पाठ्य-क्रम के विषयों का संग्रह होता रहता था।

विरोध विषयों के पुस्तकालय

भारत में मुस्लिम शिक्षा प्रवाही के प्रमुख केन्द्र जाबरा दिल्ली बीनपुर, बीबर, बीनपुर, पोन्नूफा पुषरत मालवा इस्लामाबाद रामपुर, काहीर स्वासकोट पटना हीरराबाद महमराबाद तथा लखनऊ थे। इनमें बीनपुर सबसे अधिक प्रसिद्ध था। उसे हीराबाद-ए-हिन्द कहा जाता था। क्योंकि इस्लामीय तर्कों और शिक्षापर छोटी के समय बड़ी संख्या में मरते थे। रोखाह मुरी ने बीनपुर केन्द्र से ही शिक्षा प्राप्त की थी। इन केन्द्रों में से कुछ केन्द्र तो विरोध विषयों के लिए प्रसिद्ध ही गए। काहीर तथा स्वासकोट मूल्य और ज्योतिष के लिए रामपुर तर्क और चिकित्सा के लिए, दिल्ली इस्लामी परम्पराओं और कविता के लिए तथा सयनऊ शिक्षा के लिए। अतः इन केन्द्रों में इन विरोध विषयों के प्रयोग का अत्यन्त संग्रह किया जाता रहा और अच्छे पुस्तकालय पाये जाते थे।

नगरकोट का पुस्तकालय

विरोध तुमलक विद्यार्थी घासक था। बसने शिक्षा को प्रोत्साहन दिया तो हिन्दू लोग भी उसके साथ से अरबी-फारसी पढ़ने लगे और मुसलमान लोगों ने भी संस्कृत पढ़कर हिन्दू इंधों का अनुवाद करना शुरू किया। उसमें बर १४ ही घासगी में नगरकोट पर बर्बाद की और विजय प्राप्त की तो वहाँ लगे एक लखत पुस्तकालय प्राप्त हुआ था। उधम मीखाना इजुहीन खलीदघानी को बर्तान भाष्य-विचार तथा अकून-विचार विषयक एक संस्कृत ग्रन्थ का फारसी में अनुवाद करने का आदेश दिया। वह अनुवाद का नाम बार में 'दखायल-ए-फिरोजराहा' रखा गया।

विजय के स्वतन्त्र राज्यों ने भी शिक्षा के लिए बड़े पैमाने पर विद्यालय खोले। वहाँ भी प्रयोग का संग्रह होता रहा।

महमूद गवाँ का पुस्तकालय

बहमदनगर में बहमनी राज्य का मन्त्री महमूद गवाँ बहुत ही विद्या-भ्यसनी था। उसके पास १००० पुस्तकों का एक अच्छा पुस्तकालय था। यह पुस्तकालय बीर में उसके एक विद्यालय में था। अपने फुरसत के समय महमूद गवाँ विद्वानों की संवत्ति में उसी पुस्तकालय में अपना समय बिताता था। वह अष्ट विद्विद्या तथा साहित्य में निष्णात था और उसमें काव्य-रचना की भी बहुत शक्ति थी। फरिदा का कल्प है कि उसने 'रौजत-छन्द-इ-रा' तथा 'दीवान-ए-अक' नामक दो काव्य-ग्रंथों की रचना भी की थी। एक पदमाल के फलस्वरूप जब १४८१ ई० में महमूद गवाँ की हत्या कर दी गई तो बीरे-बीरे बहमनी राज्य के सन्त-महन्त भी विदासिता में डूब गए और राज्य की अव्यवस्था हो गई।

मुगलकालीन पुस्तकालय

व्यपि मुगल काल में सार्वजनिक विद्या या बलिदान विद्या नाम की कोई वस्तु नहीं थी तथापि जिस जग में इसका प्रचार था उस जग में वह ठोपी दृष्टि से बेसी जाती थी। साहित्य सूजन गौरव की बात समझी जाती थी। अतः पुस्तकालयों का भी विकसित हुआ। सीमाध्यक्ष बामर और हुमायूँ दे दोनों प्रारम्भिक मुगल सम्राट् पुस्तकों के प्रेमी थे। सुन्दर पुस्तकों के संग्रह में हुमायूँ को बहुत आनन्द मिळता था। उसकी मृत्यु भी अपने पुस्तकालय की सीढ़ियों से गिर कर ही हुई थी। उसने शेरशाह के बामोद-बूह को पुस्तकालय के रूप बदल दिया था।

अकबर का पुस्तकालय

स्निग्ध महोदय का कल्प है कि 'अकबर ने अशाधारण अधिक मूल्य वाली बहुत अच्छी पुस्तकों का संग्रह किया था। अकबर के पुस्तकालय में २५००० पुने हुए ग्रंथ थे। यह पुस्तकालय सुन्दर पाण्डुलिपियों से भरा हुआ था। उसका प्रबन्ध भी बहुत सुन्दर ढङ्ग से होता था। वे पुस्तकें कछा और विद्वान को बकों में विभक्त थीं। उस पुस्तकालय की उस समय और भी अधिक समृद्धि बढ़ गई जब कि फौजी की मृत्यु के बाद उसके निजी पुस्तकालय से चार हजार तीन सौ इस्तख्बित पुस्तकें लाई गईं। उन सब को तीन विभागों में पंजीकृत किया गया। वे विभाग इस प्रकार थे —

- १ कविता आयुर्वेद फख्रिय म्योत्तिय और संगीत की पुस्तकें।
- २ मायाविज्ञान धरान सूफीमत और म्यामिति की पुस्तकें।

३ व्याख्यान दरान परम्परागत कथाएँ, धर्मशास्त्र और कानून की पुस्तकें ।

इस युग में प्रेम केवल जेमुइट लोगों के पास या जो नीचा और रंगके आस-पास बसे हुए थे । इसीलिए एक एक हस्तलिखित ग्रन्थों का ही प्रचलन था । इसके लिए सुन्दर लिपिशैली की आवश्यकता होती थी । अफ़सरी बरबार के प्रसिद्ध हस्तलिखित लेखकों की सूची आईन-ए-अफ़सरी में दी हुई है । मुहम्मद हुसैन उन्हें सब में सबसे अधिक मशहूर था । उसे 'ज़रीने फ़ख़र' (खज़ाने की खज़ान) की उपाधि दी गई थी । अबुलफ़जल ने लिखने की आठ विभिन्न शैलियों का संश्लेष किया है । अफ़सर के समय में अनेक संस्कृत ग्रन्थों का फ़ारसी में अनुबाध भी किया गया । रामायण महाभारत अथर्ववेद धीमावती सांख्य राक्षसटीका एक ब्रह्मसूत्री मुक्त वाक्यी वादविह और कुरान आदि के अनुबाध भी अफ़सर ने करवाये थे । अनेक देशों के कवि ऐक्य संगीतज्ञ चित्रकार एवं कथाकारों को अफ़सर के दरबार में आमंत्रण मिला हुआ था । वास्तव में साहित्य और कला की उन्नति के लिए यह एक अच्छा युग था ।

बर्होमीर की भी पुस्तकें और चित्रकारी से प्रेम था । उसका कारण था कि श्री लखारिह सम्प्रति राज्य में मिले उछे विद्यालयों और पुस्तकालयों के बनाने और बढ़ाने में लगाना था । साहजहाँ का पुत्र बाराबिकेह तो संस्कृत का बहुत अच्छा विद्वान् था । उसने उपनिषदों का फ़ारसी में अनुबाध किया था । बाघ के सम्बन्ध में तो यहाँ तक कहा जाता है कि वह केवल सुन्दर लिखता ही नहीं था बल्कि साहजहाँ की हस्तलिपि की ठीक-ठीक नक़ल भी कर देता था । औरज़ुबेन भी अपने सुसूक्त के लिए प्रसिद्ध था और इसी लिए वह सुन्दर लिखने वालों पर आदर करता था । उसने मुसलमानी विद्या को विशेष बढ़ावा दिया । उसके समय में राज्य के पुस्तकालय में दैनिक ग्रन्थ बढ़ाए गए । मुसलमानी पुस्तकालयों में संवृद्धि पुस्तकों से प्रमाणित है कि उस समय हस्तलिखित पुस्तकों की प्रभावट में भी बहुत विचित्रता ली जाती थी । चारों ओर फ़लात्क हाथिए छोड़ कर बीच में बिस्कुल बपाने रूप में मोटी की तरह बकर विरोधे करते थे । इन पुस्तकों की मिस्त्रकारी भी काफी सुन्दर बङ्ग से ली जाती थी । पुस्तकें सुन्दर चित्रों से अलंकृत भी की जाती थी और दस आठ का, प्यार, रत्न, प्यार का कि से टिकाऊ भी हों ।

उत्तरवासीन मुसल-सभारतों में भी अधिकतर की पुस्तकें से प्रेम था । बीरे-बीरे मुसल साम्राज्य की बर्नाति ही गई । जब नारिण्याह ने हमला किया तो वह धाड़ी पुस्तकालय की भी धारण के गया ।

बीजापुर में आदिच्छाह का 'आदिच्छाही पुस्तकाख्य' एक राजकीय पुस्तकाख्य के रूप में था। औरफ़जेब ने जब बीजापुर पर चढ़ाई की तो यह पुस्तकाख्य भी नष्ट हो गया।

मुस्लिम काल में भी नक्सिया बनारस और मिर्जापुर आदि में सामान्य पुस्तकाख्यों का विवरण पाया जाता है। इस समय हिन्दू राजाओं के भी अच्छे पुस्तकाख्य थे। तंजौर के राजा ने कुछ से ही प्राचीन ग्रन्थों के संग्रह में रचि दी की। छत्रगोत्री के समय के उनके 'तंजौर पुस्तकाख्य' में बढ़ते-बढ़ते २५,००० से अधिक ग्रन्थों का संग्रह हो गया था। आज भी तंजौर राज्य के उस पुस्तकाख्य में १८००० से ऊपर केवल संस्कृत के ग्रन्थ मौजूब हैं तथा अन्य ग्रन्थ देवनागरी कनाड़ी तैमज़्जी उड़िया आदि लिपियों में लिखे हुए हैं और ऐसा संग्रह भारत में अन्यत्र कहीं नहीं है।



संधिकालीन पुस्तकालय

मुसलमानी शासन के अंत और अंग्रेजों के आक्रमण के बीच के समय को संधिकाल कहना उचित है। यह काल पुस्तकालय विकास की दृष्टि से अग्रगण्य है। इस काल में निम्नलिखित छः प्रकार के पुस्तकालय विद्यमान थे —

१. गुरु-गृहों के पुस्तकालय

संस्कृत भाषा एवं साहित्य के पंडित लोग अपने घरों पर विद्यार्थियों की परामर्श करते थे। इनके पठन-पाठन के उपरोक्त ग्रंथों का संग्रह वे लोग अपने घरों पर ही एक कमरे में रखते थे। ऐसे पुस्तकालय 'गुरु-गृहों के पुस्तकालय' थे।

२. संस्कृत विद्यालयों के पुस्तकालय

संस्कृत विद्या के प्रचार करने एवं उसे जीवित रखने के लिए देश में अनेक संस्कृत विद्यालय खुले हुए थे। उनमें यमी-यमी व्यक्तियों सेठ-शाहजहाँ एवं राजाओं से सहायता मिल रही थी। अंततः में ऐसे विद्यालय 'टोस' कहलाते थे। अखिर भारत में ऐसे विद्यालय प्रायः मन्दिरोँ तथा बाँसों में बने थे। जो विद्यालय इस प्रकार के थे उनमें संस्कृत की पौकियाँ संग्रहित थी। अंततः के कठिनी-कठिनी टोस में १० से लेकर ४० तक ग्रंथों का जिक्र बाँस रिपोर्टों में मिलता है।

वास्तव में उपर्युक्त दोनों प्रकार के पुस्तकालय वैदिक काल के पुस्तकालयों के प्रतीक थे। पूरे मुस्लिम काल के दौरान से गुजर जाने पर भी उन पर कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ा था।

३. मच्छतर्षा के पुस्तकालय

मुस्लिम काल में जिन मच्छतर्षी पुस्तकालयों की चर्चा पिछले अध्याय में

की गई है। वे पुस्तकालय इस काल में भी पाए जाते थे। ये नाम मात्र के थे और बनी बने बंद रहे थे।

४ महरसों के पुस्तकालय

मुस्लिम काल के महरसों के पुस्तकालय इस काल में भी बने हुए थे किन्तु राजनीतिक घबराहट-मुहल के कारण उनकी कुछ सम्पत्ति न हा सकी।

५ ग्रामीण पाठशाळाओं के पुस्तकालय

मुस्लिम शासन काल के पहले भी देश के प्रत्येक गाँव में बच्चों को पढ़ाने सिखाने की व्यवस्था प्राइमेट तौर पर कभी कुछ राज्य-योत्साहक द्वारा भी की जाती रही। ऐसी ग्रामीण पाठशाळाएँ तो मुस्लिम काल में भी बनी रहीं। जो बच्चे मक़ठब नहीं जा सकते थे वे वहीं पढ़ा करते थे। इन पाठशाळाओं के अध्यापक अपनी पाठशाळा में कुछ पोखिरों अपनी ख़िफ के अनुसार सड़क के रखा करते थे। फुलव के समय वे स्वयं पढ़ते और गाँव के लोगों को भी सुनाया करते थे।

हार्नो ने अपनी पुस्तक 'इन्डिया' में लिखा है —

'मैसूरमूलर ने सरकारी उम्मेदों के आचार पर और एक मिशनरी की रिपोर्ट के आचार पर जो बंवास पर कब्जा होने से पहले नहीं था—सिखा की व्यवस्था के सम्बन्ध में किसी गई भी लिखा है कि उस समय बंवास में ८०००० पाठशाळाएँ थीं। वर्षान्त सूबे की आगरी के प्रति ४०० घादमियों पर एक पाठशाळा मौजूद थी। इन पाठशाळाओं का लोप ग्राम पंचायतों के गढ़ होने पर हो गया। बीसा कि इतिहासकार सबको 'अपने जिटिरा भारत' में लिखा है —

"प्रत्येक हिन्दू गाँव में वहाँ कि पुराना संयत्न अभी तक काम है, मुझे विश्वास है कि आमतौर पर सब बच्चे सिखाना-पढ़ना चाहते हैं किन्तु वहाँ कहीं हमने पंचायतों का नाश कर दिया है, जैसे बंवास में वहाँ ग्राम पंचायतों के साथ-साथ पाठशाळा का भी लोप हो गया है।

६ विदेशियों के विद्यालयों के पुस्तकालय

इस काल में ईसाई धर्म के प्रचार के लिए ईसाई प्रचारकों ने कुछ विद्यालय खोले। भारत में व्यापार करने वाली कम्पनियों ने भी अपने कर्मचारियों के बच्चों की शिक्षा देने के लिए कुछ विद्यालय स्थापित किए। इन दोनों प्रकार के विद्यालयों के साथ-साथ कुछ छोटे-छोटे पुस्तकालय भी संसभ थे। इनमें पाठ्य-विषयों से सम्बन्धित पुस्तकें, सामान्य खिफ की कुछ पुस्तकें तथा

विशेष रूप से धार्मिक पुस्तकें होती थीं। प्रारम्भ में पुतापत्रियों ने और उनके बाद फ्रांसीसियों ने इस क्षेत्र को ब्रह्म बढ़ाया।

अंग्रेजों का प्रारम्भिक प्रयास

जब अंग्रेज लोग भारत में आए और कुछ-कुछ उनके दर बात गए तो उन्होंने भी बम प्रसार और शिक्षा की ओर ध्यान दिया। पूर्ववासी ईसायितों ने और अंग्रेज प्रोटेस्टेंट्स ने इस लिए विशेष से सोचा कि प्रोटेस्टेंट्स मत के प्रचार के लिए सन् १६७० ई० में मद्रास में प्रथम अंग्रेजी स्कूल खोला। उसके बाद अंग्रेजों के सभी व्यापारिक केंद्रों में स्कूल खोले गए। लेकिन कम्पनी के चोड़े दिनों के भीतर ही यह अनुभव किया कि धार्मिक प्रचार की नीति बन्धी नहीं है। इसके ही हिन्दू और मुसलमान बालों को प्रारम्भ हो जाने से इस लिए कम्पनी ने पाठशाला को बंद कर दिया। फिर भी विरामपुर (बंगाल) में काम करने वाले मातृमठ तथा चार्च नामक पाठशालाओं ने अपना काम चलाया और पुस्तकें प्रकाशित करके हिन्दू तथा इस्लाम धर्म पर आघात करने लगे। साथ ही उन्होंने अपने रूप से शिक्षा-प्रचार करने के कई छोटे-छोटे प्रारम्भिक स्कूल भी खोले। इन स्कूलों के तात्कालिक उन्होंने नाम-धारे के पुस्तकालय भी स्थापित किए। बीरे-बीरे पाठशालाओं ने कम्पनी की नीति का बट कर विरोध किया। लेकिन इंग्लैण्ड में पाठशालाओं का पक्ष तथा कमजोर रहा।

सामाजिक शिक्षा है —

‘भारतीयों की शिक्षा देने के प्रारम्भ के विरोध में बोलते हुए कम्पनी के एक डाइरेक्टर ने पार्लियामेंट में बड़े बोरदार उन्हीं में कहा—‘हम लोग अपनी इसी मूर्खता के कारण अमेरिका से हाथ धो बैठे हैं क्योंकि हमने वहाँ स्कूल और अंग्रेज तुल्य जाने दिये। जब फिर भारत में जमी मूर्खता को खोइलना उचित नहीं है।’

फिर भी लड़ते-लगड़ते अन्त में पाठशालाओं तथा उनके चार्च हाथ धारि विनों के आन्दोलन और सत्र निष्ठी के प्रयत्नों से सन् १८१६ ई० में पार्लियामेंट ने एक नवीन आजाय-गव हाथ निम्नलिखित आदेश-गव दिया—

‘यह गवर्नर जनरल के लिए व्यापक होगा कि वही हुई रकम में से वह कम से कम एक लाख रुपये बतम कर दे और उसे राष्ट्रिय के पुनर्रूपार तथा मुबार और भारतीय साहित्य के प्रोत्साहन में तथा ब्रिटिश भारतीय दोनों के विज्ञानों के ज्ञान के प्रारम्भ तथा बलवति में लगावे।’

ब्रिटिश भारतीय निवासियों के हितों और मुज की उन्नति इस देश का कर्तव्य है और उनमें उपयोगी ज्ञान तथा नैतिक सुधार के साधनों का उपयोग होना चाहिए। उपर्युक्त सद्देश्यों तथा इन धीमे-धीमे-धीमे कामों को पूरा करने के लिए भारत जाने तथा रहने के इच्छुक व्यक्तियों को कानून द्वारा यथा सुविधाएँ मिलेंगी।

इस आदेश का नतीजा यह हुआ कि शिक्षा-अन्तार कम्पनी की विन्ने-बारी हो गई और पाठशालों को भी इस देश में काम करने की पूरी आजादी मिल गई।

कम्पनी ने राजनीतिक गकरतों को पूरा करने के लिए सन् १९८१ में कलकत्ता मबरसा सन् १७९१ में बनारस सरकृत कालेज तथा सन् १८०० ई० में छोटी ब्रिक्मियम कालेज की स्थापना की। इनके साथ पुस्तकालय भी स्थापित हुए जो बीरे-बीरे महत्त्वपूर्ण पुस्तकालय बन गए।

इस प्रकार शिक्षा की इस शर्माशोक स्थिति में बंगालों द्वारा अविदित भारत में पुस्तकालयों की स्थिति पहले से कुछ सुधर न सकी। साथ ही साथ देश के आन्तरिक अज्ञानपूर्ण स्थिति के कारण अन्य भागों में भी पुस्तकालयों की स्थिति पूरक नहीं रही।



ब्रिटिश कालीन पुस्तकालय

ब्रिटिशकालीन शिक्षा

यद्यपि संघिकाल में अंगरेजों ने भारत के कुछ भागों पर अधिकार कर लिया था किन्तु अपने उस लक्ष में भी विद्या-वीक्षा की दृष्टि से उन्होंने ध्यान नहीं दिया। इस काम में कम्पनी का राज्य भारत में उत्तरोत्तर बढ़ता गया। उसके अत्याचारों से पीड़ित हो कर जनता ने १८५७ ई० में स्वतंत्र होने की पहली बार चेहरा की। कम्पनी ने इसे 'सैनिक विद्रोह' कह कर दबा दिया किन्तु उसके साथ ही कम्पनी की शक्ति भी क्षय हो गई। उसके बाद से १९४७ ई० के १४ अगस्त तक भारत पर इंग्लैण्ड के बादशाह के प्रतिनिधि द्वारा शासन होता रहा। जब कम्पनी का शासन रहा तो उसके अत्याचारों तथा अधिकारियों की तथा कहीं नीति रही कि इस देश से व्यापार से व्यापार बन बना कर स्वदेश छोटा जाय। इसलिये उन्होंने अनेक पदार्थ और बाजारों से पूरे भारत को अपने कब्जे में किया। बिल्किम हाथिद नामक अंगरेज ने लिखा है कि 'बिना ठीक से इस इण्डिया कम्पनी ने हिन्दोस्तान पर कब्जा किया उसके अधिक बीभत्स और ईसाई शिक्षाओं के विरुद्ध किनी दूसरे ठीक की कम्पनी भी नहीं की या सचठी।

इसलिये तथा कम्पनी के राज्यकाल में विद्या और पुस्तकालयों के विचार में रोड़े अटकते रहे। फिर भी १८१३ ई० के आजापत्र से ले कर १९४७ ई० तक अर्थात् १३४ साल के लम्बे समयकाल में एक नए ढंग से विद्या और पुस्तकालयों का विकास हुआ। भूमि ब्रिटिशकाल में भी पुस्तकालय विद्या-विभाग के ही अन्तगत रहे और गिरा के विस्तार के साथ-साथ ही समय भी बिलगार हुआ अतः विद्या की नीति को कुछ विस्तारपूर्वक समझना आवश्यक है।

शिक्षा का काख-विमाखन

शिक्षा की वृद्धि से ब्रिटिशकाल को तीन भागों में बाँटा जा सकता है —

१ सन् १८१३ से १८५४ तक ।

२ सन् १८५४ ई० से १९२० ई० तक ।

३ सन् १९२० ई० से १९४७ ई० १५ अक्टूबर तक ।

प्रथम भाग : १८१३-१८५४ तक

सन् १८१३ ई० के आजायज में शिक्षा के उद्देश्य स्वरूप माध्यम एवं साधनों की व्याख्या नहीं की गई थी। इसलिए शिक्षा के क्षेत्र में एक संघर्ष पठ खड़ा हुआ। इस संघर्ष में तीन प्रकार के विचारों के जोग थे : इसलिए तीन बह बग गए—(१) प्राच्य शिक्षावादी (२) पारश्चात्य शिक्षावादी और (३) लोक-शिक्षावादी ।

(१) प्राच्य-शिक्षावादियों का कहना था कि भारतीय प्राचीन साहित्य सम्पदा एवं संस्कृति तथा पारश्चात्य ज्ञान और विज्ञान की शिक्षा संस्कृत एवं बर्षी के माध्यम से होनी चाहिए। इस बह में कम्पनी के पुराने अधिकारी थे ।

(२) पारश्चात्य शिक्षावादियों का कहना था कि भारत में बर्षी के माध्यम से योरोपीय ज्ञान-विज्ञान की शिक्षा होनी चाहिए। इस बह में मिस्टर ब्राउट के पिछलम्पू कम्पनी के गणयुक्त अधिकारी ईसाई पाठरी और राजाराम मोहन राम जैसे लोग भी थे ।

(३) लोक-शिक्षावादियों का कहना था कि पारश्चात्य ज्ञान-विज्ञान की शिक्षा प्राचीन मापानों के माध्यम से हो। इस बह में बम्बई और मद्रास के गवर्नर श्री स्टुअर्ट एल्लिम्स्टन तथा मुन्रो जाति से बिनकी कोई मुन्-बाई न थी ।

इन तीनों बहों के संघर्ष का परिणाम यह हुआ कि इस बह तक बम्बई १८२३ ई० तक शिक्षा की प्रगति न हो सकी। बेकारी के कन्स्ट्रक्टर श्री कैम्पबेल ने अपनी १८२३ ई० की शिक्षा-रिपोर्ट में कम्पनी को लिखा था — 'इस बिले में बटल-बटले शिक्षा-सम्बन्धी ५३३ सत्कार्य रह गई हैं और मुझे यह कहना पड़ा था कि इनमें में एक को भी सरकारो सहायता नहीं मिली। सन् १८२३ ई० में शिक्षा-सम्बन्धी सरकारी योजनाओं को लागू करने के लिए तथा एक कल सभे के अनुदान को उचित रूप से उपयोग करने के लिए 'शिक्षा समिति' एकाकीन बनकर बनरह ने बनाई। इस समिति में इस सभस्य से और संस्कृत भाषा के प्रसिद्ध विद्वान् विद्वान् महीबय इस

इस घोषणा-पत्र में सिफारिश की गई कि ---

१ मुख्य रूप से योरोपीय कला विज्ञान एवं साहित्य का अध्ययन किया जाय ।

२ अध्ययन का माध्यम अंग्रेजी ही रहे परन्तु देशी भाषाएँ भी सहाई करें और उनका विकास भी किया जाय जिससे वे भी योरोपीय ज्ञान के प्रचार में सहायक हों ।

३ प्रत्येक प्रान्त में एक शिक्षा विभाग स्थापित हो और उसे एक शिक्षा-संघासनक के अधीन रखा जाय । सहायक निरीक्षकों की सहायता से वह अपने प्रान्त में शिक्षा की व्यवस्था कर एवं उसका संघासन करे और प्रतिवर्ष अपनी रिपोर्ट सरकार को दे ।

४ कसबछा बन्दई और यदि आवश्यक हो तो ग्रामों में भी कन्दन कृषि-बसिटी की कसब पर पुनिर्बासिटीयाँ स्थापित की जायें ।

५ शिक्षा का ढाँचा इस प्रकार हो प्राथमिक विज्ञान हाईस्कूल कालेज और उसके बाद विश्वविद्यालय ।

६ शिक्षा चलाने के सिद्धान्त को हटा कर अन्यायकारण की शिक्षा पर ध्यान दिया जाय ।

७ गरीब विद्यार्थियों को बजीचे दिये जायें ।

८ और सरकारी शिक्षक संस्थाओं को भी सरकार द्वारा पूर्णक सहायता (ग्रांट-इन-एड) दे ।

पुस्तकालयों विद्यालय-मठों तथा विद्यालय-घाटों के निर्माण की व्यवस्था के लिए अतिरिक्त सहायता दी जाय ।

९ शिक्षा की ट्रेनिङ्ग के लिए नामक स्कूल तथा ट्रेनिङ्ग कालेज खोले जायें । ट्रेनिङ्ग बरक में भी शिक्षकों को बजीचे दिये जायें ।

१० औद्योगिक शिक्षा कानून बिक्रिस्ता इन्जीनियरिंग कारि की शिक्षा को भी समुचित व्यवस्था की जाय ।

११ स्त्री-शिक्षा को प्रोत्साहन दिया जाय और अल्प संख्यायुक्त सहायता दी जाय ।

इस प्रकार यह घोषणा-पत्र आयुनिक शिक्षा की आधार दिसत है । प्रसिद्ध लेनक वेम्ट ने इसे 'कारण में अंग्रेजी शिक्षा का मैन्नाकारटी' कहा है । इस घोषणा-पत्र के द्वारा कम्पनी ने अधिकृत रूप में यह स्वीकार कर लिया कि जनता को शिक्षा प्रदान करना सरकार के बर्तियों में से एक मुख्य बर्तिय है । इस प्रकार शिक्षा नियाम अलग से स्थापित करके छटि देने की प्रथा बन्द

कर शिक्षा के साथ पुस्तकालयों की भी प्रोत्साहन देने की बात स्पष्ट रूप से स्वीकार की गई। अतः इस घोषणा-पत्र ने शिक्षा के संकटन को एकदमता प्रदान की। इसके अनुसार प्रत्येक प्रान्त में शिक्षा विभाग स्थापित हुए और विविध प्रजाती के अनुसार काम शुरू किया गया। किन्तु इसी बीच सन् १८५७ ई० का प्रथम स्वाधीनता आन्दोलन छिड़ गया। उसके बाद कम्पनी के शासन का अंत हो गया और ब्रिटिश पार्लियामेंट ने भारतीय शासन की बागडोर संभाली। महारानी विक्टोरिया भारत की महारानी बनीं। उन्होंने १९५८ ई० में सरकारी बालिक तटस्थता की नीति की घोषणा की। भारत मंत्री का एक नया पद बनाया गया और उस पद पर डाक स्टैंसे की नियुक्ति की गई। शिक्षा के उत्तरदायित्व को अधिक रूप में प्रांतीय सरकारों को दे दिया गया। आगे चल कर १८७१ ई० में डाक मंत्रों ने शिक्षाविभागों को प्रांतीय सरकारों के अधीन कर दिया और उन्हें शिक्षा पर खर्च करने की मांग दे दी। १८७७ ई० में डाक स्टैंस ने कुछ और अधिकार दिए किन्तु शिक्षा की नीति निर्धारित करने का अधिकार अंत तक केन्द्रीय सरकार के ही हाथ में रहा।

इस प्रकार भारत में शिक्षा-विभाग द्वारा स्कूलों और कॉलेजों की स्थापना होने लगी। सरकारी सहायता से प्रोत्साहन पा कर अनेक गैर-सरकारी स्कूल और कॉलेज खुले। इनके साथ पुस्तकालय स्थापित हुए। इसके बाद से ही स्वतंत्र पुस्तकालय भी स्थापित होने लगे।

अंत में कुछ दिनों बाद पार्लियमेंटों का बग सरकार की बालिक तटस्थता की नीति से नष्ट हो गया। इस पर डाक रिपन ने १८८२ ई० में 'भारतीय शिक्षा कमीशन' की नियुक्ति की जिसे 'हर्टर कमीशन' कहा जाता है। इस कमीशन की सिफारिश पर प्राथमिक शिक्षा की व्यवस्था नगरपालिका और शिक्षा बोर्डों को दे दी गई। कमीशन ने प्रौढ़ शिक्षा की भी सिफारिश की। फलतः नए पुस्तकालयों की भी वृद्धि हुई।

सन् १८९९ ई० में डाक कबन ब्राह्मणय होकर आए। उन्होंने शिक्षा के क्षेत्र में जो सुधार किए उसे भारतीयों ने पसन्द नहीं किया। वे शिक्षा पर कड़े सरकारी नियंत्रण के अग्रज थे। उनके इस विरोध से शिक्षा के क्षेत्र में हलचल-धी मच गई।

सन् १९०५ में भारत में स्वदेशी आन्दोलन शुरू हुआ। उसका भी शिक्षा पर बहुत बड़ा प्रभाव पड़ा। राष्ट्रीय शिक्षा की गई योजनाएँ बनाई गईं। उनके फलस्वरूप अनेक राष्ट्रीय शिक्षात्मक मुक्तक और मशविद्यालय

बाँधि चुके। १९०९ में मुस्लिम लीज बनी तो उसने भी अपने नए कुछ विद्यालय खोले। सन् १९१० ई० में इम्पीरियल ऐजिस्टेन्टिज काउंसिल में प्राथमिक शिक्षा को बर्खास्त एवं निःशुल्क करने का प्रस्ताव स्वर्गीय गोपाळ कृष्ण गोखले ने रखा जो उस वया और वार में डुबारा पेश होने पर १९१२ ई० में अस्वीकार हो गया। इसके बाद १९१४ ई० से यूरोपीय महायुद्ध की ज्वाला बहक उठी तो प्रगति कई वर्षों के लिए रुक गई।

तृतीयकाल सन् १९०१ से १९४७ तक

प्रथम विश्व युद्ध समाप्त होने पर लार्ड चेम्सफोर्ड और भारत मन्त्री लार्ड माणेरु ने राजनीतिक सुधारों की एक योजना तैयार की। यह १९११ ई० में लागू हुई। इसके अनुसार शिक्षा हस्तान्तरित विषयों के अन्तर्गत आ गई। जब राष्ट्रीय मन्त्रियों के हाथ में शिक्षा की व्यवस्था आई। उनमें उत्साह तो था और उन्होंने शिक्षा के क्षेत्र में उन्नति भी की परन्तु सरकार द्वारा अधिक आर्थिक सहायता न मिलने के कारण वे उठना न कर सके बितना कि करना चाहते थे।

१९२१ ई० के असहयोग आन्दोलन के फलस्वरूप अनेक राष्ट्रीय विद्यालय एवं महाविद्यालय खुले। सन् १९२१ ई० में केंद्रीय सरकार ने 'शांखा संछाहकार बोर्ड' की स्थापना की। उसके द्वारा व्यावसायिक और औद्योगिक शिक्षा पर बल दिया गया। इस सभा के मान कर १९३६ ई 'बुड ऐक्ट कमीशन' की नियुक्ति हुई। इस कमीशन ने सामान्य शिक्षा और व्यावसायिक तथा औद्योगिक शिक्षा के सुधार और विकास पर सुझाव दिया। सन् १९३६ के छासन विधान के अनुसार प्रान्तों में जनता के प्रतिनिधि मन्त्रि मण्डल बने और शिक्षा का पुनर्बल होने लगा। इसी समय गांधीजी ने शिक्षा-विषयक अपने विचार प्रस्तुत किए। उनके आधार पर वैदिक शिक्षा का जन्म हुआ। सन् १९३९ में दूसरा विश्व युद्ध छिड़ गया। मन्त्रि-मंडलों में अपने-आप-आप में झगडा हुआ। इसीलिए शिक्षा की प्रगति रुक गई। सन् १९४४ ई० में 'सांख्येय शिक्षा योजना' सरकार के सामने आई। इसे १९४५ ई० में सभी प्रान्तों में लागू किया गया। १५ अगस्त सन् १९४७ तक इसी योजना के अनुसार कार्य होता रहा।

द्वितीय छासनकाल की शिक्षा प्रगति का यह संक्षिप्त विवरण है। जब इसके आधार पर सुधारकार्यों का विचार कर अध्ययन किया जायगा।

भारत में प्रेस का आविष्कार और इस्तख़ि़स प्रन्थों की खोज

पुस्तकालयों के गोदा में अपना महत्वा जमा लेने के बाद भारत में एक प्रथम पुस्तकालय मिशनरियों ने सितम्बर १५५९ में प्रेस स्थापित किया। उन्होंने राबोस में सेंटपॉल जलिय में इसे सेट किया। सिवाही महाराज ने भी एक प्रेस खोला था किन्तु बाद में उसे भीम भी परब के साथ १६७४ ई में बंद किया। १७१२ में डैनिश मिशनरियों ने द्रान्कोवर में एक प्रेस स्थापित किया। उन्होंने 'एपोस्टाइस कीड' नामक पुस्तक ठामिस में छपी। क्वापि यह भारतीय भाषा में छपी सबसे पहली पुस्तक थी। उसी प्रेस में १७१५ में 'न्यू टेस्टामेंट' भी प्रकाशित किया। १७७१ में हुबली में १७७२ में मद्रास में और १७७८ में कसकता में प्रेसों की स्थापना हुई। ऐसा बात होता है कि भारत के गवर्नर जनरल बारेन हेस्टिन्स ने अपनी साहित्यिक रुचि से प्रेरित हो कर कम्पनी के एक मीटर मि० बिस्किन्स को आदेश दिया कि वे भारतीय भाषाओं के टाइपों के फाष्ट प्रस्तुत करके पुस्तकों और सरकारी प्रचार के पत्र छपवाने का प्रयत्न करें। उन्होंने प्रयाग के एक मिस्त्री पंचानन से इस काम को शुरू करवाया। उसने बहुत ही साफ मेट्रिसें बनाईं जिनकी भारत और योरोप में खूब प्रशंसा की गई। इन्हीं हिन्दी टाइपों से 'ब्रजभाषा का व्याकरण' सन् १७७१ ई० छपा गया और १७७७ में बयास और उर्दू के व्याकरण छपे। सिधमपुर के मिशनरियों ने पंचानन मिस्त्री को अपने यहाँ मंगनी मीन कर तीन साल रखा और उससे टाइप बनवाए। पंचानन का कामक मनोहर और उसका लड़का बच्चा भी इस काम को करते रहे। कृष्ण मिस्त्री का देहान्त १८५० में हुआ। बंबाही भाषा में १७७८ में सर बाल्टर बिस्किन्स ने सबसे पहली पुस्तक हाथवेबस 'मामर आफ बेंगाली डैंगवेज' छपी। बम्बई में १७९१ में 'रिमाकू स एण्ड अकरेंस आफ हेनरी वेचर' नामक पुस्तक छपी। श्री वेचर टीपू सुल्तान के शासन में फेंदी वे और २३ वष बंद में रह कर मारे वे। यह पुस्तक उरी बेस-बीवन के सम्बन्ध में है। इसमें १६४ पृष्ठ हैं और इसका आकार ६३ X ४" का है। भारत में इसकी एक ही प्रति इण्डियन इस्त्यरिकल रिसर्च इंस्टीट्यूट सेंट जेवियर कलेज बम्बई में सुरक्षित है। इस पुस्तक को फरर हूण्ड ने काल्पा देवी के पास एक गुब्बड़ी बाजार से जाठ जाने में खरीदी थी।

बुबलठी टाइप बम्बई में श्री बीरमजी जीजीमाई चापवर के द्वारा १७९७ में बन गया। मराठी को सबसे पहली पुस्तक 'बाळ घोष मुक्ता

पछी' १८०५ में छपी। यह पुस्तक रीति की कल्पित कहानियों का अनुवाद मात्र थी। १८१० में सूरत में 'मिशान प्रेस' की स्थापना हुई।

इस प्रकार मात्र ही ४०० वर्ष पहले गोवा में पुस्तकें छपीं। हीन ही रूप से ऊपर छपी पुस्तकें अब भी भारत में म्युजियमों में पाई जाती हैं। प्रेसों का बीरे-बीरे विस्तार हुआ और ब्रिटिशशासक के अन्तिम दिनों में तो भारत भर में प्रेसों का एक जाल-सा बिछ गया।

हस्तलिखित ग्रंथों की खोज

प्रेस के आविष्कार और प्रचार के साथ-साथ पुस्तकों और समाचार-पत्रों आदि की भी संख्या बढ़ी। बीरे-बीरे ये पुस्तकें रंजीत सचिन और आक-पक बङ्ग से छपने लगीं। प्रेस की सुविधा के होने पर पुरानी हस्तलिखित पोथियाँ खपवाई जाने लगीं। भारत सरकार ने एक पुरातत्व विभाग भी स्थापित किया। उसके अन्तगत प्राचीन भारतीय महत्त्वपूर्ण सामग्रियों की खोज होनी शुरू हुई। बहुत से राष्ट्र-युद्ध सिक्के मुहरें, अभिलेख धातुलेख आदि खप फटा गया जिनसे भारत की पुरानी धम्पता और संस्कृति की अनेक गुणियाँ सुलझाने में सहायता मिली।

इसी काल में अनेक खोजपूर्ण संस्थानें स्थापित हुईं जिन्होंने भारतीय हस्तलिखित पोथियों की खोज का काम अपने हाथों में किया। इनमें से अधिकतम संस्थानें वैरवरकारी थीं और कुछ सरकारी। यद्यपि भारत के पर-वर और पाँच-नाँव में ऐसी हस्तलिखित पोथियाँ बिल्टी हुईं थीं किन्तु अनेक संस्थानों मध्ये मन्बिरों और शालसाजनों आदि में हस्तलिखित ग्रंथों की अनुपम खान-राशि मिली और अनेक संस्थानों में इनकी सूचियाँ भी छपाई, उनमें से निम्नलिखित विशेष प्रसिद्ध हैं —

- १८५७ कैटलाप राइयनी आऊ औरियसल मैमुस्कट्स इन द गवर्नमेंट लाइब्रेरी मद्रास संपा० ब्रिस्लियम टैकर।
- १८९४ मोदस आऊ संस्कृत मैमुस्कट्स आइर आऊ द गवर्नमेंट आऊ बंगाल संपा० हारमसाद शास्त्री।
- १९०२ कैटलाप आऊ शाउथ इण्डियन संस्कृत मैमुस्कट्स एमठ एशिया-टिक सी० लन्दन।
- १९११ ट्रिनिक्ल कैटलाप आऊ मैमुस्कट्स कुप्पु स्वामी शास्त्री एम०।
- १९११ विस्करिच कैटलाप आऊ द गवर्नमेंट कलैक्शन आऊ मैमुस्कट्स उफन कालेज पुना।
- १९१६ भण्डारकर औरियसल रिनर्ष इन्स्टीट्यूट बड़ीय ब्रिस्लियम कैट

आज आठ व बर्नमेट कलकत्ता आठ मैनुस्क्रिप्ट्स (अनेक भाषों में) ।

१९२० बम्बुल करीम शीवला प्राचीन पुबिर विवरण (बंगीय साहित्य परिषद्) ।

१९२१ महावीर जैन पुस्तकालय दिल्ली हस्तलिखित ग्रन्थों का सूचीपत्र ।

१९२१ क्यामसुन्बर शास मामरीप्रचारिणी सभा हस्तलिखित हिन्दी ग्रन्थों का संक्षिप्त विवरण (क्रमशः कई भागों में) ।

१९२७ सिबरल मिम सम्पा० प्राचीन पुबिर विवरण ।

१९३० यूनिवर्सिटी आफ कलकत्ता डिस्ट्रिक्टिव कैंटन्मग आठ आसामी मैन्सु-
स्क्रिप्ट्स संपा हेमचन्द्र गोस्वामी ।

१९३३ बोरियन्टक मैनुस्क्रिप्ट्स लाइब्रेरी चम्पैन कैंटन्मग आठ बोरियन्टक
मैनुस्क्रिप्ट्स ।

१९३९ म्हासरस्वती मन्डार इष्ट्यपन्मुस्तकालयस्य संस्कृतहस्तलिखित पुस्तकालय
सूचीपत्रम्, इत्यादि ब्रह्म प्रेस ।

१९४२ विगत हुमुबतीब सात्तिनाथ प्राचीन टाडपनीय जैन ज्ञान मन्डार ।
जीवकी जैन ज्ञान मन्डारनी हस्तलिखित प्रतिबन्धोनु सूचीपत्र और
सम्पत् २४५५ ।

कुछ लोग करते वाले विद्वानों ने हस्तलिखित ग्रन्थों की खोज में बुर्रम
स्वर्णों की यात्राएँ कीं किन्तु प्रयत्नों से कुछ ज्ञानराशि का पता लगा । ऐसे
लोककर्त्ताओं में महापंडित राहुल सांकृत्यायन का नाम उल्लेखनीय
है । श्री राहुलजी ने तिब्बत में बर्षों रह कर वहाँ से बुर्रम ग्रन्थों का पता
लगाया । अपनी एक खोज सम्बन्धी यात्रा का उल्लेख उनके सन्धों में इस
प्रकार है —

‘मेरी यह यात्रा भूयोद्ध-सम्बन्धी अन्वेषण वा मनोरंजन के लिए नहीं हुई
है बल्कि यहाँ के साहित्य के अच्छे प्रकार अध्ययन तथा इसके भार-
तीय एवं बाह्य-जग-सम्बन्धी ऐतिहासिक तथा वर्तमान सामग्री एकत्र करने के
लिए हुई है । इतिहास-वेदी जानते हैं कि छातशी सत्तन्त्री के गणक्य के
आचार्य दीर्घकर बीजान के समय तक तिब्बत और भारत (उत्तरी भारत)
का बहिष्क सम्बन्ध रहा है । तिब्बत को साहित्यिक भाषा बजार और बम-
देने वाले भारतीय हैं । उन्होंने यहाँ जा कर हजारों संस्कृत तथा कुछ हिन्दी
के ग्रन्थों के भी आयातार तिब्बती भाषा में किये । इन अनुवाचों का अनुमान
इसी से हो सकता है कि संस्कृत-ग्रन्थों के अनुवाचों के कंधूर और तम्पूर के

- (ख) मंत्रिमण्डलों से संलग्न पुस्तकालय ।
- (ग) स्वतंत्र कार्यालयों से सम्बद्ध पुस्तकालय ।
- (घ) मातहत और संलग्न कार्यालयों से सम्बद्ध पुस्तकालय ।

२. प्रान्तीय सरकारों और वेरी राज्यों के पुस्तकालय

- (क) विभागीय पुस्तकालय ।
- (ख) म्युजियम पुस्तकालय ।

३. शिक्षण संस्थाओं के पुस्तकालय

- (क) बृतिवर्षिणी पुस्तकालय ।
- (ख) कालेज पुस्तकालय ।
- (ग) हाईस्कूल तथा मिडिल स्कूलों के पुस्तकालय ।

४. अनुसंधान संस्थाओं, प्रयोगशालाओं, और स्वचन्द्र खोज-संस्थाओं के विशेष पुस्तकालय

५. सार्वजनिक पुस्तकालय

अब हमें से प्रत्येक भाग के पुस्तकालयों के विषय में यह बेजपा है कि उनका अद्य-काल से विकास किस प्रकार हुआ ।

[१] (क) इम्पीरियल लाइब्रेरी

१९०२ इम्पीरियल लाइब्रेरी कलकत्ता ।

[१] (ख) मंत्रालयों से संलग्न पुस्तकालय

- १९०१ मिनिस्ट्री आफ डिफेन्स लाइब्रेरी नई दिल्ली ।
- १९०५ सेंट्रल सेक्रेट्रियट लाइब्रेरी नई दिल्ली ।
- १९०८ मिनिस्ट्री आफ रेलवेज लाइब्रेरी नई दिल्ली ।
- १९१७ मिनिस्ट्री आफ सेवर लाइब्रेरी नई दिल्ली ।
- १९१७ सेंट्रल एग्रीकल्चर लाइब्रेरी पिछा विभाग दिल्ली ।
- १९१४ मिनिस्ट्री आफ फूड ऐण्ड ऐग्रीकल्चर लाइब्रेरी दिल्ली ।

[१] (ग) स्वतंत्र कार्यालयों से संलग्न पुस्तकालय

१९२१ पार्लियामेंट लाइब्रेरी पार्लियामेंट हाउस नई दिल्ली ।

[१] (घ) मातहत और संलग्न कार्यालयों से सम्बद्ध पुस्तकालय

मिनिस्ट्री आफ कामर्स ऐण्ड इण्डस्ट्रीज

१९१२ ए वीएच लाइब्रेरी कलकत्ता ।

- १९१६ क्रमवियक्त कार्बोरी एण्ड रीडिङ्ग कम कम्पकता ।
 १९४० ड्रेड मार्क एबिस्ट्री आफिअ साइजेरी कम्पकता ।
 १९४० ड्रेड मार्क एबिस्ट्री आफिअ साइजेरी बम्बई ।
 १९३४ साइजेरी आफ इकोनामिकल रेववाइजर टु द ब्रिटिश गवर्नमेंट आफ इण्डिया गई रिस्की ।

१९४१ साइजे आफ बाइरेक्टरेट आफ इण्डस्ट्रियल स्टैटिस्टिक्स सिमका ।

मिनिस्ट्री आफ कम्युनिकेशन

- १८७५ मेटेरोलोजिकल आफिअ साइजेरी कम्पकता ।
 १८७५ मेटेरोलोजिकल आफिअ साइजेरी पूना ।
 १९०० सीनिमर एलेक्ट्रिकल इंजीनियर आफिअ साइजेरी कम्पकता ।
 १९०१ कोवाई कनाक बाबबर्सेटी साइजेरी कोवाई कनाक ।
 १९३७ साइजेरी आफ द आफिअ आफ द बाइरेक्टरेट फनरल आफ सिविल एबिधन रिस्की ।

१९४२ पोस्ट ऐण्ड टेलीग्राफुअ टु निङ्ग सेंटर साइजेरी बबलपुर ।

१९४५ रीजनल मेटेरोलोजिकल सेंटर साइजेरी नापपुर ।

१९४५ रीजनल मेटेरोलोजिकल सेंटर साइजेरी मद्रास ।

मिनिस्ट्री आफ डिफन्स

१९२७ एयर इंडस्ट्रियल रिफरस ऐण्ड टेक्निकल साइजेरी गई रिस्की ।

मिनिस्ट्री आफ पब्लिकेशन

- १८९१ इम्पीरियल रेकॉर्ड कम आफ इण्डिया साइजेरी रिस्की ।
 १९०२ सेंटरल बाईब्लियोकल साइजेरी गई रिस्की ।
 १९४५ साइजेरी आफ द डिपार्टमेंट आफ द बाईब्लियोकल कम्पकता ।

मिनिस्ट्री आफ फाइनेन्स

- १९३६ साइजेरी आफ द आफिअ आफ द ए० बी० उजीसा (रॉबी) ।
 १९४४ सेंटरल बोड आफ रेव्यू साइजेरी गई रिस्की ।

मिनिस्ट्री आफ फूड ऐण्ड ऐग्रीकल्चर

- १८९९ ज्योलोजिकल सर्वे आफ इण्डिया साइजेरी कम्पकता ।
 १८६२ ज्योलोजिकल सर्वे आफ इण्डिया रीइण्डर ।
 १८९६ साइजेरी आफ द इण्डस्ट्रियल सेक्शन, इंडियन म्युजियम कम्पकता ।

[३] (क) यूनिवर्सिटी लाइब्रेरी

- १८४७ कलकत्ता यूनिवर्सिटी लाइब्रेरी ।
 १८६९ बम्बई यूनिवर्सिटी लाइब्रेरी ।
 १८७९ अलीमड मुस्लिम यूनिवर्सिटी लाइब्रेरी ।
 १८८२ पंजाब यूनिवर्सिटी लाइब्रेरी लाहौर ।
 १९०३ मद्रास यूनिवर्सिटी लाइब्रेरी ।
 १९१६ बनारस हिन्दू यूनिवर्सिटी लाइब्रेरी ।
 १९१९ मैसूर यूनिवर्सिटी लाइब्रेरी मैसूर ।
 १९१७ पटना यूनिवर्सिटी लाइब्रेरी ।
 १९१८ बस्मानिया यूनिवर्सिटी लाइब्रेरी हैदराबाद ।
 १९२१ कलकत्ता यूनिवर्सिटी लाइब्रेरी (टीचर लाइब्रेरी) ।
 १९२२ इलाहाबाद यूनिवर्सिटी लाइब्रेरी इलाहाबाद ।
 १९२२ दिल्ली यूनिवर्सिटी लाइब्रेरी, दिल्ली ।
 १९२५ नागपुर यूनिवर्सिटी लाइब्रेरी नागपुर ।
 १९२६ आग्रा यूनिवर्सिटी लाइब्रेरी आग्रा ।
 १९२९ बन्लामसार्ड यूनिवर्सिटी लाइब्रेरी बन्लामसार्ड नगर, मद्रास ।
 १९३६ नागपुर यूनिवर्सिटी लाइब्रेरी नागपुर ।
 १९४३ उत्कल यूनिवर्सिटी लाइब्रेरी कटक ।
 १९४३ ट्रावणकोर यूनिवर्सिटी लाइब्रेरी त्रिचेन्द्रम ।
 १९४६ धार यूनिवर्सिटी लाइब्रेरी धार ।

कावेर पुस्तकालयों के अन्तर्गत इन्टरमीडिएट कावेर तथा यूनिवर्सिटियों के माध्यम याप्य डिप्लोमाकेजों के पुस्तकालय हैं जो कालेजों के साथ स्थापित किए गए । इसी प्रकार हाईस्कूलों और मिडिल स्कूलों के साथ भी छोटे स्तर पर पुस्तकालय स्थापित हुए । ये पुस्तकालय केवल शिक्षकों और छात्रों को पढ़-पाठ के सुविधा देने के लिए ही थे ।

[४] अनुसन्धान संस्थाओं और स्वतन्त्र शोध-संस्थाओं के पुस्तकालय (लाइब्रेरीज आफ गिनच इन्स्टीट्यूशंस, लैबोरेटरीज ऐण्ड सोसाइटीज) ।

- १८८४ रायल एशियाटिक सोसाइटीज आफ बंगाल लाइब्रेरी कलकत्ता ।
 १८८९ बुधरान विद्यासभा पुस्तकालय आगरा, अहमदाबाद ।
 १८९९ फर्नमेट बामेज आफ वाट पैरड ईण्ड लाइब्रेरी कलकत्ता ।

- १८७६ इंडियन एसोसिएशन फ़ार द कस्टीडियन आफ़ साइस काइनेरी, यादवपुर, कन्नडा ।
- १८१९ गवर्नमेंट बोरियन्ट काइनेरी मैसूर ।
- १८९५ इंडियन बेनेनीरी रिसर्च इंस्टीट्यूट काइनेरी मुम्बै ।
- १९०५ इंडियन ऐग्रीकल्चरल रिसर्च इंस्टीट्यूट काइनेरी नई दिल्ली ।
- १९०९ माइनिंग ज्योडोविक्कस ऐण्ड मेटल्यूरजिकल इंस्टीट्यूट आफ़ इंडिया काइनेरी बनारस ।
- १९०९ सेन्ट्रल रिसर्च इंस्टीट्यूट काइनेरी कर्नाली ।
- १९१० मारठीय इतिहास संशोधन मण्डल काइनेरी पूना ।
- १९११ इंडियन इंस्टीट्यूट आफ़ साइस काइनेरी, बंगलौर ।
- १९१२ कमन्स अनुसंधान समिति (जासाम रिसर्च सोसाइटी काइनेरी) बीहाटी ।
- १९१३ मद्रास फ़ारेस्ट कालेज काइनेरी कोयंबटूर ।
- १९१५ के० आर कामा बोरियन्ट रिसर्च इंस्टीट्यूट काइनेरी बम्बई ।
- १९१७ रोज़ इंस्टीट्यूट काइनेरी कन्नडा ।
- १९१८ मंगारकर बोरियन्ट रिसर्च इंस्टीट्यूट काइनेरी पूना ।
- १९१९ इंडियन कारनिवल्स आफ़ मेडिकल रिसर्च काइनेरी कर्नाली ।
- १९२ कामिया मिमिया इस्लामिया रिसर्च काइनेरी दिल्ली ।
- १९२१ हरकोर्ट बटकर टेक्नोमीजिकल इंस्टीट्यूट काइनेरी कानपुर ।
- १९२४ इंस्टीट्यूट आफ़ प्लांट इंस्टीट्यूट काइनेरी कर्नाली ।
- १९२५ मातबाग़े कालेज आफ़ हिन्दुस्तानी म्यूजिक काइनेरी कन्नडा ।
- १९२६ हिन्दी संग्रहालय हिन्दी साहित्य सम्मेलन इन्व्हायट ।
- १९२९ बाल्य हिस्टारिकल रिसर्च सोसाइटी काइनेरी राजा मुन्बै, ईस्ट कोरनरी ।
- १९२७ मलेरिया इंस्टीट्यूट आफ़ इंडिया काइनेरी दिल्ली ।
- १९२७ राजी बर्मा रिसर्च इंस्टीट्यूट काइनेरी डिब्रूगढ़ (द्राबन कोर कोर्नल) ।
- १९२८ इंडियन बेनेरी रिसर्च इंस्टीट्यूट काइनेरी, बंगलौर ।
- १९३० इंडियन फ़ार्मसिकल आफ़ ऐग्रीकल्चरल रिसर्च इंस्टीट्यूट काइनेरी नई दिल्ली ।
- १९३० कामन्स संस्कृत संशोधनी काइनेरी नन्वारी ।
- १९३ बीपज रिजोवज इंस्टीट्यूट काइनेरी डिब्रूगढ़ ।

१९३१ सेठ बाबूबाबू साधुभाई जनरल होस्पिटल ऐण्ड सेठ विनाई मेटरिटी-
होम मेडिकल साइन्सरी अहमदाबाद ।

१९३३ इण्डियन स्टैटिस्टिक इन्स्टीट्यूट साइन्सरी प्रेसी० काबेज, कन्नडता ।

१९३४ प्रिया साइन्सरी जामनाथ दस बाजार, हैदराबाद ।

१९३६ इण्डियन इन्स्टीट्यूट ऑफ गुगल टेक्नोलॉजी साइन्सरी कामपुर ।

१९३६ टाय इन्स्टीट्यूट ऑफ सांख्य साइन्सरी साइन्सरी बंबई ।

१९३८ एनएनएम मिशन इन्स्टीट्यूट ऑफ कम्प्युटर साइन्सरी कन्नडता ।

१९३९ अग्रुप संस्कृत साइन्सरी फोर् बीकानेर ।

१९४१ हिन्दी पोलीटेक्निक साइन्सरी दिल्ली ।

१९४५ टाय इन्स्टीट्यूट फ्युजामेन्ट रिसर्च साइन्सरी बंबई ।

१९४६ नेशनल मेटलर्जीकल सेपोरेटरी साइन्सरी जमशेदपुर ।

१९४६ बीरबल साहनी इन्स्टीट्यूट ऑफ पेंसिलवोनोमी साइन्सरी कन्नडता ।

[५] सार्वजनिक पुस्तकालय (पब्लिक लाइब्रेरीज)

१८१२ यदास किररी सोबाष्टी साइन्सरी मुम्बयेम भद्रा ।

१८१८ मूनाइटेड सर्विस साइन्सरी पुना ।

१८३९ त्रिवेन्द्रम् पब्लिक साइन्सरी त्रिवेन्द्रम् ।

१८४० सार्वजनिक बाचनालय नासिक सिटी ।

१८४५ पीपुल्स प्री रीडिङ्ग क्लब ऐण्ड साइन्सरी बंबई ।

१८४७ एनविरि नागर बाचनालय रतनगिरि ।

१८४८ जनरल साइन्सरी, बेल्गांव ।

१८४८ पुना सिटी जनरल साइन्सरी पुना ।

१८५० करवी नागर बाचनालय, कोल्हापुर ।

१८५० ऐण्ड्रुस साइन्सरी ऐण्ड रीडिङ्ग क्लब नूरा ।

१८५१ बंगाल बीम्स ऑफ कामस साइन्सरी कन्नडता ।

१८५२ श्रीराम बाचनालय, सार्वतवाणी रतनगिरि ।

१८५४ इन्दौर जनरल साइन्सरी इन्दौर ।

१८५४ उत्तरप्रांश पब्लिक साइन्सरी उत्तरप्रांश हुबली ।

१८५४ प्रौडो एम एच गवर्न साइन्सरी बुन्दिया ५० धारस ।

१८५५ पब्लिक साइन्सरी गया ।

१८५७ त्रिना बाचनालय, धौडापुर ।

१८५७ नीलविरि साइन्सरी, ओटकम्प, नीलविरि ।

- १८५८ कोलकाता पब्लिक लाइब्रेरी ऐण्ड रीडिंगरूम कोलकाता, हुगली ।
 १८५८ रामचन्द्र बीपचन्द्र लाइब्रेरी भद्रीच ।
 १८५० बाबू श्री बेधमुख बाबनाथ, अकोला ।
 १८६३ राष्ट्रीय बाचनालय अकोला ।
 १८६४ करवार सैन्ट्रल लाइब्रेरी करवार (उत्तर कन्नड़) ।
 १८६४ श्यामजी बनजी माई नन्दर रीडिंगरूम ऐण्ड लाइब्रेरी गान-
 देवी सुरत ।
 १८६४ पब्लिक लाइब्रेरी अल्फ्रड पाठ इकाहाबाद ।
 १८६५ बरनमेन्ट लाइब्रेरी धुनागढ़ ।
 १८६५ लोकमान्य बाचनालय अरबी बर्षा ।
 १८६६ महाराजा पब्लिक लाइब्रेरी बयपुर ।
 १८६६ सार्वजनिक बाचनालय योसा नासिक ।
 १८६७ अमरावती नगर बाचनालय अमरावती ।
 १८६८ लीव लाइब्रेरी कुवली मार्सेन रायकोट ।
 १८६९ संमली नगर बाचनालय संवरी सतारा सतब ।
 १८७० अण्णादास जोशनाथ लाइब्रेरी बहामनाबाद ।
 १८७० बाप्टे बापन मंदिर, इचलकरंजी कोल्हापुर ।
 १८७० इनाकुलम पब्लिक लाइब्रेरी ऐण्ड रीडिंगरूम इरलाकुलम ।
 १८७० कृष्णविहार स्टेट लाइब्रेरी कृष्णविहार ।
 १८७० बयाराम श्री रीडिंगरूम ऐण्ड लाइब्रेरी बामनवर ।
 १८७० बूनाइटेड सर्जिस इंस्टीट्यूट माऊ इंडिया लाइब्रेरी सिमला ।
 १८७१ नमन माई कपी माई सार्वजनिक पुस्तकालय, भवराज और ।
 १८७२ कार्नाइकेल लाइब्रेरी बनारस ।
 १८७२ बिक्टोरिया कुवली लाइब्रेरी बमबेरे, पूब लानदेस ।
 १८७२ बिक्टोरिया डायमंड कुवली लाइब्रेरी फर्रुखान ज० सितारा ।
 १८७३ अयरीसी पब्लिक लाइब्रेरी सकारवार अमरेली ।
 १८७३ अणेरातगर पुस्तकालय, अन्दरगमर, हुगली ।
 १८७३ पब्लिक लाइब्रेरी ऐण्ड रीडिंगरूम निचूर ।
 १८७३ पाटील, बंधूमान केसवकाक सार्वजनिक पुस्तकालय पटेछाड़ और ।
 १८७४ शिवपुर पब्लिक लाइब्रेरी शिवपुर, हवड़ा ।
 १८७४ सार्वजनिक पुस्तकालय छोखिवा ।
 १८७५ अकवट इडवड इंस्टीट्यूट ऐण्ड लाइब्रेरी पूना ।

- १८७६ द्वारका सार्वजनिक पुस्तकालय द्वारका ओझमंडल बमबनेरी ।
 १८७७ मुंबियसी साइन्सेरी कलकता ।
 १८७७ बल्लभदास बाळजी पम्पिक साइन्सेरी बल्लभाय पूर्व सायदेय ।
 १८७८ पारीय बल्लभदास हैयचन्व बनरक साइन्सेरी बिद्यमगौर (मेहसना) ।
 १८८२ जे० बी पेट्री रीडिङ्ग रूम साइन्सेरी ऐन्ड पम्पिक हाक विन्डिगोर
 सुरत ।
 १८८२ टास्टरसा पम्पिक साइन्सेरी कलकता ।
 १८८३ बाय बाजार रीडिङ्ग रूम साइन्सेरी कलकता ।
 १८८३ बिहार क्रिस्तीनी साइन्सेरी पटना ।
 १८८३ इलक बाक क्विन्सोफी मद्रुटाई ।
 १८८४ बंभा पम्पिक साइन्सेरी हबड़ा ।
 १८८४ पंजाब पम्पिक साइन्सेरी साहौर ।
 १८८५ बेसी साधारण ग्रन्थागार बेसी हबड़ा ।
 १८८५ सार्वजनिक पाषाणात्म्य बीबापुर ।
 १८८६ बघार साइन्सेरी बघार, मद्रास ।
 १८८६ गोपाल राय पम्पिक साइन्सेरी कुम्भकोनम, तंवीर ।
 १८८५ मोहिरी पम्पिक साइन्सेरी हबड़ा ।
 १८८६ सामक साइन्सेरी ऐन्ड रीडिङ्ग रूम मेरठ ।
 १८८६ हल्लराय साइन्सेरी बम्बाला ।
 १८८७ बैसाई मानजी गोकल जी ऐन्ड सेठ बबरछाड हर बीजन साइन्सेरी
 पोरबन्दर ।
 १८८७ श्री विक्टोरिया युवकी साइन्सेरी बनभनेर, कर्णियावाड ।
 १८८७ हेमचन्द्रा साइन्सेरी लखपुर ।
 १८८८ सुवचन रीडिङ्ग रूम कलकता ।
 १८८९ भाळी बबल पुस्तकालय इलाहाबाद ।
 १८८९ बीडग साइन्सेरी ऐन्ड बीडग स्क्वामर मिन्टरेरी कलकता ।
 १८९० कोनेमरा पम्पिक साइन्सेरी मद्रास ।
 १८९० वाटल साइन्सेरी भाबनगर ।
 १८९० धीर्मठ फोर्होधिह राय सार्वजनिक साइन्सेरी बबरा, पाटल ।
 १८९१ म्हाबस्की साय साइन्सेरी विवालीबिकल पोवाइटी बम्बई ।
 १८९१ बंघवेरिया पम्पिक साइन्सेरी बंघवेरिया हबडी ।
 १८९२ ए० एम० इहि सगनी साइन्सेरी मदिवाड लैर ।

- १८९३ भाव भावा पुस्तकालय मापरी० प्र समा० बनारस ।
 १७९६ पब्लिक लाइब्रेरी फररा कड़ीया ।
 १८९३ बंगीय साहित्य परिषद कलकत्ता ।
 १८९३ मराठी ग्रंथ संग्रहालय बाना बम्बई ।
 १८९४ फाटन लाइब्रेरी कुवरी बाघाम ।
 १८९५ राजाराम शीताराम वीरिण लाइब्रेरी श्रीवास्तवी नागपुर ।
 १८९६ बालसमा ठालुका सावजनिक लाइब्रेरी बालसमा ।
 १८९६ मद्रास सि० को० टुमरिङ्ग लाइब्रेरी बेरियलुसम् मद्रास ।
 १८९६ श्रीजवनराज पब्लिक लाइब्रेरी बार्ध-नार्ब सिवाय ।
 १८९७ राजेन्द्र बिन्दोरिया डाहमंड कुवसी पब्लिक लाइब्रेरी पटियाला ।
 १८९८ महिमाई दवामाई सावजनिक पुस्तकालय बर्मास छोडे ।
 १८९८ मुम्बई मापरी ग्रंथ संग्रहालय ठाकुरखारा बम्बई ।
 १८९८ श्री बीरमी लाइब्रेरी राजा मुन्वरी ईस्ट गोवाबरी ।
 १८९८ श्री प्रताप सिंह पब्लिक लाइब्रेरी श्रीनगर, कश्मीर ।
 १८९८ श्री शिबजी शार्बजनिक पुस्तकालय प्यारा मूण ।
 १८९८ श्री स्यामी बैमब शार्बजनिक पुस्तकालय नवसारी मूण ।
 १८९९ श्री रामचन्द्र लाइब्रेरी धारीबर ।
 १९०० गावरी प्रचारिणी समा लाइब्रेरी बाय ।
 १९०० पंडित मोतीबाब मुनिस्वर पब्लिक लाइब्रेरी बमूतगर ।
 १९०० स्टेट पब्लिक लाइब्रेरी भरतपुर ।
 १९०१ मुनिस्वर बिन्दोरिया मेमोरियल पब्लिक लाइब्रेरी ऐष रीडिङ्ग कम, सेकीबरी ।
 १९ १ साकुयेव्य बोरिकस्टल लाइब्रेरी कुम्बकोनम तंवीर ।
 १९०२ माजू पब्लिक लाइब्रेरी माजू हबडा ।
 १९०२ पैट्रिआटिक लाइब्रेरी ऐष वी रीडिङ्ग कम कलकत्ता ।
 १९ ३ बाघाम परमनेट पब्लिक लाइब्रेरी सिकाङ्ग बाघाम ।
 १९ ३ कर्जत हाक लाइब्रेरी, पीडाटी ।
 १९०४ क्कोरिया पब्लिक लाइब्रेरी कलकत्ता ।
 १९ ४ पंचमेस हिन्दु बसोसिएशन लाइब्रेरी इसोर, बस्ट गोवाबरी ।
 १९०५ एम० एम० रामबाई साहब बाचनालय बमबई बीजापुर ।
 १९०५ राममीरुण लाइब्रेरी ऐष वी रीडिङ्ग कम कलकत्ता ।
 १९०५ सर्वेष्ट बाफ इण्डिया सोसाइटी लाइब्रेरी रामपेटम ।

- १९०७ कन्नड सार्वजनिक पुस्तकालय कन्नड बङ्गीवा ।
 १९०७ मेसोर प्रोप्रेसिव युनियन श्री रीडिङ्ग रूम ऐन्ड लाइब्रेरी मेसोर ।
 १९०७ बिक्टोरिया इन्वर्ड हास मद्रास ।
 १९०७ श्री सयाजी स्वेटीसकोब पुस्तकालय सिनोर, बङ्गीवा ।
 १९०७ सेठ सखीबख्श सुन्दर श्री पब्लिक लाइब्रेरी डिबपुर, मेहसना ।
 १९०८ अजमेर म्युनिसिपल पब्लिक लाइब्रेरी अजमेर ।
 १९०८ सरदार दयारामसिंह पब्लिक लाइब्रेरी लाहौर ।
 १९०८ सेठ मातलाल भाईमोहणलाल पब्लिक लाइब्रेरी मेहसाना ।
 १९०९ श्रीसयाजी गोखलेन बुबली सार्वजनिक पुस्तकालय बीजापुर, मेहसना ।
 १९०९ सेठ एम० आर० पब्लिक लाइब्रेरी अंसा ।
 १९१० अमीरुद्दीन यवर्नियंट पब्लिक लाइब्रेरी लखनऊ ।
 १९१० एम० एम० अमीन सार्वजनिक पुस्तकालय मदिनाह सैर ।
 १९१० मित्थामर लाइब्रेरी ऐन्ड श्री रीडिङ्ग रूम कन्नकटा ।
 १९११ मद्रासर पब्लिक लाइब्रेरी मद्रासर, हुमली ।
 १९११ श्रीमान् मुनी महाराज श्रीमोहणलाल श्री जैत सेंट्रल लाइब्रेरी बम्बई, ।
 १९११ सर्वेन्द्रस बाफ इन्डिया सोसाइटी लाइब्रेरी पुना ।
 १९११ सेंट्रल लाइब्रेरी बङ्गीवा ।
 १९११ मन्नालाल मुस्तकालय बवा ।
 १९११ नार्स इन्डमी कमला लाइब्रेरी, टेंपरा कन्नकटा ।
 १९११ रेखात्मिक अन्त पुस्त मेसोरियल लाइब्रेरी कन्नकटा ।
 १९११ राममोहन श्री लाइब्रेरी ऐन्ड रीडिङ्ग रूम वेववाड़ा ।
 १९११ सेंट्रल जैत ओरियण्टल लाइब्रेरी आरा ।
 १९११ हुमीदिया स्टेट लाइब्रेरी भुयाल ।
 १९११ करन बाई ठामिल संघम लाइब्रेरी कस्तमगड्डी, संजौर ।
 १९१२ सेंट्रल पब्लिक लाइब्रेरी सङ्गमूर ।
 १९१२ श्रीभाषा संजीवनी संप्रहम अमुठानूर, तैवाळी ।
 १९१२ हिन्दी पुस्तकालय हिंदी साहित्य सम्प्रेषक इन्डियाबाद ।
 १९१३ छगनलाल पैठाम्बरदास परीय श्री पब्लिक लाइब्रेरी मेहसाला ।
 १९१३ टपूक पब्लिक लाइब्रेरी हवड़ा ।
 १९१३ महाराज बाबनालय विमल मन्दिर, जवळपुर ।
 १९१३ श्री के० आर० बी० के० लाइब्रेरी काकोमाड ईस्ट गौरावटी ।

- १९१३ धीबिन तिलनास सार्वभेटी ऐषड रीडिङ्ग कम बाबीमुर निवेष्ट्रम ।
१९१३ सार्वजनिक पुस्तकालय कावी मेहुमना उ बुजराठ ।
१९१३ सुख परिपत्र ऐषड हेमचन्द्र प्रन्धागार, बाकीपुर, पटना ।
१९१३ हिन्दी प्रचार साङ्गरी महास ।
१९१४ पञ्चमना सार्वजनिक पुस्तकालय पञ्चमना धुण्ड ।
१९१४ पञ्चमना साङ्गरी मैसूर ।
१९१४ पञ्चमना साङ्गरी शोचार्त्रि बम्बर मेमो० ह्वाङ्ग बंगबौर ।
१९१४ मारवाडी हिन्दी पुस्तकालय बम्बरई ।
१९१४ शैबोल पञ्चमना साङ्गरी शैबोल बीषानुर मेहुमना ।
१९१४ श्री बारमेन्द्र साङ्गरी नागीव सतना ।
१९१४ श्री रामचन्द्र प्रन्धालय पोदूर (बेस्ट गोदावरी) ।
१९१४ शरदा सदन पुस्तकालय काङ्गरेज मुदुकरपुर ।
१९१५ श्रममजल पुस्तकालय इकाहाबार ।
१९१५ मारवाडी पञ्चमना साङ्गरी बिस्वी ।
१९१५ साङ्गरेज मधुसूदन साङ्गरी कलकता ।
१९१५ ब्रह्ममिहिराचार्य पुस्तकालय पटना ।
१९१५ श्री एस बी० साङ्गरी पिबोपुरम् (ईस्ट गोदावरी) ।
१९१५ सुमेर पञ्चमना साङ्गरी बोलपुर ।
१९१६ शैबी सरस्वती पाठागार बेबी ह्वाङ्गा ।
१९१६ श्री ईस्वर पुस्तक माष्ठागारम् रामराज पीट कलकता ।
१९१६ श्री सयाबी सार्वजनिक साङ्गरी बम्बोई, बङ्गीरा ।
१९१६ संस्कृत साङ्गरेज परिपत्र, कलकता ।
१९१७ मेसनस साङ्गरी बम्बर बम्बरई ।
१९१७ महाराजा गजपति राज हिन्दू रीडिङ्ग कम ऐषड साङ्गरी बिष्ठाङ्ग ।
१९१७ माबब मेमोरियल साङ्गरी, ससकिया ।
१९१७ श्री सिडेस्वर मुत्त बाचनालय ब्रह्मचरि ।
१९१७ सार्वजनिक बाचनालय ऐषड निष्ठा प्रन्धालय ब्रह्मचरि कोसला ।
१९१८ इन्डियन एज्युकेशनल सोसैटी ऐषड रीडिङ्ग कम बिष्ठाङ्ग
मैसूर ।
१९१८ तंवीर महाराज सरस्वती श्री सरस्वती मङ्गल साङ्गरी तंवीर (स्थापित
१९३५) ।
१९१८ नरयण प्रन्धालयम्, पोवादा ।

१९४३ ममपुरम् वापीनम् अइहरेयी मयूरम् ।

१९४३ हिन्दू धर्म संस्कृति मन्दिर बनतोलो नागपुर ।*

इन पुस्तकालयों का विस्तृत विवरण देना यहाँ सम्भव नहीं है किन्तु इनमें से दो पुस्तकालयों के विषय में यहाँ संक्षेप में जान लेना आवश्यक है —

१ इम्पोरियल लाइब्रेरी, और २ हिन्दी संग्रहालय ।

(१) इम्पोरियल लाइब्रेरी

आजकल जिसे 'नेशनल लाइब्रेरी' का स्वतन्त्र भारत का राष्ट्रीय पुस्तकालय कहते हैं उसकी स्थापना ब्रिटिशकाल में हुई थी । इसका संक्षिप्त विकास इस प्रकार हुआ —

'इन्कविजिड मैन' समाचार-पत्र के सम्पादक श्री जे० एच० स्टॉकेंडर मध्ये-यम थे । उनके मन में कलकत्ता में एक पब्लिक लाइब्रेरी स्थापित करने का विचार बज । उन्होंने १८३५ ई० में इस सम्बन्ध में एक अधिमापन प्रस्तावित करवाया जिसमें इस पुस्तकालय की योजना रखी । कलकत्ता के १३३ प्रमुख सरजनों ने उसकी इस योजना का समर्थन किया । उसके फलस्वरूप ३१ जनवरी १९३५ 'टाउनहाल' में सरजान पेटर प्रांट की अध्यक्षता में एक पब्लिक मीटिंग हुई । उसमें २४ सरजनों की एक बस्थायी समिति बनाई गई जिसमें दो हिन्दुस्तानी सरजम भी थे । जे० एच० स्टॉकेंडर महीबम प्रथम अर्बतनिक मन्त्री चुने गए और ८ मार्च १८३६ से पुस्तकालय का काम प्रारम्भ कर लिया गया ।

पुस्तकालय का शीघ्रसे ज्यक्तिगत लोगों से निजी पुस्तकों तथा मर्नर पत्ररत की आज्ञा से फोट लिथियम कामेब से प्राप्त ४६०५ पुस्तकों के संग्रह को लेकर हुआ । पुस्तकालय के लिए 'टाउनहाल' में स्थान प्राप्त करने की कोशिस की गई किन्तु सफलता न मिली । प्रारम्भ में पुस्तकालय को डा० ए० बी० स्ट्राएट्टा के मकान में रखा गया । उसके बाद १८४१ ई में फ्रीट लिथियम कामेब के हिस्से में स्थान मिल गया और वहाँ पर उसे स्थानित किया गया ।

* ऊपर विभिन्न प्रकार के कुछ प्रसिद्ध पुस्तकालयों के नाम विक्रम-कम के अनुसार दिये गए हैं । प्रायःक बग के इन पुस्तकालयों में अनेक नए पुस्तकालय ऐसे भी हैं जिनका स्थापना-काल उपर्युक्त नामों से ज्ञात नहीं हो सका । जैसे पटना की गुराधकण्ड लाइब्रेरी आदि । किन्तु उनके नाम इतने नहीं दिए जा सके ।

सन् १८४० ई० में सरकार से कुछ भूमि मिल गई थी। उसी पर 'मैटकाफ भवन' बना और सन् १९४४ में उसी भवन के ऊपरी भाग में पुस्तकालय रख दिया गया।

सदस्यता के नियम

प्रारम्भ में पुस्तकालय के सदस्यों की सीमा बहिर्भाषा बनाई गई। उसमें से तीसरी श्रेणी के लोगों को पुस्तकों या पत्रिकाएँ ले जाने की अनुमति नहीं थी। १८५७ में मुस्क की दर फिर से निर्धारित की गई। १८६४ ई० में आजीवन सदस्यता का नियम लागू करके एक श्रेणी श्रेणी भी बनाई गई। इस श्रेणी के सदस्यों को सिर्फ पुरानी पुस्तकों मिल सकती थीं। पुस्तकालय ९ बजे सुबेरे से के कर शाम तक (छुट्टियों को छोड़ कर) खुला रहता था। १८४९ ई० में प्रवेश-मुस्क हटा लिया गया तथा एक स्वयं वाची अभी बनाई गई। इस तरह पुस्तकालय की मामूली म कमी हुए बिना ही उसकी उपयोगिता बढ़ गई। १८४९ के अगस्त में पाठकों की संख्या सिर्फ १३० थी मगर दिसम्बर में ३२३ हो गई।

यूनिस्पेसल लाइब्रेरी के रूप में

१५ जनवरी १८९० को नगरपालिका के सदस्यों की एक बैठक हुई। उसमें नगरपालिका ने पुस्तकालय का सारा खर्च अपने ऊपर ले लिया। पुस्तकालय की व्यवस्था के लिए एक संयुक्त समिति बनाई गई जिसके माथे सदस्य नगरपालिका की ओर से और माथे पुस्तकालय के संरक्षकों तथा सदस्यों के द्वारा चुने गए। २० अप्रैल १८९० से पुस्तकालय की व्यवस्था नगरपालिका के हाथ में पूरी तौर से सौंप दी गई। पुस्तकालय के लिए फिर से नियम बनाए गए और पुस्तकों की एक साधारण सूची (विषयवारी कैटलॉग के रूप में) तैयार करने का काम शुरू किया गया। १८९० ई० के बुलाई महीने में एक निःशुल्क धावनिक बाचनालय खोला गया। पहले किराते बाचनालय के साथ एक रिफ्लेस लाइब्रेरी की भी स्थापना हुई। इन कार्यों से पुस्तकालय बहुत ही लोकप्रिय हो गया। धीरे-धीरे सदस्यों की संख्या भी बढ़ने लगी। १८९२-९३ में सदस्यों की संख्या ३२७८० हो गई। बंगाल सरकार ने भी ५००० रुपये की डाँट पुस्तकालय के पुनर्गठन काम के लिए दी।

इम्पीरियल लाइब्रेरी

सरकारी कई विभागों की पुस्तकों को मिल कर 'इम्पीरियल लाइब्रेरी'

गामक लाइब्रेरी की स्थापना कलकत्ता के बीबानी सचिवालय में १८९१ ई० में हुई थी। काई कन्नन के उद्योग से इस इम्पीरियल लाइब्रेरी और ऊपर की कलकत्ता पब्लिक लाइब्रेरी (म्युनिसिपल लाइब्रेरी) इन दोनों को १९०२ ई० में मिला दिया गया और इसका नाम 'इम्पीरियल लाइब्रेरी' रखा गया। इसका मूल सिरे से नेटालन दीवार किया गया। इसका उद्देश्य यह था कि यह पुस्तकालय सम्पन्न का केन्द्र बन जाय और भारत के सभी इतिहासकारों के लिए आवश्यक सामग्रियों का संग्रहालय सिद्ध हो। साथ ही भारत से सम्बन्धित समस्त साहित्य यहाँ ही जिसका उपयोग लोग सरलतापूर्वक कर सकें। १० जनवरी सन् १९०३ ई० में इस पुस्तकालय का द्वार सर्वसाधारण के लिए खोल दिया गया। काई कन्नन ने इस पुस्तकालय के सम्बन्ध में अपने प्रतिनायक में इस प्रकार कहा था —

“कलकत्ते में हमें एक ऐसे पुस्तकालय का निमन्त्रण करना चाहिये जो भारतीय साम्राज्य की राजधानी इम मगरी के गौरव के उपयुक्त हो सके।”

ब्रिटिश म्युजियम क्लब के सहायक लाइब्रेरियन श्री जॉन मैकडरलैन इसके लाइब्रेरियन बनाए गए। उन्होंने अपनी योग्यता अनुभव और काय-पटुता के द्वारा पुस्तकालय को अप-टू-डेट और लोकोपयोगी बना दिया। इसके बाद पुस्तकों की संख्या में वृद्धि होती रही। १९०३ में पाठकों की संख्या सिर्फ १५०९३ थी परन्तु १९४० में ७१६४४ तक पहुँच गई। इन पुस्तकालय को १९४६ ई० में बिहार (दरभंगा) के जमींदार दीपक चन्द्रसिंह बहुमल बन निजी सग्रह में स्वयं प्राप्त हुआ। इस संग्रह में १५०० छपी तथा ८५० हस्तलिखित महात्त्वपूर्ण पुस्तकें थीं।

सबसे कीमती पुस्तक

विश्व की सबसे कीमती पुस्तक कुत्तन की एक प्रति है जिसे अफगानिस्तान के जमीर को फारस क शाह ने उपहार स्वरूप दी थी। आजकल यह भारत के राष्ट्रीय पुस्तकालय की सम्पत्ति है। इस पुस्तक में सोने के बागव है और ८० बहुमूल्य रत्न इसमें जड़े हुए हैं। इन रत्नों में १७ मोती हैं १३२ काष्ठ और १०९ हीरे। पुस्तक की कीमत ३,००० पाँच (सयसय ४ सार्ग रूपये) की भी गई है।

रिषे समिति

१९२९ ई सरकार ने इम्पीरियल लाइब्रेरी के कार्यों की जाँच और उसके विभाग के लिए जे० ए० रिषे महोदय की अध्यक्षता में एक समिति



स्वर्गीय गानेशधर क एम धनदुम्भा

बनाई। समिति ने पुस्तकालय की व्यवस्था स्वाम और वर्ष सम्बन्धी सारी बातों की कल्पना-नीति के बाह और निम्नलिखित सिफारिशों की —

१ इम्पीरियल लाइब्रेरी का रूप एक रिफॉस लाइब्रेरी का होना चाहिए तथा इसमें हिन्दुस्तान सम्बन्धी सारी पुस्तकों का संग्रह हो।

२ इम्पीरियल लाइब्रेरी का रूप एक ऐसे केन्द्रीय पुस्तकालय का होना चाहिए कि जिससे हिन्दुस्तान के किसी भी भाग के व्यक्ति को अपने विशेष अध्ययन के लिए पुस्तकें मिल सकें।

३ पुरानी परिषद् के बदले नई परिषद् का निर्माण होना चाहिए और साधारण व्यवस्था एक छोटी समिति के हाथों सौंप दी जानी चाहिए।

४ पुस्तकालय-संरचना का पूरा ढांच केन्द्रीय रेज्यू से मिळे परन्तु प्राचिनतात्म्य का सर्व प्रांतीय रेज्यू से मिळे।

जमी ठकुर पुस्तकालय मेटकाफ भवन में था। लोकन बहुत स्वाम की कमी पड़ने के कारण बाह में १ एस्प्लीनेड के सरकारी भवन में इसे स्वामान्तरित करके रखा गया। ब्रिटिशकाल तक यह पुस्तकालय इसी भवन में रहा और धीरे-धीरे रिचे समिति की सिफारिशों के अनुसार इसकी व्यवस्था हुई।

श्री के० एम० असदुल्ला

स्व० श्री असदुल्ला साहब १९११ ई० में इम्पीरियल लाइब्रेरी के लाइब्ररियन नियुक्त किये गए। उन्होंने बड़ी कल्प और उत्प्रेरणा से इस लाइब्रेरी की सेवा की। उन्होंने १९३५ ई में ब्रिटिश सरकार से मजूरी से कर इस लाइब्रेरी में एक ट्रेनिङ्ग कोस भी प्राप्त किया। उन्होंने बलिक प्रांतीय पुस्तकालय संघ की भा स्थापना यहीं पर की। ब्रिटिशकाल तक वे ही इस पुस्तकालय के अध्यक्ष पर पर बने रहे।

(२) हिन्दी संग्रहालय

यह राष्ट्रभाषा हिन्दी का एक अनुधीकन केन्द्र और हिन्दी प्रेमियों का तीर्थ है। प्रयाग में हिन्दी साहित्य सम्मेलन कार्यालय के साथ ही यह संग्रहालय अपने निजी भवन में व्यवस्थित है। इसका शिष्यान्वय आयोग्यावासी स्व० आर्य सीताराम जी ने १९ नई १९३२ ई० को किया था। ३२४५५ रुपये की लागत से २३ वर्ष में इसका भवन बन कर तैयार हुआ। इस ऐतिहासिक भवन और संस्कृतिक केन्द्र को इस प्रकार का स्वयं देने का मुख्य ध्येय राजपि की पुस्तोत्तमवास की टंकन को है। इस संग्रहालय का उद्घाटन राष्ट्रपिता गांधी जी ने ५-१-३९ ई को किया था। संग्रहालय का भीतरी ह्रास ९० X ४० फुट

हिन्दी, संस्कृत पाठी प्राकृत दामिनी चर्च मराठी, गुजराती, तेलुगु, बरबी और पंजाबी आदि है।

१. २ हस्तलिखित विभाग में योरोपीय भाषाओं के भी अनेक महत्वपूर्ण ग्रन्थ हैं किन्तु प्राच्य भाषा की पोबियों का तो अनुपम संग्रह है। उनमें बरबी परचियन संस्कृत तिब्बती खीतानी बंधका हिन्दी गुजराती, मराठी उड़िया पठो और उर्दू की पोबियां मुख्य हैं। संस्कृत बरबी, परचियन और तिब्बती भाषाओं की पोबियों की संख्या १९,५०० है। इसी प्रकार उर्दू, मराठी हिन्दी गुजराती बरती उड़िया और बंगला की पोबियां भी पर्याप्त संख्या में हैं। इनके अतिरिक्त बर्मा इण्डोनेशिया और छद्दी आदि देशों की भाषाओं के भी कई ही ग्रंथ हैं। इस विभाग की पोबियों की कुछ वर्गीकृत सूचियां १८८७ से १९१५ के बीच छप चुकी हैं और कुछ छाने के लिए टीकार हो गई हैं।

३. विश्वकला विभाग में भारतीय जीवन से सम्बन्धित चारचार कला-कारों के समग्र १५०० पुस्तक चित्र संग्रहित हैं। साथ ही परचियन भाषा की पोबियों में २००० चित्र सप्त समय के अन्तर कलाकारों की स्मृति के रूप में मौजूद हैं। इस विभाग के चित्रों के संग्रह दो सीरीज में निकल चुके हैं।

४. प्योटे विभाग में भारतीय चित्र वास्तुशिल्प और पुरातत्त्व से संबंधित समग्र २१०० लिथोग्रफ प्लेट्स और समग्र १०००० विभिन्न प्रकार के चित्रों का संग्रह है।

५. फुटकर छापणी में बामोफोन रिवाइल और भारतीय स्टार्ड-गुनार्ड के नमूने आदि संग्रहित हैं।

उपचार के नियम

इस महान पुस्तकालय के विभिन्न संग्रहों तथा विवरणियाँ की ही पुस्तकें उपचार की जा सकती हैं। उपचारण रूप से सभी की बही कर बैठ कर छात्रों का उपबोध करने की सुविधा भी जाती है, घर के लिए नहीं। किसी छात्रों की प्रतिबिम्बि करने की सुविधा भी विदेश स्थिति में कर दी जाती है।

इन प्रकार यह पुस्तकालय इण्डिया में विभिन्न सरकार द्वारा माध्य में ३०वीं शताब्दी के आगिरी दिनों तक समृद्ध होगा रहा।

पुस्तकालय संघों की स्थापना

पुस्तकालय के व्यापक प्रसार के लिए ब्रिटिश शासनकाल में बहिस भारतीय और प्रांतीय स्तर पुस्तकालय-संघों की भी स्थापना हुई।

अखिल भारतीय सार्वजनिक पुस्तकालय संघ (अखिल इंडिया पब्लिक लाइब्रेरी एसोसिएशन)

सन् १९१८ ई० में भारत में ब्रिटिश सरकार ने काहीर में एक बहिस भारतीय पुस्तकालय सम्मेलन का आयोजन किया। बाल्य भाषों ने अपना प्रतिनिधि भेजना चाहा किन्तु सरकार ने अनुमति नहीं दी। काहीर के इस सम्मेलन ने संघ को सिर्फ सरकारी पुस्तकालयों के संघ का रूप दिया। इस पर बाल्य के पुस्तकालय कार्यकर्ता ने समस्त भारत की सेवाओं के लिए एक केन्द्रीय संघ की स्थापना की। श्री नर्सिंह शास्त्री और श्री इमाकी बेंकट रमैया की लगन और प्रयत्नों से १९१९ ई० में इस संघ का प्रथम अधिवेशन श्री जे० एस० कुचोलकर (बड़ीवा राज्य के पुस्तकालय विभाग के संचालक) की अध्यक्षता में मद्रास में हुआ। इस प्रकार १९२० ई० में 'अखिल भारतीय सार्वजनिक पुस्तकालय संघ' की विधिबत् स्थापना हुई। इसका कर्तव्य गैर सरकारी सार्वजनिक पुस्तकालयों का संयोजन करना था। इसके वार्षिक सम्मेलन के साथ-साथ 'अखिल भारतीय पुस्तक तथा पत्र-पत्रिका प्रदर्शनी' भी हुई, जिसका उद्घाटन मद्रास के उत्काशीन पब्लिक लाइब्रैरियन ने किया। इस संघ का दूसरा सम्मेलन श्री एस० आर० जयकर की अध्यक्षता में १९२३ ई० में कोलकाता में हुआ। १९२४ ई० में कुमाई से 'भारतीय पुस्तकालय पत्रिका' (इन्डियन लाइब्रेरी जर्नल) का भी प्रकाशन संघ ने शुरू किया। इस सार्वजनिक पुस्तकालय संघ के अगले सम्मेलन बेम्बई में मद्रास अध्यक्षता काहीर, मेजवाड़ा बादि में हुए। इनमें सर राधाकृष्णन्, सी० आर० शां ड० प्रमथनाथ बनर्जी सर प्रफुल्लचन्द्र राजा डा० मोतीलाल डा० बी० एस० राव, डा० आनहार्ट और चम्पलाली के राजा साहब आदि महान् व्यक्तियों का सहयोग प्राप्त हुआ। इस संघ की प्रेरणा से बंगाल मद्रास और हैदराबाद आदि में पुस्तकालय संघों स्थापना भी हुई।

मया मोड़

सेप्टिम्बर १९३० ई० में एलिफाई शिवा सम्मेलन मद्रास में हुआ जो उस सम्मेलन के साथ-साथ एक पुनर् 'पुस्तकालय-सेवा विभाग' का भी अन्त हुआ। एक प्रस्ताव द्वारा यह भी स्वीकार किया गया कि 'अखिल भारतीय सार्वजनिक पुस्तकालय संघ' प्रांतों में बहने वाले पुस्तकालयों के

कायों को मूकबद्ध करे परन्तु इस सम्मेलन में कुछ भी काय न हो सका। यह काम पंजाब के स्व० श्रीमान् बन्धुजी का किया गया था।

अखिल भारतीय पुस्तकालय संघ की स्थापना

जब जो अखिल भारतीय पुस्तकालय संघ बिल रहा है, इसकी स्थापना सन् १९१३ में हुई। सन् १९११ में सितम्बर मास के कम्प्लेता में एक सम्मेलन का आयोजन किया गया। उसका नाम रखा गया प्रथम 'अखिल भारतीय पुस्तकालय सम्मेलन'। बास्तव में यह सम्मेलन पहले वाले 'अखिल भारतीय सार्वजनिक पुस्तकालय संघ' के विरोध में एक प्रतिक्रिया के रूप में हुआ। इस सम्मेलन के लोगों का कहना था कि 'अखिल भारतीय सार्वजनिक पुस्तकालय संघ' में पुस्तकालय के पेटे (प्रोटेजन्) से सम्बन्धित लोग नहीं हैं। अस्तु, कम्प्लेता के उक्त सम्मेलन के अध्यक्ष डा० एस० जी० टामस और मंत्री यू० एम० ब्रह्मचारी चुने गये। इस सम्मेलन के स्वागत मंत्री इम्पोरिवल माओरियन श्री के० एम० अरवुस्वमि साहू थे। भारत सरकार के शिक्षा विभाग के कमिश्नर श्री आर० विष्णुन ने सम्मेलन का उद्घाटन किया। बड़ी कृपयाग रही। संघ की स्थापना हुई और पंजाब विरवविद्यालय के वाइस चांसलर भी ए० सी० बुछनर मझेबन इस संघ के प्रथम अध्यक्ष और श्री के० एम० अरवुस्वमि मंत्री चुने गये। संघ का कर्नालय कम्प्लेता में रखा गया।

पुछना 'अखिल भारतीय सार्वजनिक पुस्तकालय संघ' १९१७ ई० तक ही चलता रहा उसके बाद भङ्ग हो गया।

अखिल भारतीय पुस्तकालय संघ की प्रगति

अखिल भारतीय पुस्तकालय संघ का रेजिस्ट्रेशन १९१३ में हुआ। इसके उत्प्रेत्य इस प्रकार है —

- १ भारत में पुस्तकालय आन्दोलन की उत्पत्ति करना।
- २ भारत में पुस्तकालयाध्यक्षों को प्रशिक्षित कर उनकी उत्पत्ति करना।
- ३ पुस्तकालय-विज्ञान में योग्य कार्य को बढ़ाना।
- ४ पुस्तकालयाध्यक्षों को सेवा की दृष्टि और ईगिबत में सुधार।
- ५ सभान जेरेरय के अन्तराष्ट्रीय संगठनों के साथ सहयोग करना।

इस संघ ने सन् १९१८ में एक 'इन्डियन कारबेरी काररेकटी' संघार करनी प्रथम प्रकाशित की। इस लक्ष के अविशेषन नियमानुसार हर ही रूप पर होते रहे। उनके विवरण इस प्रकार है —

क्रम	वर्ष	स्वान	काव्यकृत
द्वितीय	अभिव्येक्षण	१९३५	कलकत्ता डा० ए० सी० बुकनर ।
तृतीय	अभिव्येक्षण	१९३७	दिल्ली डा० बही मुहम्मद ।
चतुर्थ	अभिव्येक्षण	१९३९	पटना डा० सच्चिदानन्द सिन्हा
पंचम	अभिव्येक्षण	१९४२	बम्बई सार्जेन्ट साहू ।
षष्ठ	अभिव्येक्षण	१९४४	बम्बई जे० सी० रोस्त ।
सप्तम	अभिव्येक्षण	१९४६	बङ्गाल डा० महादुर बन्नी बुकशूट ।

इस संघ को प्रस्था से अत्य प्राप्ति में भी पुस्तकालय-आन्दोलन को बल मिला और काफी जागृति हुई ।

संघ की ओर से 'साइडरी बुकेटिन' का प्रकाशन १९४९ से १९४९ तक होता रहा । उसके बाद 'व्यवस्था' पत्रिका प्रकाशित होता रही ।

भारत में पुस्तकालय आन्दोलन

पुस्तकालय-आन्दोलन नामक व्यापकताओं के अनुसार पुस्तकालयों के सम्बन्ध का एक संगठित रूप है । आन्दोलन का मुख्य उद्देश्य सार्वजनिक में ज्ञान का प्रचार करना है और इसका प्रमुख सामन है पुस्तकालय । यह आन्दोलन जापानिक युग की ही नींव है । यह ब्रिटेन में इसका आरम्भ ही यह पूर्व, अमेरिका में बस्ती वर्ष पूर्व और योरोप के अन्य देशों में तथा जापान में वैतास्मिष्ठ रूप पूर्व हुआ था ।

पुस्तकालय-आन्दोलन की सफलता के लिए दो अवस्थाएँ आवश्यक रूप से अपेक्षित हैं । एक तो पुस्तकों के उत्पादन में सीमा बृद्धि और दूसरे ज्ञान के प्रचार को सार्वजनिक तक पहुँचाने के लिए समाज में तीव्र जागृति । भारत में इन दोनों अवस्थाओं का अनुभव और विस्तार बहुत बाद में हुआ । भारत में पुस्तकालय-आन्दोलन आरम्भ तो हुआ किन्तु वह कोई राष्ट्रीय आन्दोलन नहीं था और न ही उसे कोई कानूनी सहायता ही प्राप्त थी । यह आन्दोलन भारत में कहीं से और कत्र से आरम्भ हुआ और इसका कठिने विकास हुआ इसका संक्षिप्त परिचय प्राचीन स्तर पर इस प्रकार है—

ब्रिटिश शासनकाल में भारत अनेक प्रांतों और देशी रियासतों में बँट चुका था । उनमें से देशी रियासतों को अपने क्षेत्र के अन्दर शिक्षा आदि प्रत्येक बात की पूरी स्वतन्त्रता थी । केवल बाहरी मामलों में ब्रिटीश सरकार का अंतुष्ट ज्ञान पर रहता था । ऐसी रियासतों में बड़ी-बड़ी एक प्रगतिशील रियासतें थी और वहीं से सन् १९१० ई० में पुस्तकालय-आन्दोलन का बीज बोया हुआ ।

बड़ौदा पुस्तकालय-आन्दोलन

बड़ौदा में स्व० सर धीरवाजी राव गायकवाड़ का उत्सुकताके विद्यार्थियों के लिए स्वयं पुस्तकालय। वे पुस्तकालय-आन्दोलन के प्रविष्टिवादी थे। उन्होंने अपनी रियामत में जनता की सामाजिक शिक्षा के लिए पुस्तकालय-आन्दोलन का सूत्रपाठ किया। उनके निजी पत्र-प्रचारण और ईश-रेख में १९१० ई० में पुस्तकालय का एक स्वतन्त्र विभाग प्रोत्साहित गया। इस विभाग की योजना थी कि मनुष्य बौद्धिक जीवन तथा अधिकांश सम्पन्न जीवन के सम्बन्ध-स्तर को समझ सके और उस अनुभव द्वारा इस जीवन को प्राप्त करने की प्रेरणा ले सके। तदनुसार चार प्रकार के पुस्तकालयों की स्थापना की जानी थी —

१ जिला पुस्तकालय, २ टालुका पुस्तकालय ३ नगर पुस्तकालय और ४ ग्राम पुस्तकालय।

ऐसा विचार किया गया कि जिला-स्तर पर पुस्तकालय प्रत्येक जिले के हेडक्वार्टर में और टालुका पुस्तकालय प्रत्येक टालुका हेडक्वार्टर में होगा चाहिए। ग्राम पुस्तकालय की स्थापना जहाँ तक हो प्रत्येक गाँव में होनी चाहिए और चाँद तीर से ऐसे गाँवों में अच्छी प्राथमिक स्कूल हों। फिर ये पुस्तकालय भी एक बस पुस्तकालय के अनुविभाग द्वारा अनुपूरित हों। इन पुस्तकालयों की विभाज्य द्वारा दौड़ निकलने की बात यह थी कि जहाँ की जनता मिल कर दौड़ के बराबर खर्च करने को तैयार हो जाय। जिला पुस्तकालयों के लिए क्वाटा से ज्यादा ७०००) टालुका और नगर पुस्तकालयों के लिए ३०००) तथा गाँव पुस्तकालयों के लिए १००) सहायता निश्चित की गई। बस अनु-विभाग का पूरा व्यय सरकार देती थी।

श्री बोडन यशोवन्त इस पुस्तकालय-विषय योजना के अन्वेषण नियुक्त किए गए। इस प्रकार बीरे-बीरे इस राज्य में १९४० तक १५०० सहाय्य हो गईं जिसमें ४ जिला पुस्तकालय ७२ टालुका एवं नगर पुस्तकालय और बाकी गाँव पुस्तकालय तथा प्राथमिक। कुछ जिला और टालुका के हेड क्वार्टर में महिलाओं तथा बच्चों के लिए अलग अलगस्था थी। उन्हें सरकारी अनुदान मिलता था। गाँव पुस्तकालय प्रायः गाँव की पाठशालाओं में लोने बंधे थे। ललित धीरे-धीरे एवं १९३० से उनके लिए स्वतन्त्र मकान बनवाने के लिए पुस्तकालय-विभाग ने सहायता देनी शुरू की थी १९४० ई० तक १९४ गाँव पुस्तकालयों के अर्धे निजी बनाने भी हो गए।

अनुवाद कार्यालय

बड़ौदा सरकार ने अच्छी पुस्तकों के प्रकाशन को बढ़ावा देने के लिए

१९१० ई० में एक 'अनुवाद कार्यालय' की भी स्थापना की। उसके द्वारा गुजराती मराठी तथा हिन्दी की पुस्तकें प्रकाशित की जाती थीं। कुछ समय बाद इस कार्यालय में 'ग्राम विकास माछा' नामक एक 'सीरीज' प्रकाशित थी।

सहायक संस्थाएँ

बेहारी पुस्तकालयों को सहायता देने वाली एक संस्था 'उपमोक्षा सहकारी समिति' की स्थापना कुछ उदासीही पुस्तकालय-श्रेणियों द्वारा १९२४ ई० में हुई। यह समिति संबन्धित रूप से पुस्तकालय के धरत्यों को पुस्तकें धर्म-कीर्तिपर समाचारपत्र मासिक पत्रिकाएँ आदि बस्तुएँ भेजा करती थी। यह सेविंग बैंक का भी काम करती थी। यह समिति पुस्तकालय-विज्ञान तथा कर्म-रक्षि की पुस्तकें भी प्रकाशित करने लगी। इसी समिति ने गुजराती में 'पुस्तकालय' नामक मासिक पत्रिका भी निकाली।

राज्य पुस्तकालय-संघ

सरकार की मायका और गेटि की सहायता से 'बड़ौदा राज्य पुस्तकालय संघ' की भी स्थापना हुई। जिसका उद्देश्य था अपने विविध कार्यों द्वारा पुस्तकालय-सङ्गठनकर्तृत्वों में जीवन-सक्ति का संचार करना। वे सभी मिश्र कर उदा-सन्मेलन करने ट्रैनिंग आदि का प्रबन्ध करते रहे।

पुस्तकालयों का निरीक्षण ट्रैनिंग कोर्स चलाना कार्यक्रम करना 'पुस्तकालय' पत्रिका प्रकाशित करना नुकी पुस्तकों की सूची छापना ग्रामसाहित्य का संचालन करना। आदि के लिए संघ को १२ ६० की सहायता भी मिली।

पञ्च-पुस्तकालय (ट्रेवेलिङ्ग लाइब्रेरी)

बड़ौदा के बन्दे-फिरते पुस्तकालयों का उद्देश्य बाँवबासियों में पुस्तकालय के प्रति चेतना उत्पन्न करना था जिससे वे पुस्तकालय की ओर झुकें और उससे लाभ उठावें। बड़ौदा के केन्द्रीय पुस्तकालय में पुस्तकों की एक बड़ी रणि इकट्ठी की गई और पञ्च पुस्तकालयों द्वारा वे पुस्तकें दूर-दूर तक पहुँचाई जाती थी।

बड़ौदा का केन्द्रीय पुस्तकालय

बड़ौदा शहर के लिए एक केन्द्रीय पुस्तकालय की स्थापना की गई। महामहिम महाराज की न स्वयं इसके लिए २० पुस्तकें थीं। इसका पूरा खर्च राज्य की ओर से दिया जाता था। इसका विकास एक नगर पुस्तकालय के रूप में हुआ। इस पुस्तकालय ने गुजराती और मराठी के दो विभागों का निर्माण किया जो इन भाषाओं के बड़े विभाग हैं। बीरे-बीरे इस

वी० ए०० एक० गर्जिह राज भी के० ए० श्रीकामतन आदि मुख्य ने जिन्होंने दक्षिण भारत के प्रत्येक भाग का भ्रमण कर इस आन्दोलन को सफल बना दिया ।

आइनेरी ऐक्ट

इस संघ ने आइनेरी ऐक्ट बनवाने का बीड़ा उठया । सन् १९११ में इसका ड्राफ्ट डा० रङ्गनाथन जी ने तैयार किया । सन् १९११ ई० को वी० सी० रङ्गनाथन साहब द्वारा मद्रास विधान सभा में पेश किया ।

पुस्तकों का प्रकाशन

इस संघ ने डा० रङ्गनाथन जी द्वारा लिखित पुस्तकालय-विज्ञान की २० पुस्तकें प्रकाशित कीं तथा कुछ पुस्तकें प्रकाशन भी किया । इन पुस्तकों द्वारा पुस्तकालय जगत् को विशेष लाभ पहुँचा और जानृति की एक नई महत्ता बौद्ध हुई ।

पुस्तकालयाम्पनों की ट्रैनिङ्ग

संघ ने पुस्तकालयाम्पनों की ट्रैनिङ्ग देने के लिए सन् १९२९ ई० में डा० रङ्गनाथन जी के निरीक्षण में एक 'प्रीव्याकाशीन स्कूल' खोलना प्रारम्भ किया । मद्रास विश्वविद्यालय की पुस्तकालय समिति ने मद्रास यूनिवर्सिटी के पुस्तकालय में ही उस स्कूल को खोलने की बात मान ली । वहीं पर स्कूल शुरू हुआ किन्तु बाद में सन् १९३३ में मद्रास यूनिवर्सिटी ने इस ट्रैनिङ्ग स्कूल को अपने अस्तमत् से लिया । सन् १९६८ ई० में मद्रास यूनिवर्सिटी ने अपनी ओर से 'टिप्पकोना कोल' खोल कर दिया । इस प्रकार इस टिप्पकोना कोल को शुरू करने का भी योग्य संघ को ही ।

अन्य कार्य

संघ में १९३१ ई० में बातचीत में पुस्तकालय की पुस्तकों का भद्रता उभारने तथा पढ़ने की रक्ति को बढ़ावा देने के लिए एक योजना शुरू की । विद्या-विनाय के आइनेरर ने इसको स्वीकार कर लिया । स्कूल के बातचीत को विषय दे दिए जाते थे । उस पर वे पढ़ कर सुन्दर संघ से ६ महीने में निरूप्य लिखकर प्रस्तुत करते थे । संघ सभने जगूटे निरूप्यों पर पुस्तकालय देता था । इस प्रकार यह योजना बहुत ही सफल रही ।

संघ ने पंचायत द्वारा संचालित तथा अन्य मार्गवर्तिक पुस्तकालयों को चलाने की शक्ति दिलाने में बहुत सहायता की । संघ के प्रतिनिधि पुस्तकालय-विज्ञान में बाहर भाग लेते रहे । साहोर के पुस्तकालय-विज्ञान में स्व०

भारत में पुस्तकालय आन्दोलन के जनक



प्राचार्य श्री एम० आर० रंगनाथन
एम ए एन टी एन एम० ए

धी एत० सत्यमूर्ति ने तथा बनारस के अखिल भारतीय शिक्षा-सम्मेलन में डा० रणनाथन की ने भाग लिया । १९२९ ई० में अखिल भारतीय पुस्तकालय सम्मेलन के पाँचवें अधिवेशन के अवसर पर मद्रास में संघ ने एक 'पुस्तकालय प्रवर्धनी' का भी आयोजन किया । अखिल भारतीय भाषाओं को प्रोत्साहित एवं विकसित करने के लिए संघ ने १९३३ ई० में एक बड़ी समा बुसार्ड और तामिल प्रकाशनों की एक प्रदर्शनी भी उसी अवसर पर की गई । सब ने अस्पतालों में रोगियों का पुस्तक-सेवा प्रदान करने को योजना का उद्घाटन १९३२ में किया और अनुसार काम करना प्रारम्भ किया । इस प्रकार 'मद्रास पुस्तकालय संघ' इस काम में बहुत ही अग्रणी रहा ।

वन्वर्ड प्रेसीडेन्सी

इस में ब्रिटिश शासन के संस्थापित हो जाने के बाद उन्नीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ में प्राचीन कर्नाटक को पाँच भागों में बाँट दिया गया । मैसूर और कुछ छोटे रियासतें बनी और छेप कर्नाटक को बम्बई, मद्रास और हैदराबाद में बाँट दिया गया । बम्बई में मिले भाग का हम 'बम्बई-कर्नाटक' कह सकते हैं ।

इस भाग में हुबली और बारवार में १८२६ ई० में पहले सरकारी स्कूल खोले गए । ये मराठी स्कूल थे । १८३५ में सरकार ने बारवार और हुबली में कन्नड़ स्कूल भी खोले । १८४८ में तीसरा कन्नड़ स्कूल उनेबेन्नूर में खुला । इस क्षेत्र में बारवार में पहला हाईस्कूल खोला गया । इस प्रकार बेकनौब बीजापुर और कर्णाट भाग में भी बर्नाकुलर स्कूल खुले और बीरे-बीरे लोग शिक्षा की ओर आकृष्ट हुए । इन स्कूलों के खोले होने के साथ ही लोगों में छात्रवृत्त फँसी तो छात्रको स्थायी बनाने के लिए पुस्तकालयों को भी आवश्यकता पड़ी । सन् १८८२ में बारवार जिले में पुस्तकालय और ४ बाचनालय थे । ये चार पुस्तकालय बारवार, हुबली उनेबेन्नूर और चिखल्टी में थे इनमें से बारवार को मेट्रिक सेंट्रल लाइब्रेरी या सबसे पुरानी और बड़ी थी । यह १८५४ में थी एक एम० नागपुरकर नामक एक अध्यापक द्वारा स्थापित की गई । १८८२ में इस पुस्तकालय में ४५१ पुस्तकें थीं जिसमें से ४१८ बंगाली ३ मराठी और ७ कन्नड़ की थीं । यह खरे पर निभर को । पुस्तकें बर्नीकृत न थीं और न अच्छी तरह रखी ही गई थीं । दो बंगाली अवधार इसमें आते थे और सहाय्य सचस्य १ अंग्रेजी ३ एंग्लीबर्नाकुलर, १० बर्नाकुलर और १ मराठी अवधार दे दिया करते थे ।

मान की 'मरण सिद्धान्तगणना म्युनिसिपल जनरल साइन्स'—बारबार नगरपालिका द्वारा जिसका प्रबन्ध होता है, उस समय एक छेदे से स्थान में थी और इसकी दशा बच्छी न थी।

रानेबेनूर में १८०३ में पुस्तकालय की स्थापना हुई। जन्ता से १५ • ३० बत्था लेकर उसके ब्याज से इसका प्रबन्ध रिया जाता था।

लोकमान्य बर्माब बाबतालय सिरछुटी की स्थापना १८८१ में श्री नायेब राव ताम्बे ने की।

सुडगाळ में श्री जो० एच० खेर तथा अन्य लोगों के द्वारा १८९३ में एक पुस्तकालय की स्थापना हुई। बैकनाथ में 'मेटिक जनरल साइन्स' की स्थापना १८४८ में ठसकासीन कलकर श्री जे० डी० इन्वेस्टिगटरी ने की। १८८१ में इसमें १ ३५ पुस्तकें ही पाई थीं। कतारा जिमे में १८८ के लगभग चार पुस्तकालय थे—करवार, कुन्डा हस्तिनाळ और सिरसी में। 'करवार जनरल साइन्सरी ऐण्ड म्युजियम' की स्थापना मई १८९४ में हुई। उस समय उसमें केवल १ ७०९ पुस्तकें थीं।

१८९ में कर्नाटक विद्यापद्धक संघ' की स्थापना हुई। इसने सांस्कृतिक कार्यों के साथ ही पुस्तकालय आन्दोलन में भी सहाय्य प्रदान किया। संघ ने प्रकाशित पुस्तकों को भेंट स्वरूप पुस्तकालयों को देकर उन्हें प्रोत्साहित किया। संघ ने 'वाग्भूषण' नामक पत्रिका का प्रकाशन प्रारम्भ किया जिसमें बार में पुस्तकालय सम्बन्धी सूचनाएँ भी एकत्र करके प्रकाशित होती रहीं।

१९०४-५ में पुस्तकालय-आन्दोलन का विकास हुआ। श्री अनुर बेकट राव ने इसको एक नया मोड़ दिया। एक योजना बनाई गई जिसके अनुसार केवल पुस्तकें कर्नाटक विद्यापद्धक संघ पुस्तकालय में, बीरहीवीय पुस्तकें एल० ई० सोसप्टी साइन्सरी म संस्कृत पुस्तकें पाठ्यालय पुस्तकालय में और सांस्कृतिक और राजनीतिक पुस्तकें भारत बाबतालय में संग्रह करने का निश्चय किया गया।

१९१४ में कर्नाटक हिस्टोरिकल रिसेच सोसाइटी की स्थापना बारवार में हुई। इसने अपने उद्देश्य के लिए एक पुस्तकालय की स्थापना की।

१९१५ में जब सिम्प बहोदय ने हीमवत आन्दोलन बनाया तो 'कर्नाटक समा' में राजनीतिक प्रचार के साथ-साथ पुस्तकालय संगठन का भी काम आरम्भ किया। श्री-नग और ग्यास्याणों के द्वारा सभा ने पुस्तकालय स्थापना पर जोर दिया। १९१९ में 'कर्नाटक फाल्गुन' की स्थापना हुई

विक्रम के साथ एक पुस्तकालय स्थापित किया गया। धीरे-धीरे अन्य कई विभाग संस्थानों ने भी पुस्तकालय स्थापित किए।

१९२० में बारबार में 'सन्तोस वर्मा' का 'वाचनालय' की स्थापना हुई। १९४० में यह संघ के पुस्तकालय में विलीन हो गया। उस समय उसमें ४०० पुस्तकें हो गई थी। १९२२ में बौद्ध कर्नाटक पोलिटिकल कांग्रेस का अधिवेशन बारबार में हुआ। उसमें भी एक प्रस्ताव पुस्तकालय-विकास के सम्बन्ध में स्वीकृत किया गया किन्तु राजनीतिक परिस्थितियों ने यह कार्यान्वित न हो सका। १९२४ में सी. आर. वाघ महोदय की अध्यक्षता में बाळ गणेश का 'साइबेरी कॉलेज वेल्हाव' में हुई। उसमें भी पुस्तकालय को जन-विज्ञान का सर्वोत्तम साधन घोषित किया गया। १९२७-२८ में कर्नाटक पुस्तकालयों की एक साइबेरी भी बनाई गई।

कर्नाटक पुस्तकालय-संघ

१९२९ में डॉ. बाम्बे कर्नाटक साइबेरी कॉलेज बारबार में भी बेंकट गारायण छात्रों की अध्यक्षता में हुई। इस अवसर पर समाचार-पत्र और पत्रिकाओं की एक प्रवर्धनी भी हुई। उस समय बम्बई-कर्नाटक में जनता ४०० पुस्तकालय थे। उसके बाद १९३३ और १९४४ में साइबेरी कॉलेज हुई।

पुस्तकालय-विकास समिति, बम्बई

१९३९ में पी. ए. ए. ई. की अध्यक्षता में एक बाम्बे 'साइबेरी डेवेलपमेंट कमेटी' बनाई गई। इसका उद्देश्य था बम्बई में मेट्रो स्टेट साइबेरी और अहमदाबाद, पूना और बारबार में तीन क्षेत्रीय पुस्तकालयों की स्थापना की सम्भावनाओं पर विचार करना और पूरे प्रदेश में छोटे पुस्तकालयों के विकास पर विचार करना। कमेटी ने १९४० में अपनी रिपोर्ट सरकार को दी। 'भारत छोड़ो' आन्दोलन शुरू होने से इस समिति की रिपोर्ट के अनुसार कुछ काम न हो सका। फिर १९४७ में काम प्रारम्भ किया गया।

इस कार्य में बम्बई प्रेसीडेन्सी में केंद्रीय पुस्तकालय रिसर्च पुस्तकालय विभाग संस्थानों के पुस्तकालय और सावजनिक पुस्तकालय आदि विभिन्न प्रकार के पुस्तकालयों की स्थापना हुई। बम्बई में एक केंद्रीय पुस्तकालय की स्थापना हुई। सरकार स्वयं ही इन पुस्तकों की देखभाल करती थी। वे पुस्तकें व्यक्तिगत रूप में न होने के कारण सचिवालय के

सहस्रकों में पड़ो रही और बर्गामिष्ठ बचा में रही। १८९७ से १८९० के बीच सरकार ने बम्बई विरवविद्यालय के अधिकारियों से भी इन पुस्तकों का संरक्षक बनने की बात कही किन्तु वे राजी न हुए। सरकार ने राज्य एडि-याटिक सोसाइटी बम्बई काच को यह सद्ग्रह द दिया किन्तु स्यात की कमी बसा कर उसन भी सोटा लिया। इस प्रकार वह संग्रह बम्बयस्थित पड़ा रहा।

पुस्तकालय-विद्यान की शिक्षा

बम्बई यूनिवर्सिटी में साइबरी साइंस की पढ़ाई की व्यवस्था की गई। १९४४ ई० में इसी विरवविद्यालय से श्री एन० एम० केठकर महोदय ने बीघा की जो आन्कल केन्द्रीय सरकार के शिक्षा विभाग पुस्तकालय के अध्यक्ष हैं। १९४४ के इसी प्रथम बीच में श्री डी एन० मासल सर्व-यवम उचीय हुए थे जो आन्कल बम्बई यूनिवर्सिटी लाइब्रेरी के अध्यक्ष हैं।

बम्बई लाइब्रेरी एसोसिएशन स्थापना सन् १९४४ ई० में हुई और कार्यालय पीपुल्स प्री लाइब्रेरी, घोषीवालाय, बम्बई-२ रखा गया।

बिहार प्रान्त

इस काल में बिहार में कुछ अच्छे पुस्तकालयों की स्थापना हुई। पटना में १८९१ में तुशाबकल लाइब्रेरी स्थापित हुई जो अपने ढंग की अनुपम है। इसमें विभिन्न विषयों की छपी पुस्तकों के अतिरिक्त आठ हजार हस्तलिखित ग्रंथ भी हैं। साथ ही प्राचीन किताबों का भी उत्तम संग्रह है। स्वर्गीय डा० सच्चिदानन्द सिन्हा ने १९२४ ई० में अपनी पत्नी श्रीमती राधिकारानी निम्हा की स्मृति में 'सिनहा लाइब्रेरी' स्थापित की। इस पुस्तकालय की उत्तरोत्तर प्रगति होती रही। पटना यूनिवर्सिटी लाइब्रेरी बिहार एण्ड उड़ीसा रिजर्व सोमाइटी लाइब्रेरी (१९१५) बिहार द्वितीय पुस्तकालय (१८८१) महेंदर पब्लिक लाइब्रेरी (१९२८) टिपार्टमेंट ऑफ इण्डियन बिहार लाइब्रेरी (१९२०) बिहार मैजिस्ट्रेटिय लाइब्रेरी (१९१२) मन्मूलाय सांस्कृतिक पुस्तकालय (१९२४) और भवनाथ पुस्तकालय मानसपुर (१९१३) प्रभृति अच्छे पुस्तकालयों की स्थापना इस काल में हुई। राज्य सरकार की ओर से पुस्तकालयों को अनुदान भी दिया जाता रहा। १९४० में प्रान्त में समय २०० पुस्तकालय थे। १९४०-४१ के बजट में पुस्तकालयों को दस हजार रुपये अनुदान दिया गया और यह कम ब्रिटिश काल के अन्त तक बसता रहा।

पुस्तकालय संघ

११ फरवरी १९३७ ई० को मन्सूबाल पुस्तकालय में बिहार के पुस्तकालय-प्रेमियों का प्रथम सम्मेलन कुमार मुनीन्द्रनाथ बेह की अध्यक्षता में हुआ। उसी सम्मेलन में बिहार राज्य में पुस्तकालय आन्दोलन को व्यवस्थित बनाने के लिए 'बिहार पुस्तकालय-संघ' की स्थापना की गई। सितम्बर १९३७ में पुस्तकालय-संघ का दूसरा अधिवेशन पटना सिटी के बिहार हिठैपी पुस्तकालय में डा० अनुब्रह्म नायक सिंह की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। इसके बाद संघ की कार्यविधि ठोसी पड़ गई। सेप्टेम्बर १९४१ में फिर कुछ उत्साही व्यक्तिवों ने संघ का तीसरा अधिवेशन श्री मुबनेरवर प्रसाद श्री की अध्यक्षता में पटना में किया। इसके बाद चौथा अधिवेशन दरभंगा की छम्भीरवर पम्पिक साइबेरी में श्री बन्धेस्वर प्रसाद नायक सिंह की अध्यक्षता में हुआ। इन अधिवेशनों में लोग मिश्र-बुझी रहे और अपनी प्रगति की बातें सोचते रहे, सेप्टेम्बर संगठित रूप में कोई ठोस कार्य की योजना न बन पाई।

संयुक्त-प्रान्त आगरा व अवध

ब्रिटिश काल में पुस्तकालय विकास के दृष्टिकोण से संयुक्त-प्रान्त काफी प्रगतिशील रहा। इस प्रदेश में चार निम्नलिखित स्थापित किये गए बिनसे संकल्प समूह पुस्तकालय भी थे। काशी विश्वविद्यालय का मायकनाइ पुस्तकालय लखनऊ की अमीरुद्दीन पम्पिक साइबेरी नागरीप्रचारिणी-सभा काशी का आन माया पुस्तकालय प्रयाग का हिन्दी संग्रहालय और पम्पिक साइबेरी इसी काल में स्थापित हुए। बलिक भारतीय सेवा समिति प्रयाग के प्रबंध मंत्री श्री एस० आर० भारतीय महोदय के प्रयास से स्वर्णय सी० बाई० चिन्तामणि की स्मृति में 'चिन्तामणि मेमोरियल साइबेरी' की भी स्थापना १९४१ में प्रयाग में हुई बिनसे समाज-सेवा सम्बन्धी ऐसी विविध पुस्तकों का संग्रह किया गया जो अन्य पुस्तकालयों में नहीं मिल सकती।

शिक्षा-प्रसार विभाग

शिक्षा विभाग संयुक्त-प्रदेश द्वारा इस प्रान्त में १९२९-३७ में ४३ जिलों को पाँच-पाँच से रुपये की ग्रांट पर ९९ पुस्तकालय खोलने के लिए की गई। सन् १९२७-२८ में उसी क्रम से ७९ और पुस्तकालय खोले गये। पाँच टुबेल्स और सरकुलेटिव साइबेरी भी खोली गई। इस प्रकार प्रान्तीय सरकार पुस्तकालय की प्रोत्साहन देती रही परन्तु सरकारी वार्षिक सहायता बहुत

हल्की थी। उसके बाद इस प्रान्त में ग्रामबासी प्रौढ़ों में शिक्षा का प्रचार करने के लिए सरकार की ओर से एक 'शिक्षा प्रसार विभाग' की स्थापना सन् १९३८ में हुई। यह विभाग शिक्षा विभाग के अन्तर्गत रखा गया। इस विभाग की ओर से प्रौढ़ोपयोगी विभिन्न विषय की पुस्तकें छपीं कर उन्हें बस्तियों में रखा कर गाँव के कुछ निविधत केन्द्रों तक पहुँचाने की व्यवस्था की गयी। इस प्रकार के १९३७ पुस्तकालय इस काल में स्थापित हुए।

संघ और डाइरेक्टरी

इस प्रान्त में पुस्तकालय संघ की स्थापना स्वर्गीय डा० बली मुहम्मद के प्रयत्नों से हुई जो इस प्रान्त में सबसे अधिक रुचि रखने वाले व्यक्ति थे। वे स्वयंसेवक मुनिबसिदी म क्लिबिस्त के प्राफेसर तथा अमीरउद्दौला पब्लिक लाइब्रेरी के आगरेण्ट लाइब्ररियन भी थे। उनकी अध्यक्षता में अखिल भारतीय पुस्तकालय-संघ का तीसरा अधिवेशन भी दिल्ली में हुआ था। डा० बली मुहम्मद साहब ने १९३७ ई० इस प्रान्त के पुस्तकालयों की एक डाइरेक्टरी भी तैयार की। उसमें ५१९ पुस्तकालयों का विस्तृत विवरण है जिनमें अंशतः समाप्त से लेकर मुनिबसिदी लाइब्रेरी तक के पुस्तकालय हैं किन्तु पाँच हजार से अधिक पुस्तकें वाले पुस्तकालयों की संख्या इस प्रान्त में १९३९ तक केवल ४८ थी।

डा० माताप्रसाद मुन्शरी रीडर इलाहाबाद मुनिबसिदी (हिन्दी विभाग) ने 'हिन्दी पुस्तक साहित्य' नामक पुस्तक का सम्पादन किया जिनमें उन्होंने १९४२ तक ज्ञानी हिन्दी की सब पुस्तकों की विषय-क्रम से सूची प्रस्तुत की। यह पुस्तक हिन्दुस्तानी एकेडेमी ने प्रकाशित हुई।

पुस्तकालय-विज्ञान की शिक्षा

इस प्रान्त में पुस्तकालय-विज्ञान की शिक्षा की व्यवस्था सन् १९४१ ई० में बनारस हिन्दू मुनिबसिदी की ओर से मुनिबसिदी लाइब्रेरी (पाण्ड्याइ लाइब्रेरी) में की गई। इसमें न्यूनतम योग्यता प्रेजुण्ट रणी गयी। धीरे-धीरे अनेक प्रान्तों से विद्यार्थी इस प्रतिष्ठान में आने लगे।

पंजाब प्रांत

पंजाब विश्वविद्यालय ने एगनास्य आम्ब्रोसो को नियुक्त करने में अत्यंत रूप से बहुत सहायता की। लाहौर-स्थित पंजाब विश्वविद्यालय ही पहला विश्वविद्यालय था जिनमें १९१५ ई० में अथर्व पुस्तकालय को वैज्ञानिक ढंग से संरक्षित करने के लिए एक अमेरिकन लाइब्रेरियन थी ए० डी० डिफि

मन को बुझाया। मि० डिक्लिंसन ने पुस्तकाख्य को संबन्धित किया और उसमें 'छात्रोपेरी साइंस' की दृष्टि की भी व्यवस्था की। उन्होंने 'पञ्जाब छात्रोपेरी प्राइमर' नामक एक पुस्तक भी लिखी। इस तरह उन्होंने पंजाब में पुस्तकाख्य आन्दोलन शुरू किया। पंजाब यूनिवर्सिटी के इस ट्रेनिंग कोर्स में स्व० एम० बसवुल्का सब से पहले भारतीय विद्यार्थी थे जिन्होंने छात्रोपेरी साइंस में डिप्लोमा प्राप्त किया। उन दिनों इस प्रकार की ट्रेनिंग केना बहुत पवित्र समझा जाता था। श्री बसवुल्का के साथी ही उन्हें 'फूला किया कस्तुरी' कहा करते थे। किन्तु बीरे-बीरे यही श्री बसवुल्का 'इन्सो रिपब्लिक साइन्स' के छात्ररियन हो गए। कलकत्ता यूनिवर्सिटी के वर्तमान छात्ररियन श्री प्रदीपचन्द्र बसु ने भी इसे १९३३-३४ के सेसन में डिप्लोमा किया। 'पञ्जाब पुस्तकाख्य-संघ' की स्थापना १९२९ में हुई। इसके निम्नलिखित उद्देश्य थे —

- १ पुस्तकाख्यों की स्थापना और उसके विकास को आगे बढ़ाना।
- २ पुस्तकाख्यों की उपबोधिता में वृद्धि करना।
- ३ जनता की शिक्षा में पुस्तकाख्यों को महत्वपूर्ण बनाना।

'इंडियन छात्रोपेरियन' नामक पत्रिका का प्रकाशन भी १९४५ ई० में काहीर से शुरू हुआ। इस संघ की ओर से माहर्न छात्ररियन' नामक वैसासिक पत्रिका भी निकाली गई।

बंगाल-प्रान्त

इस प्रान्त में पुस्तकाख्य संघ की स्थापना १९३१ में की गई। उसके बाद राज्य में पुस्तकाख्य आन्दोलन को पवित्रीक बनाने का काम शुरू किया गया। कलकत्ता यूनिवर्सिटी छात्रोपेरी (सेंट्रल) में इसका रजिस्टर्ड कार्यालय रखा गया। इसकी ओर से 'बंगाल छात्रोपेरी एन्सोसिएशन मुसेटिन' का प्रकाशन १९३८ ई० से शुरू हुआ। इस संघ ने १९३७ में पीपुल्सकलीन वैसासिक कोर्स पुस्तकाख्यार्यों की दृष्टि के लिए बनाया जिसमें पर्याप्त संख्या मिली। बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भिक वर्षों में बंगाल में पुस्तकाख्य-आन्दोलन बढ़े चोपे १२ था। इस आन्दोलन के नेताओं में कलकत्ता विश्वविद्यालय तथा बंगाल सरकार से ट्रेनिंग के प्रबन्ध के लिए काफी कोशिश थी। मन्त्र में स्व० कुमार मुनीन्द्रदेव राय महाशय ने सन् १९३४ ई० में अपने सहयोगियों के सहारे 'हुगली जिहा पुस्तकाख्य संघ' के उल्लासबाग में एक ट्रेनिंग केंद्र की स्थापना की। बसवुल्का में स्थित 'प्रशिखण शिबिर' के प्रवर्धक-

मीय कार्यों को देख कर पुस्तकालय आन्दोलन के नेताओं का साहस चौगुना हो गया।

लाम बहादुर के एम० एस० डिग्री ने भी भारत में पुस्तकालयाध्यक्षों को शिक्षित करने में बहुत दक्षिणी थी। उन्होंने बड़ी धन के साथ इस ओर काम किया। वे इम्पीरियल लाइब्रेरी में लाइब्रेरियन थे। उन्होंने भारत सरकार के पास बौद्ध-ग्रन्थ की और आखिर में १९३५ ई० में इम्पीरियल लाइब्रेरी में 'डिप्लोमा कोर्स' की पढ़ाई सरकार ने स्वीकार कर ली। १९४५ ई० में कलकत्ता विश्व विद्यालय में भी अब लाइब्रेरी साइन्स की ट्रेनिंग की व्यवस्था हो गई तो उस ट्रेनिंग का भी इसी में विकल्प हो गया।

आंग्र-प्रान्त

बङ्गाल के पुस्तकालय-आन्दोलन ने आंग्र-निवाहियों में अच्छी जागृति पैदा की। उसके फलस्वरूप १९३१ ई० में 'आंग्र पुस्तकालय संघ' की स्थापना हुई। संघ ने लोगों के सहयोग से कई एक पुस्तकालय स्थापित किए। परंपरात्मक केन्द्रीय पुस्तकालय में १९३५ ई० में मोटरों द्वारा पुस्तकालय सेवा के स्वान पर भावों द्वारा इन काम को पूरा किया। इस प्रकार की पुस्तक-सेवा तीस सौकों तक फैली। इसकी ओर से 'आंग्र प्रन्धालयम्' और 'तेलुगु' इतिहासिक त्रैमासिक पत्रिका १९३९ से शुरू हुई। इस संघ ने आंग्र-प्रदेश की लाइब्रेरियों की दो बार सन् १९३४ और १९३५ में काइरेक्टरी प्रकटित की तथा पुस्तकालय-विभाग की कई सभ्य पुस्तकें भी प्रकटित की। १९३५ ई० में आंग्र विरबन्धियालय में लाइब्रेरी साइन्स में डिप्लोमा कोर्स की पढ़ाई शुरू हुई।

द्रावणकोर-कोचीन

द्रावणकोर-कोचीन राज्य में भी पुस्तकालय आन्दोलन की प्रवृत्ति बीसवीं शताब्दी में हुई। द्रावणकोर सरकार ने १९३६ के अपने बजट में लक्ष्य पढ़ने पुस्तकालयों के लिए २ १३ ००० रुपये का व्यय स्वीकार किया। कोचीन सरकार ने भी इस ओर ध्यान दिया। सन् १९४२ में इन दोनों राज्यों के निवाहियों ने मिल कर 'किरल पुस्तकालय संघ' की स्थापना की।

अन्य प्रांतों में पुस्तकालय-आन्दोलन

उड़ीसा प्रांत में सन् १ ४४ ई० में 'उत्कल लाइब्रेरी एमोसिएशन' की स्थापना हुई और इसका कार्यालय नयामङ्ग पुरी उड़ीसा में रखा गया। यह संघ भी अपने बाण्डित अधिवेशन तथा कुछ प्रकार कार्य करता रहा।

आसाम प्रान्त में 'अर्द्ध आसाम लाइब्रेरी एसोसिएशन' की स्थापना १९१८ ई० में हुई। इसका कार्यालय पोब्रोप्रीस पोस्ट टेबपुर (आसाम) में रखा गया। इसकी ओर से भी अभियोगन भावि होते रहे।

पूना में 'पुस्तकालय-संघ' की स्थापना १९४५ ई० में हुई।

दिल्ली में पुस्तकालय-संघ की नींव १९४६ ई० में पड़ी जिसकी ओर से एक 'ट्रेनिंग क्लब' की भी व्यवस्था का गई। दिल्ली विश्वविद्यालय में १९४० ई० में पुस्तकालय-विज्ञान का एक स्वतंत्र विभाग खोला गया वहाँ पर 'डिप्लोमा कोर्स' के अतिरिक्त 'मास्टर डिग्री' का एक कोर्स चालू किया गया। इसके अतिरिक्त पुस्तकालय-विज्ञान में रिसर्च करने के लिए भी व्यवस्था की गई। यह कार्य पुस्तकालय-विज्ञान के प्रसिद्ध भारतीय माधव शं० एस० आर० रंजनाचरु को अध्यक्षता में प्रारम्भ किया गया।

इस प्रकार ब्रिटिश शासन काल में अनेक राज्यों और देशी राज्यों में पुस्तकालय संघ स्थापित हुए। पुस्तकालय-विज्ञान की भी कुछ महत्वमिका और उसे एक स्वतंत्र विषय के रूप में माना जाने लगा।

भारत में प्रौढ़ शिक्षा-सम्बन्धी पुस्तकालय

पुस्तकालय प्रौढ़ों के लिए स्व-शिक्षा के एक महत्वपूर्ण साधन है। इस बात को सबसे पहले बङ्गोरा गणेश स्व० महाराज नायकाङ्क महोदय ने अपने राज्य में अनुभव किया और अनेकसीक पुस्तकालयों की योजना चालू की। इसकी माजीपना सभी राज्यों में की किन्तु अनुसरण किसी ने नहीं किया। कुछ समय बाद आन्ध्र प्रदेश में एमसिएशन की स्थापना हुई तो उसने इसके लिए कुछ माजीपना किया। उसने १९१९ में एक कॉलेज मुक्त कर 'आन्ध्र इंडिया लाइब्रेरी एसोसिएशन' की स्थापना की की। महाराष्ट्र और बंगाल में भी इसका अनुसरण करके लाइब्रेरी एसोसिएशन स्थापित किए।

प्रौढ़ों के लिए स्थापित पुस्तकालयों के विकास का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है —

पंजाब में १९१० में १९९० पुस्तकालय थे। जो पामीय क्षेत्रों में शिक्षित स्त्रियों के साथ थे। नामक स्तर के अध्यापकों को कहा गया कि वे उनके द्वारा प्रौढ़ों को बाधर होने की ओर वाकूच करें। सी० पी० और बरार ने भी १९२८ में ऐसे पुस्तकालयों की स्थापना की। १९३६ में ट्रावलकोर में बङ्गोरा के इला पर गगर और नाँव पुस्तकालयों को चलाना चाहा। वहाँ शिक्षा-विषय पुस्तकालय और साधनालय को ग्रामरी स्कूलों में स्थापित करने

के लिए ८० पुस्तकालयों की व्यवस्था के निमित्त ३० ००० रु० प्रतिवर्ष प्रायः देने का बजट में स्थान दिया।

प्राइवेट पुस्तकालयों को भी सरकार ने फर्निचर और बिस्किट तथा अन्य व्यवस्था के लिए सहायता दी। ट्रिबेन्डम पब्लिक लाइब्रेरी ने केंद्रीय हेडक्वार्टर के रूप में ग्राम पुस्तकालयों के लिए काम किया जो सम्बन्धित ग्राम-पुस्तकालयों में से प्रत्येक को एक-एक बार ३० पुस्तकें भेजा करती थी।

१९३९ में बम्बई सरकार ने एक लाइब्रेरी इन्सपेक्ट कमीटी बनाई। उसके सुझाव पर वे लाइब्रेरी तालुक लाइब्रेरी क्षेत्रीय लाइब्रेरी और केंद्रीय लाइब्रेरी की एक योजना स्वीकार की गई। इसके अन्तर्गत रजिस्टर्ड गाँव के पुस्तकालयों को ३० से ५० ग्राम की गई। १९४१-४२ में ७५० गाँव पुस्तकालय खोले गए और २२ ००० रु० को प्रायः दी गई।

उत्तर-प्रदेश

उत्तर-प्रदेश सरकार ने प्रथम साधारण विषय पर गाँव के क्षेत्रों में ७९८ पुस्तकालय और ३९०० बाबतालय खोले। इन पुस्तकालयों की संख्या १९४०-४१ में १००० हो गई। और ४० महिला लाइब्रेरी भी खोली गई। १९४०-४१ में १५० रु० मूल्य की पुस्तकें और कुछ मानिक परिष्कार और सज्जदार किये गए। १९३९-४९ में ५०० प्राइवेट लाइब्रेरियों को (गाँव के क्षेत्र में) और १९४०-४१ और १९४१ में ऐसे ५०९ पुस्तकालयों का प्रायः दी गई। १९४१-४२ में २५० पुस्तकालयों को (करल इन्सपेक्ट डिपार्टमेंट के) पत्र-परिष्कार भी हो गई। फिर ९० बीमें बेल्फेयर नेंटर को (करल इन्सपेक्ट डि० परीक्षाकार) ५०० रु० की प्रायः पत्र-परिष्कारों की सफाई का साधन-साधन दी गई।

१९३७ गाँव पुस्तकालय और ३९०० बाबतालय को पढ़ने स्थापित हो चुके थे जगह काम करते रहे। उन्होंने १९ से १७ व्यास तक पुस्तकें एक छात्र में पढ़ने की थी। जब सरकार ने दैनिक भ्रमण भोजना बन कर दिया तो पाठकों की संख्या को १९४१-४२ में ५३८२९४३ से बढ़ कर ७५८२१७५ हो गई और १९४३-४४ में ३७७८८८९ हो रही अर्थात् घट गई। १९४३-४४ में महापत्र-प्राप्त पुस्तकालय २५९ रहे, जब कि १९४१-४२ में केवल २९० थे। उन्होंने २ ३२ ९८५ पुस्तकें शासक घर में पढ़ने के लिए दीं। १९४२-४३ में सरकार ने इत्याहावाद में एक सेंट्रल कौन्सिल लाइब्रेरी स्थापित की।

बिहार

बिहार सरकार के पाँच पुस्तकालयों का विवरण इस प्रकार है —

वर्ष	पुस्तकालयों की संख्या जो खुले	कुलपुस्तकालयों की संख्या	इन पुस्तकालयों में कुल पुस्तकें जो सरकुलेंट की गईं
१९४२-४३	१०००	८०००	६८३ ३९२
१९४३-४४	७५०	८७५०	४९७ ४४९
१९४४-४५	७१०	९२६	-
१९४५-४६	-	-	-
१९४६-४७	-	-	६०३ ८९९

बन्धन

नयी स्कीम के अन्तर्गत १९४५-४६ में—जिना किसी बन्धन या बन्धन के सभी के लिए पुस्तकालय हो—इन बात पर बन्धन सरकार में प्राप्ति बना निर्णय किया। ४००० रु० तक की प्राप्ति ही या सफ़्टी की यदि सतना ही बनता है भी प्राप्ति हो। कुछ स्थानों पर महिलाओं के लिए पुस्तकालयों की बन्धन व्यवस्था की गई। ये पुस्तकालय ८ से १२ बजे तक खुले रहते थे। १०-३० पत्र-पत्रिकाओं और ३० से ५० रुपये तक इन्विपमेंट के लिए सहायता भी दी जाने लगी।

वर्ष	नया पुस्तकालय	कुल पुस्तकालय	व्यय
१९४२-४३	५१	१२००	१८८४०
४३-४४	३००	१५०	१८८००
४४-४५	९००	१७००	२००००
४५-४६	९६०	१९६०	२००००
४६-४७	४१०	२३००	३३०००

साइबेरी इन्विपमेंट

पुस्तकालयों को वैज्ञानिक ढंग से व्यवस्थित करने के लिए पुस्तकालय-निर्माण की विधा ही कायम नहीं होती। इसके साथ ही दूसरी आवश्यकता यह भी कि वैज्ञानिक ढंग का 'साइबेरी इन्विपमेंट्स' भी अपने देश में सरकारी-पुस्तक संस्थानों पर निरूपण। बड़ीया स्टेट में तो 'पुस्तकालय साइबेरी समिति' कायम यह काम बहुत कुछ शरक हो गया था। साहूँर म मेहरा जैसे बन्धनी सन् १९२० ई० में स्थापित हुई बिचने कैटलाप काबू स डेट सिन्धु ऐन्वेषन एग्जिस्ट, कुछ ऐन्वेष काबू कैबिनेट जादि एभी प्रकार के सामान्य पुस्तकालयों की बन्धन करके बन्धनी सेवा की। महास भीर बन्धनता मे भी वो एक बन्धनियों इस प्रकार के कार्य के लिए स्थापित हुई।

१९४५ मांगामूप्यम्, पी०	फर्स्ट लिस्ट बाण ठेसुनु बुसुठ मुटेबुठ प्यर साइबरीज ।
नागराज रास, के०	: बिस्मिपोरीली बाण इबिजन फरपर ऐण्ड इटस प्रेपरेशन । साइबरी मुथमेट इन इण्डिया ।
पारसी, आर० एस०	इसिमल ऐण्ड कोसन क्लीवीफिकेशन, ए समरी ऐण्ड ए कम्परीजन ।
रंगनाथन, एस० आर०	एसीमेंट्स बाण साइबेरी क्लीवी फिकेशन । डिनरगरी कौन्सागकोड डि०सं० १९५१ रिपोर्ट सर्विस इन साइबेरीज ।
पारसी, आर० एस०	क्लीवीफिकेशन बाण मण्ठी मिन्टरेजर, मण्ठी कलित बाउमथा वा बर्षोकरण (अनु पी० पी० कोवालकर) ।
१९४६ रंगनाथन एस० आर०	नेशनल साइबेरी सिस्टम (ए प्यन प्यर इण्डिया) । सनेशनल प्यर ए आपनाइजेसन बाण साइबेरीज इन इण्डिया ।

इसके अतिरिक्त बड़ीसा है 'साइबेरी साइंस' की सबसे पहली एक पत्रिका 'साइबेरी मिन्नेनी' प्रकाशित हुई। 'ऑल इण्डिया साइबेरी एसोसिएशन' की ओर से उसके बॉर्डर के बिबरण तथा मांग-देण्ड साइबेरी एसोसिएशन की ओर उसके बॉर्डर के बिबरण भी प्रकाशित हुए। जो अन्य पत्रिकाएँ प्रकाशित हुई उनका त्रिक्र प्राचीय आन्दोलन के साथ-साथ कर दिया गया है।

ब्रिटिशफासीन पुस्तकालयों पर एक दृष्टि

इस अध्याय में ब्रिटिशफासीन पुस्तकालयों की जो संक्षिप्त खर्चा की गई, उससे साफ जाहिर है कि ब्रिटिशफास म बहुत बरी तक ठो कम्पनी घिरा के शामिल स बचती रही। जब शामिल उसके ऊपर लागू भी गया ठो घिरा के शक्ति-निर्धारण में भी बाखी सकय बना। उसके बाद एक नए ढंग की घिरा प्रभासी और साथ ही नयी शासन-प्रभासी के ढांचे में बस कर भारतीय घिरा और पुस्तकालयों का रूप ही बनक गया। दटना ठो मामला ही पढ़ता है कि अंग्रेज शासकों को हार्दिक इच्छा कभी भी भारतीय जनता को

पूरा रूप से स्थिति बनाने की नहीं रही। अतः जो कुछ भी इस काल में किया गया उसमें शासन चलाने का हित पहले या और बनवा का हित बाद में। यही कारण है कि इतने लम्बे अर्से तक शासन करने पर भी भारतीय बनवा १० प्रतिशत से अधिक शासन नहीं हो सही यद्यपि कुछ बड़े-बड़े विद्वान कुछ-कुछ शासक और भुरंभर पञ्जनीविज्ञ भी इस काल में पैदा हुए।

फिर भी अंग्रेजों को शासन भारत के लिए एक धर्म में बहुत ही सहायक सिद्ध हुआ। इस में पाठशालय ज्ञान-विज्ञान का प्रचार होने से तथा रेल वार डाक प्रेस रेडियो तथा वन्द्याम्य साधनों के उपलब्ध होने से भारतीय शिक्षा और पुस्तकालयों के विकास के लिए एक ऐसी पृष्ठभूमि बन गई जिस पर अपने धर्म से जो कुछ चाहे किया जा सकता है। बूकि ब्रिटिश काल में बनवा के मौखिक स्तर को ऊँचा उठाने की बात साफ तिस से शासक बन घोषित नहीं थे और कमर कस कर इस पर ध्यान नहीं होते थे इसलिये पुस्तकालयों का बनवा ही सम्पन्न नहीं हो पाया। कहने का तात्पर्य यह है कि ब्रिटिशकाल में पुस्तकालयों की मौखिक शिक्षा (फण्डामेंटल एजुकेशन) एवं सामाजिक शिक्षा का आचार नहीं माना गया और न तो उन्हें इसके लिए प्रयोज में ही धारा पाया। अतः पुस्तकालयों को समझने का मौका नहीं मिल सका।



स्वाधीनकालीन पुस्तकालय

नव-निर्माण की ओर

ब्रिटिशकाल में भारत की शिक्षा का प्रविष्टत बहुत नीचा था। खेर हैं कि इतने सन्धे काल तक घासन करने पर भी अंगरों की दूषित नीति से हमार अनेक प्रकार से पतन हो गया। अतः देश का अनुर्मुनी विकास करके इसको एक सुसंस्कृत और सम्यक् राष्ट्र बनाने के लिए देश के नेतामण कुट गए। भारत का संविधान बनाया गया और उसे २९ जनवरी १९५० ई० को लागू किया गया।

भारत में स्थित ब्रिटिशकाल की सभी छोटी-बड़ी रिवास्तों को भारत के प्रांतों में मिला कर निम्नलिखित तीन खेपी के राज्य बनाए गए —

(क) उत्तर-प्रदेश बम्बई आन्ध्र बिहार मध्य-प्रदेश पूर्वी पंजाब उड़ीसा आन्ध्र प्रदेश पश्चिमी बंगाल।

(ख) मध्य-भारत राजस्थान छीराष्ट्र हरियाणा पेशु, द्रावनकार, गोपीन मैसूर जम्मू एवं कारमीर।

(ग) हिमाचल प्रदेश सिन्धुप्रदेश दिल्ली अजमेर, त्रिपुरा आन्ध्र प्रदेश, कच्छ मणिपुर दिल्लीसपुर तथा अण्डमान-नीकोबार।

इन प्रदेशों में 'क' खेपी का शासन राज्यपाल 'ख' खेपी का राज्यप्रमुख और 'ग' खेपी का उपराज्यपाल तथा द्वितीय-कमिस्तरों के द्वारा होने लगा।*

* राज्य पुनगठन होने पर अब १४ प्रदेश और ६ केन्द्र घोषित हो गए हैं।

पुनः बम्बई मध्यप्रदेश राजस्थान उत्तर-प्रदेश आन्ध्र जम्मू-नागमीर, आन्ध्र मैसूर, बिहार उड़ीसा आन्ध्र १० बंगाल पंजाब और केरल।

प्रदेश हिमाचल प्रदेश मणिपुर त्रिपुरा अण्डमान-नीकोबार दिल्ली और तारादिब आदि।

इस प्रकार देशी राज्यों का विलयन करके भारत संघ की एक इकाई के रूप में प्रवेश बनाए गए और इसके साथ ही साथ अनेक जटिल समस्याओं का सामना किया गया जिनमें सरवासियों की पुनर्वासि समस्या खाद्यान्न का प्रश्न तथा ऐसी अनेक बातें थीं। जर्मिशारी-उन्मुक्त्यन करके भूमि-सुधार को हाथ में लिया गया। लेकिन इन सबके ऊपर एक सबसे बड़ी समस्या थी—जनता की अशिक्षा। जनता में अशिक्षा के अिकार प्रीतियों का एक बहुत बड़ा बर्ष है। अपने जिम्मे बचपन में पढ़ने की सुविधा प्राप्त नहीं होती है, वे बड़े हो कर निरक्षर रह जाते हैं। ऐसे प्रीक स्वतन्त्र देश के लिए कसकट रूप ही जाते हैं। फिर बच्चों की शिक्षा में भी शिक्षा का नये ढङ्ग से पुनर्गठन और जयकी व्यवस्था। जत इन सबकी ओर ध्यान दिया गया।

शिक्षा-नीचा का विचार करते समय पुस्तकालयों की उपयोगिता को भी स्वीकार किया गया। राष्ट्रीय सरकार ने यह अनुभव किया कि पुस्तकालयी केवल शिक्षक-संस्थाओं के लिए ही बजती नहीं है बल्कि वे समाजिक शिक्षा के भी प्रबल साधन हैं। इन पुस्तकालयों के द्वारा गव-प्रीतियों की सम्भरणा को स्थायी बनाया जा सकता है और जनता का बौद्धिक विकास सरलतापूर्वक किया जा सकता है। जत पुस्तकालयों से जनता का सम्पर्क स्थापित करने के लिए बड़े पैमाने पर नए शिरे से काम शुरू किया गया।

शिक्षा की ओर विशेष ध्यान दिया गया और उसमें काफी उन्नति की गई। बुद्धि बच भी पुस्तकालय शिक्षा-विभाय के अन्तगत ही है, जत शिक्षा की प्रगति का संक्षिप्त परिचय ज्ञान केना जावसक है।

प्राथमिक शिक्षा

ब्रिटिशकाल में हमारे देश में ६ से ११ साल के बच्चों में से मुस्लिम से १ प्रतिशत बच्चे स्कूल में पढ़ा करते थे। किन्तु स्वाधीनता के बाद इस ओर ध्यान दिया गया। और क' यकी के राज्यों में १९४८ ई० तक १४० १२१ प्राथमिक स्कूल हो गए और जिनमें पढ़ने वालों की संख्या १००० ९६४ तक पहुँच गयी। १९५३ के माघ तक स्कूलों की संख्या १७०२८५ हो गई। इस प्रकार स्वाधीनता के बाद ३७००० नए स्कूल खोले गए। बुरे माध्य में १९५३ में २२१०८२ स्कूल थे और जिनमें पढ़ने-वालों की संख्या १९९९६,८४ थी। शिक्षा में सुधार करने के लिए मुनि-

मारी शिक्षा के विज्ञान बचपाए गये। १९५३ तक ५९८ नवतों और

स्वाधीनकालीन पुस्तकालय

नव-निर्माण की ओर

ब्रिटिशकाल में भारत की शिक्षा का प्रतिष्ठित बहुत नीचा था। ये है कि इतनी कम्ये काळ तक साक्षर करने पर भी अंगरेजों की श्रुति नीति से हमारा अनेक प्रकार से पठन हो गया। अतः देश का अनुमूर्त्ती विकास करके इसको एक सुनिश्चित और उन्नत राष्ट्र बनाने के लिए देश के नेतागण बुट गए। भारत का संविधान बनाया गया और उसे २६ जनवरी १९५० ई० को लागू किया गया।

भारत में स्थित ब्रिटिशकाल की सभी छोटी-बड़ी रिमाइन्सों को भारत के प्रांतों में मिला कर विन्यसितित तीन खेती के राज्य बनाए गए —

(क) उत्तर-प्रदेश बम्बई आन्ध्र बिहार मध्य-प्रदेश पूर्वी पंजाब उड़ीसा आसाम मद्रास पश्चिमी बंगाल।

(ख) मध्य-भारत राजस्थान छत्तीसगढ़ हरियाणा पंजाब, द्रामनवार, कोचीन मैसूर बम्बु एवं कन्नड।

(ग) हिमाचल प्रदेश विजयप्रदेश दिल्ली ब्रह्मदेश, त्रिपुरा मेघालय कुम कच्छ, मणिपुर बिलासपुर, तथा मध्यप्रान-नीकोबार।

इन प्रदेशों में 'क' खेती का प्राथम राज्यपाल 'ख' खेती का राज्यप्रमुख और 'ग' खेती का उपराज्यपाल तथा डिप्टी-कमिश्नरों के द्वारा होने स्या।*

* राज्य पुनगठन होत पर अब १४ प्रदेश और ६ राज्य घोषित लेव हो गए है।

प्रदेश बम्बई मध्यप्रदेश राजस्थान उत्तर-प्रदेश आंध्र बम्बु-भारतीर, आसाम मैसूर बिहार, उड़ीसा मद्रास, प० बंगाल पंजाब और केरल।

क्षेत्र हिमाचल प्रदेश मणिपुर, त्रिपुरा मध्यप्रान-नीकोबार, दिल्ली और मद्रास आदि।

इस प्रकार देशी राज्यों का विस्मृत करके भारत देश की एक इकाई के रूप में प्रवेश बनाए गए और इसके साथ ही साथ अनेक बंदिख समस्याओं का सामना किया गया जिनमें सरकारीयों की पुनर्बांध व्यवस्था साधारण का प्रबन्ध तथा ऐसी अनेक बातें थीं। जमीनदार-उत्पन्न करके भूमि-सुधार को ह्रास में किया गया। लेकिन इन सबके ऊपर एक सबसे बड़ी समस्या थी—जनता की अज्ञानता। जनता में अज्ञानता के कारण प्रौढ़ों का एक बहुत बड़ा भाग है। बच्चे जिन्हें बचपन में पढ़ने की सुविधा प्राप्त नहीं होती है, वे बड़े हो कर निरक्षर रह जाते हैं। ऐसे प्रौढ़ स्वतन्त्र देश के लिए कस्तूरू रूप हो जाते हैं। फिर बच्चों की शिक्षा में भी शिक्षा का नये ढंग से पुनर्गठन और उसकी व्यवस्था। अतः इन सबकी ओर ध्यान दिया गया।

शिक्षा-नीचा का विचार करते समय पुस्तकालयों की उपयोगिता को भी स्वीकार किया गया। राष्ट्रीय सरकार ने यह अनुमति दिया कि पुस्तकालयी केवल शिक्षण-संस्थाओं के लिए ही बकरी नहीं है बल्कि वे सामाजिक शिक्षा के भी प्रबन्ध साधन हैं। इन पुस्तकालयों के द्वारा नव-प्रौढ़ों की साक्षरता को स्थायी बनाया जा सकता है और जनता का बौद्धिक विकास सरलतापूर्वक किया जा सकता है। अतः पुस्तकालयों से जनता का सम्पर्क स्थापित करने के लिए बड़े पैमाने पर गए विरे से काम शुरू किया गया।

शिक्षा की ओर विशेष ध्यान दिया गया और उसमें काफी उन्नति की गई। श्रुति अब भी पुस्तकालय शिक्षा-विभाग के अन्तर्गत ही है, अतः शिक्षा की प्रगति का संश्लिष्ट परिचय जान लेना आवश्यक है।

प्राथमिक शिक्षा

ब्रिटिशशासक में हमारे देश में ६ से ११ लाख के बच्चों में से मुस्लिम से १० प्रतिशत बच्चे स्कूल में पढ़ा करते थे। किन्तु स्वाधीनता के बाद इस ओर ध्यान दिया गया। और '४' वर्षी के राज्यों में १९४८ ई तक १४० १२१ प्राथमिक स्कूल हो गए और उनमें पढ़ने वालों की संख्या १ १०० ९९४ तक पहुँच गयी। १९५१ के मार्च तक स्कूलों की संख्या १ ७७ २८५ हो गई। इस प्रकार स्वाधीनता के बाद १७ ०० नए स्कूल खोले गए। पूरे भारत में १९५१ में २ २१०८२ स्कूल थे और उनमें पढ़ने-वालों की संख्या १ ९२ ९६,८४० थी। शिक्षा में सुधार करने के लिए बुनियादी शिक्षा के विद्यालय खोलाए गये। १९५१ तक ५९८ नगरों और

२१ २६० पाठों में अनिवाय प्राथमिक शिक्षा देना दी गई। इस प्रकार भारत को साक्षरता में भी सम्पन्न ९% (१९४१ की गणना) बुद्धि हुई।

माध्यमिक शिक्षा

प्राथमिक शिक्षा के प्रसार से माध्यमिक शिक्षा में भी बुद्धि हुई। १९४७ के बाद नए स्कूलों में बुद्धि हल्की हुई थी और १९५३ के अंत तक विभिन्न स्कूलों की संख्या १५,२३२ और हाई स्कूलों की संख्या ८९३३ हो गई। माध्यमिक शिक्षा की अविच्छिन्न रूप से जारी रखने का साधन बनते हैं। इसलिये १९५२ में समूचे देश से सामान्य रूप से माध्यमिक शिक्षा पर ध्यान-विचार के लिए एक कमीशन की नियुक्ति हुई। उसने रिपोर्ट में पाठ्य-क्रम और परीक्षाओं में भारी हेर-फेर के सुझाव रखे। इसी बीच देश के कई भागों में नए पाठ्य-क्रम बनाये गए और उद्योग-व्यापक संगीत बसठकारी जैसी प्रगतिशील केन्द्रों तथा समाज स्वयं सेवक जैसे काम शुरू करके पाठ्य-क्रम को सुधारा गया। अब उत्तर बुनियादी स्कूलों के रूप में धीरे-धीरे एक नई तरह के माध्यमिक स्कूलों का विकास हो रहा है। १९५३ में केन्द्रीय शिक्षा मंत्रालय की ओर हेडमास्टर्स का एक अलग भारतीय सेमिनार भी प्रियता में हुआ। यह प्रयोग बहुत ही सफल रहा।

विद्यालय और ऊँची शिक्षा की संस्थाएँ

देश के विभाजन के बाद भारत में केवल १२ विश्वविद्यालय थे। १९४५ तक उनकी संख्या ३० हो गई। इसी प्रकार सामान्य शिक्षा देने वाले कॉलेजों की संख्या भी १९५३ तक ६०६ और व्यावसायिक शिक्षा देनेवाले कॉलेजों की संख्या ३१४ हो गई। वर्ष १९४८ में 'ए' श्रेणी के राज्यों में कुछ २०००० सेजुएट थे। १९५३ में यह संख्या बढ़ कर ५२,००० हो गई। शिक्षा पर व्यय भी बढ़ा। १९५३ में धारे भारत में प्रत्येक शिक्षा पर १५ करोड़ २२ लाख तक हुए, जिसमें व्यावसायिक शिक्षा पर ५ करोड़ ९४ लाख तक हुए। वर्ष १९४८ ई० का 'राजाइन्सन्' की अघोषणा में एक 'इंस्टिट्यूट यूनि-वर्सिटी एन्डुमेन्ट फंडेशन' बनाया गया। उसने १९४९ में अपनी रिपोर्ट पेश की। इस रिपोर्ट में यूनिवर्सिटी के नतीज परन्तुओं पर विचार करके महत्वपूर्ण निष्कर्षों की बर्दा है। कमीशन की रिपोर्ट सामान्य रूप से भारत सरकार में मान ली और उसकी निष्कर्षों पर अमल कराने के लिए एक समिति बनाई। कमीशन की राय है कि विश्वविद्यालयों की व्यवस्था बाधित उद्योग मार्ग परीक्षाओं में नेश देना चाहिए न कि केवल राजनीति

और माध्यम के क्षेत्र में ही। विज्ञान टेक्नोलॉजी और प्रौद्योगिकी शिक्षा का भी विश्वविद्यालयों में विकास होना चाहिए। उसकी सिफारिश के अनुसार एक 'यूनिवर्सिटी ग्रांट कमेटी' की भी स्थापना की गई जिसको अधिक ध्यान और अधिकार दिए गए हैं।

टेक्निकल और व्यावसायिक शिक्षा

इस शिक्षा की ओर भी सरकार ने काफी ध्यान दिया। १९४७ में इस क्षेत्र के अनुसंधान की संख्या केवल २७०० थी जब कि १९५३ में ६००० हो गई। केन्द्रीय सरकार ने विद्यालय-बोध परिषद् (कार्गिलिक भाषा सांख्यिक ऐन्ड इन्स्ट्रुमेंटल रिसर्च) स्थापित की। अंतर्गत कार्गिलिक एन्ड टेक्निकल एन्ड रिसर्च ने ११ राष्ट्रीय प्रयोगशालाएँ और केन्द्रीय प्रोजेक्ट्स आर्गनाइजेशन की एक इन्टर यूनिवर्सिटी बोर्ड भी बनाया गया। विदेश जनसंघ समिति की सिफारिशों के अनुसार अनेक बनींठे विद्ये गए। सरकार ने अनुदान दे कर अनेक संस्थाओं को प्रोत्साहन दिया। अणुशक्ति और अणुशक्ति की दृष्टिगत भी नई व्यवस्था की गई। 'सेंट्रल इन्स्टीट्यूट ऑफ एनर्जिस' नामक संस्था की स्थापना १९४७ में हुई जो अब काफी प्रगति कर चुकी है।

सामाजिक शिक्षा

सेंट्रल ऐडवाइजरी बोर्ड ऑफ एनर्जिस ने १९४८ की 'समैना रिपोर्ट' के अनुसार भी ध्यान दुरु किया। सभी तरह के सामाजिक शिक्षा के कामों को बढ़ावा देने के लिए शिक्षा-संस्थानों ने अनेक संस्थाओं को अनुदान दिए। इस सामाजिक शिक्षा की में केन्द्रीय सरकार की अनेक योजनाएँ चल रही हैं।

शिक्षा में व्यवहारों का समीकरण

शिक्षा और आर्थिक व्यवहारों में समानता आने के लिए, पम्पिक स्कूलों के बनींठे माध्यमों शिक्षाओं विज्ञान और टेक्नोलॉजी की शिक्षा के लिए बनींठे विदेशी बनींठे अनुसंधान आदियों और कमीशनों आदि के लिए बनींठे की योजना की गई।

सांस्कृतिक और अन्तरराष्ट्रीय कार्य

सरकार ने 'इन्डियन कॉमिशन ऑफ सांस्कृतिक रिसेच' की स्थापना की जिसके द्वारा भारत का अर्थ बेमों से सांस्कृतिक सम्बन्ध प्रतिष्ठ हो रहा है। अन्तारी के बाद अनेक बनींठे ऐकाधिक और दृष्टिक पाठ की गई है।

इस बीच साहित्य संघों और कला को प्रोत्साहन देने के लिए साहित्य अका

यमी, संघीय और राष्ट्रीय बकाबमी तथा भारत कला समिति की संस्थापना की गई है, जिनके द्वारा उत्तम कार्य हो रहा है।

'नेशनल आर्काइव्स आफ इण्डिया' का नाम बदल कर 'राष्ट्रीय पुरातत्व संग्रहालय' कर दिया गया। नेशनल लाइब्रेरी का भी पर्याप्त विस्तार किया गया और भारतीय राष्ट्रीय कमीशन बना कर बनेक आयोजन किए गए, जिनसे देश को काफी बौद्धिक और सांस्कृतिक लाभ पहुँचा है।

इस प्रकार स्वाधीन भारत विज्ञान के क्षेत्र में बड़ी तेजी से विकास के पथ पर बढ़ रहा है।

नवीन पुस्तकालयों का विकास

स्वाधीन भारत में विभिन्न प्रकार के पुस्तकालयों का जटिलकाल के दृष्ट पर निम्नलिखित रूप में विकास हुआ —

[१] (क) नेशनल लाइब्रेरी (इन्टीरियस लाइब्रेरी) ।*

[१] (ख) मंत्रालयों से सम्बद्ध पुस्तकालय

१९४० मिनिस्ट्री आफ बक प्रोडक्शन ऐण्ड सप्लाय लाइब्रेरी गई रिस्की।

१९४९ मिनिस्ट्री आफ इन्स्ट्रुक्शन अफेयर्स लाइब्रेरी गई रिस्की।

[१] (ग) स्वतंत्र कार्यालयों से संबन्धन पुस्तकालय

१९५९ फ़ैनिक्ल कमीशन लाइब्रेरी एट्टरपति मबन गई रिस्की।

सुप्रीमकोर्ट लाइब्रेरी पार्लियामेंट हाउस गई रिस्की।

[१] (घ) मातहत और सम्बद्ध कार्यालयों से संबन्धन पुस्तकालय।

मिनिस्ट्री आफ कामर्स ऐण्ड इण्डस्ट्री

१९४० ट्रेड माक रजिस्ट्री आफिस लाइब्रेरी बंगलौर।

मिनिस्ट्री आफ कम्युनिकेशन्स

१९४८ विजिल एक्शन ट्रेनिङ्ग सेंटर लाइब्रेरी बमबेयी इलाहाबाद।

मिनिस्ट्री आफ फ़ाइनेन्स

१९४८ लाइब्रेरी आफ द आफिस आफ द रिप्लाय ए० जी० उद्दीना (पुणे)

* इसका विवरण 'केन्द्रीय सरकार के कार्य' चौपट के अन्तर्गत पृष्ठ १०९ पर देगाए।

मिनिस्ट्री आफ होम अफेयर्स
१९४८ सेक्टेट्रियट डू निज़् स्कुल काइबेरी नई दिल्ली ।

मिनिस्ट्री आफ इन्कारमेरान एवड प्राबकास्टिङ्ग
१९४७ बीस इण्डिया रीडियो काइबेरी कटक ।
१९४८ बीस इण्डिया रीडियो काइबेरी नागपुर ।
१९४८ काइबेरी इलाहाबाद ।
१९४९ काइबेरी इलाहाबाद ।
१९४९ फ़िज्म रिबीबन काइबेरी बनारस ।
१९४९ बीस इण्डिया रीडियो काइबेरी महमदाबाद ।

मिनिस्ट्री आफ डिफेंस
१९४८ डिफेंस साइंस ज्ञानमाइनेशन काइबेरी नई दिल्ली ।

[२] (क) प्रांतीय सरकारों के पुस्तकालय

१९४७ पंजाब हाईकोर्ट काइबेरी चिमला ।
१९४७ काइबेरी आफ द माफ़िस भाग द बाइरेक्टर बेटेरीनरी सचिसेज,
पंजाब ।
१९४७ फ़रेस्ट सेंट्रल काइबेरी चिमला ।
१९४८ ट्रांसपोर् डिपार्टमेंट काइबेरी चिमला ।
१९४८ पंजाब मदनमेंट रिक्वाइर माफ़िस रिफ़रेंस काइबेरी चिमला ।
१९४८ टिबिटेयन डिपार्टमेंट काइबेरी जालंधर ।
१९४९ पब्लिसमेंट सेंट्रल प्राबिधियल काइबेरी इलाहाबाद ।
१९५० पंजाब स्टेट काइबेरी चण्डीमड ।
१९५० काइबेरी आफ द प्राबिधियल पैबलाइजरी बोर्ड आफ एजुकेशन
चिमला ।

[३] यूनिवर्सिटी काइबेरी

१९४७ पंजाब यूनिवर्सिटी काइबेरी चिमला ।
१९४८ पंजाबी यूनिवर्सिटी काइबेरी गीझाटी बाघाम ।
१९४८ बङ्गली यूनिवर्सिटी काइबेरी बङ्गली ।
१९४९ बाम्बू ऐण्ड काश्मीर यूनिवर्सिटी श्रीनगर ।
१९४९ राजपूताना यूनिवर्सिटी काइबेरी जयपुर ।

१९४९ कुम्भलग्न यूनिवर्सिटी साइबेरी अहमदाबाद ।

१९५० कर्नाटक यूनिवर्सिटी साइबेरी बारबार ।

१९५० पूना यूनिवर्सिटी साइबेरी पूना ।

१९५० बङ्गाल यूनिवर्सिटी साइबेरी बङ्गाल ।

[४] रिसर्च साइबेरीज

१९४७ इन्डियन स्टैण्डर्ड इन्स्टीट्यूट्स साइबेरी दिल्ली ।

१९४७ मेघलम केमिकल सेबोरेटरी आठ इन्डिया साइबेरी पूना ।

१९४८ फिजिकल रिसर्च सेबोरेटरीज साइबेरी नवरंगपुर अहमदाबाद ।

१९४९ मेघलम फिजिकल सेबोरेटरी आठ इन्डिया साइबेरी नई दिल्ली ।

१९४९ मुम्बई सरस्वती मन्दिर ग्रन्थालय भारतीय विद्यामन्त्र बम्बई ।

१९४९ सेंट्रल कालेज आठ कर्नाटक यूनिवर्सिटी साइबेरी मध्या मद्रास ।

१९४९ सेंट्रल ड्रग रिसर्च इन्स्टीट्यूट साइबेरी कन्नड ।

१९४९ सेंट्रल फूड टेक्नोलोजिकल रिसर्च इन्स्टीट्यूट साइबेरी मैसूर ।

१९५० पयुब्लिक रिसर्च इन्स्टीट्यूट साइबेरी श्रीधरपुर मालमूर ।

१९५० सेंट्रल ग्लाइ ऐण्ड सेरेमिक रिसर्च इन्स्टीट्यूट साइबेरी, बारबपुर कन्नड ।

१९५० सेंट्रल रौड रिसर्च इन्स्टीट्यूट साइबेरी दिल्ली ।

[५] पब्लिक साइबेरी

१९४७ महाराष्ट्र ग्रन्थालय, पूना ।

१९४८ कर्नाटक ग्रन्थालय कर्नाटक रीज साइबेरी बारबार ।

१९४८ नागर बाचनालय सतारा सिटी ।

१९४९ बजमोहन बम्बोका पब्लिक साइबेरी पीली-गडवाड ।

१९४९ श्री सरस्वती बाचनालय साहापुर, बेल्गांम ।

१९५१ दिल्ली पब्लिक साइबेरी (पाइलट प्रोजेक्ट) दिल्ली ।

इनके अतिरिक्त भारत की १२२ नगर पालिकाओं के द्वारा भी जितने ही सहायता प्राप्त सार्वजनिक पुस्तकालय हैं जिनका नाम रजामाभाब के कारण नहीं दिया गया ।

केन्द्रीय सरकार के कार्य

जिज्ञासा-विभाग के अन्तर्गत ही पुस्तकालयों का विभाग भी रखा गया । अठ-केन्द्रीय जिज्ञासा विभाग के पूरे देश में पुस्तकालयों की जो बात गोपी, उगपी कर-रंगा इन प्रकार है —

१ बृटिश काल में स्थापित इम्पीरियल साइन्सेरी को निरानुस जाइनेरी का रूप दिया जाय और उसका विकास किया जाय ।

२ नेशनल डिप्लोमेटिकी के निर्माण की ओर ध्यान दिया जाय ।

३ प्रेसों में 'सिद्युस स्टेट साइन्सेरी' और जिज्ञा पुस्तकालय स्थापित किए जायें ।

४ राजधानी दिल्ली में एक केन्द्रीय पुस्तकालय हो जिसके द्वारा सब पुस्तकालय एक सूत्र में जुड़े रहें ।

इन सभी पुस्तकालयों के कार्यक्षेत्र बढय-मढय हों । जिज्ञा पुस्तकालय के द्वारा ग्राम पुस्तकालयों को प्रवृत्त किया जाय तथा जिनमें जनता के बौद्धिक विकास के लिए सम्भावित प्रयत्न किए जायें ।

इन सङ्घर्षों की पूर्ति के लिए देश की बहुमुखी विकास वाली पञ्चवर्षीय योजनाओं में एक अच्छी रकम स्वीकार की गई जिसका पूरा विवरण सामं दिया गया है ।

५ साइन्सेरी ऐडवाइसरी कमेटी का विर्माण ।

जिन्हु इही बीच लिम्पटिकल काम यो किए गए —

(क) जिनाबान के बाद पाकिस्तान से जो पुस्तकालयध्वज भारत में आये उनको धर्म में लताफत दी पुनर्वासि संवालय के सामने एक समस्या थी । ऐसे सभी पुस्तकालयध्वजों को यथ-तन पुस्तकालयों में निरुद्ध किया गया ।

(ख) केन्द्रीय सरकार ने २० मई १९५४ से प्रत्येक प्रकल्पन की एक-एक प्रति 'राष्ट्रीय पुस्तकालय' कमकला, सेन्ट्रल पब्लिक लाइब्रेरी कन्वई, और कोनेमरा लाइब्रेरी मद्रास को तथा उसे स्थापित होने वाले 'राष्ट्रीय केन्द्रीय पुस्तकालय, दिल्ली को भेजना अनिवार कर दिया । १० सितम्बर १९५५ को कोलमरा लाइब्रेरी को तथा ४ नवम्बर १९५५ को सेन्ट्रल पब्लिक लाइब्रेरी कन्वई को राष्ट्रीय पुस्तकालय घोषित कर दिया । इसका सङ्ग्रह यह है कि समस्त भारतीय साहित्य चाहे भाषों में संशुद्धित और सुरक्षित रहे तथा वेस का जनता समसे काम उठाये ।

(ग) जू १९५२ ई० में नवगठित प्रान्तों के अनुसार माण्ड के सभी प्रकार के पुस्तकालयों की एक डाइरेक्टरी केन्द्रीय जिज्ञा विभाग ने 'साइन्सेरी इन् इंडिया' नाम से प्रकाशित की । इसमें प्रसिद्ध ११६६ पुस्तकालयों का विवरण दिया गया ।

(घ) सुनेम्बे के सङ्घेस ने दिल्ली में राजनयिक पुस्तकालय-योजना

के मुख्य केन्द्र के रूप में 'दिल्ली पब्लिक लाइब्रेरी' की स्थापना की गई।

(इ) मकदूर १९५५ में दिल्ली में 'सांख्यिक पुस्तकालय के विकास' पर यूनेस्को की अन्तर्राष्ट्रीय गोष्ठी का आयोजन किया गया।

(ब) 'नेशनल बुक-ट्रस्ट' स्थापित करके बनवा एक सस्ता तथा स्वस्थ साहित्य पहुँचाने की योजना बनाई गई। ट्रस्टिंग के सिद्ध वैश्वक इंस्टीट्यूट की स्थापना की गई।

(अ) इंडिया आफिस लाइब्रेरी को प्राप्त करने की चेष्टा की गई।

(ख) हस्तलिखित ग्रंथों की खोज और उनके प्रकाशन के काम को प्रोत्साहन दिया गया।

(ग) पुस्तकालय-संघों की प्रांतीय सरकारों ने पुस्तकालय-जीम्मेदारों के लिए प्रोत्साहन किया।

(घ) पुस्तकालय-संघों को विदेश भेज कर प्रशिक्षण की व्यवस्था की गई।

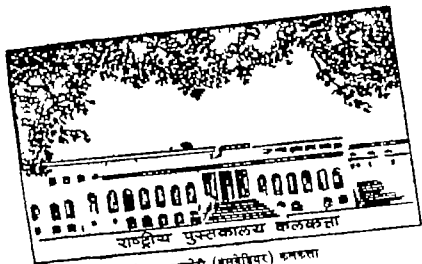
इसी प्रकार के अनेक काम किये गए जिन्हें भारतीय पुस्तकालय वर्ग की सम्मति हुई।

[१] नेशनल लाइब्रेरी

बुद्धिसहायी इम्पीरियल लाइब्रेरी 'बहा बुधुम हाउस' में व्यवस्थित थी। रिसे कमेटी ने इसकी काफी राइट लाइब्रेरी बनाने की सिफारिश की थी। अंग्रेजों के शासनकाल में खान बहादुर बमदुल्ला उस पुस्तकालय के अध्यक्ष रहे। नवम्बर १९४० में उनके अवकाश ग्रहण करने पर मिस्टर सी० एस० केशवन् (यूरोटार आफ साइडरीज इन द सेंट्रल ग्रुप आफ एजुकेशन, दिल्ली) को इस लाइब्रेरी का अध्यक्ष बनाया गया। ८ मितम्बर १९४८ ई० को इस पुस्तकालय को 'विज्ञान-विहार भवन' में आया गया और इसका नाम बदल कर 'नेशनल लाइब्रेरी' रखा गया। इसकी 'सिस्टर बुकरी' १ फरवरी १९५१ ई० को मलाई गई। बंगाल के गवर्नर सी० हीरेशकुमार मुखर्जी ने समुपस्थिति का आसन ग्रहण किया और केंद्रीय शिक्षा मंत्री पीतामा आजाद ने इसका उद्घाटन कर के इसका डार जनता के उपयोग के लिए रांग दिया।

विकास

नेशनल लाइब्रेरी होने के कारण भारत सरकार के शिक्षा विभाग ने इसके विकास की ओर विशेष रूप से ध्यान दिया। 'दिल्ली लाइब्रेरी आफ पुस्तक



राष्ट्रीय पुस्तकालय कलकत्ता

मेगलम मान्जरी (बम्बे/बिहार) कलकत्ता

सन् १८६९/१८६४ के द्वारा प्रत्येक प्रकाशन की एक प्रति इसकी योजना सभी प्रकाशकों के लिए कमूलान् बलिबार्थ कर दिया गया। "रोडिन स्टैक" की व्यवस्था की गई। नए ढंग से धान-सज्जा करके प्रचलित कमचारियों की नियुक्ति की गई। बीरे-बीरे इस पुस्तकालय में लगभग ११ लाख पुस्तकें और १० लाख कमचारी हो गए। इसके सम्मिलन काल में २०० पाठकों को पढ़ने का प्रबंध किया गया। पत्र-पत्रिका काल में अंग्रेजी तथा भारतीय भाषाओं की पत्रिकाओं के प्रदर्शन की व्यवस्था की गई जिनकी संख्या बीरे-बीरे १६ तक पहुँच गई। संसद और बचका भाषाओं की संशुद्धित पुस्तकों की सूची लगी गई। बंगाल काइबरी एसोसिएशन की सर्टिफिकेट कोर्स की ब्यापार कमाने की सुविधा दी गई। पुस्तकालय को भी भावद्वेष मुक्तियों का ८५,००, प्रबंध का उपहार भी प्राप्त हुआ। उसकी व्यवस्था की गई।

१९५६-५७ में पुस्तकालय के लिए ७७५,००० खर्च किया गया। उसके पूर्व वर्ष १९५५-५६ में ६७१,००० का। १९५७-५८ के लिए १२,९६,७०० खर्च की व्यवस्था की गई है।

१९५६-५७ में प्रथम तथा पुस्तक रजिस्ट्री अधिनियम १८६७ और पुस्तक-वितरण (सार्वजनिक पुस्तकालय) अधिनियम १९५४ के अधीन पुस्तकालय ने ४६,४४० पुस्तकें प्राप्त की। इस वर्ष में कुल १९,०१९ किस्तों की बुद्धि की गई। १६,६५५ पत्रिकाएँ प्राप्त हुई जिनमें से ५९७ खरीद कर प्राप्त की गईं।

ग्रन्थ-सूची का प्रकाशन

किस्तों के अनुसार बनाई गई यूरोपीय भाषा की एक सूची जिसमें ७ (स्यू. से आर. तक) जिसमें ५२३० नाम हैं, कुम्हार १९५६ में प्रकाशित की गई। जिसमें २ (ए. से स्यू. तक) संसद पाकि प्राइव की पुस्तकों की सूची सितम्बर १९५७ में प्रकाशित हुई। इस वर्ष पत्रिकाओं, समाचार-पत्रों और पत्रों की सूची प्रकाशित की गई।

॥ ६ ॥
 ग. अन्तः के अनुसार पर अन्तर्गत तथा सम्बन्ध प्राप्त सूची प्रमाण और अन्तः सूची प्रमाण ने अनेक महत्वपूर्ण विषयों की छोटी-छोटी पुस्तिकाएँ प्रकाशित हैं जिनमें विभिन्न भारतीय भाषाओं के प्रकाशकों की सूची महिषाओं और कालों के लिए हिन्दी पुस्तकों की सूची बंगाली, हिन्दी, कन्नड, मलयालम,

राष्ट्रीय उद्योगों का विकास और उद्योगों की पब्लिकिटी की सुविधा बढ़ाने के लिए अनेक कार्य किए गए। पुस्तकालयों के लिए स्थान की व्यवस्था की गई। अखिल भारतीय पुस्तकालय-संघ के माध्यम से अधिवेशन के अवसर पर एक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया।

भारत सरकार ने तृतीय पंचवर्षीय योजना (१९५७-६२) में नेशनल लाइब्रेरी की १० लाख रुपये निम्नलिखित कार्य के लिए रिया है —

१. मुख्य भवन के एक भाग को पूरा निर्माण कराने के लिए।
२. सम्पूर्ण काठ कैंटीनमन का पुनर्गठन कराने के लिए।
३. इन्फोमेटिक्स और विन्डोमेटिक्स को पूरा करने के लिए।
४. निजी लाइब्रेरीयों (होम साइडिंग) स्थापित करने के लिए।
५. बाल-पुस्तकालय के लिए।

इनके अतिरिक्त १९५७-६२ से किए निम्नलिखित कार्यक्रम हैं—

- (क) पीठो प्रतिनिधित्वकरण उपकरण की प्रस्थापना।
- (ख) निरालि बुधायन बेरम की प्रस्थापना।
- (ग) पुस्तक लिफ्ट की प्रस्थापना।
- (घ) पुस्तकालय के परिसर के पास के मैदानों को छाया करना।
- (ङ) तृतीय और चतुर्थ श्रेणी के कर्मचारियों के लिए रियायती मकानों का निर्माण।

(च) अध्येता छात्रावास का निर्माण।

७] इन्डियन नेशनल विन्डोमेटिक्स

विन्डोमेटिक्स का कानून के पास हो जाने पर देश के प्रत्येक प्रकाशक और सरकारी एजेंसियों को कानूनी ढंग पर एक प्रति नेशनल लाइब्रेरी की ओर प्रतिवर्षी अल्प तीन पुस्तकालयों को भेजना अनिवार्य हो गया। इसके पहलू में नेशनल लाइब्रेरी को पुस्तकें प्राप्त होती रही हैं और अब ती यह संख्या बढ़ा बढ़ती जा रही है।

केंद्रीय सरकार ने कुछ हद तक के कर छिड़काव नेशनल लाइब्रेरी में ही भारत की नेशनल विन्डोमेटिक्स कानून का नाम प्रारम्भ कर दिया। इस

कार्य की नीति निर्धारण करने तथा अन्य बातों पर विचार करने के लिए निम्नलिखित व्यक्तियों की एक समिति बनाई गई —

श्री बी० एस० केशवन् (अध्यक्ष) ।

शुक्ल श्री डी० एन० मार्शल श्री एस० एस० सेठ श्री एन० एम० केशवर्कर श्री बाई० एम० मुळे श्री सी० आर० बनर्जी श्री ए० के० बीहड़िया, और श्री विनयेन्द्र सेन मुख ।

उक्त कमेटी ने अपनी बैठकें करके क्रम से पत्रिका निर्देशक की और उपसुधार जब तक कुछ मापकों का क्रम समाप्त हो चुका है । अब टीपार समझी का छापने की व्यवस्था की जायगी ।

साहित्य एकेडेमी विष्णुयोगेश्वरी

साहित्य एकेडेमी ने देश में १९११ से १९५३ के बीच प्रकाशित साहित्य की सेलेक्ट विष्णुयोगेश्वरी बनाने की एक योजना बनाई । यह कार्य उपसुधार निम्नलिखित व्यक्तियों की देख-रेख में प्रारम्भ हुआ —

- | | |
|-----------|------------------------------------------------------|
| १ आसामी | डा० विठ्ठलकुमार बरबा, बीहड़िया मूनिबसिटी आसाम । |
| २ बंगाली | डा० सुकुमार सेन कलकत्ता । |
| ३ गुजराती | श्री जगन्नाथकर जोशी अहमदाबाद । |
| ४ हिन्दी | डा० हजारीप्रसाद द्विवेदी, बनारस । |
| ५ कन्नड़ | श्री ए० एन० मूर्धाराव बंगलौर । |
| ६ कश्मीरी | मिर्जा मुहम्मदुल्लाह बेग कश्मीर । |
| ७ मलयाळम | श्री एस० कुंजन पिल्लई ट्रिचेण्डुर । |
| ८ मराठी | श्री लंकर बनेज शस्त्री पुना । |
| ९ पंजाबी | डा० गंगासिंह, पटियाला । |
| १० तामिळ | श्री० एल० पी० कुमार रामनाथन चेट्टियर, बंगलामसई तबर । |
| ११ तेलुगु | डा० बी० बी० सीतापती मरास । |
| १२ उर्दू | श्री० ए० ए० लखर, लखनऊ । |

संस्कृत दंतचिकित्सा और अग्नि की विधिव्यवस्था में एक टापू।
एक साथ बनाई जा रही है। श्री बी० एच०, केवल एच०मी व दो टापू
समाहकार है।

[३] प्रथम वर्षवर्षीय योजना में पुस्तकालयों की प्रगति

इस योजना में स्टेट गेट्स सरकारों ११ जिमा सरकारों और ११
अतिरिक्त गवर्नरों जिमा सरकारों के विकास के लिए ११ ११ (१)
व्यय किया गया। इस योजना के अनुसार जो प्रगति हुई, उसका विवरण
इस प्रकार है —

१ स्टेट गेट्स सरकारों की स्थापना की गई। वे आसाम, पश्चिम
बंगाल मध्यप्रदेश पंजाब केन्द्रीय राजस्थान सीराम्पूर भूपाल और बिष्णुप्रदेश
में खोली गई। इस प्रकार की तीन सरकारों को सम्बन्ध में केन्द्रीय सहायता
की जा रही है।

जिसमें पुस्तकालय

इस योजना के अन्तर्गत निर्माकृतित राज्यों में कुल निम्न कर ११ जिमा
में पुस्तकालय खोले गए —

आसाम	७	सीराम्पूर	५
प० बंगाल	१७	भोपाल	२
पिदार	१२	बिष्णुप्रदेश	०
मध्यप्रदेश	२०		
राजस्थान	०४	कुल	६६

इस प्रकार के पुस्तकालयों को केन्द्रीय सरकार सहायता दे रही है। जिनमें
सहाय में १४ सम्बन्ध में २२ बिहार में ५ और आसाम में ११ है।

१९५५-५६ के बीच स्टेट सरकारों के लिए १५, ११ १२८ ४० शब्द के
रूप में स्वीकार किया गया। इनसे कलकत्ता बंशीपुर और अजमेर के स्टेट
सरकारों स्थापित की गई।

इसी प्रकार १९५५-५६ में ४०८,४२४ ४० जिमा पुस्तकालय के लिए
स्वीकृत किया गया। इनमें मध्यप्रदेश में दो जिमा पुस्तकालय जबलपुर और
सरनारायण में स्थापित किये गए।

पश्चिम बंगाल में ० स्टेट सरकारों अजमेर बिष्णुपुर, ५
(५ दो) बनारस मासिका और कृषिविहार में स्थापित हुई।

संस्कृत इंग्लिश और उर्दू की विभिन्नार्थी नेशनल साइन्स के स्टाफ द्वारा बनाई जा रही है। श्री बी० ए००, केम्ब्रिज एकेडेमी के भी टेक्निकल सहायकार हैं।

[३] प्रथम पंचवर्षीय योजना में पुस्तकालयों की प्रगति

इस योजना में ९ स्टेट सेंट्रल लाइब्रेरी १९ जिला लाइब्रेरी और ५२ अतिरिक्त रखनवाली जिला लाइब्रेरीयों के विकास के लिए ८८ ९१ ४९९ रु० स्वीकृत किया गया। इस योजना के अनुसार जो प्रगति हुई, उसका विवरण इस प्रकार है —

९ स्टेट सेंट्रल लाइब्रेरीयों की स्थापना की गई। वे आसाम, पश्चिम बंगाल, मध्यप्रदेश, पंजाब, राजस्थान, छत्तीसगढ़, भूपाल और बिष्णुप्रदेश में खोली गईं। इस प्रकार की तीन लाइब्रेरीयों को बम्बई में केन्द्रीय सहायता दी जा रही है।

जिलों पुस्तकालय

इस योजना के अन्तर्गत निम्नलिखित राज्यों में कुल मिला कर १९ जिला में पुस्तकालय खोले गए —

आसाम	७	सौराष्ट्र	५
पंजाब	१७	भोपाल	२
बिहार	१२	बिष्णुप्रदेश	७
मध्यप्रदेश	२२		
राजस्थान	७४	कुल	६६

इस प्रकार के पुस्तकालयों को केन्द्रीय सरकार सहायता दे रही है। जिनमें मद्रास में १४ बम्बई में २२ बिहार में ५ और आसाम में ११ हैं।

१९५५-५६ के बीच स्टेट लाइब्रेरीयों के लिए १८ ९३ ३२८ रु० ब्याज के रूप में स्वीकार किया गया। इनमें कच्छकला, बंगीण्ड और बटियाला के स्टेट लाइब्रेरी स्थापित की गईं।

इसी प्रकार १९५५-५६ में ४०८ ४२४ रु० जिला पुस्तकालयों के लिए स्वीकृत किया गया। इनमें मध्यप्रदेश में दो जिला पुस्तकालय प्रसन्नपुर और मरवावा में स्थापित किये गए।

पश्चिम बंगाल में ७ स्टेट लाइब्रेरी बरधान, मिनापुर, बीबीन परना (३ दो) बनारस, मालदा और कूचबिहार में स्थापित हुईं।



सम्पूर्ण भारतीय साहित्य को प्राप्त करने की व्यवस्था की गई है। इसका बचन भी अगला चुक हो गया है।

[५] काङ्ग्रेसी ऐडवाइजरी कमेटी

भारत सरकार ने निम्नलिखित व्यक्तियों की एक 'काङ्ग्रेसी ऐडवाइजरी कमेटी' बनाई है जो सरकार की पुस्तकालय-सेवा के विस्तार में सहायता प्रदान करेगी —

१-श्री वी० एस० केरावन डाइरेक्टर नेशनल लाइब्रेरी बम्बई ।

२-श्री टी० डी० वाकनीस, स्युरेट, आक लाइब्रेरी बड़ोदा ।

३-श्री डी० आर० कासिया डाइरेक्टर, दिल्ली पब्लिक लाइब्रेरी दिल्ली ।

४-श्री एन० बद्रैया, प्रेसीडेंट मैमूर स्टेट एडवोकेट जनरल वाशिंगटन मैमूर ।

५-श्री जगदीशचन्द्र माथुर आई० सी० एस० डाइरेक्टर जनरल ऑफ इंडिया रेडियो दिल्ली ।

६-श्रीमती जॉन मथार्ड, बम्बई ।

७-श्री एस० एम० सेठ, काङ्ग्रेसियन हिस्टोरिकल डि० विनिस्ट्री आक इन्स्टीट्यूट बम्बई दिल्ली ।

८-श्री के० पी० सिनहा, डाइरेक्टर शिक्षा-विभाग बिहार (बम्बई) ।

९-श्री सोहन सिंह, सहायक एडवोकेट जनरल शिक्षा-विभाग बर्हि दिल्ली (सेक्रेटरी) ।

भारत सरकार की यह पुस्तकालय परामर्श समिति भारत में अद्यतन पुस्तकालयों की वृद्धिबिधि और स्थिति की जांच तक प्रस्तावनी द्वारा करेगी जो कि विधान सभा के सदस्यों सरकारी पत्रकारियों पुस्तकालयाम्पत्तों तथा अभिवृद्धि एगकेबाके व्यक्तियों की भेजी पावगी । इसकी अग्रिम ५००० प्रतिशत व्यक्त और संस्थाओं की भेजी जावगी । कमेटी विभिन्न प्रदेशों का दौर करेगी और सरकारी अफसरों और प्रमुख पुस्तकालय सेवियों से विचार-विनिमय करेगी । यह कम्पनी रिपोर्ट सरकार को मार्च १९५८ तक देनी जिनके आधार पर नीति निर्धारित होगी ।*

(ग) आधुनिक भारतीय पुस्तकालयों का वर्गीकरण

अन्य देशों की भांति हमारे देश में भी विविध पुस्तकालय हैं । इन पुस्तकालयों का व्यवस्थित विवरण उपस्थित करने के लिए भारत सरकार के शिक्षा विभाग की ओर से तन् १९५२ ई० में 'लाइब्रेरीज इन इंडिया' नामक पुस्तक

* प्रस्तावनी भेजी गई है और दौर करने का कार्यक्रम बन रहा है ।

प्रकाशित हुई। इसमें ११६६ पुस्तकसूचियों* का विवरण दिया गया है। इस पुस्तक में भारतीय पुस्तकालयों की निम्नलिखित ९ वर्गों में बाँटा गया है —

- १ केंद्रीय सरकार के पुस्तकालय।
- २ प्रांतीय सरकार के पुस्तकालय।
- ३ यूनिवर्सिटी और कलेज के पुस्तकालय।
- ४ अनुसंधानशाखाओं प्रयोगशाखाओं और सोसाइटियों के पुस्तकालय।
- ५ पब्लिक स्कूल लाइब्रेरी।
- ६ पब्लिक लाइब्रेरी।

भारत सरकार के पुस्तकालयों को पुनः चार भागों में विभाजित किया गया है—

- (क) लेसनस लाइब्रेरी।
- (ख) संसद के संसद पुस्तकालय।
- (ग) भारत सरकार के वरतंत्र कार्यालयों के सम्बद्ध पुस्तकालय।
- (घ) मातृशाला और सम्बद्ध कार्यालयों के संसद पुस्तकालय।

इसी प्रकार प्रांतीय सरकार के पुस्तकालयों को दो भागों में विभाजित किया गया है —

- (क) विभागीय पुस्तकालय (ख) संप्रदायिक पुस्तकालय।

इसके अतिरिक्त यूनिवर्सिटी और कलेज पुस्तकालय के दो भाग किए गए हैं—

- (क) यूनिवर्सिटी पुस्तकालय (ख) कॉलेज पुस्तकालय।

अन्य वर्गों में भेद नहीं किया गया है 'इस प्रकार भारत के पुस्तकालयों को विभाजित करके उनका विवरण तीन प्रकार से दिया गया है —

- १ भारत के अनुसार पुस्तकसूचियों का विवरण।
 - २ स्टॉक के अनुसार पुस्तकसूचियों का विवरण।
 - ३ प्रबंध के अनुसार पुस्तकालयों का विवरण।
- जाने ही गई सारिणी (चाट) से यह बात स्पष्ट हो जायगी।

* यद्यपि पुस्तकसूचियों की संख्या इतने कहीं अधिक है किन्तु सरकार को सभी पुस्तकसूचियों में पूरा विवरण नहीं देना। अतः भारत के विवरणों पर यह पुस्तक आधारित है।

१०००० से १५००० "	१	११	१	५५	११	०	२६	५२९	५२	१२	१९८	११८
१५००० से २०००० "	१	२	१	५२	५	१	१	५२९	५२	१२	१९८	१९८
२०००० से २५००० "	१	२	१	५२	५	१	१	५२९	५२	१२	१९८	१९८
२५००० से ३०००० "	१	२	१	५२	५	१	१	५२९	५२	१२	१९८	१९८
३०००० से ३५००० "	१	२	१	५२	५	१	१	५२९	५२	१२	१९८	१९८
३५००० से ४०००० "	१	२	१	५२	५	१	१	५२९	५२	१२	१९८	१९८
४०००० से ४५००० "	१	२	१	५२	५	१	१	५२९	५२	१२	१९८	१९८
४५००० से ५०००० "	१	२	१	५२	५	१	१	५२९	५२	१२	१९८	१९८
५०००० से ५५००० "	१	२	१	५२	५	१	१	५२९	५२	१२	१९८	१९८
५५००० से ६०००० "	१	२	१	५२	५	१	१	५२९	५२	१२	१९८	१९८
६०००० से ६५००० "	१	२	१	५२	५	१	१	५२९	५२	१२	१९८	१९८
६५००० से ७०००० "	१	२	१	५२	५	१	१	५२९	५२	१२	१९८	१९८
७०००० से ७५००० "	१	२	१	५२	५	१	१	५२९	५२	१२	१९८	१९८
७५००० से ८०००० "	१	२	१	५२	५	१	१	५२९	५२	१२	१९८	१९८
८०००० से ८५००० "	१	२	१	५२	५	१	१	५२९	५२	१२	१९८	१९८
८५००० से ९०००० "	१	२	१	५२	५	१	१	५२९	५२	१२	१९८	१९८
९०००० से ९५००० "	१	२	१	५२	५	१	१	५२९	५२	१२	१९८	१९८
९५००० से १००००० "	१	२	१	५२	५	१	१	५२९	५२	१२	१९८	१९८
योग	१	११	१	५५	५५	५	५	५५५	५५	५५	५५५	५५५

* १२ मार्च १९५१ तक ।
 † पुस्तकें पब्लिशर्स, पुस्तकारों तथा इन्फॉर्मेशन प्रिंटर्स द्वारा ।
 + विरसनिवाक्य अनुसूचकानामात्रों और संस्थाओं से जो सम्बन्ध
 संस्थाएँ नहीं हैं ।
 S सेव १७६ पुस्तकालयों का विवरण उपलब्ध नहीं है ।

प्रश्न्य के अनुसार पुस्तकालयों का विवरण

संख्या	केन्द्रीय सरकार द्वारा प्रयोजित	प्रांतीय सरकारों द्वारा प्रयोजित	कोयले बोर्डों द्वारा प्रयोजित	प्रायकृत संस्थानों द्वारा प्रयोजित	योग
(१)	(२)	(३)	(४)	(५)	(६)
मैदानल लाइब्रेरी	१	-	-	-	१
केन्द्रीय मन्त्रालय से सम्बन्धित पुस्तकालय	१२	-	-	-	१२
भारत सरकार के स्वतंत्र विभागों से सम्बन्धित पुस्तकालय	१	-	-	-	१
भारत सरकार से संलग्न सहायक कार्यालयों से सम्बन्धित पुस्तकालय	६२	-	-	-	६२
प्रांतीय विभागीय पुस्तकालय	-	११	-	-	११
प्रांतीय संघहालय पुस्तकालय	-	७	-	-	७
विश्वविद्यालय पुस्तकालय	-	२	-	२४	२६
कांग्रेस लाइब्रेरी	७	१०४	१	५०१	६०९
जय जम्नलाल मिश्रा संस्थाओं से सम्बन्धित पुस्तकालय	२२	३	१	२९	५५
पब्लिश स्कूल लाइब्रेरी	२	१	-	१०	१३
पब्लिश लाइब्रेरी	-	२२	१८	१०८	१४८
योग	१०९	१४९	२४	७०१	११०३

* विश्वविद्यालयों अनुसन्धान देग्री और पोस्टग्रीज से जी सम्बन्धित पुस्तकालय हैं।

(घ) दिल्ली पब्लिक लाइब्रेरी

पुस्तकालय के क्षेत्र में दिल्ली पब्लिक लाइब्रेरी की स्थापना एक संविधानीय कार्य है। यह पुस्तकालय यूनेस्को और भारत सरकार के समुक्त प्रयास से दिल्ली में १९५१ ई० में स्थापित किया गया। इसका उद्घाटन माननीय प्रधान मंत्री व अवाहरसाह नेहरू ने २७ अक्टूबर १९५१ ई० को किया। इस पुस्तकालय का उद्देश्य यह है कि सांख्यिक पुस्तकालय-सेवा के क्षेत्र में आधुनिक-तम रीतियों का प्रचार किया जा सके। पुस्तकालयों को लाइब्रेरी ट्रेनिंग की सुविधा दे कर और पुस्तकालयों के मामलों में सहाय्य दे कर तथा इस पुस्तकालय में व्यावहारिक रूप में सब टेकनिकों को सिखा कर यह बच्चनपूर्ण एशिया में सांख्यिक पुस्तकालयों के विकास के लिए एक आधार पुस्तकालय हो सके।

इस पुस्तकालय का महत्व इसके द्वारा की जाने वाली सेवाओं के विभिन्न रूप से ही प्रकट होता है। यह प्रति दिन सबेरे ८ बजे से शाम के ८ बजे तक १२ बड़े रोज खुला रहता है और बच घर में किसी भी दिन बन्द नहीं होता। यह केवल पुस्तकों उधार देने वाली लाइब्रेरी नहीं है बल्कि समुदाय की सामूहिक आवश्यकताओं का पूरक एक कम्युनिटी सेंटर भी है। इस पुस्तकालय का सचिव बन कर पुस्तकों घर से जाने के लिए जमानत के रूप में कुछ भी जमा करने की जरूरत नहीं पड़ती। इसके लिए केवल एक किसी विमोक्षार व्यक्ति की फार्म पर सिफरिख भर होनी चाहिए। इस समय इस पुस्तकालय के लगभग २७००० सदस्य हैं और प्रतिमास लगभग १५० लक्ष सदस्य आते हैं।

घरके लिए पुस्तकें

इस पुस्तकालय में इस समय लगभग १५००० पुस्तकें हैं। इसमें लगभग २००० सभी पुस्तकें प्रतिमास बढ़ती रहती हैं। ये पुस्तकें कुली भाड-मारियों में रखी जाती हैं और पाठक बिना किसी रोक-टोक के अपनी इच्छानुसार पुस्तकें उनमें से चुन सकते हैं। पुस्तकें घर पर ले जाकर पढ़ने के नियम भी बहुत ही सरल हैं। पुस्तकें उधार ले जाने वाले से उसके हस्ताक्षर नहीं लिए जाते। औसतन लगभग ११०० पुस्तकें हर रोज घर पर पढ़ने के लिए ही जाती हैं। पिछले चार साल में १ लाख ४ हजार पुस्तकें लोगों को घर पर पढ़ने के लिए ही गईं जिनमें से केवल ७५७ पुस्तकें वापस नहीं मिल सहीं। यह संपूर्ण बिदेसी पुस्तकालयों में होने वाली पुस्तकों की संख्या के मुकाबले बहुत कम है।

इस पुस्तकालय में पुस्तकों के लेन-देन के अलावा एक रिडिंग और सूचना विभाग भी है, जिसमें किराबकोच, फोच सम्प्रकोच समाचार-पत्र पत्रिकाएँ तथा अन्य सामग्री सुबनतापूर्वक मिल सकती है।

इस विभाग द्वारा पत्र-पत्र तथा टेल्ग्राफों से सभी प्रकार की सूचनाएँ और रिफ़रेंस लोगों को बचाए जाते हैं।

बच्चों के लिए अल्प बालकाल है तथा उनके लिए सही कला से मिला हुआ एक 'इन्टरनल ऐक्टिविटी क्लब' भी है जिसमें रिक्तोंने लकड़ी के अंतर मनीहूर बिज तथा मैकेनोज आदि रले रहते हैं। बच्चों के लिए क्लामी तथा फ़िल्म आदि भी भी सुन्दर व्यवस्था है। बाल क्लब में एक पुस्तकालय है जिसमें से बें घर पर पढ़ने के लिए पुस्तकें ले जा सकते हैं। कभी-कभर पर पढ़ने के लिए ही जाने वाली पुस्तकों का अनुपात लगभग २०० पुस्तक प्रति-दिन का है। डिप्लोम बालकों के लिए ड्रामा, संगीत सहित आदि के अनेक आयोजन उन्हीं के द्वारा कराये जाते हैं।

सामाजिक शिक्षा का एक अल्प विभाग है जिसके द्वारा प्रौढ़ों के लिए सांस्कृतिक आयोजन किए जाते हैं। इस विभाग के द्वारा फ़िल्म प्रदर्शनी व्याख्यान नाटक वा-विवाद प्रतियोगिता आदि का आयोजन किया जाता है इन विभाग के अन्तर्गत प्रोसेसर, पोस्ट, माइक्रोफ़ोन ड्रामाफ़ोन रिक्वाइज टैपरिक्वाइर, हारमोनियम, तबला आदि अनेक वृत्त-अल्प उपकरण हैं जिनके द्वारा सामाजिक शिक्षा का प्रचार किया जाता है और प्रौढ़ों को साधरता की ओर आकर्षित किया जाता है। इन विभाग की धार से प्रौढ़ापीयोपी सहित की तीन पुस्तकें भी प्रकाशित हो चुकी हैं।

यों लोग इन पुस्तकालयों से दूर हैं उनके लिए पुस्तकालय की ओर से बल्की किराती लाइब्रेरी की व्यवस्था की गई है। यह में सात 'डिप्लोमिट स्टेशन' काम कर रही हैं जो अनेक संस्थानों को कुछ निश्चित समय के लिए पुस्तकें उधार देते हैं। इस बल्की-किराती लाइब्रेरी के साथ मिनेया और संगीत का भी प्रबंध रहता है। पिछले दो वर्षों में इन बल्की-किराती लाइब्रेरी में १२ हजार १०० पुस्तकें लोगों को पढ़ने के लिए उधार दी गईं।

इस पुस्तकालय में साबरनिक पुस्तकालय के गुणगालपाय्यों के जितनायक प्रविष्टन की भी व्यवस्था की गई है।

इस प्रकार इन पुस्तकालयों ने सिद्ध कर दिया है कि यदि समुचित बुनियाद प्रदान की जाए तो पुस्तकालय साबरनिक शिक्षा के अत्यन्त एवँ महत्त्वपूर्ण साधन हो सकते हैं।

यूनेस्को सेमिनार में उत्तरप्रदेश सरकार

के

प्रतिनिधि



श्री डी० पी० माहेबरी एम ए एम टी
विभागाध्यक्ष अधिकारी
उत्तरप्रदेश

इस पुस्तकालय में पुस्तकों के लेन-देन के अलावा एक रिफ़ॉस और सूचना विभाग भी है, जिसमें बिरबकोस, कोय रायकोस समाचार-पत्र पत्रिकाएँ तथा अन्य सामग्री सुव्यवस्थापूर्वक मिल सकती है।

इस विभाग द्वारा पत्र-पत्र तथा टेलेग्राफ़ से सभी प्रकार की सूचनाएँ और रिफ़ॉस लोगों को बताए जाते हैं।

बच्चों के लिए अलग बालकछात्र है तथा उनके लिए उगी कथ से मिला हुआ एक 'कम्पारक ऐक्टिविटी बुक' भी है जिसमें गिरीने कदमों के अक्षर सही-सही लिख तथा मैकेनिक आदि रते रहते हैं। बच्चों के लिए कहानी तथा फिल्म आदि की भी सुन्दर व्यवस्था है। बाल कक्ष में एक पुस्तकालय है जिसमें से-से-बच्चे पर पढ़ने के लिए पुस्तकें ले जा सकते हैं। अभी बच्चे पर पढ़ने के लिए से जाने वाली पुस्तकों का अनुप्राप्त संकलन २०० पुस्तक प्रति-दिन का है। कियोर बालकों के लिए ड्रामा संघीत सहित्य आदि के अलग आयोजन उन्हीं के द्वारा कराये जाते हैं।

सामाजिक विद्या का एक अलग विभाग है जिसके द्वारा प्रौढ़ों के लिए सांस्कृतिक आयोजन किए जाते हैं। इस विभाग के द्वारा फिल्म प्रदर्शनी व्याख्यान नाटक वाचकविचार प्रतियोगिता आदि का आयोजन किया जाता है। इस विभाग के अन्तर्गत प्रोब्लेम पोस्टर, माइक्रोफ़ोन प्रयोगशाला रिवाइम टेपरिकॉर्डर, हाउसोपियम तथा आदि अनेक दूर-दूर तक उपकरण हैं। इनके द्वारा सामाजिक विद्या का प्रसार किया जाता है और प्रौढ़ों को साक्षरता की ओर आकर्षित किया जाता है। इस विभाग की ओर से प्रौढ़ोपयोगी सहित्य की तीन पुस्तकें भी प्रकाशित हो चुकी हैं।

जो लोग इस पुस्तकालयसे दूर हैं उनके लिए पुस्तकालय की ओर से चलती फिरती लाइब्रेरी की व्यवस्था की गई है। पहर में छात्र 'डिप्लोमेट स्टेज' नाम कर रहे हैं जो अनेक संस्कारों की कुछ निश्चित समय के लिए पुस्तकें उधार लेते हैं। इन चलती-फिरती लाइब्रेरी के साथ गिनेमा और संगीत का भी प्रबंध रखा है। पिछले दो वर्षों में इन चलती-फिरती लाइब्रेरी ने १२ हजार १०० पुस्तकें लोगों को पढ़ने के लिए उधार दी गईं।

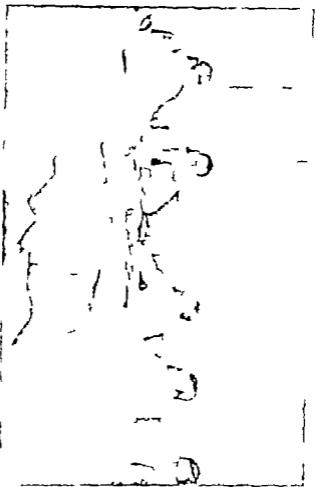
इस पुस्तकालय में साबरनिक पुस्तकालय के पुनर्वासकालों के त्रिमासिक प्रतिष्ठान की भी व्यवस्था की गई है।

इस प्रकार इन पुस्तकालय ने निश्चय कर लिया है कि यदि समुचित बुद्धिवा प्रदान की जाय तो पुस्तकालय साबरनिक विद्या के अत्यन्त ही उत्तम साधन हो सकती है।

यूनेस्को सेमिनार में उत्तरप्रदेश सरकार
के
प्रतिनिधि



श्री बी पी माहेश्वरी एम ए एम डी
मिनाप्रसार प्रबन्धारी
उत्तरप्रदेश



दुःखी भवति न च सुखी न च मृतः

एतत् कथं न च मृतः न च सुखी न च दुःखी न च मृतः न च सुखी न च दुःखी न च मृतः

(क) यूनेस्को का अन्तर्राष्ट्रीय सेमिनार

यूनेस्को के अन्तर्राष्ट्रीय सेमिनार का आयोजन ६ अक्टूबर से २६ अक्टूबर १९५५ तक दिल्ली में किया गया। इसका उद्घाटन केन्द्रीय शिक्षा मंत्री श्री कृष्णा आजाद महोदय ने ६ अक्टूबर को पाकिस्तान हाउस में किया, जिसमें विज्ञा एवं पुस्तकालयों में रुचि रखने वाले सम्बन्धी व्यक्तियों उपस्थित थे।

कार्य-सूची

इस सेमिनार में अफगानिस्तान वास्तु किया बर्मा, लंका भारत इंडोनेशिया जापान मलाया नेपाल पाकिस्तान श्रीलंका थाईलैण्ड तथा यूनाइटेड किंगडम के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। भारत की ओर से श्री बी० एच० केशवन्, श्री हरि सर्वोदय राव श्री टी० बी० बाबुनीस श्री एच० बी० आर० कृष्णिया महोदय प्रतिनिधि के रूप में तथा श्री गोविन्द प्रसाद अग्रवाल श्री बलराम सिंह गुजराली, श्री एन आर मुन्गा, श्री बी० एम कपादिया सुधी पुण्या कुमारी कृष्णा श्री बी० बी० पाटेल, श्री एच० राजवत श्री जयन्ताय प्रसाद शर्मा, श्री के० टी मन्गार, एवं श्री डी० पी० महेस्वरी (संप-सिखा-संसार अधिकारी उत्तर प्रदेश) पर्यवेक्षक के रूप में सम्मिलित हुए। श्री ए० ए० श्री ए० ए० ए० ए० हुमाई कबीर ने भी अपना महत्वपूर्ण सहयोग प्रदान किया।

इस सेमिनार के नेता ल्यूडन पब्लिक लाइब्रेरी के लाइब्रेरियन एवं यूनेस्को लाइब्रेरी विशेषज्ञ श्री एच० एम० पांडुरंग महोदय थे। भारत की कई प्रांतीय सरकारों ने भी अपने-अपने पर्यवेक्षक इस सेमिनार में भेजे। मि० ई० एन० पिंजरा अग्रवाल पब्लिक लाइब्रेरीज इन्फॉर्मेट लाइब्रेरीज डिप्टीजन यूनेस्को कांठी एन्के से अपने स्टाफ सहित दिल्ली आए और भारत सरकार तथा दिल्ली पब्लिक लाइब्रेरी अधिकारियों से सम्पर्क स्थापित किया और उनके सहयोग से सेमिनार का प्राथमिक बकरी प्रबंध किया। विस्टर पांडुरंग को उनके काम में श्री बी० एच० मेलनल लाइब्रेरी सचिव के लाइब्रेटर श्री एच० श्रीकृष्ण और पाकिस्तान की लाइब्रेरी और लाइब्रेरीज के लाइब्रेटर के वाफिसर जाल स्पेसल इन्टी मिस्टर एच० ए० काजी ने विशेष रूप से सहायता की।

यूनेस्को लाइब्रेरी डिप्टीजन के Mile S Basset द्वारा सेमिनार कायांजन का संचालन सफलतापूर्वक किया गया। सेमिनार की कार्यवाही को सुचारु चलाने के लिए कई इनामिया भी संलग्न थे।

दिल्ली पब्लिक लाइब्रेरी के असाही लाइब्रेटर श्री डी० आर० कृष्णिया ने अपने स्टाफ सहित बड़ी उत्सुकता से सहयोग दे कर सेमिनार को सफल बनाया।

इस हेमिनार का उद्देश्य एशिया में पुस्तकालय सम्बन्धी समस्याओं का अध्ययन करना और एशिया में पब्लिक राबिस के विस्तार के लिए मुद्राण और प्रस्ताव तैयार करना या बिलेय रूप से मौलिक धारा के सम्बन्ध में।

पूरु हेमिनार बुध-प्रयागी पर संबालित किया गया। पहिला पुष 'पब्लिक लाइब्रेरी' का या जिसके नेता मि० पाठनर ने। दूसरा पुष 'पेरियाया में प्रौढ शिक्षा की सामग्री' के सम्बन्ध में या जिसके नेता पाविस्तान के प्रतिनिधि श्री ए० ए० बजरी ने। तीसरा दस 'बाल पुस्तकालय' का या जिसके नेता श्रीबीनेय के प्रतिनिधि श्री श्रीविस महोदय ने।

इन तीनों दलों की समानांतर बैठकें प्रतिदिन होती रहीं। प्रत्येक सप्ताह के ३० में एक 'प्रारम्भिक अधिवेशन' होता था जिसमें प्रत्येक दल की रिपोर्ट पढ़ी जाती थी और उस पर सभी दलों के प्रतिनिधि विचार-विनिमय करते थे।

प्रत्येक दल का अपना Rapporteur था। प्रत्येक विषयके दिन के बाद-विचार का संक्षिप्त रूप तैयार कर लिया जाता था और Mimeographed संक्षिप्त रूप प्रत्येक दल को दूसरे दिन की बहुर गुरु होने से पहले मिल जाता था। इस प्रकार दल में किए गए विचारों की जाँच ही जाती थी और कोई प्वाइंट फूट नहीं लगता था। दल का नेता बहुत के समय इस बात पर ध्यान रखता था कि प्रत्येक व्यक्ति चाहे वह प्रतिनिधि या परबेसक हो विषय में पूरा ज्ञान से रखा है या नहीं। उनको अपना विचार प्रकट करने की पूरी आजागी थी। इस प्रकार को अनुशासित ढंग से धार्मिकपूवक प्रत्येक दल से परिपुष और टोग रूप में सामने आई।

हेमिनार के अन्तिम सप्ताह की उत्सवप्रनीय बात यह थी कि माननीय पंडित मेहूर भी हेमिनार के प्रतिनिधियों से मिले और अपने कुछ विचार प्रकट किए।

हेमिनार के दिनों में अंगित भारतीय पुस्तकालय-मंत्री भारत सरकार पुस्तकालय-मंत्री और दिल्ली पुस्तकालय-मंत्री के प्रतिनिधियों और परबेसकों का स्वागत किया। केन्द्रीय शिक्षा मंत्री माननीय मौलाना आजाद ने भी हेमिनार में शामिल होने वाली को अल्पाव के लिए राष्ट्रीय अक्षय में आमंत्रित किया। यूएनओ ने भी निम्न हाटक में एक दिन सभी प्रतिनिधियों, परबेसकों एवं शिक्षाविदों का स्वागत किया।

सेमिनार की रिपोर्ट

राष्ट्रीय-जन पुस्तकालय सेवा के विकास के सम्बन्ध में समूह की बर्तित रिपोर्ट एशिया के देशों की वास्तविक परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए विचारपूर्ण ढंग से प्रस्तुत की गई है। देश में पुस्तकालय की आयोजना से सम्बन्धित सभी पहलुओं पर बीजे साक्षरता का विकास स्वामीय सरकारों में विद्यालय पुनर्बांणति मय और प्राचीन क्षेत्रों में मातापिता के बालक-मबालक की सुविधाएँ, छात्रों के रहन-सहन का दर्जा तथा उनका आर्थिक विकास आदि सभी पर पुन विचार किया गया है। यह निम्नलिखित किया गया कि एक जन-पुस्तकालय सेवा को कानून के द्वारा निश्चित किया जाना चाहिए, जिसका उपयोग अनन्त विद्युत्क रूप से कर सकेगी और जिस पुस्तकालय का व्यय बनता है भन से बसवा। यह पुस्तकालय स्थापना की आधार दिति है। दूसरे, इस पुस्तकालय में न केवल विद्यालय और विद्यार्थी सम्मिलन करने बल्कि प्रत्येक नागरिक यह चाहे जो पेशा करता हो चाहे जिसकी छोड़ी-बहुत भिक्षा प्राप्त हो चाहे जिस वातावरण में रहता हो—सभी इस सेवा से लाभ उठावेंगे। जहाँ नहीं भी पुस्तकालय-विभाग पहले से बर्तमान है वहाँ बरीक्षकों का सम्मिलन करने के बाद यह पाया गया है कि बहुत छोटी इकाई होने से, सहयोग के न होने से पर्याप्त कोष न होने से सरकार की लघासीमिता टूट कामचारियों के अभाव आदि कारणों के द्वारा चलना अच्छा निष्कर्ष नहीं निकल रहा है जिसका कि कानून से निश्चयना चाहिए।

विचार गोष्ठी में यह अनुभव किया कि इकर-उभर लिये पुस्तकालयों की इस योजना के अन्तर्गत एक 'जन पुस्तकालय' के संरक्षण में कार्य करना चाहिए। भन द्वारा सहायता प्राप्त निजी (प्राइवेट) संस्थाएँ नस्य छुड़ाई गईं। विचार गोष्ठी ने इस बात पर विशेष बल दिया कि जन-पुस्तकालय-सेवा के व्यय का जन राष्ट्रीय या प्रांतीय सरकारों से निकलना चाहिए, विशेषकर प्राथमिक व्यय की पूर्वी के रूप में। पर पाँच रूप में पुस्तकालयों पर किये जाने वाले और धिरा पर किये जाने वाले व्यय को तुलनात्मक रीति से देखते हुए विचार-गोष्ठी ने दोनों के उचित अनुकूल पर बल दिया।

पुस्तकालय की स्थापना जहाँ तक सम्भव हो स्वामीय प्रशासक-सीमाओं के अन्दर ही होनी चाहिए, जहाँ इनका विकास हो सके और वे क्षेत्र पुस्तकालय के विकास में बूझ सहयोग दे सकेंगे इन क्षेत्रों का चुनाव नगर और प्राचीन क्षेत्रों के मध्य में होना तथा ये पुस्तकालय इनकी पूरी पर नहीं होने कि

पुस्तकालय बाहरेकर या जिहा पुस्तकालय बोर्ड इन पर अधिकार रख सकते हैं कठिनाई अनुभव करें।

रिपोर्ट का दूसरा अंतिम निगम या कि केन्द्रीय पुस्तकालय बोर्ड नियम (कानून) बड़ा स्वयं परिवर्तित संस्था होगी जो एक मन्त्री पर निर्भर करेगी और इसको अधिकार होंगे कि यह पुस्तकालय सेवाओं का विकास करे और इस निमित्त स्वीकृति भी दे। इस बोर्ड के अधिकार सम्बन्धी प्रश्न अभी विचारप्रस्त है। उनके एक मस होमि के लिए हमें प्रतीक्षा करनी चाहिए।

रिपोर्ट के विस्तृत अन्वयणों (Paragraphs) में से राष्ट्रीय पुस्तकालय-सेवा के कार्यों का बचन बतिया महत्वपूर्ण है। राष्ट्रीय पुस्तकालय के क्या कार्य हैं? क्या यह राष्ट्रीय-पुस्तकालय सेवा से मिला और विधि है? यदि ऐसा है तो राष्ट्रीय पुस्तकालय-सेवा के क्या विधान हैं? एशिया में विभिन्न प्रकार के दो Unitary और Federal राज्य बतमान हैं। ऐसे विभिन्न राज्यों में राष्ट्रीय पुस्तकालय और राष्ट्रीय-पुस्तकालय-सेवा का क्या प्रकार (रूप) होगा। इसपर प्रश्नों पर विचार किया गया।

राष्ट्रीय पुस्तकालय एक बड़ा संस्था है जिसके कि स्वयं अधिकार हैं जो राष्ट्रीय प्रकरणों की रक्षा करती है और विरम की संरक्षित और सम्पत्ता सम्बन्धी पुस्तकों का चुनाव करती है। इसका प्रमाण तब राष्ट्रीय पुस्तकों की सूची (Bibliography) निर्माण करना होता है तथा वह अन्तरराष्ट्रीय स्तर और अन्तरराष्ट्रीय पुस्तकों के आदान-प्रदान के केन्द्र के रूप में कार्य करती है और वहाँ सम्भव हो सके वा सुविधा बँटसाय रखती है।

राज्यों में राष्ट्रीय पुस्तकालय का बचम है कि वह राष्ट्रीय पुस्तकालय-सेवा का निर्माण करे। राज्यों में राष्ट्रीय पुस्तकालय का पुस्तकालयाम्बुद केन्द्रीय पुस्तकालय बोर्ड के पुस्तकालयाम्बुद की हस्तियत से कार्य करता है। केन्द्रीय पुस्तकालय बोर्ड राष्ट्रीय पुस्तकालय पर निर्भर नहीं है।

रिपोर्ट में केन्द्रीय पुस्तकालय बोर्ड के कार्यों का एवं यह कि प्रकार राज्य और विद्य बीदों के स्तरीय से बनना राष्ट्रीय रूप विचार करती है, इसका विस्तृत विस्तृत किया गया है।

दिल्ली सार्वजनिक पुस्तकालय आयोगन की आयातीत उपकला विचार-मोड़ी को यह कहने के लिए प्रेरित करती है कि एशिया के देशों में पत्र-परचम-विद्य और कार्यों के लिए अधिक से अधिक सुन्दर पुस्तकालयों की आवश्यकता है। सुन्दर विद्य आवश्यक त्यों पर रिपोर्ट में विचार दिया गया

जगमें से कुछ मुश्किल है—पुस्तकालय-जगतों के निर्माण की समस्या पुस्तकों का एक बड़ी संख्या में वितरण स्वेच्छा से काय करने वाले क्रमचारियों का प्रयोग समूह में विशेष बलों की सेवा पुस्तकालय टेकनिक, क्रमचारियों का प्रशिक्षण गुणात्मक और सामाजिक स्थिति पुस्तकालयाम्यक की कक्षा में प्रशिक्षण प्राप्त करने वाले लोगों के लिए विशेषी अनुभवों का महत्त्व पुस्तकालय-विस्तार सेवा विशेषतया मये पढ़े-लिखे लोगों के लिए, प्राथमिक राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग राष्ट्रीय पुस्तकों की सूची का निर्माण और पुस्तकालय समितियों द्वारा किसे जाने वाले काय की समस्याएँ ।

विचार-मोक्षी की संक्षिप्त रिपोर्ट में जो कि १० नवम्बर को Unesco (CUA/73) द्वारा प्रसारित हुई निम्नलिखित मुख्य तथ्यों का सारांश दिया गया है —

१ एशिया में सभी लोगों के लिए मुक्त और बराबर आचार पर संवित रूप से आवेगित, जन-पुस्तकालय-सेवा विकास ।

२ सभी एशिया के देशों में जहाँ कोई पुस्तकालय-कानून नहीं है, राष्ट्रीय जन-पुस्तकालय के कानूनों की क्रियारतक रूप देना ।

३ पुस्तकालय-सम्बन्धी प्रशिक्षण को सुविधाओं में प्रवृत्ति तथा पुस्तकालय-कार्यों के बेलन एवं सामाजिक रहन-सहन में विकास ।

४ जन-पुस्तकालयों का स्पष्ट बनता के चन्दे से किया जायगा ।

५ यूनेस्को एशिया की सरकारों से निकल कर अतिरिक्त जन-पुस्तकालय आवेगना बनाए ।

६ यूनेस्को मनील पढ़े-लिखे लोगों के लिए संवित जन-पुस्तकालय सेवाओं की सुविधा प्रदान करने के लिए अनुसन्धान जारी रखेगा ।

७ यूनेस्को एशिया में एक ऐसा कार्यालय स्थापित करेगा जो विभिन्न सरकारों की सहमति और सहामता प्रदान कर जन-पुस्तकालय के विकास में सहयोग देगा ।

द्वितीय बह (पृष्ठ ६) की रिपोर्ट में ग्रहों के लिए प्राथमिक अध्ययन की सामग्री प्रदान करने के सम्बन्ध में जो मुश्किल समस्या है वह यह कि निरक्षरता केवल-जन क्षेत्रों में ही है जहाँ पाठन-योग्य की सुविधा अच्छी नहीं है, जहाँ प्रायः सर्वत्र बीमारों का साधारण रहता है और जहाँ अति मजबूती है । इसलिए यह संवित है कि प्राथमिक अध्ययन की सामग्री प्रदान करने में राष्ट्रीय

योजना लोगों की सामाजिक और आर्थिक स्थिति को मुख्य रूप से ध्यान में रखे। रिपोर्ट वर्तमान पठन-सामग्री को देखती है और उसमें अन्तर (Lacuna) का निर्धारण करती है। औद्योगिक आर्थिक तथा अन्य क्षेत्रों में पठन सामग्री के क्रमों का निर्धारण (प्रस्तुत) करती है। यह दृश्य और श्रवण (Audio-visual) सम्बन्धी सहायताओं एवं उनके चुनाव तथा उनके ज्ञान पुस्तकालयों के प्रयोग के प्रश्नों पर विचार करती है। यह कुछ विशेष क्षेत्रों की बहु-भाषी सम्बन्धी एवं लिपि-विभिन्नताओं की समस्या पर विचार करती है। इन विचारों में यहाँ आकरयक परिणाम निकालते गये हैं कि देश की राष्ट्रीय भाषा में पुस्तकों के प्रदान करने के साथ-साथ प्राथमिक भाषा-सामग्री को भी देना होना और जहाँ तक सम्भव हो सके सम्पूर्ण रूप से इसके लिए एक लिपि का अनिवार्य होना। पुस्तकालय-संस्थाओं के क्षेत्र में सुविधा प्रदान करनी। औद्योगिक संघ-कोष का एशिया की भाषाओं में निर्माण (स्थापना) कुछ यूरोपीय भाषाओं के लिए महत्व अनुसन्धान-विभाग व्यवस्था तथा शिक्षा-केन्द्र का विकास और पुस्तक प्रकाशन की व्यवस्था—इन पर रिपोर्ट में मुख्य रूप से विचार-विमर्श किया गया है। इसमें चार महत्वपूर्ण बस्तुएँ बताई गई हैं। प्रथम उरकापी और प्रबन्ध विभागों के सम्पूर्ण जिनका काम प्रकाशित करना का उपस्थित करना नवीन-विचारों को के लिए सामग्री प्रकाश करना है, विशेष पठन-सामग्री के स्वभाव (Nature) विवरण और प्रकृति आदि के विषय में सूचना उपलब्ध कराना है। इसके अतिरिक्त यह प्रस्तुत की गई पुस्तकों की भाषाओं, उनकी पुन-संरचनाएँ तथा अतिरिक्त सिद्धि-करण (इतिहास) विभाग में विभिन्न सीढ़ियों (Stages) पुस्तकों के अतिरिक्त विभाग में अन्य सुलभ सामग्रियों की सहायता उनके (पुस्तकों के) आकार प्रकार जिनमें कि उन्हें मिलना होता है और प्रस्तुत की गई सामग्री का सूचकांक (की मासिकता) आदि प्रश्नों की सूचना एवम् उचित करेगी। द्वितीय एशिया के देशों में प्राथमिक पठन (अध्ययन) सामग्री तथा इसके उत्पादन का निर्धारण। तृतीय प्रौढ़ विद्या साहित्य में सम्बन्धित शीर्षकों (Titles) की एक विषय-सूची और स्थानीय रूप से उद्योग (ध्याय) तथा हस्तकला द्वारा औद्योगिक-प्रकार के उत्पादन में सुधार (और विकास) अनुसन्धान-सूची के उपकरणों और प्रौढ़-विद्या के क्षेत्र में बयबागियों के लिए सहायताओं के चुनाव के रूप में हस्तकलाओं का पुनर्रचना।

उपरोक्त (Unesco) (CUA/73) के द्वारा प्रस्तावित तद्विषय रिपोर्ट में (Group Two) की श्रेणी की निम्न प्रकार से संक्षेप किया है —

प्रौढ़-शिक्षा के लिए उचित पठन-सामग्री के विशेष अभाव तथा एशिया में साक्षर्य प्रस्तुत करने वाली विभिन्न संस्थाओं (एजेंसीज) में परस्पर अद्युत्सुकता की भावना को ध्यान में रखते हुए आवश्यक है कि प्रत्येक देश में मसी प्रकार धन्य द्वारा बचाए जाने वाले एक राष्ट्रीय उत्पादन केन्द्र की स्थापना की जाय । इस विषय में यह रूप का विषय है कि भारतवर्ष में 'राष्ट्रीय पुस्तक-ध्यास' के निर्माण के द्वारा एक बहुत बड़ा धराहनीय फलम उठामा है । छोटे बाजारों के लिए पुस्तकालय-सेवा के विषय में तृतीय बरक की रिपोर्ट धामधियों एवं मन्त्रों के समूह, विस्तार सम्बन्धी फलम स्कूल-पुस्तकालयों, और वर्तमान (धरपरत) पुस्तकालयों के लिए आवश्यक विशेष प्रकार के धमचापी-धन्य पर विशेष धन्य से विचार करती है ।

11' पूर्वकथित Unesco (CUA/37) की संक्षिप्त रिपोर्ट तृतीय बरक के निर्माणों की इस प्रकार संक्षेप में प्रवर्धित करती है —

१ सभी धन-पुस्तकालय बन्धों की सेवा को ध्यान में रखें और उसे प्रदान करें ।

२ स्कूल में बन्धों की पुस्तकालय-सम्बन्धी-सेवा का विध्वंस एक निश्चित आयोजन के आधार पर किया जायगा और इन सेवाओं को सभी स्कूल के बन्धों के लिए सुलभ बनाया जायगा ।

३ यूनेस्को एशिया की सरकारों से मिश्र कर प्रादेशिक या राष्ट्रीय आधार पर स्कूलों और धन-पुस्तकालयों में बन्धों के लिए पुस्तकालय की सेवाओं के निर्वह के लिए एक सुदृढ़ आयोजन बनायेगी ।

४ यूनेस्को एशिया के बन्धों और लघुमुद्रक धमधियों के धामार्थ बन्धी पुस्तकों के निर्माण के लिए आयोजन बनायेगी ।

५ यूनेस्को निरव साक्षर्य की उल पुस्तकों की-बहु मौलिक हों चाहें अनूचित धालिका धवार करेगी जो एशिया क बन्धों के लिए सामग्र्य हों ।

एशियन साइबेरी एसोसिएशन

२१ अक्टूबर १९५५ में यूनेस्को धेनिनार के दिनों में अनेक एशियायी देशों के प्रतिनिधियों ने मिश्र कर 'एशियन साइबेरी एसोसिएशन' की स्थापना की । इसके धमधति Mr Severino L. Velasco (फिलिपपाइन्स) और धनी धी डी० धार० धालिध्र (भारत) धुने गए ।

पुस्तक-विक्रि प्रदर्शनी

शासकीय पुस्तक तैयार करने की प्रारम्भिक रीति के लिये अन्तर्राष्ट्रीय पुस्तक-विक्रि-प्रदर्शनी २७ अप्रैल ५९ को विस्वी में आयोजित की गई जिसका उद्घाटन केन्द्रीय विज्ञान-विभाग के उपमंत्री डा० के० एल० श्रीवास्ती महोदय ने किया।

(ष) नेशनल बुक ट्रस्ट

केन्द्रीय सरकार ने जनता में सरल और स्वल्प साहित्य को सस्ते मूल्य पर प्रचारित करने के लिये तथा कर्त्तव्य एवं अन्य विशेष साहित्य जिन्हें प्रकाशक काम की दृष्टि से छापने में शिक्कते हैं, उन्हें छापने के लिये एक 'नेशनल बुक ट्रस्ट' की स्थापना की। जसु प्रथम वय में १० लाख रुपये का धन अनुमानित है। इसकी समिति इस प्रकार है —

डा० जॉन मथार्ई वाइस चांसलर, बम्बई यूनिवर्सिटी (अध्यक्ष) ।

सरस्य —

- १ डा० ए० लक्ष्मण स्वामी मुबालियर, वाइस चांसलर महाराष्ट्र यूनिव०
- २ डा० जाकिर हुसेन बलीकद
- ३ श्री सुल्कराज आनन्द ।
- ४ श्री स्वाजा अहमद बघ्यास ।
- ५ श्री दिखीपकुमार गुप्त ।
- ६ श्री पीटर जयसिंघे ।
- ७ श्री डी० जे० सेम्बुलकर ।
- ८ श्रीकृष्णा कृपळानी ।
- ९ प्रो० सुंजीव ।
- १० प्रो० हुमाऊ कबीर ।

इनके अतिरिक्त भारत सरकार के विद्या तथा सूचना-अंशालयों के भी भी ट्रस्ट के सदस्य होंगे।

पुस्तकालयाध्यक्षों की ट्रेनिंग

पुस्तकालय-विभाग की विद्या देने के लिए 'सेंट्रल इन्स्टीट्यूट' स्थापित करने के निमित्त १० लाख रुपये की एक रकम रकी गई है।

(छ) इटिडया आफिम साइम्रेरी क लिप्य प्रयत्न

देश के विभाजन के पश्चात् भारत और पाकिस्तान दोनों में इस

साइबेरी को लेने की बात बरसाई। किन्तु ईशिया मन्त्री मौजाना बाबाए इस साइबेरी के समझौते के सम्बन्ध में बातचीत करने इंग्लैण्ड गए भी। वे २६ जुलाई १९५५ को वापस आए। २६ जुलाई को प्रेस कॉन्फेस में अत्यंत हैते हुए उन्होंने बताया कि ब्रिटिश कॉमिन्वेल्थ के साइबेरी साई होम के साथ पत्र-व्यवहार हो रहा है और अभी तक कोई निर्णय नहीं हो पाया है। साई होम का विचार है कि इशिया बालिष्ठ साइबेरी इंग्लैण्ड में ही अखण्ड रूप से पुनर्जन्म बनी रहे। यों वैधानिक रूप से साइबेरी की साथी सम्पत्ति तथा ईस्ट इशिया कम्पनी के समस्त कायनात पर अविभाजित भारत का अधिकार है। इस सम्बन्ध में १९४८ ई० के स्वतंत्रता अधिनियम के तैयार होते समय गवर्नर जनरल ने अपनी कौंसिल में स्पष्ट रूप से कहा था कि उक्त सामग्री भारत की सम्पत्ति है। इस प्रकार अभी यह मामला बटाई में पड़ा हुआ है। यदि आज का विभाजन हुआ अर्थात् साइबेरी की सामग्री भारत और पाकिस्तान में बँट गई तो यह एक अपूरव्यसिता होगी।

(क) इस्तिस्कित-भूतों की खोज

देश के स्वाधीन होने पर भारत सरकार ने तथा प्रांतीय सरकारों ने भी हस्तलिखित ग्रन्थों की खोज करने तथा उन्हें प्राप्त करके उनको प्रकाश में लाने का कार्य भी अपनाया। सन् १९५२-५३ में भारत सरकार ने ३१ ऐतिहासिक पार्कमेन्टिवी और डॉक्यूमेंट्स विभिन्न पार्टीज से १२०० रु० की खर्च पर प्राप्त किया। इसमें सरोजिनी नायडू को कर्बिताएँ, अमीर खुसरो की रचनाएँ, मुबकब्बसीन कुछ फेरमान एवं डॉक्यूमेंट्स थे। सरकार ने अरबी कवि वास्ताजी को ८०,००० रु० में कर्बसिक मुस्तकों के ट्रांसलेशन की पार्कमेन्टिवी का कपीराइट के कर बनेता में सस्ते दामों में निरालन की योजना तैयार की। इसमें महाभारत अक्षरहीता रामायण सकुन्तला, मंड-कमंडली और ए समरी आदि इतिहास यैबीबीजी आदि मुख्य ग्रंथ हैं, जिनमें से सकुन्तला का प्रकाशन हाल में किया गया। मेघनद आर्कोइम आदि इशिया ने प्राचीन हस्तलिखित ग्रंथों के रखने के लिए कई ऐतिहासिक खोज की और २००० के लगभग ग्रंथों को उसी रीति से रखा। सरकार ने मेघनद पर रिचर्ड ईस्टीट्यूट पूना उपाधीयन बोर्डिंग ईस्टीट्यूट बँकिया कमेन्टता यूनिवर्सिटी और मैन्सिक्पुस की नाइकीलिम काफी अपार देने की एक योजना भी स्वीकार की।

कम्प्यू और काश्मीर सरकार ने ईस्टीट्यूट के २१९ अक्षरहीत ग्रंथ प्राप्त किए।

४९ फरवरी और अरबी, १९ पाली और १९ तिब्बती। इनमें से ८९ संस्कृत के ग्रंथ प्रकाशित भी हुए। इनमें 'त्रिकलास्य' बहुत ही महत्वपूर्ण है। सरकारी रिजर्व पंडित और मौलवी विभिन्न दुर्लभ ग्रंथों का सम्पादन कर रहे हैं। वलिक हसन का ११ बी सलासी का लिखा हुआ कारमीर का इतिहास भी मिला है जिसमें आरंभ से १८९५ तक का इतिहास है और जिसका पता बम्बय की राजतरंगिणी से भी नहीं लग पाया था।

उत्तर प्रदेशीय सरकार ने अपने एक परिषद के द्वारा राज्य के समस्त विद्यापीठों को आदेश दिया है कि वे अपने-अपने जिले में व्यक्तिओं और संस्थाओं के पास जो हस्तलिखित ग्रंथ हों उनका विवरण सरकार को भेजें। इस ओर ध्यान भी दुरु हो गया है।

नागरी प्रचारिणी सभा ने अपने कार्यकर्ताओं के द्वारा छोड़े गए ग्रंथों की खोज रिपोर्ट प्रकाशित की। हिन्दी-संग्रहालय में सुरक्षित ५००० ग्रंथों का पड़नाया प्रचार-परिषद ने भी अपनी 'हस्तलिखित ग्रंथों की खोज' के दो भाग प्रकाशित किए।

बैटलास बैटलागरम्

इन सब संस्थाओं के निजी हस्तलिखित ग्रंथों के सूचीपत्रों के अतिरिक्त एक महत्वपूर्ण सूचीपत्र 'बैटलास बैटलागरम्' (प्रथम सं०) मद्रास यूनि-वर्सिटी की ओर से १९४९ ई० में प्रकाशित हुआ। इसका सम्पादन मद्रास यूनिवर्सिटी में संस्कृत विभाग के अध्यक्ष श्री टी० कुम्हणय्या ने किया। १८० पृष्ठों के इस सूचीपत्र में केवल 'ब' अक्षर ही का पाया है। इसको निम्नलिखित संस्थाओं के तथा कुछ व्यक्तिगत संग्रहों के भी हस्तलिखित ग्रंथों के सूचीपत्रों से तैयार किया गया है—

- पुस्तकालय, ओरियंटल इन्स्टीट्यूट, रिसय मोनास्ट्री और मैनु-स्क्रिप्ट लाइब्रेरी
- बयार लाइब्रेरी बयार।
- बालन्यायम पूना।
- लेफो संस्कृत लाइब्रेरी मद्रास।
- एनी बकिन्गहम लाइब्रेरी बेनी बाजार, विश्व बाजार।
- बम्बय संस्कृत लाइब्रेरी बोबानेर।
- भारतकर आरियंटल रिजर्व इन्स्टीट्यूट पूना।

भारतीय इतिहास संशोधक मंडल पूना ।
 भारतीय विद्यामन्त्र, बम्बई ।
 विन्डिगोल्फ मेसनस पेरिस ।
 बिहार ऐम्बे उद्दीसा रिसर्च सोसाइटी, पटना ।
 बाम्बे प्रांश बाफ रॉयल एशियाटिक सोसाइटी बम्बई ।
 बाहिलम्मी काइबेरी, नाटियाव ।
 रफन कासेज पोस्ट ग्रेजुएट ऐम्बे रिसर्च इन्स्टीट्यूट, पूना ।
 एबर्नमैट ओरियण्टल काइबेरी मैसूर ।
 ग्रेटर इंडिया सोसाइटी कलकत्ता ।
 गुजरात विद्यापीठ, महाभारतबाव ।
 मैसनस काइबेरी, कलकत्ता ।
 इण्डिया बाफिस कम्पन ।
 विन्ड स्टेट पब्लिक काइबेरी सिन्ध ।
 कृष्ण ईश्वरय बाम्बे प्रापा मिथ्य ईश्वरबाव, पश्चिम ।
 काइबेरी बाफ कासेज इंडिक एजुकेशन बाधिमण्ड ।
 यत्रास एबर्नमैट ओरियण्टल मैनुस्क्रिप्ट काइबेरी मद्रास ।
 मद्रुप सामिक संग्रहम् मद्रुप ।
 मीमांसा विद्यालय, पूना ।
 ओरियण्टल इन्स्टीट्यूट बङ्गीवा ।
 रंजपुर साहित्य परिषद, कलकत्ता ।
 सिधिया ओरियण्टल इन्स्टीट्यूट, बम्बई ।
 सोसाइटीज एशियाटिक पेगिस ।
 रंजौर महाराज करफोनी सरस्वती म्हाल काइबेरी रंजौर ।
 रैलुम् एकेडेमी कोकोलाव ।
 ट्रावणकोर यूनिवर्सिटी ओरियण्टल मैनुस्क्रिप्ट काइबेरी, ट्रिबेण्डम ।
 ट्रिबेण्डम पब्लिक काइबेरी ट्रिबेण्डम ।
 बंजीय साहित्य परिषद कलकत्ता ।
 बार्मेस रिसर्च सोसाइटी, राजराही बंगाल ।
 बेरसास्य प्रसेकक सभा, पूना ।
 बार्कस इस्टारिकल रिसर्च सोसाइटी बार्कस ईश्वरबाव ।
 यूनिवर्सिटी, कासेज और स्कूथ
 बाम्बे यूनिवर्सिटी, बाल्टेबर ।

यूनिवर्सिटी, कासेज और स्कूथ
 बाम्बे यूनिवर्सिटी, बाल्टेबर ।

बन्नापलाई युनिवर्सिटी, नवाप ।
 बम्बई युनिवर्सिटी बम्बई ।
 कलकत्ता युनिवर्सिटी कलकत्ता ।
 केंब्रिज युनिवर्सिटी ऐष्य ट्रिनिटी कालेज केंब्रिज ।
 बाक्य युनिवर्सिटी, बाका ।
 डी० ए० बी० कालेज लाहौर ।
 फ्लुक्ल कालेज फ्लुक्ल ।
 एच० पी० डी० कालेज नासिक ।
 गामब स्कूल सिस्वर ।
 रस्मानिया युनिवर्सिटी हैरदाबाद ।
 पंजाब युनिवर्सिटी लाहौर
 श्रीरामपुर कालेज, श्री रामपुर

म्युजियम और आर्कैलोजी विभाग

आर्कैलोजिकल विभाप जोधपुर ।
 आर्कैलोजिकल एबे बाक हैदराबाद ।
 कोलम्बो म्युजियम कोलम्बो ।
 कटक म्युजियम कटक ।
 इण्डियन म्युजियम, कलकत्ता ।
 म्युजियम इलाहाबाद ।
 प्रिन्स बाक वेस्ट म्युजियम बम्बई ।

संस्कृत कालेज और पाठशाळाएँ

महापत्रा संस्कृत कालेज, बीनूर ।
 महापत्रा संस्कृत कालेज विजयापवरम् ।
 प्राज्ञ पाठशाळा बाघ उतारा जिला ।
 रामेश्वरम् ईश्वरानम् पाठशाळा म्मुण ।
 संस्कृत पाठशाळा रामपुर, रत्नबिरि ।
 संस्कृत कालेज उड़ीषी ।
 पत्रय वैद्याल संस्कृत कालेज, श्री परमपुर ।
 वेदवास्व पाठशाळा पुनवस्था ।

स्टेट्स

अनपण्ड, अजमेर, बीर, बखान, कोलीन, परम्पुर, भोइपाठ 'अपपुर

बड़ीछा कामठीर, कैंजोर, कोटा, पुषुकोटा उरखपुर और विजयामपरम् ।
 खैन संस्थाएँ

ब्रह्मक पन्नाखाल विजयपुर खैन
 उरखती भवन झालरापाटन ।

1. मयूत अरु मरुन काळ छाहू खैन विद्यासाख्य बहुमरवाव ।
2. काठभेरेति पंडिताचार्य खैन अरुअर कुवन वेख्योसा मँसूर ।
1. अँद्रेख खैन काठभेरी आर ।
 विजयपुर खैन मरुअर, सिस्वी ।
 विजयपुर खैन काठभेरी रोहठक ।
 खैन मँदिर मरुअर, पागीपठ ।
 खैन अरुअर विद्याखली विरोर मँनपुरी ।
 बीरवाभी विनास खैन सिद्यास भवन मूखसित्री ।
 खाम्तिनाथ खैन मँदिर, बलीमँव-एटा ।
 स्वाहाख खैन महाविद्यालय मरैनी क्यारण ।
- c) खजाराम काठेख कोल्हापुर ।

हिन्दू मठ और मन्दिर

महोविद्यास मठ बीरंनम् ।

ककाडावर देवस्वातम् मराठ ।

कोपी कामकोटि संकराचार्य मठ कुँवकोना ।

कुप्पपुर मठ उहोपी ।

नाण्ड्याण उरखपुर ।

पेसावर मठ, बड़ीपी ।

सखियासि मरुअर मठ, काँपी ।

रंननाथ स्वामी देवस्वातम् म्मुजिबान और काठभेरी, बीरंनम् ।

मूँवेरी संकराचार्य मठ मूँवेरी ।

बपनिस्वातम् मठ काँपी ।

अन्य संस्थाएँ

आशाम गवर्नमेंट बुकडिपो ।

नासुबेद केमिअक वर्स कोल्हापुर ।

मातृभूमि कार्यालय, खालिवर ।

निम्न सागर प्रेस, बम्बई ।

पंचाचार्य प्रेस मैसूर ।

रेड्डी होस्टल मुम्बई बाजार, हैदराबाद ।

इससे इस बात का भी अनुमान किया जा सकता है कि भारत के कोनों-कोने में विभिन्न संस्थाओं में यहलक्ष्यपूर्ण ग्रंथ बहुत बड़ी संख्या में सुरक्षित हैं और इस बात की बहुत आशंका है कि देशों तथा नगरों में विभिन्न व्यक्तियों के पास भी ग्रंथ पड़े हैं, उनका भी अन्तर्गत किसी सुनिश्चित योजना के अनुसार किया जाना चाहिए । इन ग्रंथों से भारत के साहित्य की वीर्यवृद्धि होगी और अतीत की संस्कृति पर महत्वपूर्ण प्रकाश बरेगा ।

इसके अतिरिक्त निम्नलिखित सूचियाँ भी प्रकाशित हुई हैं -

१९४० राजस्थान में हिन्दी के हस्तलिखित ग्रंथों की शोध विद्यापीठ उदयपुर संसारक अमरचण्ड नाट्य ।

१९४८ कन्नड़ प्राचीन साहित्यिक ग्रंथ सूची भारतीय ज्ञानपीठ, काशी संपा० मुजबबी सास्त्री ।

१९४९ इन्स्टीट्यूट ऑफ़ इण्डियन स्टडीज एशियाटिक सोसायटी संपा० का० एशियाटिक ।

१९५२ राजस्थान में हिन्दी के हस्तलिखित ग्रंथों की शोध साहित्य अकादमी, उदयपुर संपा० उपनिवेश मदनमोहन ।

१९५२ हस्तलिखित हिन्दी ग्रंथों की शोध का विद्यार्थी ५० वर्षों का विवरण । काशी प्रचारिणी सभा काशी ।

१९५५ प्राचीन हस्तलिखित लेखों का विवरण एशियाटिक सोसायटी-अमरचण्ड नाट्य संपा० बर्मन्ड इण्डियाटिक ।

विश्वविद्यालय मैसूर के मातृ संघ १९३३ में का० एशियाटिक सोसायटी काष्ठालय ने १९ बुधनी बुद्धिग्रह ग्रंथों (प्राचीन) का पत्रा संपादन विवरण संपादन का० अतिनाथ दत्त बलरत्न पुनिर्वाहणी ने किया और प्रकाशित हुई । शोध की भारत सरकार के पास इन्फोर्मेशन होने के कारण ऐसा गया जो ५ ९ एकाग्रता की लिंगी हुई थी । ये विश्वविद्यालय मैसूर संसार के प्राचीन ग्रंथों में से हैं । १९ तिब्बती ग्रंथों के लिए शोध का पत्रा अती विवेक सभा रहे हैं । 'ओरिजिन ऐण्ड प्रोग्रेस ऑफ़ काश्मीरी म्युजिक' का भी पत्रा सभा है । शारांगकोश की शोध की लिंगी 'मिर्ची अक्षर' नामक पुस्तक किली है जो बहुमूल्य है ।

बर्नमैट रिसर्च और पब्लिकेशन विभाग को ५००० हस्तलिखित पोथियों संग्रह की बड़ी विन्ता है जो उत्तर भारत का सबसे बड़ा संग्रह है। यह बम्बू बुनाय संस्कृत कावेय के संरक्षण में एक ट्रस्ट के अधिकार में है। बिस्का नाम में अब ट्रस्ट है। बर्नमैट समिति सरकार को इसकी प्रतिक्रिया भी नहीं आ पा रही।

बहुरसिंह जी सिन्धी के दाम द्वारा भी बालगन्ध जी सिन्धी की पुण्यस्मृति सिन्धी जैन प्रबंधालय की स्थापना १९२९ ई० में हुई थी। उसकी ओर से १ थी मुनिवित्त विभाग के सम्पादन में ५ दुर्लभ जैन ग्रंथ प्रकाशित हो चुके हैं या और भी प्रकाशित हो रहे हैं। इस प्रबंधालय के अन्तर्गत जैन ज्ञानमंदिर साहित्य इतिहास कथारमक विविध विषय प्राकृत संस्कृत अपभ्रंश तीन राजस्थानी भाषा के उपलब्ध ग्रंथों को प्रकाशित करने की बड़ी सुन्दर योजना बनाई गई है।

(अ) प्रदेशों में पुस्तकालयों और संघों की प्रगति

दक्षिण भारतीय पुस्तकालय-संघ की प्रगति

त्रिचिपलूर में इस संघ के सात अधिवेशन हो चुके हैं। उसके बाद अब एक सप्ते बाद अधिवेशन हुए।

संघ का आठवाँ अधिवेशन २० से २३ जनवरी १९४९ ई० को नागपुर (मिनासिटी) में डा० रंगनाथन् जी के अध्यक्षत्व में हुआ। इसका उद्घाटन राजनीय मंत्रालय सरकार द्वारा राज्यपाल मध्य-प्रदेश ने किया। स्वायत्त-समिति के अध्यक्ष पंडित कुंजीलाल दुबे बाइस चांसलर नागपुर यूनिवर्सिटी ने प्रतिक्रियाओं का स्वागत किया। इस अधिवेशन में विभिन्न भाषों से जनसंख्या २०० प्रतिनिधि सम्मिलित हुए।

इन्दौर सेंट्रल काइब्ररी के नियंत्रण पर संघ का नवाँ अधिवेशन ११ से १४ मई १९५१ तक श्री टी० जी० चाकनीस (कुरटर आफ काइब्ररी, इन्दौर) की अध्यक्षता में हुआ।

उसके बाद १० वाँ अधिवेशन हैदराबाद में १ से ३ जून १९५३ की थी। इसका सात बुद्धा की अध्यक्षता में हुआ। हैदराबाद स्टेट के शिक्षा-मंत्री श्री देवीसिंह बह्मन ने इसका उद्घाटन किया। उस्मानिया यूनिवर्सिटी के बाइस चांसलर श्री डा० एस० भगवन्धन स्वायत्तसमिति के स्वागतार्थक रहे।

संघ का अपारह्वर्षी अधिवेशन ० अप्रैल से १० अप्रैल १९५६ तक कलकत्ता में भी ए० बपीश्रीव साहब, काइरेरियन बलीबद् बुनिवर्सिटी की अध्यक्षता में हुआ। क्रमशः बुनिवर्सिटी के वाइस चांसलर भी एन० जे० सिन्हा स्वाम्य-प्यस से। अधिवेशन का अद्वाटन पत्रिचमी बंमाक के अध्यक्षता में एन० के० मुकर्षी महोदय ने किया।

इन छात्री अधिवेशनों में कुछ निबन्ध पढ़े जाते रहे और उस पर विचार विनिमय होता रहा तथा अन्य सामयिक बातों की चर्चा हुमा कृष्ठी थी।

इस समय श्री बी० फ्रेडरिक्स संघ के अध्यक्ष और श्री पी० जे० बोस प्रचार मंत्री हैं।

इण्डियन काइरेरी काइरेक्टरी

काइरेक्टरी आफ इण्डियन काइरेरीज' का प्रथम संस्करण सन् १९३८ ई० में प्रकाशित हुआ। इसका सम्पादन एक समिति द्वारा किया गया। द्वितीय संस्करण सन् १९४४ ई० में प्रकाशित हुआ। इसकी तैयारी श्री बार० गोपाक भी शन्तपम माटिया भी राम मधुचन्द्राज श्री एल० बपीश्रीव त्रुल बहादुर के० एम० अस्तुत्तुना प्रारथर सोहन सिंह और बाई० एम० मुले ने की। तृतीय संस्करण की तैयारी के लिए अज्ञात भारतीय पुस्तकालय-संघ की कार्य-समिति ने १९५० में निश्चय किया। प्रस्तावनी येशी गई। अज्ञात प्रति मन्त्र एही दिना १९५१ की बुलाई में यह निश्चय किया गया कि अज्ञात सूचनाओं के आकार पर विना और किए तृतीय संस्करण छाप दिया जाय। अज्ञात १९५१ में यह काइरेक्टरी प्रकाशित की गई। इसका सम्पादन डा० रंजयचन् श्री, श्री एल० बास मुप्य एन भी अयनात्म बो ने किया। इसमें ३ अध्याय हैं —

प्रथम अध्याय में काइरेरी की काइरेक्टरी है। प्रत्येक पुस्तकालय के विषय में सूचनाएँ ट्रेपुअर काम में दी गई हैं।

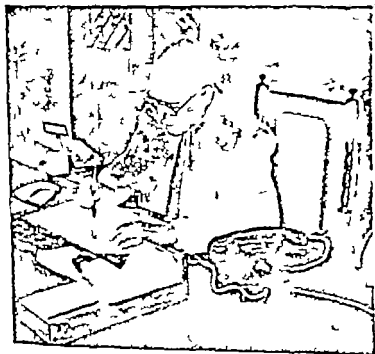
द्वितीय अध्याय में पुस्तकालयों की मीगोसिक्त तर्कीक दी गई है।

तृतीय अध्याय में पुस्तकालयों का उनके रूप (टाइप) क अनुसार विना बन किया गया है।

चौथे अध्याय में पुस्तकालय-संघों के नामन्ध में सूचनाएँ दी गई हैं।

पाँचवें अध्याय में पुस्तकालय-विज्ञान के स्कूलों का परिचय है।

भारतीय पृथ्वीकामय मय के ग्याग्ह्वेँ स्रधिवेगन
के
स्रध्वद



धी एग० बपीरहीन एम ए एफ एम ए



धी पी० सी० बोम
प्रधानमन्त्री

छठे अध्याय में भारत में प्रकाशित पुस्तकालय-साहित्य को वर्गीकृत करके दिया गया है।

सातवें अध्याय में भारत में छात्रों की प्रोफेशन के कुछ व्यक्तियों के सम्बन्ध में जीवन-सम्बन्धी संक्षिप्त परिचय दिए गए हैं।

यद्यपि इस बाइबेली के सम्बन्ध में मैत्री गई प्रस्तावकों का उत्तर समय-समय पर प्रकाशित पुस्तकालयों के कुछ पुस्तकालय संघों तथा छात्रों की प्रोफेशन के उदाहरणों में नहीं भेजे फिर भी बाइबेली काफी उपयोगी है।

संघ में इनके अतिरिक्त निम्नलिखित पुस्तकें प्रकाशित की —

१९५० डा० एस आर० रंगनाथन काइबरी ट्रजर १८४८ यूरोप ऐण्ड अमेरिका इन्टरनैशनल ऐण्ड रिफरेंस।

१९५० डा० एम आर० रंगनाथन : एन्ड अध्यापन है (अनु० श्री मुण्टी काम नगर)।

१९५१ एम्प्लिफाइड काइबरी प्रोविजन ऐण्ड बाइबेली प्रोविजन प्रारम्भ।

१९५१ और के०एम० शिवरामन् : काइबरी मैनुअल।

१९५१ एन्वायर्स प्रक्रिया (अनु० श्री मुण्टी काम नगर)।

इनके अतिरिक्त १४९ से 'अभिसा और एन्वायर्स' की पत्रिकाओं का प्रकाशन होता रहा। अक्टूबर सन् १९५९ से 'अभिसा' के स्थान पर 'इन्डियन काइबरी जनरल' नामक पत्रिका का प्रकाशन शुरू किया गया।

उत्तर-प्रदेश

इस काल में उत्तर-प्रदेश सरकार ने पुस्तकालयों के विकास की ओर विशेष ध्यान दिया। सरकार नगर और गाँव के अनेक पुस्तकालयों को वार्षिक अनुदान दे कर उन्हें पुस्तकालय-सेवा के लिए प्रोत्साहित करती रही। सन् १९५५-५६ के बजट में १९ पुस्तकालयों को १७०० रु अनुदान दिया गया। १९५६-५७ के बजट में वृद्धि कर दी गई और ८४ पुस्तकालयों को २५००० रु अनुदान दिया गया। देहरादून में अन्धों के लिए भी एक पुस्तकालय स्थापित किया गया।

प्रान्तीय केन्द्रीय पुस्तकालय

उत्तर-प्रदेश सरकार ने इलाहाबाद में दिसम्बर १९४९ में केन्द्रीय पुस्तक

काल्य की स्थापना की। इसमें प्रारम्भ में पुस्तकों का संग्रह प्रथम एवं रिक-स्ट्रुक्चन बाक बुक्स ऐक्ट के अन्तर्गत प्राप्त पुस्तकों और शिला से सम्बन्धित विषयों का था। इस पुस्तकालय को प्रथम पंचवर्षीय योजना के अन्तर्गत किसी प्रकार का विशेष प्रोत्साहन नहीं मिल सका अब तृतीय पंचवर्षीय योजना के अन्तर्गत इस पुस्तकालय का विकास भी योजना बनाई गई है। साथ ही यह भी निश्चय किया गया है कि हमसे सम्बन्धित जितना पुस्तकालय स्थापित किए जायें। ये पुस्तकालय मेरठ मधुप भागलपुर बरेली नानपुर, अलमोड़ा, झाँसी मोरारपुर और बाराणसी में स्थापित किए जा रहे हैं। इनके लिए विशेष रूप से भवनों का निर्माण और नाक-नामान आदि के संग्रह की भी व्यवस्था हो गई है। समस्त योजना में पुस्तकों का कार्यालयों और भवनों आदि पर लगभग १८ लाख रुपये व्यय होगा। इसमें से केंद्रीय पुस्तकालय भवन पर ८ लाख प्रायः जितना पुस्तकालय भवन पर ३ हजार केंद्रीय पुस्तकालय का फर्निचर आदि सामग्री पर १ लाख २ हजार तथा प्रति जिल्ला पुस्तकालय की सामग्री एवं पुस्तकों आदि पर १० हजार रुपये व्यय होंगे। योजना के प्रथम वर्ष (१९५६-५७) में भवन निर्माण का कार्य में सम्मोचनक प्रयत्न हुई है। सभी-वर्षीय पुस्तकालय-गणना की आवश्यकता सामग्री भी संगृहीत कर ली गई है।

राज्य पुस्तकालय विभाग पुस्तकालयों का प्रगतिमान विकास पुस्तकालयों द्वारा पुस्तकों का वितरण आदि केंद्रीय पुस्तकालय की प्रमुख विशेषताएँ होंगी। प्रतिष्ठान योजना के अन्तर्गत प्रति वर्ष २० छात्रों को ट्रेनिंग करने का प्रबन्ध किया जाएगा। प्रतिष्ठान की रूपरेखा अभी सरकार के विचारधीन है। इस केंद्रीय पुस्तकालय में अब तक १ लाख २५ हजार पुस्तकें संगृहीत हो चुकी हैं। श्री महात्माजी जी इन पुस्तकालय के अध्यक्ष हैं।

शिक्षा-अस्तर विभाग

स्थापितता के कारण इन विभाग का कार्य में उत्तरोत्तर वृद्धि होती रही। विभाग की और से साधना को बढ़ावा और उस स्थापित प्रदान करने के लिए १९१७ पुस्तकालय स्थापित है। जिसमें से ४० बच्चों महिलाओं का शिक्षा है। इनके अतिरिक्त १६०० बालकालय भी है। इन पुस्तकालयों और बालकालयों की प्रतिष्ठान विभाग द्वारा आयोजनी एवं गणना माहिर्य पहुँचाना जाता है। इन पुस्तकालयों से सामाजिक कार्य पुस्तकों पर लब्ध जा कर गये है। साथ

नालयों में छोड़ आकर समाचार-पत्र और पत्रिकाओं द्वारा काम उद्यते हैं। कुछ वर्षों की प्रवृत्ति का विवरण इस प्रकार है -

वर्ष	स्वीकृत धन मुद्रकों के लिए	समाचार-पत्र, पत्रिकाओं के लिए	निर्गत पुस्तकें	बाचनालय के उपयोगकर्ता- ओं की संख्या
१९५१-५४	१४ (१०२०)।।।।	२३ (२५५०)।५	८३८ १२७	८७९ ८५१
१९५४-५५	७९ (११७)	१९,७९७।३)	७५३ १७८	९२७ ९९४
१९५५-५६	८४ (०००)	४८००)	७५३ १७८	९२७ ९९४

अनुदान

उपरोक्त विभागीय पुस्तकालयों के अतिरिक्त इस विभाग द्वारा मुख्यतः स्थानीय पुस्तकालयों को अनुदान भी दिया जाता है। इसका विवरण इस प्रकार है -

वर्ष	स्थानीय पुस्तकालय	अनुदान की रकम
१९५४	२०७	७४७१ रु०
१९५५	२०८	७६१२ रु०
१९५६	१९७	७१५९ रु०

विभागीय पुस्तकालय

विद्या-प्रसार विभाग के कार्यालय में भी एक मुख्यतः स्थानीय पुस्तकालय है जिसमें विभिन्न विषयों की १६०० पुस्तकें संग्रहीत हैं।

अन्य कार्य

इसके इस विभाग में एक चलचित्र केंद्र स्थापित हुआ है जिसके द्वारा बुद्ध-भय्य नायकों का उत्पादन किया जाता है और साथ तथा नगर की विद्या संस्थानों एवं स्थानीय क्षेत्रों में चलचित्र प्रदर्शन को भी व्यवस्था की

जाती है। विभाग के पास पाँच प्रचार बाटून हैं जो रेडियो ग्रामोफोन विन पट्टी तथा चलचित्र-प्रदर्शन विभागों से युक्त हैं।

इनके अतिरिक्त यह विभाग ऐसे अनेक आयोजन करता रहता है जिससे शिक्षा-प्रचार में सहायता मिल सके जैसे प्रौढ़ साहित्य का प्रकाशन सेमिनार, सामाजिक शिक्षा सप्ताह एवं प्रचलनी आदि। इन समय भी द्वारकाप्रगाद भी माहेरवरो शिक्षा प्रसार अधिकारी है।

पुस्तकालय-विज्ञान की शिक्षा

इस प्रदेश में १९५१ ई० से असांगढ़ विरय विद्यालय में एम० बरीरहीन साहब के प्रयत्नों से एक 'सर्टिफिकेट कोर्स' चालू किया गया यह कोर्स सफलतापूर्वक चल रहा है।

कानी विरयविद्यालय में मन् १५६ से डा० जगदीशचन्द्र तर्मा पुस्तकालय-विज्ञान-प्रशिक्षण के अध्याय निपुण हैं। इनके द्वारा इस प्रदेश में पुस्तकालय-विज्ञान के प्रशिक्षण का यह कार्य भव्य अर्थिक सौकर्य प्राप्त हो रहा है।

पुस्तकालय-संघ

उत्तर प्रदेश में एक पुस्तकालय-संघ की स्थापना अगस्त १९५६ में हुई। इसका उद्घाटन प्रदेश के मुख्यमंत्री डा० सम्पूर्णानन्द की श्रेष्ठियां में किया। श्री रामाशुभर मुखर्जी बाइल चान्दपुर जयपुर मूलभूतविद्यार्थी इसके स्थापना अध्यक्ष और श्री एम० बरीरहीन साहब (अमीरपुर मूलभूतविद्यार्थी) अतिरिक्त के महापति के द्वारा संघ स्थापित हो गया है और आगे है निम्नलिखित हैं इसके द्वारा प्राप्त में पुस्तकालय आश्रीकृत की बहुत बड़ी विधवा इन समय भी श्री० श्री० विरयनाथ (बाटागनी) महापति और श्री० कुमार लालचरियन अमीरहीला पत्रिका साहब की प्रयास मंत्री है।

प्रांतीय संघ के अतिरिक्त कई शिक्षा में शिक्षा पुस्तकालय-संघ भी स्थापित हो गए हैं। इनमें से 'इलाहाबाद पुस्तकालय-संघ' उल्लेखनीय है। इसकी स्थापना प्रयाग विश्वविद्यालय के आनंदी साहब रियल डा० बनारसीप्रसाद गणेशना तथा अग्रिम भारतीय पुस्तकालय-संघ के उपाध्यक्ष श्री एम० बरीरहीन जी की प्रयास में १९६६ में हुई। यह एक रेजिस्टर संघ है। इनके अन्तर्गत शिक्षा में पुस्तक प्रदान की जायगी सेना और प्रचार द्वारा बड़ी कार्यवाही कर रही है। इस संघ का कार्यालय डा० अन्वरी १९५७ को श्री एम० बरीरहीन साहब की अध्यक्षता में स्थापित गया। इन समय भी श्री० एम० सी देव महापति और श्री द्वारकाप्रगाद पान्शी प्रयास मंत्री है।



श्री के. कुमार, बी. ए. एम. एल. बी. डिप. एम. एस्सी.

प्रबाल मंत्री

उत्तरप्रदेशीय पुस्तकालय संघ



बिहार राज्य पुस्तकालय-संघ के प्रशिक्षण अधिबेशन का एक दृश्य
 मेसजिन सांस्कृतिक भी थी। एम० के०के० भारत में हुए

बिहार

बिहार सरकार ने पुस्तकालय-विकास की एक योजना स्वीकार करके पुस्तकालयों की देख-रेख के लिए एक अल्प पुस्तकालय विभाग' स्थापित किया। सरकार ने पटना स्थित सिनहा लाइब्रेरी को 'कन्द्रीय राज्य पुस्तकालय' घोषित किया। प्रान्त के प्रत्येक जिले के हेडक्वार्टर में भिन्ना केंद्रीय पुस्तकालय' स्थापित किए। पुस्तकालयों को राज्य सरकार ने प्राण्ट देने में बहुत उदारता का परिचय दिया। १९४९ ई० में पुस्तकालयों को एक साल का आवसर्गक और तीन साल का बनावसर्गक अनुदान (प्राण्ट) दिया गया। मद्रास की भांति अपने प्रदेश में भी पुस्तकालय-अधिनियम लागू करने का निश्चय किया और इसके लिए एक कमीटी भी बनाई। पटना में पाँच बाल-पुस्तकालय स्थापित किये गए। समाज-शिक्षा विभाग द्वारा तीन सौ भ्रमण शील पुस्तकालय संघालित किये गये। सरकार द्वारा प्रतिवर्ष १०० हार्ई स्कूळ ५३५ बेसिक स्कूळ और लगभग २० ००० मिडिल अपर तथा लोवर स्कूळों के पुस्तकालयों को भी प्राण्ट देने की व्यवस्था की गई। अपने राज्य से पाँच पुस्तकालयाध्यक्षों को 'रिस्को पब्लिक लाइब्रेरी' में वहाँ की कार्य-पद्धति का अध्ययन करने के लिये भेजा। पुस्तकालय-अधीक्षक प्रो० गवर्कफिशोर भी मौड़ हैं।

बिहार राज्य पुस्तकालय-संघ

ब्रिटिशकाल में इस संघ के तीन अधिवेशन हो चुके थे। उसके बाद संघ के निम्नलिखित अधिवेशन हुए -

थीवा	१९४८	दरमङ्गा	श्री चंडेश्वरप्रसाद सिंह
पाँचवाँ	१९५१	भागलपुर	बगन्नाथप्रसाद मिश्र
छठवाँ	१९५३	रहीमपुर	बगन्नाथप्रसाद मिश्र
सातवाँ	१९५५	पूर्णिया	बगन्नाथप्रसाद मिश्र
आठवाँ	१९५६	गया	देवदत्त दास्त्री

ऊपर के पाँचवें अधिवेशन में संघ का विभाग स्वीकृत हुआ। उसके बाद संघ का काम तेजी से बढ़ा। १९५३ तक लगभग ३०० पुस्तकालय संघ संघ संबद्ध हो गए। संघ के विभिन्न पुस्तकालय-संघ प्रत्येक जिले में स्थापित हुए और कुछ सर्वशिक्षित संघ भी। संघ के कार्यकर्त्ताओं में श्री अनुज दास्त्री श्री परमानन्द शोषे श्री इंद्रदेवनाथराय सिनहा श्री प्रमोदाचरण मौड़ और पं० बगन्नाथप्रसाद मिश्र के नाम उल्लेखनीय हैं।

पुस्तकालयाध्यक्षों का प्रशिक्षण

पुनिया बलिबेयन के बाट प्रशिक्षण विबिर के से बन हुए। १९५४ में एक महीने का १८ जून १९५५ से ओर हुआ २० फरवरी १९५६ में। पहले में ३ प्रशिक्षणार्थी पास हुए और दूसरे में २२ जिनमें ३ महिलाएँ भी थीं। इस तरह से सरकार ने ३०) दिन की व्यवस्था की। विन्हा काइबरी के काइबेरियन भी प्रमु नारायण गौड ने दो छात्राओं को १०-१० रुपये की छात्रवृत्तियाँ भी दी।

सरकारी सहायता

संघ को बिहार राज्य सरकार ने कच्ची धोसाहन दिया। कार्यालय बनाने को ३०००) वार्षिक सहायता देना स्वीकार किया। राँची बटना दरभंगा मुँसेर और पुनिया के जिन्हा पुस्तकालय सभों को ३०००० रु के एक-एक मोटरवान दिये गए।

संघ के क्रियाकलाप

संघ ने कई महत्त्वपूर्ण काम किए। 'पुस्तकालय' नामक एक मासिक पत्रिका का प्रकाशन शुरू किया। पुस्तकालय कमचारियों के ट्रेनिङ्ग भी भी व्यवस्था की। इनके लिए बनने प्रशिक्षण विबिर बनाया जिनके लिए सरकार ने बहुसंखी बार पाँच सौ रुपये की सहायता दी। उसके बाद १९५६ में पुस्तकालय-कमचारियों की ट्रेनिङ्ग के लिए २५००० की सहायता बिहार सरकार ने दी।

बिहार में प्रथम पंचवर्षीय योजना

प्रथम पंचवर्षीय योजना में सरकार ने लगभग ३८ लाख रुपये खर्च किया। राज्य के ५ जिला में जिन्हा पुस्तकालय स्थापित हुए। प्रत्येक मच्छिबिजन में एक-एक राज्य पुस्तकालय लोन्ने के लिए तीन लाख ६६ हजार रुपया स्वीकार किया गया। विन्हा काइबरी भी ६२००० की आवक और २ लाख ३० हजार की अनावकत राश की व्यवस्था की गई है। इनके हाते में एक काम-पुस्तकालय और एक अनावक-पर बनान का निश्चय हो चुका है। जमके मचन के लिए १ लाख तथा पुस्तक तथा अन्य सामानों के लिए ५० हजार रुपये राश होन जा रहे हैं। इन्हीं के लिए अब तक १० पुस्तकालय में जिन पर तीन लाख अनावकत और ५४००) आवकत गन होना रहा है। अब मात्र और पुस्तकालय गुनी जिन पर २१००) अनावकत और ६८५०) आवकत रूप में राश हाया।

जिलानुसार पुस्तकालयों की प्राण्ट का विवरण (वर्ष १९५६-५७)

जिले	माधारण	एफिशिएन्सी	स्पेशल	योग
१ पटना	१२०००	३७५०		१५,७५०
२ गया	१०००	१५०		१०,१००
३ छाहाबाद	८२५०	१५००		९,७५०
४ भागलपुर	७५००	२२५०		९,७५०
५ मुँगेर	११२५०	३०००		१४,२५०
६ सहरसा	३०००	७५०		५,२५०
७ संभास परबना	३७५०	१५००		६,७५०
८ पूर्णिया	५००	७५०	१५००	८,२५०
९ मुजफ्फरपुर	१०५०	३०००	२२५०	१६,५००
१० दरभंगा	१०००	१५००		१०,५००
११ छारल	९०००	१५००		१०,५००
१२ चंपारल	४२५	१५००	२२५०	९०००
१३ राँची	२२५०	१५००		५,२५०
१४ हुजारीबास	२२५०	१५००	१५००	५,२५०
१५ सिवमूम	२२५०	१५००	१५००	५,२५०
१६ मातमूम	२२५०	१५००	१५००	५,२५०
१७ पलामु	२२५०	१५००	१५००	५,२५०
	१,५०,०००	३०,०००	१५,०००	१,९५,०००

बिहार सरकार पहिलो पंचवर्षीय योजना मे १ लाख की लो प्रांट सामाजिक पुस्तकालयों को देती ली छे। द्वितीय पंचवर्षीय योजना मे भी लाख कर दिया और बिल्के हुए जिलों क पुस्तकालयों की तीस गति से बढ़ने क लिए कुछ वेधक प्राण्ट भी बी। इह प्रांट प्रत्येक जिले म पुस्तकालयों के चार सेठ बना कर दी गई।

(क) १००) से १५) प्रति पुस्तकालय ।

(ख) ७) से १००)

(ग) ४०) से ७०)

(घ) ३५) से ५०) ,,

पुस्तकालय संदेश

श्रीकृष्ण खण्डेलवाल महोदय ने अगस्त १९५२ ई० में पटना से 'पुस्तकालय संदेश' नामक मासिक पत्रिका का सम्पादन और प्रकाशन शुरू किया। इस पत्रिका ने बिहार में ही नहीं अन्य हिन्दी भाषा-भाषी प्रांतीयों में भी पुस्तकालय-आन्दोलन में बहुत काम दिया। समय-समय पर इस पत्रिका के आकषक विशेषांक भी प्रकाशित हुए। समय-समय पर इनका प्रकाशन बन्द हो गया है।

अ० भा० पुस्तकालय-नियमान-परिषद्

हिन्दी के माध्यम से पुस्तकालय-विज्ञान की शिक्षण योजना की व्यवस्था करने के निमित्त बिहार में 'पुस्तकालय-विज्ञान शिक्षण परिषद्' नामक संस्था की स्थापना भी हुई। इस परिषद् ने अगस्त मासिक पत्रिके पर 'पुस्तकालय-संदेश' और 'पुस्तकालय-समाचार' परिषद् संस्थापित की।

नासन्द का पुस्तकालय

भारत का गौरव नासन्द का प्राचीन पुस्तकालय इसी बिहार प्रदेश में था जिसकी वर्षा 'बौद्धकाशीन पुस्तकालय' में की गई है। केन्द्रीय सरकार ने बिहार राज्य सरकार को ३२ ७६ ६० नासन्द में पुस्तकालय बनाने का वृत्त करने के लिए दिया जो कि 'इन्स्टीट्यूट ऑफ रिसर्च ऐण्ड पोस्ट ग्रेजुएट स्टडीज फार पासो गवर्नमेंट बुकिंग्स ऑर्निङ्ग' में संलग्न है।

पंजाब

देश के विभाजन के बाद पूर्वी पंजाब का एक अल्प प्रांत बना तो इसमें पुस्तकालयों को गव. सिरे से संरक्षण करने की आवश्यकता बढ़ी। इन प्रदेश की राजधानी चम्पौर बनाई गई। चम्पौर से सेंट्रल स्टेट लाइब्रेरी पंजाब-सरकार विभा-विभाग द्वारा अगस्त १९५१-५२ का बचतपूर्ण योजना के अन्तर्गत स्थापित हुई। निश्चय किया गया कि इस पुस्तकालय में अल्प-एकलम निरदम रहे। लैब्ररी और रिकॉग विभागों के सामान्य बुरा-व्यय उप-करण तथा उत्तम बाल-बच की व्यवस्था की जाए। मन् १९५५-५६ में पंजाब प्रदेश में पुस्तकालय-विभाग कायदा के लिए केन्द्रीय सरकार ने दो लाख रुपये दिया। क्रिश्चियन मिशन लाइब्रेरी गवर्नमेंट लाइब्रेरी चम्पौर में रखी गई और इसको संरक्षण करने का काम शुरू किया गया। श्री कृष्ण मिश्र कुजराती बी० ए० ए० एम० ए० लाइब्रेरियन और इन्स्टीट्यूट एम० ए० तथा श्रीमती

राज्य का चौपटा बी० ए० लहाणा लहाणा के पद पर नियुक्त किया गया ।
पुस्तकालय के लिए २६७४६ पुस्तकें खरीदी गईं ।

सन् १९४८ के पुस्तकालय-आयोजना से पूर्वी पंजाब में ७०० से अधिक
पुस्तकालय तथा बाबुमालियों को सरकार के विभिन्न विभागों के अन्तर्गत संयोजित
किया गया । इनमें से १५० नगर में हैं तथा सेप गाँवों में हैं ।

पुस्तकालय-संघ

पूर्वी पंजाब पुस्तकालय संघ ने अपना प्रथम अधिवेशन अक्टूबर १९४८
ई को धिमला में किया । इसमें प्रेसिडेंट लहाणा टू निजु पुस्तक-प्रदर्शनी
प्रीति शिक्षा पाठक परामर्श सेवा समाचार-पत्रों की प्रदर्शनी आदि अनेक
आयोजन किये गये ।

संघ का दूसरा अधिवेशन फरवरी १९४९ टू निजु कॉलेज (बोमेल) धिमला
में १६ नवम्बर से २० नवम्बर १९४९ को हुआ । इसका उद्घाटन सरकार
नरोत्तम सिंह की धिमला-मन्त्री ने किया । स्वागताध्यक्ष शिक्षा-सचिव श्री क०
सी० जाला महोदय थे । प्रो० डी० सी० वर्मा ने अपना भाषण पढ़ा । ५०००
से अधिक विभिन्न विषयों की पुस्तकें प्रदर्शित की गईं । हजारों दर्शकों ने इससे
लाभ उठाया ।

संघ में २७ से ३० अक्टूबर १९५० को आई० एम० सी० ए० हाल धिमला
में पुस्तक-प्रदर्शनी का आयोजन किया । इसका उद्घाटन माननीय श्री क०
हरिच पूर्वी पंजाब हाईकोर्ट ने किया ।

१५ जून १९५१ ई० को संघ ने चौथी पुस्तक-प्रदर्शनी आई० एम० सी०
ए० के हाल में धिमला में आयोजित की । इसका उद्घाटन श्री० डी० जोसला
महोदय आई० सी० एच० पंजाब हाईकोर्ट ने किया । स्वागताध्यक्ष श्री
टंकचन्द श्री थे । १००० पुस्तकें प्रदर्शित की गईं । इस आयोजन के लिए
संयोजन-मन्त्री श्री सन्तोष शेट्टीजी की तथा श्री० एल० लहाणा महोदय की
पुस्तक-प्रेमियों ने व्यवस्था किया । २० से २४ मार्च १९५२ में संघ ने पाँचवीं
पुस्तक-प्रदर्शनी का आयोजन तथा कुछ अन्य आयोजन अपने वार्षिक अधिवेशन
के साथ-साथ किये ।

संघ की ओर से पुस्तक-प्रदर्शनी और लहाणा सीनियर का आयोजन
८ से १२ फरवरी १९५४ में जालंधर में फरवरी टू निजु कॉलेज के हाल में

किया गया। इस पुस्तक-मेला के सम्पन्न पूर्वी पत्रिका के विद्या-संवाहक डाक्टर ए० सी० जोशी महोदय से। ९ फरवरी १९५४ को साइबरी कैम्पार का उद्घाटन नेशनल लाइब्रेरियन सो बी० एम० केराबम् ने किया।

करुणरत्न फेस्टिवल

भारत में अपने ६५ का यह पहला 'कन्वरस फेस्टिवल' सरहिन्द कन्न सम्माना कैम्पौमेंट में १९५१ ई० में २८ नवम्बर से ३ दिसम्बर तक आयोजित किया गया। श्री माधवेंद्रसिंह बहादुर राजप्रमुख पेंसू ने इसका उद्घाटन किया। इसका आयोजन पुस्तकालयों और बाबनामों की सहायता के लिए किया गया था। इसमें श्री संतराम जी भाटिया ने पुस्तक-प्रगामी का आयोजन किया जिसका उद्घाटन भी श्री एन पापर आई सी० एस० प्यारनेंस कमिश्नर पत्रिका ने किया। इसमें विभिन्न विषयों की ४०० पुस्तकें प्रदर्शन की गईं। बाल-साहित्य का प्रदर्शन बहुत ही सफल रहा। समाज को सात व्यक्तिवों में इसका देना और काम बढ़ाया।

इण्डियन लाइब्रेरियन

श्री संतराम भाटिया महोदय विभाजन के बाद से इण्डियन लाइब्रेरियन पत्रिका को विमला से प्रकाशित करते रहे। उसके बाद अब पाल्पेर मिटी से इसका प्रकाशन सफलतापूर्वक कर रहे हैं। अंग्रेजी में भारतीय पुस्तकालय जनन में यह सखी पत्रिका मानी जाती है और इसका बहुत आदर है।

पेंसू

१ फरवरी १ ५५ ई० को मंडल पत्रिका साइबरी पेंसू का वित्तमयान मुख्य मंत्री श्री कृपमानु जी द्वारा पत्रियालय में हुआ। यह पुस्तकालय भारत के विद्या-विभाग की योजना का एक अंग है। इसमें साइबरी ट्रेनिंग बंगल तथा बाल-पुस्तकालय की भी व्यवस्था की जायगी।

पेंसू पुस्तकालय-संघ

पेंसू पुस्तकालय संघ पूर्वी पत्रिका पुस्तकालय संघ के साथ मिल कर और इसके महापति श्री बलराम सिंह मुजराजी प्रधान मंत्री श्री जी० एस० तेरवान और संवहन मंत्री श्री संतराम भाटिया बनाए गए।

दिस्ती

देश के विभाजन के बाद भारत-जय की राजधानी दिल्ली हो रही इसमें सामन आदि की मुविधा के लिए अनेक मये विभाय एवं कार्यालय

कुछ पुराने विभागों में विस्तार किया गया। इन विभागों और कार्यालयों के साथ-साथ पुस्तकालयों की स्थापना हुई। इस प्रकार दिल्ली के पुस्तकालय-विकास की पाँच मागों में चौथी जा सकता है —

- १ नए पुस्तकालयों की स्थापना।
- २ पुराने पुस्तकालयों का विस्तार।
- ३ पुस्तकालय-सम्बन्धी विशेषेण बर्बादों और बायोडम।
- ४ पुस्तकालय-संघ की संविधि।
- ५ पुस्तकालय-विज्ञान की शिक्षा-व्यवस्था।

[१] नए पुस्तकालयों की स्थापना

स्वातंत्र्य के बाद सरकार ने दिल्ली में जो सबसे महत्वपूर्ण पुस्तकालय स्थापित किया उसका नाम है, 'दिल्ली पब्लिक लाइब्रेरी'। इसका परिचय पीछे दिया जा चुका है।

फिरका लाइब्रेरी

फिरका इन्फॉर्मेट डिपार्टमेंट द्वारा २५ सेंट्रल लाइब्रेरी बनाने के लिए २५ फिरकों में निश्चय किया गया। फिरकों के हर नाम में आधा करोड़ रुपये खर्च की योजना बनाई गई। प्राथमिक पाठशाळाओं के हेडमास्टरों के साथ से ही पुस्तकालय शुरू में रहें, ऐसा निश्चय किया गया। सरकार ने फिरका में हर एक सेंट्रल लाइब्रेरी को (३१८) ५००) पुस्तकों के लिए, (२१) ग्रन्थ खर्च के लिए स्वीकार किया। २४ १५ ३० सार्विक बजट पर लाइब्रेरियन की स्वीकृति हुई और उनकी एक साइडिग स्कूल भी रिया गया। यह योजना जनवरी १९४८ में जारी।

[२] पुराने पुस्तकालयों का विकास

(क) पार्लियामेंट लाइब्रेरी—इस लाइब्रेरी में प्रतिवर्ष ५ ०० पुस्तकों खर्च की जाती हैं और धीरे-धीरे १० ००० पुस्तकों—३०० ००० सरकारी प्रकाशन और इन्फॉर्मेट और ५०० डिक्टो की प्रतिपा हो गई। १९५९ में इसका बजट ३० ००० रु. का।

शिक्षा-विभाग की सेंट्रल एजुकेशनल लाइब्रेरी का संयोजन किया गया। यी बार योजना के अन्तर्गत इन्हें करने पर उनके स्थान पर श्री एन० एम० कैठकर महोदय की नियुक्ति की गई।

[३] पुस्तकालय-सम्बन्धी विशेष आयोजन

यों ती पुस्तकालय-सम्बन्धी अनेक आयोजन दिल्ली में हुए किन्तु उनमें से दो आयोजन विषय प्रसिद्ध हैं —

(अ) यूनेस्को का अन्तर्राष्ट्रीय सेमिनार

(ब) इन्स्टिट्यूट एडवन्स्ड एजुकेशनल रिसर्च का ओर से छाठौं सेमिनार ।

[अ] यूनेस्को सेमिनार का विवरण पीछे दिया जा चुका है ।

[ब] भारतीय पुस्तकालय और सामाजिक शिक्षा विषय पर विचारणा इन सेमिनार का आयोजन २७ सितम्बर से ५ नवम्बर १९५५ बी किया गया । इसका उद्घाटन करते हुए पं. मोक्षिन्द बख्श पंत ने कहा कि 'सालर और नव-जागरों को सिद्धि करने का प्रयत्न जारी रखने की आवश्यकता है । इन पुस्तकालयों में पुस्तकों के चुनाव पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए जिससे कि उनके द्वारा प्रसारित ज्ञान अपूर्ण न हो । बम्बई लाइब्रेरी के डायरेक्टर श्री टी. डी. बाबनीस ने भी इसमें भाग लिया । इसका निर्देशन भारत सरकार के अडिस्ट्रेट एजुकेशनल ऐडवाइजर सरदार सोहन सिंह जी ने किया ।

इस सेमिनार में निम्नलिखित ६ समस्याओं पर विचार किया गया —

१ दिन ठीकीं में पुस्तकालय भारत में साधारण नव-निर्माण के लिए योगदान कर सकते हैं ।

२ सामाजिक शिक्षा और पुस्तकालयों के बीच कितने प्रकार का सम्बन्ध है ?

३ नव भारत पुस्तकालयों की क्या है ।

४ लाइब्रेरी ट्रनिंग ।

५ लाइब्रेरी बामून ।

६ लाइब्रेरी साहित्य ।

पन्नी समस्या पर सेमिनार में यह ध्यान दिया कि पुस्तकालय व्यक्तियों द्वारा और नवजागरों के साथ काम करते हुए उत्तम साहित्य की उभाड़ कर, अपेक्षाकृत अच्छी प्रकार की साधकता को प्रोत्साहन देकर नवजागर नव-निर्माण में गहरी भूमिका ले सकते हैं ।

द्वितीय समस्या पर यह ध्यान दिया गया कि सामाजिक-शिक्षा और पुस्तकालय-संगठन में कितना सम्बन्ध है । इसमें पुनर्लिखित वाप में बचना

बाहिए। यह ठीक होना कि पुस्तकालय और सामाजिक विज्ञान विभाग के अन्तर्गत रहें।

तीसरी समस्या पर विचारिए की गयी कि भारत सरकार पुस्तकालय-कमीशन बनाने जो भारत के पुस्तकालयों की वर्तमान स्थिति की जाँच पड़ताल करे और प्रविष्टि के लिए एक छात्रवृत्ति स्कीम की विचारिए करे। नेशनल सेंट्रल लाइब्रेरी नेशनल छात्रवृत्ति बोर्ड निम्न पुस्तकालय मारमिंक धाम पुस्तकालय आदि के कर्तव्य आदि की टिपरेखा पर भी विचार किया गया।

चौथी समस्या पर सेमिनार का यह मत रहा कि प्रत्येक स्तर पर पुस्तकालय-सामग्री प्रविष्टि की व्यवस्था की जाय। यह सुझाव दिया गया कि छात्रवृत्ति के पाठ्य-क्रम में मौलिक-सामाजिक विज्ञान को भी शामिल किया जाय। शाखा विज्ञान और प्रदेश पुस्तकालयों की यात्रा का भी विवरण प्रकाशित किया गया।

पाँचवीं समस्या पर सेमिनार की राय थी कि एक पुस्तकालय-कानून बनाया जाय। बहिन भारतीय पुस्तकालय-संघ या भारत सरकार द्वारा नियुक्त विशेषज्ञों की किसी समिति द्वारा छात्रवृत्ति कानून का बर्खास्त किया जाय।

छठी समस्या पर विचार करते हुए सेमिनार ने पुस्तकों की खपियाँ बनाई जिनमें कि छात्रवृत्ति स्कीम रखते हैं और विविध एजेंसियों तक तक प्रचारित करने पर बल दिया गया।

इस प्रकार इस सेमिनार ने बनेक महत्वपूर्ण समस्याओं पर विचार करके क्लेसिक सेमिनार के लिए एक प्रारम्भिक तैयार कर दी।

पुस्तकालय-संघ

दिल्ली में ही पुस्तकालय-संघ स्थापित हुए —

१. गवर्नमेंट आफ इण्डिया छात्रवृत्ति प्रसोमिप्रान।
२. दिल्ली छात्रवृत्ति प्रसोमिप्रान।

[१] 'गवर्नमेंट आफ इण्डिया छात्रवृत्ति प्रसोमिप्रान' सरकारी पुस्तकालयों के कमचारियों द्वारा स्थापित किया गया। इसके द्वारा सरकारी पुस्तकालयों के कमचारियों को प्रोत्साहित करने की भी व्यवस्था १९५१ में एक क्लेसिक बोर्ड कर की गई। मुनिपल पब्लिक सर्विस कमीशन के सदस्य प्रो० एच० के०

सिद्धान्त ने इसके द्वितीय अधिवेशन में १७-४-५४ को उत्तीर्ण परीक्षादियों को प्रमाण-पत्र वितरण किया।

५ जून १९५४ की वार्षिक बैठक का समापनित्व श्री कृष्ण भार्यपर, माइ बेरियन मैजिस्ट्रेट आर्काइव्स ने किया। सरदार सोहन सिंह एमोविएमन के समापति और जलबन्ध आत्मक मन्त्री तथा कु० कान्ठा माटिया कायाध्यक्ष चुने गए। एमोविएमन न सि० आर० गोपाळन को बिचारी की और पुनेस्को सेविनार का स्वागत किया।

२ दिवसी साइदरी एमोविएमन की स्थापना श्री वृष्णीनाथ कोठ महीरय क प्रयास से हुई। इसका एक अधिवेशन २७-१-५४ को दिवसी पब्लिक साइदरी में हुआ जिसका समापनित्व बुधारी पाणा वणिष्ठ ने किया और उद्घाटन डा० रजुनाथपु ने। १९५४ ई० में इसके २६३ मस्य हो चुके थे। इस एमोविएमन ने २२ दिनांक १९५४ को साइदरी बिल का क्राय दिवसी स्टेट वकनमेंट के मामले पेश किया। इस मस्य न ८-१-५५ को हाइकोर म्युनिसिपल साइदरी में एक साइदरी टुनिष्ठ कोम की राक दिया जिसका उद्घाटन श्री ए० ए० कृमले तदस्य मस-मसा-आशेन ने किया और इसको अध्यक्षता डा० रजुनाथपु ने की। श्री बी० एन नील इन कोम के रजिस्ट्रार और श्री एम० शांत पुठा साइरेक्टर चुने गये। मारवाड़ी वकिड साइदरी चारसी चौक दिवसी ने इसका कार्यालय रगा पया।

पुस्तकालय-विज्ञान की शिक्षा

दिवसी युनिवर्सिटी में पुस्तकालय-विज्ञान की शिक्षा भी व्यवस्था पृथक् चालू रही। इसके अतिरिक्त भारत सरकार पुस्तकालय-मस्य और दिवसी साइदरी एमोविएमन में भी इसका प्रचार हुआ। दिवसी पब्लिक साइदरी में महीरयन टेकनिशों के अनुसार विशेष रूप से पब्लिक साइदरी विषयक शिक्षा भी व्यवस्था की गई। पुनेस्को फेमोविए के अलापन इंटीरिगिया और बर्न के रा साइदरियों न यहाँ से लाभ प्राप्त हुआ।

१९५५-५६ के बजट दिवसी राज्य के लक्ष पुस्तकालयों में पुस्तकों को नरिया ३ लाख ७० हजार की। इस बजट ८१४ ११९ पुस्तकें मस्यों द्वारा। इन पुस्तकालयों में उपार मेजर गरी गई। कुल २३ ६२ ७२५ छात्रियों ने लाभ उदिया।

५५-५६ में दिवसी में १६ पब्लिक साइदरिया की बिनमें में ३ मेमो री यहाँ में बन्धने उपार लेने पर कुछ बीग मरी प्यगी थी। इन तीनों

पुस्तकालयों को सरकार ने २३२ ३९२ रु० की वार्षिक सहायता दी।
अग्य १३ में से ७ को १ ९९,००६ रुपये की सरकारी वार्षिक सहायता
मिली।

यद्यपि दिल्ली राज्य में १३२ ग्रामों में १३२ सामाजिक-शिक्षा-केन्द्र खुले
जिनके साथ पुस्तकालय भी बनाए जाते रहे। दिल्ली यू० कमेटी ने भी ऐसे
कुछ केन्द्र बनाए।

इस प्रकार दिल्ली राज्य में पुस्तकालय बाम्बोसन एक संगठित रूप में
रहा।

बम्बई

पुस्तकालय-विकास समिति की सिफारिशों के अनुसार बम्बई सरकार ने
काय प्रारम्भ किया। बम्बई में केन्द्रीय पुस्तकालय की स्थापना हुई थी और
अहमदाबाद पूना और बारबार में क्षेत्रीय पुस्तकालय स्थापित किए गए।
क्षेत्रीय पुस्तकालयों को गुजराती मराठी और कन्नड़ भाषाओं की पुस्तकें
सरकार ने उस तरह म दी जो अब तक अल्पव्यक्तित्व में थी। ये पुस्तकें
केन्द्रीय पुस्तकालय को दी गईं। अक्टूबर सेक्शन ९ (३) प्रेस ऐक्ट रजिस्टर
सन थाप्ट बुक्स ऐक्ट १८९७ के अनुसार (अमेन्डेड बम्बई गवर्नमेंट १९४८)
प्रत्येक प्रकाशन की दो प्रतियाँ केन्द्रीय पुस्तकालय को प्राप्त होती हैं।

बाम्बे ग्राम एशियाटिक सोसाइटी को कापीराइट कलेक्शन का
काम सौंप दिया गया है। मार्च सन् १९५३ तक केन्द्रीय पुस्तकालय में पुस्तकों
की संख्या ४९ ४३४ हो गई। वहाँ पर ग्राम के अनुसार सेक्शन-रूम से व्यवस्थित किया गया। सीजनल
कलेक्शन का काम गुजरात विद्यापीठ अहमदाबाद ६ सिटी बनरस लाइब्रेरी पूना
विद्यापीठक संघ बारबार कर रहे हैं।

इस केन्द्रीय और क्षेत्रीय पुस्तकालयों के अतिरिक्त २२ पुस्तकालय डिप्लिक्ट
टाउन और २२९ पुस्तकालय टाउन में स्थापित हुए हैं।

वर्षों में सरकार ने ५ ० पुस्तकालय सामाजिक शिक्षा-योजना के अन्तर्गत
स्थापित किये जिन्हें १८) वार्षिक अर्थिक से अधिक सरकारी सहायता के रूप
में प्राप्त होते हैं।

इन पुस्तकालयों में १५०० पुस्तकालय बङ्गाल स्टेट के हैं और ३५०० बम्बई
सरकार के।

बम्बई राज्य के साथ मिलने पर बङ्गाल राज्य के पुस्तकालयों का भी
मार्च बम्बई सरकार पर पड़ा। लेकिन इससे बङ्गाल स्टेट ने पुस्तकालयों को

कोई हानि नहीं पहुँची। पहले बड़ीया राज्य में बिना पुस्तकालय को ७०) वार्षिक अनुदान ठामुका पुस्तकालय को १००) वार्षिक अनुदान मिलता था किन्तु बम्बई सरकार ने क्रमशः इनको १०००) और ४५०) अनुदान कर दिया। बड़ीया के ग्राम पुस्तकालयों को 'सामाजिक डिग्रा योजना' के अन्तर्गत ही रखा गया। बिस्म के बाद बड़ीया स्टेट लाइब्रेरी के मृतपुर्ब कपुटेटर भी टी० डी० बाकलोस महोदय ही बम्बई लाइब्रेरी के कपुटेटर बनाए २२)।

कनाटक लाइब्रेरी एसोसिएशन

इस सब को १९५ में सरकार द्वारा मांगना मिली। इसको वार्षिक अनुदान भी मिलने लगा। इसने पुस्तकालय-विज्ञान पर कम्प्यू में एक पुस्तक प्रकाशित की और १९५३ में लाइब्रेरी ट्रनिंग बोग भी शुरू किया। कर्नाटक पुस्तकालयों को साइबरगो प्रकाशित करने का कार्य गंग न जाने हाथ में लिया है और आधा है धीमे ही प्रकाशन हो सकेगा।

अभिवेदान

राज्य के शासकपाल में लोक बम्बई कर्नाटक लाइब्रेरी काँग्रेस का अधि-वेदान धारधार में १९४८ में हुआ। बम्बई हाईकोर्ट के जज माननीय एन० जी० छागला ने इसका उद्घाटन किया और मैसूर लाइब्रेरी के साइबरगो भी जो हनुमत राव ने अल्पकाल की। कुपन कम्प्यू सर्वे और पत्र-परिचरकों की एक प्रवर्गनी भी हुई। इसके बाद तृतीय अधिवेशन १९५२ में कुण्ड गोल और कुम्मा में १९५३ में हुए। कुम्मा अधिवेशन की अल्पकाल की डी० एन० बागार ने की और कुम्मा अधिवेशन की अल्पकाल की आण रङ्ग-वार भी है।

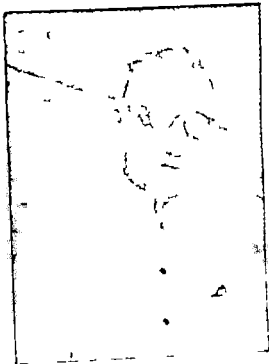
यूनिवर्सिटी लाइब्रेरी

१९ नवम्बर १९४४ को बड़ीया यूनिवर्सिटी लाइब्रेरी का उद्घाटन डा० राजेन्द्रप्रसाद ने उद्घाटन किया। ५ जनवरी १९५५ का गुजरात विद्यापीठ पुस्तकालय का उद्घाटन माननीय वं० मैहण ने किया। धारने का कि 'द्विमास यह प्रयास होना चाहिए कि प्रत्येक गाँव में एक पुस्तकालय हो'।

बम्बई के मृतपुर्ब राज्य मंत्री ने ३० मार्च १९४८ का मै० जी० एन० वेडिल काँग्रेस बम्बई के वेडिल लाइब्रेरी का उद्घाटन किया।

मदरसा गांधी रत्निकम प्रेजियेरान कमेटी

गांधी के गम्भिरता मंत्री जब बलुर्षों को एनन बम्बई की कमेटी डा०



श्री टी० डी० बान्नीस एम ए० एड० एम० ए०
कम्प्युटर ग्राफि सांख्यिकीय
बम्बई प्रयोग

राजेन्द्र प्रसादजी के सभापतित्व में बनी और दिसम्बर १९५३ में 'पापी ज्ञान मन्दिर' की स्थापना बर्मा में हुई।

पुस्तकालय संघ

महाराष्ट्र पुस्तकालय संघ की स्थापना १९४९ में हुई। इनसे ट्रैनिङ्ग कोस की व्यवस्था की। इसने पुस्तकालय-योजना के विस्तार के लिए एक प्वालिङ्ग कमेटी (डी बाबुजीस हिम्मे डी कोल्हाटकर और डी काले महोदय) बनाई। १९ अप्रैल से जून १९५१ को एस एन० बार्से के निर्देशन में २२ विद्यार्थियों की पूना में ट्रैनिङ्ग दी गई। उन्हें ५५ में इस संघ के विभिन्न सेक्षनों के २८९ सदस्य बन चुके थे। बम्बई सरकार ने संघ को १३५० इ० की ग्राण्ट भी दी। इसकी ओर से प्रतिव्य ट्रैनिङ्ग क्लास की व्यवस्था भी बाठी है। एक मराठी पत्रिका 'साहित्य बहकार' का प्रकाशन होता है और पुस्तकालय विज्ञान की पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं।

बम्बई छात्रोेरियल स्टाफ यूनियन

बम्बई में पुस्तकालय कर्मचारियों का एक संगठन यूनियन के रूप में हुआ। इसकी वृत्तव्य बहिर्घोषण २६ जून १९५३ को टाउन हॉल बम्बई में प्रिसिपल एस० डी० डॉंगे, एस० एल० सी० की अध्यक्षता में हुआ। ११-७-४८ को भी एक कॉन्फ्रेंस करके छात्रोेरि-कर्मचारियों की तैयारी की तथा सुधारने और वीर्य बंधन के बन्धन में भागों की सूची प्रस्तुत की गई। इस प्रकार इसका प्रवास भी अपने बंधन का अनुपम रहा।

पुस्तकालय-विज्ञान शिक्षा

बम्बई राज्य में बम्बई विश्वविद्यालय में डी डी० एन० मार्शल महोदय की अध्यक्षता में पुस्तकालय-विज्ञान में डिप्लोमा कोर्स की व्यवस्था है। इसके अतिरिक्त पूना बम्बई गुजरात और कर्नाटक के पुस्तकालय-संघ भी पुस्तक-प्रवर्धनी तथा पुस्तकालय ट्रैनिङ्ग क्लासों की व्यवस्था करते हैं।

मद्रास राज्य

मद्रास राज्य में पुस्तकालय-आन्दोलन अपिष्ट संगठित रूप से आगे बढ़ा। डा० रंगनाथन ने जो माडल छात्रोेरि ऐक्ट बनाया था उस पर आधारित 'छात्रोेरि बिल' मद्रास सरकार ने पास कर लिया। इस प्रकार भारत में सब से पहला छात्रोेरि ऐक्ट पास करने का श्रेय अभी राज्य को है। इस 'मद्रास पब्लिक छात्रोेरि ऐक्ट' के अनुसार राज्य में स्थायी कर्मचारियों का काम



श्री टी जी बाबरीस एम ए० एड० एम ए०
 कानिगा घाटि लाहरीस
 म्बई प्रदण

राजेश्वर ब्रह्मचारी के समापदित्व में श्री और दिसम्बर १९५३ में 'पोपी ज्ञान मन्दिर' की स्थापना वर्षों में हुई।

पुस्तकालय संघ

महाराष्ट्र पुस्तकालय संघ की स्थापना १९४९ में हुई। इसके ट्रैनिङ्ग कोष की अध्यक्षता श्री। इसने पुस्तकालय-योजना के विस्तार के लिए एक प्वाब्लिक कमेटी (श्री बाबनीस हिन्दे की कोल्हाटकर और श्री कान्हे म्हाोयब) बनाई। १९ अप्रैल से जून १९५५ को एम० एन० बार्ने के निर्देशन में २२ विद्यालयों को पूना में ट्रैनिङ्ग दी गई। जून ५५ में इस संघ के विभिन्न मन्त्रियों के २८९ सदस्य बन चुके थे। बम्बई सरकार ने संघ को १९५०-५० की ग्राण्ट भी दी। इसकी ओर से प्रतिषेध ट्रैनिङ्ग कक्षा की व्यवस्था की जाती है। एक मराठी पत्रिका 'साहित्य सहकार' का प्रकाशन होता है और पुस्तकालय विभाग की पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं।

बम्बई साइबेरियन स्टाफ यूनियन

बम्बई में पुस्तकालय कर्मचारियों का एक संगठन यूनियन का रूप में हुआ। इसकी दूसरा अधिवेशन २९ जून १९५३ को टाउन हाल बम्बई में प्रिंसिपल एम० बी० डॉंगे, एम० एन० सी० की अध्यक्षता में हुआ। ११-७-४८ की भी एक कार्यवाही करके साइबेरी-कर्मचारियों की लोकरी की सेवा सुधारन और बैठन बढ़ाने के सम्बन्ध में माँगों की सूची प्रस्तुत की गई। इस प्रकार इसका प्रभाव भी अपने ढंग का अनुभव रहा।

पुस्तकालय-विज्ञान शिक्षा

बम्बई राज्य में बम्बई निरवविद्यालय में श्री डी० एन० मार्शल महीदम की अध्यक्षता में पुस्तकालय-विज्ञान में विज्ञाना कोष की व्यवस्था है। इसके अतिरिक्त पूना बम्बई पुनरुपल और कर्नाटक के पुस्तकालय-संघ भी पुस्तक-ब्रह्मचारी तथा पुस्तकालय ट्रैनिङ्ग कक्षाओं की व्यवस्था करते हैं।

मद्रास राज्य

मद्रास राज्य में पुस्तकालय-आन्दोलन अधिक संगठित रूप से माने जाते हैं। डा० रंजनाम् ने श्री मारिक साइबेरी ऐक्ट बनाया था उस पर आपाठित 'साइबेरी विथ' मद्रास सरकार ने पास कर लिया। इस प्रकार भारत में सब से पहला साइबेरी ऐक्ट पास करने का श्रेय इसी राज्य को है। इस 'मद्रास पब्लिक साइबेरी ऐक्ट' के अनुसार राज्य में स्वामीय कर्मचारियों ने काम

करना शुरू किया। मद्रास नगर और जिल्ला सेन्स को छोड़ कर सभी जिल्लों में डिस्ट्रिक्ट सेन्ट्रल लाइब्रेरी स्थापित की गई। मद्रास राज्य ने १८९३ में २७१७ १ रुपये और १९४५ में ६३४२१० रुपये खर्च किये। डाइरेक्टर आफ पब्लिक लाइब्रेरीज मद्रास के आफिस में विस्तृत लाइब्रेरी स्थापित हुई जिसके द्वारा बाल्बोर्नो में पढ़ने की वास्तव का विकास किया गया।

१९४५ तक मद्रास में २८८८ पुस्तकालय और ९८९ रीडिंग रूम हो चुके थे। इनसे ७३०५ १६१ व्यक्तियों ने २४४५५३० पुस्तकों का उपयोग किया था।

मद्रास लाइब्रेरी एसोसिएशन

यह एसोसिएशन बड़ी लगन और तत्परता से कार्य करता रहा। इसके बहिर्वेद्य सल्लतापूर्वक होते रहे। २७ वीं वार्षिक अधिवेशन ९ अप्रैल १९४५ में हुआ जिसमें मद्रास लाइब्रेरी ऐक्ट में लाइब्रेरी डाइरेक्टर को सरकार द्वारा नियुक्त किये जाने वाले की जाकोषता थी थी। तब से यह विधायिका की कि ट्रेड प्रेजेंट लाइब्रेरियन को ट्रेड प्रेजेंट टीचर का डेड स्कूलों और कलेजों में दिया जाय।

इस प्रयत्न में कालेज लाइब्रेरियंस का भी एक संघठन रूप है जिसका प्रथम अधिवेशन २८ नवम्बर १९४७ को Y M C A (मद्रास) में हुआ। बंगाल प्रवेश

बंगाल लाइब्रेरी एसोसिएशन के अधिवेशन प्रति रूप होते रहे। ३-४ अप्रैल १९५३ को सुनीतिकुमार बटर्नो की अध्यक्षता में इसका एक वृत्त अधिवेशन हुआ। २४-५-५३ ई० की एक बैठक में १५ वें वीप्सकमीन अधिवेशन सिविल में उत्तीर्ण २५ व्यक्तियों की प्रमाण-पत्र दिए गए। इस एसोसिएशन ने 'पश्चिमी बंगाल लाइब्रेरी डाइरेक्टरी' का भी काम अपने हाथ में ले लिया है। मालदा के ट्रेनिंग केंद्र से इन एसोसिएशन की ओर धीरे धीरे विकास हो गये हैं। बंगाल सरकार इसके विद्या-कर्मियों से संतुष्ट हो कर वास्तव भी है रही है। बंगाल के पुस्तकालयों-आयोफिस में भी प्रमा-कुमार बटर्नो मूलपूर्व लाइब्रेरियन पब्लिकिनेशन थी विमलकुमार बट, वर्तमान लाइब्रेरियन पब्लिकिनेशन तथा थी प्रमोसबन्ध वसु, लाइब्रेरियन कर्मकता सुनिश्चिति लाइब्रेरी यदि प्रमुख है। थी प्रमोसबन्ध की तो जग-जगत लाइब्रेरियन है और इन एसोसिएशन के प्राय है। 'प्रवागार' पत्रिका इन एसोसिएशन से प्रकाशित हो रही है।

इंडियन एसोसिएशन आफ स्पेशल छाइनेरीज पेरड इन्फार्मेशन सर्विस

इसकी स्थापना डा० एस० एल० होप की प्रेरणा से कसकता में हुई। कार्य को संयोजित करने के लिए यौग्य व्यक्तियों के नेतृत्व में ९ उपविभाप बना कर कार्य प्रारम्भ कर दिया गया।

हैदराबाद

इस राज्य में एक 'ऑल हैदराबाद छाइनेरी एसोसिएशन' की स्थापना स्वामीनारायण में हुई। इसके द्वितीय अधिवेशन का समापनित्व श्री के० जी० वीरवैन, ऐरीयानल सेक्रेटरी, पिछा विभाग केंद्रीय सरकार ने किया। उन्होंने अपने भाषण में इस बात पर बल दिया कि द्वितीय पंचवर्षीय योजना के अंत तक (१९६१) सभी राज्यों में स्पेशल और विलक छाइनेरियों की स्थापना हो जावनी और उनके अपने भवन हो जायेंगे और वे मुख्य पुस्तकालयाध्यक्षों द्वारा संयोजित होंगे।

राज्य का तीसरा अधिवेशन सितम्बर १९५६ में हुमा विमला उद्घाटन श्री श्री० एन० बाठार महोदय (केंद्रीय मंत्री) ने किया। इस अवसर पर स्पेशल छाइनेरी कॉलेज और पुस्तक-ग्रंथालय आदि के भी मासोजन हुए। स्पेशल छाइनेरी कॉलेज के उद्घाटित श्री मार० एम० पारथी महोदय ने और श्री बार० एम० जोषी स्वागतार्थ्य। पुस्तक प्रदर्शनी का उद्घाटन हैदराबाद के पूर्वमन्त्री श्री डी० बी० किन्नु ने किया।

डा० यशवन्तन् ने श्री उस्मानिया पुनर्विनिर्मा में हस्तलिखित ग्रंथों की एक प्रदर्शनी का उद्घाटन किया।

मैसूर

मैसूर राज्य के विभिन्न केंद्रों में हिन्दी पुस्तकालयों की स्थापना मैसूर हिन्दी प्रचार परिषद् द्वारा की गई। प्रथम पंचवर्षीय योजना के अन्ततः भारत सरकार ने हिन्दी प्रचार में हिन्दी प्रचार न सिर्फ पाँच लाख रुपये की वार्षिक महासत्ता दी। मैसूर सरकार ने अपने राज्य में हिन्दी के प्रचार पर हजारों रुपये खर्च किए। मैसूर हिन्दी प्रचार परिषद् को आठ केंद्रों में हिन्दी पुस्तकालय खोलने की वार्षिक सहायता दी गई। परिषद् ने ये पुस्तकालय-बैंगलूर परिषद् के कक्ष में तिरु आनेच्छु हालदरे सठेकन्नु, बगपूर, बाळपूर और मन्नादी हुस्की में खोले। ये पुस्तकालय स्वामीय समिति की देख-रेख में चल रहे हैं।

करता शुरू किया। मद्रास नगर और बिना सेलम को जोड़ कर सभी स्थानों में बिस्ट्रिक्ट सैन्ट्रल लाइब्रेरी स्थापित की गई। मद्रास, एम्प ने १८५३ में २७१७ १ रुपये और १९४५ में ६३४२१० रुपये खर्च किये। डाइरेक्टर बाळ शम्भू काइबेरीज मद्रास के आफिस में बिस्तुन काइबेरी स्थापित हुई जिसके छात्र बालकों में पढ़ने की आवश्यकता का विकास किया गया।

१९४५ तक मद्रास में २८८८ पुस्तकालय और ९८९ रीडिंग कम हो चुके थे। इनसे ७३०५ १६१ व्यक्तियों ने २४४५५३० पुस्तकों का उपयोग किया था।

मद्रास लाइब्रेरी एसोसिएशन

यह एसोसिएशन बड़ी लगन और उत्तरदाता ने कार्य करता रहा। इसके अधिवेशन सफलतापूर्वक होते रहे। २७ वाँ वार्षिक अधिवेशन ९ अप्रैल १९४५ में हुआ जिसमें मद्रास लाइब्रेरी ऐक्ट में लाइब्रेरी डाइरेक्टर को सरकार द्वारा नियुक्त किये जाने वाले की आवश्यकता की गई। संघ ने यू. विक्टरिस भी सिट्रेंड प्रोजेक्ट लाइब्रेरियन को ट्रेड प्रजेक्ट टीकर का बड़ स्कूलों और कालेजों में दिया था।

इस प्रबंध में कानेज लाइब्रेरियन का भी एक महत्वपूर्ण योगदान है जिसका प्रथम अधिवेशन २८ सितम्बर १९४७ को Y M C. A (मद्रास) में हुआ। यज्ञात्स प्रवेश

बंगाल लाइब्रेरी एसोसिएशन के अधिवेशन प्रति वर्ष होते रहे। ३-४ अप्रैल १९५३ को सुनीति कुमार बटर्जी की अध्यक्षता में इसका, एक सफल अधिवेशन हुआ। २४-५-५३ ई० की एक बैठक में १५ वें वीप्सकॉमिनि प्रतिपक्ष धिबिर में वसीन २५ व्यक्तियों की प्रमाण-पत्र दिए गए। इस एनी-सिएशन ने 'पश्चिमी बंगाल लाइब्रेरी डाइरेक्टरों' का भी काम अपने हाथ में ले लिया है। कालका के ट्रेनिंग कैम्प से इस एसोसिएशन भी और और अधिक बाह्य हो गये हैं। बंगाल सरकार इसके क्रिया-कलापों से संतुष्ट हो कर ध्यात भी दे रही है। बंगाल के पुस्तकालय-आन्दोलन में भी प्रमोद-कुमार बनर्जी भूतपूर्व लाइब्रेरियन आन्तिनिकेशन भी बिमलकुमार बस, वर्तमान लाइब्रेरियन आन्तिनिकेशन तथा भी प्रमोदचन्द्र बनु, लाइब्रेरियन कर्मचारी यूनिकेसिटी लाइब्रेरी आदि प्रमुख हैं। भी प्रमोदचन्द्र भी तो काल-काल लाइब्रेरियन हैं और इन एनीसिएशन के प्राण हैं। 'प्रयागराज' पत्रिका इस एसोसिएशन से प्रकाशित हो रही है।

इंडियन एसोसिएशन आफ स्पेशल साइजेरीज ऐण्ड इन्फार्मेशन सर्विस

इसकी स्थापना डा० एच० एच० होप की प्रेरणा से कम्बोडिया में हुई कार्य को संगठित करने के लिए योग्य व्यक्तियों के नेतृत्व में ९ उपविभाग बना कर कार्य प्रारम्भ कर दिया गया।

हैदराबाद

इस राज्य में एक 'ऑल हैदराबाद साइजेरी एसोसिएशन' की स्थापना स्थायीकरण में हुई। इसके द्वितीय अधिवेशन का समापनरिश्त भी के० जी० रीचर्डन ऐंडीसन सेक्रेटरी, विभागा विभाग केन्द्रीय सरकार ने किया। उन्होंने अपने भाषण में इस बात पर बल दिया कि द्वितीय पंचवर्षीय योजना के अंत तक (१९६१) सभी राज्यों में स्टेट और जिला साइजरियों की स्थापना हो जानवी और उनके अपने प्रयत्न हो जायग और वे सुयोग्य पुस्तकालयाध्यक्षों द्वारा संगठित होंगे।

सर्व प्र तीव्र अधिवेशन दिनांक १९५६ में हुआ जिसका उद्घाटन श्री पी० एन० शाहदार महोदय (केन्द्रीय मंत्री) ने किया। इस अवसर पर स्पेशल साइजेरी कॉन्फ्रेंस और पुस्तक-प्रदर्शनी का भी आयोजन हुए। स्पेशल साइजेरी कॉन्फ्रेंस के समापनरिश्त भी आर० एच० पारसी महोदय ने और भी आर० एम० जोशी स्वागतार्थ्यत। पुस्तक प्रदर्शनी का उद्घाटन हैदराबाद के गुरुमन्त्री श्री डी० बी० बिन्दु ने किया।

डा० राजकृष्णन् ने जी उत्सानिया यूनिवर्सिटी में हस्तलिखित ग्रंथों की एक प्रदर्शनी का उद्घाटन किया।

मैसूर

मैसूर राज्य के विभिन्न क्षेत्रों में हिन्दी पुस्तकालयों की स्थापना मैसूर हिन्दी प्रचार परिषद् द्वारा की गई। प्रथम पंचवर्षीय योजना के अन्तगत भारत सरकार ने अहिन्दी प्रांतों में हिन्दी प्रचार के लिए पाँच लाख रुपये की आर्थिक सहायता दी। मैसूर सरकार ने अपने राज्य में हिन्दी के प्रचार पर हजारों रुपये खर्च किए। मैसूर हिन्दी प्रचार परिषद् को आठ क्षेत्रों में हिन्दी पुस्तकालय खोलने की आर्थिक सहायता दी गई। परिषद् ने ये पुस्तकालय-बंबलोर परिषद् के इलाक में तिरु बालेकम होम्बेट, कटेरेन्नु बगमूर, बाल्लूर और पम्बली हल्ली में खोले। ये पुस्तकालय स्वामीय एगिडि की देख-रेख में चल रहे हैं।

द्रावलकोर कोबीन

द्रावलकोर-कोबीन के संयुक्त राज्य बनने पर सरकार ने पुस्तकालयों की संख्या और बढ़ा दी। बीरे-बीरे १४८१ पुस्तकालय 'पुस्तकालय-संघ' की देख-रेख में चलने लगे। पुस्तकालयों की देख-रेख के लिए एक अधिकारी की नियुक्ति हुई। पुस्तकों की संख्या में भी वृद्धि हुई और सन् १९५५ में कुछ पुस्तक-संख्या १२५८,७५० हो गई। सरकार २ पाई प्रति-व्यक्ति पुस्तकालय-सेवा पर ध्यान कर रही है।

पुस्तकालय-संघ

द्रावलकोर-कोबीन पम्पाकप संघ' ट्रिबेन्डम एक सुसंगठित संस्था है। इस संघ से १९५४-५५ के अन्त तक १९८५ पुस्तकालय सम्बद्ध हो गये थे। कम से कम ८०) की प्रायः पुस्तकालयों को मिश्रित है। १९५४-५५ के अन्त तक ४१७ पुस्तकालयों के निजी घर बनाए गये। संघ के आगमनाहर इन्स्टीट्यूट और भरत समितिपु पुस्तकालयों के काम को कंट्रोल करते हैं। १९५४-५५ में १७० ४१५ रुपये प्रायः पुस्तकालयों को दी गई।

मध्य-प्रदेश

मध्य-प्रदेश राज्य पुस्तकालय संघ' का अधिवेशन २९-३० जनवरी १९५५ को नेशनल साइबेरी के डिप्टी साइबेरियन भी आई० एम मुक्ति की अध्यक्षता में नागपुर में हुआ। नागपुर हाईकोर्ट के मूलपूर्व जज श्री जम्भू० श्री० पौराणिक स्वायत्ताध्यक्ष थे। श्री मुक्ति ने इस बात पर बल दिया कि अधिकाय शिक्षा की भाँति सरकार को साइबेरी ऐक भी धीम ही बनाना चाहिए। पुस्तकालय की देख-रेख का विभाग बनना हीना चाहिए। इच्छिया आश्रित साइबेरी को वापस लाने के लिए प्रस्ताव पास किया गया और नाँव साइबेरी और नेशनल बुक ट्रस्ट की योजना के लिए सरकार को धन्यवाद दिया गया।

सीरापट्ट

मेघनी पेरराज ट्रस्ट के ४ भाग रुपये के राज से सीरापट्ट में ८०० साइबेरी टोकी की योजना बनाई गई जिनमें से १०० पुस्तकालय पहले से ही ग्राम पंचायत की ओर से बन चुके हैं।

राजस्थान

२ अक्टूबर १९५५ को कुछ उस्ताही पुस्तकालयाध्यक्षों ने जोधपुर नगर में 'जोधपुर साइबेरी एमोसिएशन' की स्थापना की। २० जनवरी १९५६ की

बैंक में एक मन्त्री श्री ए० एम० तिलक (साइबेरियन बसबन्ध कासेब) चुने गये ।

आन्ध्र

आन्ध्र प्रदेश में आन्ध्र यूनिवर्सिटी वास्तुएर के साइबेरियन श्री ए० राम कृष्णराव की अध्यक्षता में २-१०-५५ को एक बैंक साइबेरियन और सीमिगर स्टाफ की हुई, जिसमें 'आन्ध्र साइबेरियन एसोसियेशन बनाने का निश्चय किया गया । इसका उद्देश्य देश में साइबेरियनशिप को बढ़ावा तथा पुस्तकालय कमचारियों की बचा और हैसियत में सुधार करना है । श्री ए० रामकृष्णराव इसके अध्यक्ष और श्री ए० सत्यनाथराव पटनायक स० साइबेरियन आन्ध्र यूनिवर्सिटी मन्त्री चुने गए ।

बेस्ट बंगाल साइबेरी एसोसिएशन

एसोसिएशन का ९ वां अधिवेशन क्विरापुर, कलकत्ता में ८-९ अगस्त १९५५ ई को हुआ । डा० बी सी० राम ने कॉन्फ्रेंस का उद्घाटन किया । कॉन्फ्रेंस की अध्यक्षता श्री प्रभातकुमार मुकुर्मी ने की । कॉन्फ्रेंस के अवसर पर पुस्तकों को प्रदर्शनी का उद्घाटन प्रसिद्ध पत्रकार डा० हैमन्त प्रसाद बोप ने किया ।

(१) सामाजिक शिक्षा और पुस्तकालयों का सहयोग ।

(१) पुस्तकालय आन्दोलन में टेकनीशियनों का योगदान ।

आदि विषयों पर विचार किया गया । कॉन्फ्रेंस ने मौखिक रूप से कलकत्ता यूनिवर्सिटी पुस्तकालय-विज्ञान में मास्टर डिग्री कोर्स चालू करने के प्रश्न पर सीमावर्ती विचार करे । ए० बंगाल की सभी शिक्षण-संस्थाएँ अपने छात्रों ट्रेनिंग योग्य साइबेरियन रब्स और प्रकाशन योग्य उत्तम पुस्तकों के उत्पादन में वृद्धि करें ।

पुस्तकालयसमाजों का सहयोग

इस बात में अनेक प्राणों ने तथा विधेय रूप से कुछ पुस्तकालयों ने डा० रत्ननाथ का सहयोग चाहा । फरेस्ट रिजल इन्स्टीट्यूट साइबेरी हैडर-इल हाइडमन इन्स्टीट्यूट आठ छात्रों और यूनिवर्सिटी आठ बम्बई साइबेरी के अनुयोग पर डा० रत्ननाथ भी ने उनका निरीक्षण किया और उनके पुनर्गठन के लिए अनेक सुझाव दिए ।

साइबेरियन कॉन्फ्रेंस

२० अक्टूबर १९५५ को केन्द्रीय शिक्षा-विभाग की ओर से दिल्लीमें

पुस्तकालयाध्यक्षों का एक सम्मेलन हुआ। इसमें दो प्रकार के लोग थे। एक तो वे पुस्तकालयाध्यक्ष जो झूट बोल एजुकेशनल इन्सुर्चेंस प्रोग्राम के अन्तर्गत १९५५ ई० में संयुक्तराष्ट्र अमेरिका गए थे और दूसरे वे पुस्तकालयाध्यक्ष वे जो इसी प्रोग्राम के अन्तर्गत १९५६ में जाने वाले थे। इस सम्मेलन का उद्घाटन शिक्षा विभाग के सेक्रेटरी श्री के० भी सैपरेल महोदय ने किया और निर्देशक वे नेशनल लाइब्रेरियन श्री बी० एस० केरवन्। इस सम्मेलन के सदस्य तीन वर्गों में स्वतः विभक्त हो गए। इन वर्गों के नेता थे श्री बशीरुद्दीन श्री एस० एस० सेठ और श्री एस० राय गुप्ता। इस सम्मेलन में दिल्ली विश्वविद्यालय के उपकुलपति श्री डा० बी० के० शार भी राय यूनिवर्सिटी प्रांट कमीशन के सेक्रेटरी डा० सेमुअल मर्बाई, झूट बोल प्रोग्राम के अमेरिकन पक्ष के प्रधान डा० चडमैन के भी भाग्य हुए। इस आयोजन का उद्देश्य यह था कि संयुक्त राष्ट्र अमेरिका को जाने वाले एक कि लोग १९५५ में जाकर करके जाए हुए बल के लोगों के अनुभवों और विचारों से पुनः परिचित हो जाएँ और उनसे काम लया सके। इसलिए उपर्युक्त तीन वर्गों के विषय भी बहस कर दिए गये थे जो इस प्रकार थे —

[१] राष्ट्रीय स्तर पर पुस्तकालयों का संगठन और संचालन तथा कर्मचारियों का प्रशिक्षण।

[२] सूचीकरण, और वितरण सेवा के कुछ अंगीकरण विवरण सहित (यूनिवर्सिटी लाइब्रेरी के दृष्टिकोण से)।

(१) पुस्तकालय सभ्यता एवं पुस्तकालय-विस्तार-सेवा (कासेव स्तर पर)।

इन वर्गों ने वापस में अपने विषयों पर जमीनीय विचार-विनिमय किया और अंत में अनेक बहस ने अपनी रिपोर्ट और सुझाव अन्तिम सेशन के लिए पेश किया। सब वर्गों के सुझावों और सिफारिशों पर बहस और विचार-विनिमय हुए और अंत में उन्हें स्वीकार किया गया।

(ब) पुस्तकालयाध्यक्षों की विदेश-यात्राएँ

स्वतन्त्र भारत का अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध अनेक देशों से स्थापित हो जाने पर पुस्तकालयाध्यक्षों को विदेशों में जाकर पुस्तकालय-संरक्षण और संचालन सम्बन्धी विषय ज्ञान और अनुभव प्राप्त करने के अनेक अवसर मिले। अनेक लाइब्रेरियन विदेशों में गए और वहाँ से ज्ञान एवं अनुभव प्राप्त करके लौटे।

ब्रिटिश मीन एन्जुकेरानस इन्सपेक्शन् प्रीमैस

इस योजना के अन्तगत पहली ट्रिप में निम्नलिखित व्यक्तियों ने ९ फरवरी १९५४ ई० को ५ महीने की संयुक्त राष्ट्र की विशेष यात्रा की —

- १ श्री एस० वासुगुप्पा, अध्यक्ष साइबेरी साइन्स विभाग दिल्ली यूनि०।
- २ श्री एस० यशीरुद्दीन, साइन्स रियल बसीनङ्ग मुस्लिम यूनिवर्सिटी काइररी।
- ३ श्री नबी अहमद, आमिया मिस्त्रिया गई दिल्ली।
- ४ श्री अमरनाथ शर्मा, साइन्स रियल दिल्ली पोलीटेक्निक।
- ५ श्री जे० एस० आनन्द, साइन्स रियल सेंट्रल एन्जुकेरानस काइररी।
- ६ श्री एस० रामभद्रन्, असिस्टेंट साइन्स रियल दिल्ली यूनिवर्सिटी।
- ७ श्री एम० बी० बजीरुद्दार्, असिस्टेंट साइन्स रियल टाटा इन्स्टीट्यूट आफ फंडामेंटल रिसर्च बम्बई।
- ८ श्री के० आर० बेसाई, साइन्स रियल मुंबयत यूनिवर्सिटी।
- ९ श्री पी० सी० बोस, साइन्स रियल कलकत्ता यूनिवर्सिटी।
- १० श्री बी० सी बनर्जी असिस्टेंट साइन्स रियल विश्व भारती धार्मिक विश्वविद्यालय।

११ श्री जी० सी सरकार, साइन्स रियल बंगाल इंजीनियरिंग कॉलेज।

१२ श्री बी० वी० रामचन्द्र राव, साइन्स रियल इण्डियन इन्स्टीट्यूट आफ साइन्स बंगलौर।

इन्होंने वहाँ सेमिनार बाद-विवाह आदि में भाग लिया। अमेरिकन साइन्स एंजुकेरानस के वार्षिक अधिवेशन में सम्मिलित हुए और इस स्ट्रेम की यूनिवर्सिटी पुस्तकालयों की देखा। साइन्स री आफ कॉर्पोरेशन काउन्सिल की देखा तथा अन्य क्रिया-कलाप में भी भाग लिया। ये लोग जुलाई के अन्तिम सप्ताह में लौटे। २८ जुलाई को सायकल ६ बजे उनका स्वागत दिल्ली साइन्स री एंजुकेरानस की ओर से किया गया।

इस योजना के अन्तगत दूसरी ट्रिप में निम्नलिखित ११ साइन्स रियलों का दूसरा दल २९ फरवरी ५९ को पाँच मास की अध्ययन यात्रा पर गया है —

- १ श्री बर्नार्ड फ्रैंडसन बम्बई
- २ श्री प्रभातकुमार मुकुर्जी आगरा
- ३ श्री कृष्ण श्रीपाद देशपाण्डे कर्नाटक यूनिवर्सिटी, घाटवार
- ४ श्री अनाईन मनकरपर कान्तिकर, इण्डियन इन्स्टीट्यूट आफ एडवेंचर, गई दिल्ली।

५ श्री अशोक कुमार बनर्जी, इंडियन इन्स्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी, बरनपुर ।

६ श्री बनारसी जाल पाठक सागर यूनिवर्सिटी धार ।

७ श्री बिनयेन्द्रसेन गुप्ता मैघनल लाहोरी

८ श्री सरदार तारानिह, म्बलक यूनिवर्सिटी ।

९. श्री पी० के० त्रिवेदी, इलाहाबाद यूनिवर्सिटी ।

१० श्री कृष्णाजी शंकर शिंदे पूना यूनिवर्सिटी ।

डा० रंजनाफु ने पोरप और अमेरिका की बहु-उद्देशीय भाषा ७ जून १९४८ से अक्टूबर १९४८ तक की। उनकी भाषा के निम्नलिखित कारण थे —

१ 'इंटरनेशनल फेडरेशन फार डाकुमेंटेरान' ने 'कन्वेंसीफिकेशन ऐयड इंटरनेशनल डाकुमेंटेरान' पर एक स्पृति-पत्र के लिए प्रार्थना की थी।

२ हेग में जून १९४८ में एक बार्ड की कार्योत्तर में भाग लेने का निमन्त्रण मिला था।

३ ब्रिटिश काउन्सिल का निमन्त्रण था कि वे दो मास तक उसके बरिषि के रूप में ब्रेटविलेन रहें।

४ इन्डियन स्टैण्डर्ड इन्स्टीट्यूशन के प्रतिनिधियों के मैदा के रूप में बार्ड एस० मो० की छठी बैठक में भाग लेना था जो हेग में होने वाली थी।

५ किसी यूनिवर्सिटी का निर्बन्धन था कि वे किसी यूनिवर्सिटी के प्रतिनिधि की इच्छित से राष्ट्रमण्डल की यूनिवर्सिटियों की कार्योत्तर में जुलाई १९४८ की आक्सफोर्ड में शामिल हों।

६ भारत के केंद्रीय विद्या-विभागा की इच्छा थी कि डा० साहब मूल्य के कुछ देशों का भ्रमण करें और सामान्य रूप से पुस्तकालय-जगत् के लक्ष विकास का और विशेष रूप से बेघनल छेदक लाहोरी के विषय में अध्ययन करें।

७ संयुक्त राष्ट्र का निमन्त्रण था कि उसके पुस्तकालय-विशेषज्ञों की अन्तर्राष्ट्रीय ऐडवाइजरी समिती में भाग लें।

८ यूनेस्को के अन्तर्राष्ट्रीय लाइब्रेरियनशिप के समूह की अध्यक्षी के एक सरस्य ही कार्य की कि इन्हें छह वें सितम्बर १९४८ में होने वाली थी।



श्री नान एम्बेदान्त एम्बेदकर प्रापन

के

परमर्षी हमरी ट्रिप के माइब्रियन

दुस्र भगवतिन बिद्यपत्रा के साथ

१. इण्डियन काइरोटी एसोसिएशन की प्रार्थना थी कि उसके प्रतिनिधि के रूप में इंटरनेशनल केबरेसन आफ काइरोटी एसोसिएशन के १४ वें सेशन में सितम्बर १९४८ में सम्मेलन में भाग लें।

उन्होंने विदेशों में नेशनल काइरोटी सिस्टम सिटी काइरोटी सिस्टम ग्राम पुस्तकालय सिस्टम यूनिवर्सिटी काइरोटी और व्यापारिक काइरोटियों का अध्ययन किया।

इनके अतिरिक्त निम्नलिखित काइरोटियों ने फुटकर सुविधाओं के अन्तर्गत विदेश यात्रा की और पुस्तकालय-सम्बन्धी घन्सीर अनुभव प्राप्त किया—

श्री खनार्दन साइरियन कोनेमरा पब्लिक काइरोटी महास यूनेस्को की मीटिंग में सम्मिलित होने के लिए मैनचेस्टर गये।

श्री बी० एस० केराबन् नेशनल साइरियन बार महीने की अध्ययन यात्रा पर फरवरी १९५१ में अमेरिका गए। उन्होंने वहाँ पुस्तकालयों के उच्च संघाक्तों से सम्पर्क स्थापित किया और अनेक पुस्तकालयों का निरीक्षण किया।

श्री एस० एस० सेठ, काइरोटियन इन्सट्रुमेंट अकेडमी भारत सरकार द्वारा पुस्तकालय ट्रेडिंग प्राइव था कर सिंग मुट (Mindt) फेडोसिप के अन्तर्गत अमेरिका में १ मास काश्चितन काइरोटी में काइरोटी साइंस से रिसेच करने में विद्यमान। श्री विमलकुमार बस (काइरोटियन साइंस डिप्लोम काइरोटी) भी उक्त फेडोसिप के अन्तर्गत गए और लौटते समय अनेक देशों के पुस्तकालयों की सेवा।

श्री एम० एम० एल० टंडन ने यूनेस्को फेडोसिप के अन्तर्गत पुस्तकालय-संयोजन एवं सामाजिक शिक्षा का १ मास अध्ययन करने के लिए यू० एच० ए० और इंग्लैण्ड की यात्रा की।

श्रीमती कमला कपूर, यू०एस०आई०एस० काइरोटी नई दिल्ली ने इन्फन इव बोरोरोटेशन प्रोग्राम के अन्तर्गत यू० एस० ए० अध्ययन के लिए गई।

श्री हरिदेव शर्मा एम०ए० काइरोटियन बी० ए० बी० कोनेज, बार्सिलोने में १११ वष अमेरिका में विद्या। उन्होंने मिनिषिया यूनिवर्सिटी से ए० एम० एल एल परीक्षा जून १९५५ में पास की। उन्होंने बुकनेज पब्लिक काइरोटी न्यूयार्क में कार्य भी किया तथा लौटते समय अनेक देशों के पुस्तकालयों की सेवा।

श्री एन० एम० केवकर महोदय ने १९५१ में 'कोलम्बिया यूनिवर्सिटी भारत काइरोटी साइंस' में इतिहास की।

डा० जगदीशशरण शर्मा, ने दो बार पुस्तकालय-विज्ञान सम्मन्धी विशेष सम्मेलन के लिए विदेश यात्रा की। पहली बार १४ अगस्त १९४८ ई० को प्रस्थान करके अमेरिका की मिशिगन यूनिवर्सिटी से ए० एम० एड० एस्० की परीक्षा पास करके १४ अगस्त १९५० को स्वदेश लीये। दूसरी बार मिशिगन विश्वविद्यालय से एक फेलोशिप पावे पर राष्ट्रपिता बापू की विच्छिन्न शरीर को रिसर्च विषय के रूप में लेकर १० जुलाई १९५२ को फिर अमेरिका गए और वहाँ मिशिगन यूनिवर्सिटी से पी० एच० डी० की उपाधि प्राप्त की। उसके बाद अनेक बड़े-बड़े पुस्तकालयों की कार्य-प्रणाली को देख कर सितम्बर १९५४ को भारत लौटे।

नेशनल लाइब्रेरी के श्री घैशनाथ वन्द्योपाध्याय चौधरी को ब्लोट सोल फंड प्रोग्राम के अन्तर्गत पुस्तक-सुरक्षा और विलय बंदी के प्रविष्टन के लिए भेजा गया।

स्थाग, नटराजन (इंडियन नेशनल लिब्रियोरिफ्री विभाग) को लाइब्रेरी आफ काउंसिल में लिब्रियोरिफ्रिज्क सम्मेलन के लिए पूर्ण अनुमति प्यारह माह के लिए प्राप्त हुई।

इसके अतिरिक्त श्री राजेन्द्रनाथ सक्सेना (लखनऊ) तथा मित्र रामचंद्र (ऐम्बिकाबर इन्स्टीट्यूट मैत्री लाइब्रेरी) भारत में भी प्रविष्टन के लिए विदेश यात्राएँ की।

पुस्तकालयाध्यक्षों का सम्मान

पुस्तकालय-विज्ञान को स्वर्ण विषय स्वीकार करने और लाइब्रेरी प्रोत्साहन को सम्मान देने के लिए इस बीच कुछ महत्वपूर्ण काम हुए—

अन्तिम अक्षर बनरज माउन्टेन्टन ने दिल्ली यूनिवर्सिटी के बाइसचांसलर की हृदय से डा० एस० आर० रंगनायन् को ७ मार्च १९४८ ई० के स्पेशल कन्वोकेशन में आनरेरी डी० लिट० (डाक्टर ऑफ लेटर्स) की उपाधि प्रदान की। इस अवसर पर डा० साहू की अनेक पुस्तकालयाध्यक्षों की ओर से बधाई के संदेश भी प्राप्त हुए।

भारत सरकार ने डा० रंगनायन् जी को उनकी पुस्तकालय-सम्बन्धी बहु मूल्य सेवाओं के उपलक्ष्य में 'पद्म-सूषण' उपाधि से अर्जित किया।

अलीगढ़ यूनिवर्सिटी लाइब्रेरी के चाइलरियन श्री एस० यशीवर्दीन साहू को अमेरिका से लौटने पर यूनिवर्सिटी सीनेट ने प्रोफेसर देव (८०० से १२५० इ० पर नियुक्ति करके उनकी सम्मानित किया।

श्री एस० दास गुप्ता महोदय को भी प्रोफेसर पद प्रदान किया गया।

डा० रंगनाथन् का महान् त्याग

भारतीय पुस्तकालय-जगत् के महान् विद्वान् डा० रंगनाथन् ने अपने जीवन भर की कमाई उस भारतीय विद्यविद्यालय को देने की घोषणा की जो उन्हीं ही रकम अपनी खोर से मिला कर पुस्तकालय-विज्ञान के विद्योप-सम्पन्न और लोग के लिए एक 'बियग' स्थापित कर सके। तभी ने इस उराखा को मुक्तकंठ से सराहना की है।

स्वाधीन भारत में पुस्तकालय-विज्ञान-सम्बन्धी साहित्य का विकास

- | | |
|-------------------------------|--------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|
| १९४० कुन्दनकर, नायर वी | साइड पी मूवमेण्ट इन ट्रायनकोर। |
| १९४० | साइड पी एण्ड मास एनुकेषन। |
| १९४० नागामूपणम्, जी | साइडपीन एण्ड रजिस्ट्रेशन। |
| रंगनाथन्, एम० आर० | कोमन कर्सीलिब्रेषन आफ तीक्ष्ण क्लिरेयर। |
| १९४० | साइड पी इन्क्वेस्ट प्लान विथ ए ड्राफ्ट साइड पी बिज कार व प्राब्लिम आफ बाम्बे। |
| १९४८ ए इण्डिया हेल्थ सर्विसेज | कंसोलिडेटेड कैम्पाय आफ बरगल्ल एण्ड पीरिवालिन्स इन द साइडपीन आफ सरटेज मेडिकल रिगर्ष इन्स्टीट्यूट इन्डिया आफ इंडिया। |
| -डाइरेक्टर जनरल आफ- | |
| १९४८ कुवालकर, वी० जी० | ग्रन्थालयी वर्गीकरण। |
| १९४८ कोल्हाटकर, वी० पी० | ग्रन्थालयी सूचीलेख। |
| १९४२ रंगनाथन्, एम० आर० | एनुकेषन कार केयर। |
| १९४८ | कर्सीलिब्रेषन एण्ड इन्स्टीटयनल ड्राफ्ट-नेस्टेक्षन। |
| १९४८ | प्रीसेप्ट टु साइड पी साइंस। |
| १९४८ मोठानाय 'बिमल' | पुस्तकालय-परिचय। |
| १९४८ मधुराप्रसाद आवि | पुस्तकालय। |
| १९४९ नागामूपणम्, जी० | ग्रन्थालय गीतात्। |
| १९४९ पारखी, आर० एस० | एण्ड बीर संवालय। |

- १९४९ रंगनाथम्, एस० आर० साइबेरी इन्क्यूमेण्ट प्लान विद ए ड्राफ्ट साइबेरी विथ आर ए यूनाइटेड प्रॉब्लिसेड।
- १९४९ हिंग्वे, के० एस इतिहासाचे वर्गीकरण।
- १९५० नागमूपणम् जी० क्लैसीफिकेशन आफ टीम्यु बुक।
- १९५० नागमूपणम्, जी प्रन्थाक्य सूत्रान्।
- १९५० ऐच० एच० एच० एच० साइबेरी पब्लिसिटी ऐण्ड इन्सटेन्शन बक्स।
- १९५० पारखी, आर० एस० प्रिंसिपल्स आफ साइबेरी क्लैसीफिकेशन विद स्पेशल रिफरेंस टू कोरन ऐण्ड डेसिमल क्लैसीफिकेशन।
- १९५० रंगनाथम् एस० आर० क्लैसीफिकेशन कौडिङ्ग ऐण्ड मीडीनरी आर सच।
- १९५० प्रन्थ अन्वयनार्थं ई (अनु-मुपरीकाळ नापर)।
- १९५० यूनियन कॅटलॉग आफ पीरियडिकल्स पब्लिकेशंस इन द साइबेरीय आफ साउथ एशिया।
- १९५० रंगनाथम्, एस० आर० साइबेरी कॅटलॉग फ्लानेटल ऐण्ड प्रोसीजर।
- १९५० रंगनाथम्, एस० आर० साइबेरी इन्क्यूमेण्ट प्लान।
- १९५० हिन्दी समाचार-पत्र संग्रह-छय, हैदराबाद इिन्दी समाचार-पत्र सूची।
- १९५१ इन्डियन साइ० एसोसिएशन इन्डियन साइबेरी साइबेरीय सम्पादन रङ्गनाथम् एस० आर० शठ बुक एस० और मपनाथम्।
- १९५१ जुबेर, एम० प्रीक्लिज कॅटलॉगविज।
- १९५१ नवकोकण प्रकाशन शाहन मुगलियाल के मुनुबखाने।
- १९५१ नागमूपणम्, पी० पंचामृत।
- १९५१ पैडेसे, एच० पी० सम्पा० टीडिब कम।
- १९५१ घोस, पी० सी० मउठै प्रन्थाक्य वा इतिहास।
- प्रन्थापारम्।

१९५१	महाराष्ट्र प्रयास्य संघ	विषय व लघुचित्र वर्गीकरण सहाय के कोष्ठक ।
१९५१	रंगनाथन्, एम० आर०	कैलसीठिकेशन ऐण्ड कम्युनिकेशन ।
१९५१	,"	काइबेरी पैनुबळ ।
१९५१	,"	प्रयास्य प्रक्रिया (अनु० मुद्रारिमाळ नागर) ।
१९५१	,"	प्रिकासपी बाळ काइबेरी कॅलसीठिकेशन ।
१९५१	विरवनाथ शास्त्री	पुस्तकालय प्रबंधिका ।
१९५२	भारत सरकार-शिक्षा विभाग	काइबेरीज इन इंडिया (बाइरेन्टी)
१९५३	,"	नेशनल काइबेरी बाळ इंडिया ।
१९५३	रंगनाथन्, एम० आर०	अनुबन्ध-मूची-कल्प (अनु० मराठी बाळ नागर) ।
१९५४	विरवनाथन्, सी० जी०	कैलसीठिकेशन प्योरी ऐण्ड प्रेक्चर्स ।
१९५५	,"	पब्लिक काइबेरी विद स्पेशल रिपोर्ट टु इंडिया ।
१९५५	इन्द्रदेवनारायण मिनहा	ए गाइड टु काइबेरियन ।
१९५५	अगदीशशरण शर्मा (डा०)	: महात्मागांधी ए डिस्ट्रिक्ट विमि- योरीपेटी ।
१९५५	,"	: पचाहरमाळ नेहळ ए डिस्ट्रिक्ट विमि- योरीपेटी ।
१९५६	,"	: विनोबा ऐण्ड चूडान ।
१९५६	,"	: इंडियन नेशनल बाइसेस सरकुलर ।
१९५६	नेशनल इनफॉर्मेशन सर्विस, पूना	: क्विडर गाइड टु इंडियन पीरिय- डिकल्स १९५५-५६ ।
१९५६	अनुज शास्त्री	पुस्तकालय क्यों और कैसे ?
१९५६	द्वारकाप्रसाद शास्त्री	: पुस्तकालय मंगलन और संभालन ।
१९५६	विमलकुमार दत्त	: प्रैक्टिकल गाइड टु काइबेरी प्रोडीजर पुस्तकालय-विकास
१९५७	द्वारकाप्रसाद शास्त्री	: भारत में पुस्तकालयों का उद्भव और विकास ।
१९५७	,"	,"

भारत में पुस्तकालयों का भविष्य

सिद्धान्तलोकन

इस पुस्तक के पिछले अध्यायों के अध्ययन करने से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि भारत में पुस्तकालयों की एक सानदार परम्परा रही है। ग्रंथों के संग्रह और उनके संरक्षण और उपयोग के प्रति भारतीय ब्रति प्राचीन काल से ध्यान रहे हैं। हमारे केन्द्रीय शिक्षा-मन्त्री माननीय मौजाना आजाद महोदय ने १ अक्टूबर १९५५ को यूनेस्को सेमिनार का उद्घाटन करते हुए विभिन्न देशों के प्रतिनिधियों को भी भारतीय पुस्तकालय-परम्परा का विषय करते हुए कहा था —

“उस समय यह बात विशेष रूप से स्पष्ट हो जाती है जब हम अपने अतीत के इतिहास का स्मरण करते हैं। ऐसा नहीं है कि अतीत में भारतवर्ष में पुस्तकालयों का अभाव रहा हो। प्राचीन विश्वविद्यालयों और बौद्ध विश्वविद्यालयों में विशाल पुस्तकालयों के निर्माण की परम्परा रही है। मध्य युग से मुस्लिमों के काल में और तत्पश्चात् मुगल सम्राटों में भी पुस्तकों के प्रति अत्यधिक प्रेम विद्यमान था। वास्तव में मुगलकाल में प्रत्येक अमीर के लिए अपना निजी पुस्तकालय बना लेने की एक प्रथा मी चल पड़ी थी। जब तक कि उसके पास अपना पुस्तकालय नहीं होता था, उसे राज्य से सम्मानित उच्चवर्गीय व्यक्ति नहीं समझा जाता था।”

उपरोक्त उद्धरण एक रूप रूप में है जिसकी पर्वन्त ध्यास्या पिछले अध्यायों में लिख सकेंगी। जब प्रथम यह उदघाटन है कि यदि हमारी संस्कृति में पुस्तकालयों का इतना महत्वपूर्ण स्थान था तो देश में इतने व्यापक स्तर पर निरक्षरता क्यों फैल गई? इसके कारण का संकेत भी इन पुस्तक के पिछले अध्यायों में यत्र-तत्र कर दिया गया है। केन्द्रीय शिक्षा-मन्त्री महोदय ने अपने उक्त उद्घाटन भाषण में इसी बात को स्पष्ट करते हुए प्रतिनिधियों को बताया था —

“कुछ भी हो इन पुस्तकालयों का काम राजदरों तथा कुछ अमीरों तक ही सीमित था। परिष्काम-स्वरूप ज्ञान-क्षेत्र का विस्तार

सर्वसाधारण जनता तक नहीं हो सका। भारत के योरप से पीछे रह जाने का एक मुख्य कारण वास्तव में पुस्तकालयों का उपयोग कुछ चुने हुए लोगों के लिए ही नियन्त्रित होना भी है। अता आज प्रजा-शासिक भारत ने अपने अतीत से शिक्षा-ग्रहण को है और ज्ञान-प्राप्ति के साधनों को अपनी समस्त सन्तानों के लिए सुगम बनाने में लगा है।”

यह धर्य है कि भारत की ज्ञान-भण्डारक अनेक एजेंसियों में छनी-बनी छिपिछ्छा जाती गई। बर्म-गुड तथा बीतराग साधु-संन्यासी कथा प्रवचन एवं उपदेशों के हाथ जनता के बौद्धिक स्तर को ऊँचा उठाने के बजाय किसी हुरी ही बाध में बह गए। पुस्तकालयों में संश्लिष्ट ज्ञान-राशि पर कुछ विधिष्ठ वर्गों का एकाधिकार था ही गया। राजनीतिक उबल-पुपल का जी बातक प्रहार हुआ। फलतः हमारे ज्ञान-स्रोत सूख गए और हम उन देशों से बौद्धिक विकास में पीछे रह गए जिनके निवासी हमारे सम्यता के उम काल में बदनम और अधिस्थित थे।

पुनर्जागरण

यह ह्य की बात है कि स्वाधीनता काल में अनेक संघर्षों के बीच गुबरते हुए भी भारत ने पुस्तकालय-क्षेत्र में मास्राष्टीय सफलता प्राप्त की है। यूनेस्को सेमिनार में पुस्तकालय सम्बन्धी भारतीय नीति को स्पष्ट करते हुए माननीय केन्द्रीय शिक्षा-मन्त्री महोदय ने कहा था —

“जिन देशों ने प्रजाशासिक शासन-प्रणाली को सार्वजनिक रूप से चुना है, वे अपनी अधिकांश प्रजा को अधिकसिंस और अज्ञानी नहीं बनाए रख सकते। किसी राष्ट्र की स्थिति उसका स्तर, सम्मान और मबिध्य धन्त में बहों की जन-शक्ति के गुणों पर ही निर्धारित होता है। इन लोगों को पुस्तकालय-सम्बन्धी सुविधाओं की क्मति के लिए विशेष प्रयत्न करना चाहिए जिससे शेष संसार के साथ मबिध्य में जाने वाले अवसरों को हम अपने समस्त नागरिकों को प्रदान कर सकें।”

हमारे प्रधान मन्त्री पधित नेहक ने तो अनेक अवसरों पर बह इच्छम व्यक्ति की है कि ‘हर मीव में एक पुस्तकालय’ की स्थापना हो। अन्ध अक्षित मास्राष्टीय एवं प्रास्राष्टीय राजनीतिक एवं सामाजिक नेताओं ने भी पुस्तकालय की महत्ता स्वीकार की है और सठे जन-जीवन का माधस्यक अङ्ग रखा है। इन विचारों से तथा केन्द्रीय एवं प्रास्राष्टीय सरकारों द्वारा किए गए पुस्तकालय-

विकास सम्बन्धी कार्यों से यह स्पष्ट है कि सम्पूर्ण देश में पुस्तकालय सम्बन्धी पुनर्जागरण की एक स्फूर्त बीड़ गई है और एक नया युवावर्ग हो गया है। प्रत्येक क्षेत्र के विद्वानों के साथ पुस्तकालय-सेवा के प्रविद्ध विद्वान् डा० रङ्गनाथन् की को डाक्टरेट और पद्मविभूषण उपाधि से सम्पन्न किया जाया विदेशों में उनके मौलिक विचारों का स्वागत भारतीय पुस्तकालयाध्यक्षों की विवेक जागृत और उनके बैठक-स्तर में बुद्धि महिलाओं का भी इस क्षेत्र में सहाय प्रवेश और प्रविष्टि प्राप्त करना तथा प्रविष्टित पुस्तकालयाध्यक्षों की माँग पुस्तकालय-विज्ञान के प्रविष्टि की सभी अंशकों में व्यवस्था काइटी इन्विजमेन्ट सफाई करने वाली अनेक कम्पनियों की स्थापना पुस्तकालयों के वैज्ञानिक संयोजन और संभालन पर और दिया जाया तथा पुस्तकों के संरक्षण से अधिक उनके उपयोग पर ध्यान देना आदि एसी बातें हैं जिन्हें पुनर्जागरण की पूर्ण होती है। अतिल भारतीय स्तर पर प्रत्येक जिले को केन्द्र मान कर पुस्तकालयों की सहाय-सुसज्ज बनाने की योजना प्रदेशों में पुस्तकालयों का सर्वोत्तम विरचविद्यालयों तथा अन्य शिक्षण संस्थाओं को पुस्तकालय-विकास के लिए विशिष्ट अनुदान तथा विविध रूपों के लए पुस्तकालयों की स्थापना और विकास आदि कार्य भारत में पुस्तकालयों के उज्ज्वल भविष्य के चेतक हैं।

इतना इष्टे हुए भी हम निःसंकोच कह सकते हैं कि अभी हमारा धन्य बहुत दूर है और वहाँ तक पहुँचने के लिए अभी अनेक महत्त्वपूर्ण काम अपेक्षित हैं। हमें आशा है कि 'आइजेरी एडवाइजरी कमेटी' के विद्वान् सरस्य उन समस्तियों की ओर विवेक रूप से ध्यान देने और उनके समाधान का समुचित मुद्दा भी प्रस्तुत करेंगे जिसके फलस्वरूप हमारे पुस्तकालय भारत के शैक्षिक आर्थिक एवं सांस्कृतिक उत्थान में सहायक हो सकेंगे।



अनुक्रमणिका

अ	क
अकबर का पुस्तकालय	काल विभाग-
अखिल भारतीय पुस्तकालय-संघ	पुस्तकालयों का
अखिल भारतीय सांख्यिक पुस्तकालय-संघ	केन्द्रीय पुस्तकालय, बङ्गोदा
ऑल इंडिया लाइब्रेरी एसोसिएशन, इन्डियन (अखिल भारतीय पुस्तकालय-संघ)	केन्द्रीय सरकार के कार्य
	ख
	बस-पुस्तकालय (बङ्गोदा)
	ग
	जिम्मा पुस्तकालय
	जैन पुस्तकालय
	द
	द्वेनिष्ठ, पुस्तकालय-विमान (इन्डियन प्रशिक्षण)
	ह
	डाइरेक्टरी
	—जोध डाइरेक्टरी
	—ऑल इंडिया लाइब्रेरी
	—नवसंशोधन लाइब्रेरी
इन्डियन एडवर्ट पब्लिशिंग हाउस, ए. एस. सेमिनार	
इन्डियन नेशनल विस्त्रियो-मैफी	
इन्डियन लाइब्रेरी डाइरेक्टरी	
इन्डिया लाफिम लाइब्रेरी	
इन्डियन लाइब्रेरी	

विकास सम्बन्धी कार्यों से यह स्पष्ट है कि सम्पूर्ण देश में पुस्तकालय सम्बन्धी पुनर्जागरण की एक लहर बौड़ गई है और एक नया मुधारण हो गया है। प्रत्येक क्षेत्र के विद्वानों के साथ पुस्तकालय-क्षेत्र के प्रसिद्ध विद्वान् डा० रज्जनाकर भी की डाक्टरेट और पद्मविभूषण उपाधि से सम्बन्धित किया जाया विदेशों में उनके मौखिक विचारों का स्थापित भारतीय पुस्तकालयकार्यों की विदेश यात्राएँ और उनके बैठक-स्तर में बुद्धि महिलाओं का जो इस क्षेत्र में सहाय प्रवर्ध और प्रसिद्ध प्राप्त करना सत्र प्रसिद्धित पुस्तकालयकार्यों की माँग पुस्तकालय-विज्ञान के प्रसिद्धन की सभी अर्थकों में व्यवस्था साइबेरी इन्विपमेन्ट सप्लाइ करने वाली अनेक कम्पनियों की स्थापना पुस्तकालयों के वैज्ञानिक समन्वय और संयोजन पर जोर दिया जाया तथा पुस्तकों के संरक्षण से अधिक उनके उपयोग पर ध्यान देना चाहिए एनी बातें हैं जिससे पुनर्जागरण की पुष्टि होती है। अतिस भारतीय स्तर पर प्रत्येक जिले को केन्द्र मान कर पुस्तकालयों की सज-सुकन बनाने की योजना प्रवेष्टों में पुस्तकालयों का सर्वेक्षण विश्वविद्यालयों तथा अन्य शिक्षण संस्थानों को पुस्तकालय-विकास के लिए विभिन्न अनुदान तथा विविध रूपों के नए पुस्तकालयों की स्थापना और विस्तार चाहिए कार्य भारत में पुस्तकालयों के संरक्षण जगित्य के चोटक है।

इतना होवे हुए भी हम निःसंकोच कह सकते हैं कि अभी हमारा समय बहुत दूर है और वहाँ तक पहुँचने के लिए अभी अनेक महत्त्वपूर्ण कार्य अनेकित है। हमें जाना है कि 'साइबेरी पञ्चवाइसरी कमेटी' के विद्वान् सरस्व उन उपस्थानों की ओर विशेष रूप से ध्यान देते और उनके समाधान का समुचित मुमान भी प्रस्तुत करेंगे जिसके फलस्वरूप हमारे पुस्तकालय भारत के बौद्धिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक उत्थान में सहायक हो सकेंगे।



अनुक्रमणिका

अ

लक्ष्मण का पुस्तकालय	१५
अखिल भारतीय	
पुस्तकालय-संघ	७१-७७
अखिल भारतीय सार्वजनिक	
पुस्तकालय-संघ	७१
ऑल इंडिया लाइब्रेरी एसो	
सिपरान, देस्सिप (अखिल	
भारतीय पुस्तकालय-संघ)	
	७१-७७

इ

इण्डियन पब्लिशिंग फ़ंडु. एसो.	
सेमिनार	१४८
इण्डियन नेशनल लिब्ररी एसो-	
सैफ़ी	१०८
इण्डियन लाइब्रेरी डाइरेक्टरी	
	१११ ११७
इण्डिया थापिन्स	
लाइब्रेरी	७२-७४ १ १
इन्वैरिबल लाइब्रेरी	
	५१, ६८-७१ १०२,

क

काब विभाग-	
पुस्तकालयों का	१४-१५
केन्द्रीय पुस्तकालय, वडोदा	७९
केन्द्रीय सरकार के कार्य	१०४

ख

बल-पुस्तकालय (वडोदा)	७९-८०
----------------------	-------

ख

जिला पुस्तकालय	१०५ ११०
बैन पुस्तकालय	११-१४

ट

ट्रेनिंग, पुस्तकालय-विज्ञान	
(देस्सिप प्रशिक्षण)	

ड

डाइरेक्टरी	
—भाषा काइबरी	९०
—बाल इण्डिया काइबरी	—
	१११ ११८ ११९ १२७
—अनुभवप्राप्त काइबरी	८८

		पुस्तकालय-जान्दोहन (भारत)	
सहशिला का पुस्तकालय	१५-२९	—बाल्य	९० १५७
संखौर का पुस्तकालय	३७	—उत्तर प्रदेश	८७-८८ ९२
			१३७-१४०
	६	—झारखण्ड-कीर्शी	९० ९१ १५६
दिल्ली पब्लिक लाइब्रेरी	११९ १२०	—दिल्ली	९१ १४५-१५१
द्वितीय पंचवर्षीय योजना में		—पंजाब	८८-८९ ९१
पुस्तकालय	१११ ११२	—पूर्वी पंजाब	१४४ १४९
	न	—रेणू	१४९
नगरकोट का पुस्तकालय	३४	—बकास	८९-९० १५४ १५७
नालन्दा का पुस्तकालय	२५, १४४	—बम्बई	८१-८९ १५१ १५३
नेरानल बुक ट्रस्ट	१०६	—बड़ोदा	७७-८१ १५१ ५२
नेरानल लाइब्रेरी	१०६ १०८	—बिहार	८६ ८७ ९३ १४१-१४४
नेरानल सेंट्रल लाइब्रेरी	१११	—मध्य प्रदेश	१५६
	प	—मराठ	८१-८३ १५३-१५४
पंचवर्षीय योजना में पुस्तकालय		—मैसूर	१५५
	११० १११	—राजस्थान	१५६
पुस्तकालय		—छत्ता	१५६
—अथ विमान	१४-१५	—हरियाणा	१५५
—ग्राम्य	१-१३	पुस्तकालय-विकास	
—पारम्परिककारीन	१६-१८	—अनुसंधानशाखा	५८-६० १०४
—श्री ३ शिक्षा	११-१२	—इम्पीरियल	
—ब्रिटिशकारीन	४२-५७	लाइब्रेरी ५३ ६८-७१, १०२	
—बोर्डकारीन	२२-३२	—मुम्बई के	३८
—मुससमानी		—शामील पाठ्यात्मकों के	३९
पाठनकारीन	३३-३७	—बैंग	२३
—बैरिफकारीन	१९-२१	—द्वितीय पंचवर्षीय योजना में	१११
—बैरिफकारीन	३८-४१	—नेशनल	
—स्वाधीनकारीन	३८-११५	लाइब्रेरी १ २, १०५-१०८	
		—प्रथम पंचवर्षीय योजना में	११०-
		—प्रयोगशाखाओं के	५८ ९०, १०४

—प्रांतीय सरकारों के			बाल्य	—	१० १५७
म्यूजियम ५७ १०३	११३-११८		बाघाम	—	११
—प्रांतीय सरकारों के			इलाहाबाद	—	१४०
बिभागीय ५७	११३-११८		छत्तस	—	१० १५७
—प्रौढ़ शिक्षा के	११-१३		उत्तर प्रदेश	—	१०
—बर्षीय राज्य			एधियन	—	१२७
में ७७-८	१५१-१५२		कनटिक	—	८१-८३ १५२
—बौद्धासीन	२५-३		केरल	—	१०
—संभासनों से सम्बन्ध	५४ १०२		बोधपुर	—	१५६
—मकसूची	३३ ३८		डाबनकोर-कोशीन—		१५६
—मवरसे के	३३ ३९		दिल्ली	—	११ १४९-१५०
—मातृश्रम			पंजाब	—	८९
कार्यालयों के ५४-५९	१०२ १०३		पूर्वी पंजाब	—	१४०-१४६
—यूनिवर्सिटियों के	५८ १ ३		पेप्सू	—	१४६
—बिधेयियों के विद्यालय	३९		पूना	—	९१
—संलग्न कार्यालयों से			संभास	—	८९ १५७
सम्बन्ध ५४-५९ १ २			बम्बई	—	८९ १५४
—उत्कृष्ट विद्यालयों के	३८		बड़ीया	—	७९
—स्वतंत्र शोध			बिहार	—	८७ १४१-१४२
एताबों के ५८-६० १ ४			मद्रास	—	८१-८३ १५४
—सांख्यिक	१०-१८, १०५		मध्य प्रदेश	—	१५६
पुस्तकालय-विज्ञान			महाराष्ट्र	—	१५३
—अधिसूच ८१ ८२ ८९ ८८			हैदराबाद	—	१५६
१ ११ १०९ १२८ १३८			पुस्तकालयाध्यक्षों का सम्मान १९२		
१४२ १४४, १४९ १५ १५२			पुस्तकालयाध्यक्षों की		
१५३-५४			विदेशी यात्राएँ	१५८-१९२	
—साहित्य १४-१९ १९३ १९५			प्रफारान		
पुस्तकालय-संघ			—अधिक भारतीय		
बहिष्क भारतीय (बालि इण्डिया)—			पुस्तकालय सभ	१३६-१३७	
७६ ७७ १३५-१३६			—इण्डियन साइडेरियन	१४६	
बहिष्क भारतीय सांख्यिक—७५			—समाचार-पत्र	४९	

—पब्लिकरै	४९	म	
प्रदर्शनी			भारतीय इतिहास की
—पुस्तक-बाकेट	१२८		रूपरेखा १-११
—पुस्तक (पंजाब)	१४५-४९		भारतीय भाषाएँ २-१
प्रशिक्षण-पुस्तकालय-विज्ञान			भारतीय छिपियाँ ४-५
(वेस्लिय-पुस्तकालय-		म	
विज्ञान-प्रशिक्षण)			महमूद गयीं का पुस्तकालय १९
प्रसिद्ध-पुस्तकालय		य	
बम्बय का—	१५		यून को का अन्तराष्ट्रीय
इण्डिया आफिस—			सेमिनार १२१-१२७
७२-७४, १२८ १२९			योजना
केन्द्रीय-पुस्तकालय-बङ्गाला—	७९		—प्रथम पंचवर्षीय ११०
तंबौर—	१७		—द्वितीय १११
तख्तिला—	२५-२९		ल
रिक्की पब्लिक लाइब्रेरी—	११९ १२०		साइजेरी इन्सिपुमेंट ९१
नगरकोट—	१४		साइजेरी ऐडवाइजरी कमेटी ११२
नाल्द—	२५, १४४		साइजरी इण्डिया १११ ११८
नेशनल लाइब्रेरी—	१०९-१८		खिलने के प्रकार की प्राचीनता १९
बलभी—	१	घ	
महमूद गयीं—	१५		विकमरिजा का पुस्तकालय २९
बिस्मिल्ला—	२९	श	
हिन्दी संग्रहालय—			शिक्षा
प्रान्तों का पुनगठन	९८		—ब्रिटिशराजीन ४२ ४८
प्रेस का आविष्कार (भारतमें) ४९			—बौद्धराजीन २४-२५
ब			मुसलमानीराजीन ११
बङ्गाला राम्य पुस्तकालय संघ ७९			—बैरिगराजीन १०-२१
बलभी का पुस्तकालय ३			—स्वाधीनराजीन ९८-१०२
बिस्मिल्ला-प्रेस			
—नेशनल १ ० १०८			
—नाष्ट्रिय एकेडमी १०७ १ ९			

स		—इच्छित एडस्ट एनु० एसो०—		१४८
साहित्य एकेडेमी बिब्लियो- ग्रेफी	१०९		६	
साहित्य, पुस्तकालय विज्ञान १४-१९	११३-११५	हस्तलिखित ग्रंथ		
सेंट्रल स्टेट साइजेरी	१०५ ११०	—बोब	११-१२ ५० १२९-१३५	
सेमिनार		—संस्कार	१२ १३०-१३४	
—यूनेस्को का अन्तर्राष्ट्रीय—	१२१-१२७	—सूचीपत्र	५०-५१-७२ १३० १३४	



सहायक सामग्री

आजादी के सात बप ।	भारत सरकार शिक्षा मंत्रालय ।
इण्डियन लाइब्रेरी डाइरेक्टरी	इण्डियन लाइब्रेरी एसोसिएशन
एजुकेशन इन मुस्लिम इण्डिया	बकर ।
पेशीय इण्डियन एजुकेशन	“रावाकुमुह मुकर्बी ।
डाइरेक्टरी ऑफ ऑफ लाइब्रेरीज	माध्र लाइब्रेरी एसोसिएशन ।
दि अल्फाबेट	ईबिड विनिगर ।
विस्ली पब्लिशिंग लाइब्रेरी	
एच डब्ल्यू इट ऑफर्स यू	डी० आर० काठिया ।
द्वितीय पंचवर्षीय योजना	भारत सरकार-शिक्षा-विभाग ।
नेशनल लाइब्रेरी इन इण्डिया	”
पुस्तकालय	पुस्तक जगत पटना ।
प्रथम पंचवर्षीय योजना	भारत सरकार-पब्लिकेशन ड्राइव ।
प्राचीन भारत	डा० रामचंद्र त्रिपाठी ।
प्राचीन-भारत ।	एन० एन० बोप ।
प्राचीन भारतीय लिपिमाळा	पी पीटीरंकर हीराचन्द्र जोसा ।
बङ्गोवा लाइब्रेरी मूवमेण्ट	कुशाकर, जे० एच० ।
भारत के प्राचीन पुस्तकालय	मोंटारनाथ श्रीवास्तव ।
भारत में अंग्रेजी राम्य	मुन्बरकाठ ।
भारतवप का इतिहास	डा० ईश्वरी प्रसाद ।
भारतीय शिक्षा का इतिहास	प्यारेनाथ रावत
भारतीय शिक्षा का संक्षिप्त इतिहास	अशोक सिंह, प्रोफेसर एलपी ।
मराठी ग्रन्थासूची च इतिहास	पीडीके एच० डी० संपा० ।
लाइब्रेरीज इन इण्डिया	भारत सरकार-शिक्षा मंत्रालय ।
लाइब्रेरीज इन्सपेक्शन एजान	डा० एम० आर० रङ्गनाथ

साइजेरी मूषमेष्ट	मदास सार्वरी एसोसिएशन ।
साइजेरी मूषमेष्ट	रमन वार्ड० एच० बी० ।
साइजेरी मूषमेष्ट इन ट्राबनकोर	कुलकर नायर, बी० ।
शाहान मुगलियाम के कुतुबखाने	बुवेर० एम०
सिंधु-सम्यता	डा० लतीफखान काका ।
हिस्ट्री आफ नाइम्वा	संकाश्या ।

भारतीय पुस्तकालय-बचत की निम्नलिखित पत्रिकाओं की पुणजी और नई कार्यों से भी सहायता की गई है —

अपगिछा

इण्डियन साइजेरियन

मन्यालय

अनरल आफ ऑल इण्डिया साइजेरी एसोसिएशन

पुस्तकालय

पुस्तकालय-सर्विश

माडर्न साइजेरियन

साइजेरी बुलेटिन

इनके अतिरिक्त 'बंसा पुठलवाडू', दिल्ली प्रचारक प्रकाशन 'समाचार तथा कुछ पुठकल पत्रिकाओं की कार्यों वृत्तिवर्धित कमीशन एवं हायर सेकेण्डरी एजुकेशन कमीशन की रिपोर्टों राजकीय गवट तथा सरकारी शिक्षा विभागों के वार्षिक विवरणों से भी सहायता ली गई है ।

